Plagiarism Detector v. 2867 - Originality Report 3/27/2025 4:49:43 PM

Analyzed document: CPS-12.pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:

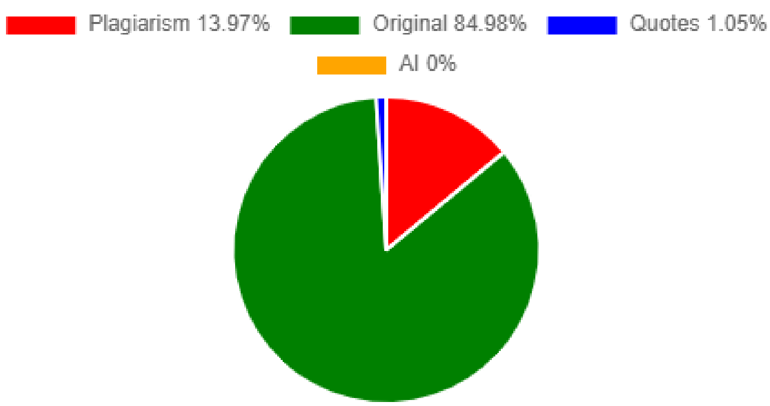

Distribution graph:

Top sources of plagiarism: 57

4%	3441	1. https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/wp-content/uploads/2020/07/11145827/लेखन-कौशल-hindi-notes.pdf
3%	2519	2. https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/
3%	2579	3. https://www.gksection.com/hindi-alphabets/

Processed resources details: 164 - Ok / 2 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
WIKIPEDIA	Google Book Search		
Wiki Detected!	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

1. Status: Analyzer On Normalizer On character similarity set to **100%**
2. Detected UniCode contamination percent: **0%** with limit of: 5%
3. Document not normalized: percent not reached 5%
4. All suspicious symbols will be marked in purple color: Abcd...

5. Invisible symbols found: 0

Assessment recommendation:

No special action is required. Document is Ok.

Alphabet stats and symbol analyzes:

UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

BED III- CPS 12 हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) Pedagogy of Hindi (Part II) हिक्षक हिक्षा हिभाग, हिक्षािास्त्र हिद्याािाखा उत्तराखण्ड मक्त हिश्वहिद्यालय, िल्द्वानी ु ISBN: 13-978-93-85740-80-0 BED III- CPS 12 (BAR CODE) BED III- CPS 12 िह#दी का िश)णशा+ (भाग II) िश#क िश#ा िवभाग, िश#ाशा% िव'ाशाखा उ

Quotes detected: **0.01%** id: **1**

"राख&ड म* िव-िव.ालय, ह"

#ानी ु अ

Quotes detected: **0.01%** id: **2**

"ययन बोड(िवशेष& सिमित !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ"

य$- पदने), िनदशे क, िश(ाशा* िव,ाशाखा, !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ

Quotes detected: **0.01%** id: **3**

"य$- पदने), िनदशे क, िश(ाशा* ु ु उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु !ोफे सर मह$मद िमयाँ (बा# िवशषे)- सद#य), पव$ अिध(ाता, िश#ा सकाय, !ोफे सर सी० बी० शमा$ (बा# िवशषे)- सद#य), अ&य', रा*+ीय ु ू ं जािमया िमि&लया इ)लािमया व पव- कलपित, मौलाना आजाद रा*+ीय उद 0 म# िव&ालयी िश,ा स/थान, नोएडा ू ु ु ं ू िव#िव$ालय, हदैराबाद !ोफे सर पवन कमार शमा/ (बा# िवशषे)- सद#य), अिध(ाता, ु !ोफे सर एन० एन० पा#डेय (बा# िवशषे)- सद#य), िवभागा&य(, िश#ा िवभाग, िश#ा सकाय व सामािजक िव,ान सकाय, अटल िबहारी बाजपेयी िह7दी ं ं एम० जे० पी० !हले ख&ड िव*िव+ालय, बरेली िव#िव$ालय, भोपाल !ोफे सर के ० बी० बधोरी (बा# िवशषे)- सद#य), पव(अिध,ाता, िश0ा सकाय, !ोफे सर जे० के ० जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) ु ू ं ं एच० एन० बी० गढ़वाल िव'िव(ालय, *ीनगर, उ/राख1ड िव#ा

Plagiarism detected: **0.19%** https://doc.sarkariresults.org.in/MPESB_Group… + 2 resources! id: **4**

शाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु !ोफे सर जे० के ० जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) िव+ाशाखा, !ोफे सर र'भा जोशी (िवशषे आम!ी- सद#य), िश'ाशा) ं ं उ"राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु !ोफे सर र'भा जोशी (िवशषे आम)ी- सद#य), िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ.राख0ड डॉ० िदनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु ं म# िव&िव'ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव/िव#ालय ु ु डॉ० िदनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव#ाशाखा, उ(राख*ड डॉ० भावना पिलड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु म# िव&िव'ालय िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव!िव$ालय ु ु डॉ० भावना पिलड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव2ाशाखा, स#ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 ु ु उ"राख&ड म* िव-िव.ालय िव#ाशाखा एव सह-सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. ु ु ं िव#िव$ालय स

#ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, िश/ाशा0 िव2ाशाखा एव सह- ु ु ं डॉ० !वीण कमार ितवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. िव1िव2ालय ु ं ं ु िश#ाशा% िव'ाशाखा एव सम-वयक बी० एड० काय$!म, उ$राख(ड ं डॉ० !वीण कमार ितवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, िश3ाशा4 ु ं ं म# िव&िव'ालय ु िव#ाशाखा एव सम+वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. िव1िव!ालय ु ं िदशाबोध: (ोफे सर जे० के ० जोशी, पव$ िनदशे क, िश+ाशा- िव.ाशाखा, उ1राख3ड म7 िव8िव.ालय, ह =ानी ू ु काय$%म सम(वयक: काय$%म सह-सम#वयक: पाठय&म सम)वयक: पाठय&म सह सम*वयक: ् ् डॉ० !वीण कमार ितवारी स#ी ममता कमारी डॉ० िगरीश कमार ितवारी डॉ० !वीण कमार ितवारी ु ु ु ु ु सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, सह-सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, सम#वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश#ाशा% िव'ाशाखा, िश#ाशा% िव'ाशाखा, उ*राख,ड मिहला महािव'ालय, काशी िह'द िश#ाशा% िव'ाशाखा, ू उ

Quotes detected: **0.02%** id: **5**

"राख&ड म* िव-िव.ालय, म# िव&िव'ालय, ह,-ानी, नैनीताल, िव#िव$ालय, वाराणसी, उ(र)दशे उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय, ह

Quotes detected: **0.01%** id: **6**

"#ानी, ु ु ु ह"

#ानी, नैनीताल, उ+राख.ड उ

Quotes detected: **0.05%** id: **7**

"राख&ड नैनीताल, उ(राख+ड !धान स&पादक उप स$पादक डॉ० !वीण कमार ितवारी डॉ० िगरीश कमार ितवारी ु ु समन्वयक, िश)क िश)ा िवभाग, िश)ाशा- िव.ाशाखा, अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, मिहला मिहव'ालय, काशी िह,द ू उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय, ह23ानी, नैनीताल, उ"राख&ड िव#िव$ालय, वाराणसी, उ(र)दशे ु िवषयव%त स)पादक भाषा स%पादक !ा#प स&पादक !फ़ सशोधक ु ू ं डॉ० िगरीश कमार ितवारी डॉ० िगरीश कमार ितवारी स#ी ममता कमारी स#ी ममता कमारी ु ु ु ु ु ु अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, सहायक &ोफे सर, िश-ाशा. सहायक &ोफे सर, िश%ाशा' मिहला मिहव'ालय, काशी िह,द मिहला मिहव'ालय, काशी िह,द िव#ाशाखा, उ(राख*ड म. िव#ाशाखा, उ(राख*ड

Plagiarism detected: **0.06%** https://doc.sarkariresults.org.in/MPESB_Group… id: **8**

म. ु ु ू ू िव#िव$ालय, वाराणसी, उ"र$दशे िव#िव$ालय, वाराणसी, उ(र)दशे िव#िव$ालय िव#िव$ालय साम$ी िनमा(ण !ोफे सर एच० पी० श#ल !ोफे सर आर० सी० िम# ु िनदशे क, िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ.राख0ड म4 िव5िव+ालय िनदशे क, एम० पी० डी० डी०,

उ

Quotes detected: **0.01%** id: **9**

"राख&ड म* िव-िव.ालय ु ु © उ"

राख&ड म# िव&िव'ालय, 2017 ु ISBN-13-978-93-85740-80-0 !थम स&करण: 2017 (पाठय&म का नाम: िह#दी का िश)णशा+ (भाग II), पाठय&म कोड- BED III- CPS 12) ् ् ं सवा$िधकार सरि%त। इस प%तक के िकसी भी अश को !ान के िकसी भी मा+यम म - .योग करने से पव) उ+राख.ड म2 िव4िव5ालय से िलिखत अनमित लेना आव;यक ह।ै इकाई ु ु ं ू ू ु ु लेखन से सबिधत िकसी भी िववाद के िलए पण65 पेण लेखक िज8मदे ार होगा। िकसी भी िववाद का िनपटारा उ

Quotes detected: **0.02%** id: **10**

"राख&ड उ(च *यायालय, नैनीताल म 2 होगा। ं ं ू िनदशे क, िश'ाशा) िव+ाशाखा, उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय 1रा िनदशे क, एम० पी० डी० डी० के मा%यम से उ)राख,ड म/ िव2िव3ालय के िलए मि6त व 8िकाशत। ु ु ु !काशक: उ

Quotes detected: **0.01%** id: **11**

"राख&ड म* िव-िव.ालय; म#क: उ"

राख&ड म* िव-िव.ालय। ु ु ु काय$%म का नाम: बी० एड०, काय$%म कोड: BED- 17 पाठय&म का नाम: िह#दी का िश)णशा+ (भाग II), पाठय&म कोड- BED III- CPS 12 ् ् ख"ड इकाई स#या स#या इकाई लेखक ं ं 1 1 व 2 स#ी िवजेता कमारी ु ु सहायक &ोफे सर, िश#ा िवभाग, जमशदे पर मिहला मिहव.ालय, जमशदे पर, झारख2ड ु ु 1 3 डॉ० िगरीश कमार ितवारी ु 2 5 अितिथ %या(याता, िश#ा िवभाग, मिहला मिहव'ालय, काशी िह,द िव/िव'ालय, वाराणसी ू 1 4 डॉ० रमेश कमार ु सहायक &ोफे सर, बी० एड० िवभाग, बासमती दवे ी सकटा -साद मिहला मिहव1ालय, वाराणसी ं 1 5 डॉ० तारके &र ग)ा ु 2 1 सहायक &ोफे सर, बी० एड० िवभाग, महाराणा &ताप राजक+य -नातको0र मिहव3ालय, हरदोई, उ०!० 2 2, 3 व !ी मोिहत राज 4 कमरा स०- 13, मकान स०- A/7, फे ज 5, सडे माक(ट, आयानगर, नई िद%ली ं ं ं BED III- CPS 12 िह#दी का िश)णशा+ (भाग II) ख"ड 1 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 2-13 1 भाषा अिधगम के िविभ!न पा%ा&य िस*ात ं 14-28 2 भाषा अिधगम के िविभ$न भारतीय िस#ात ं 29-47 3 अिधगम योजना 48-64 4 भाषायी कौशल* का िवकास एव उनका म4याकन: िह6दी भाषा के िवशषे स6दभ 9 म : ू ं ं 65-82 5 भाषा िश&क: िह#दी के िवशषे स#दभ - म / ख"ड 2 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 84-101 1 पाठय&म और पाठय समा+ी का िनमा0ण ् ् 102-120 2 िहदी िश#ण क" पाठयप'तक* का म-याकन ् ु ू ं ं 121-142 3 िहदी भाषा म * उपलि%ध के म+याकन हते परी$ण ू ु ं ं 143-160 4 परी$ण, मापन एव म#याकन : िहदी भाषा के िश#ण एव अिधगम के िवशषे सदभ % म " ू ं ं ं ं ं 161-178 5 िह#दी िशण एव ि"या%मक अनसधान ु ं ं हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 खण्ड 1 Block 1 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 1 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 1- भाषा अधिगम के धिधभन्न पाश्चात्य धिद्ांत 1.1 प्रस्तिाना 1.2 उद्दश्े य 1.3 भाषा अविगम के पाश्चात्य विद्ात ां 1.4 जॉन डिीी 1.5 जयााँ वपयाजे 1.6 वलि विमनोविच व्यगोत्स्की 1.7 नोम चाम्िकी 1.8 स्टीफन क्राशन 1.9 िाराश ां 1.10 शब्दािली 1.11 अभ्यिा

Plagiarism detected: **0.02%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-… id: **12**

प्रश्नों के उत्तर 1.12 िदभभ ग्रथ िची ू ां ां 1.13 वनबिात्मक प्रश्न ां 1.

1 प्रस्तावना आप इि इकाई के माध्यम ि भाषा िबिी पाश्चात्य उपागम की जानकारी प्राप्त कर िकें ग े ।भाषा िबिी ां ां ां ां ज्ञान के क्षेत्र में भी बहत ि विचारकों, वचतकों ने अपने- अपने विचार प्रस्तत वकए

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **13**

ह।ै भाषा के अध्ययन ु ु ां की परपरा भारत म े बहत प्राचीन ह,ै परत पाश्चात्य परपरा आिवनक काल में शरू हई ह।ै यह भाषा को ु ु ु ु ु ां ां ां व

ृयिवस्थत करते हए एक िरचनात्मक भाषा प्रदान करने का कायभ करता ह।ै 20 िीं िदी म े फदीनाद- द ु ां ां िस्यर (1857-1913, फ्ि।) और ब्लमफील्ड ने (1887- 1949, अमरे रका) िरचनात्मक भाषा विज्ञान ू ू ां ां में महत्िपर् भ योगदान वदया। उिके बाद मनोविज्ञान इिके िहयोगी

Plagiarism detected: **0.02%** https://matrawaleshabd.org/hindi-ka-kha-ga/ id: **14**

के रुप म े उभर कर हमारे िमक्ष आया। ू भाषाओ के िज्ञै ावनक विश्लेषर् ि भाषाओ क

ा िगीकरर्, उनके विवभन्न रूपों का ऐवतहाविक ि ां ां तलनात्मक परिरतभन का अध्ययन शरू हआ। ु ु ु 1.2 उद्दश्े य 1. आिवनक भाषा विज्ञान के पाश्चात्य विद्ात के महत्ि को स्पष्ट कर िकें ग े । ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 2 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2. जॉन डिीी(रचनािाद) के वशक्षा िबिी विचारों ि अिगत हो िकें ग े । ां ां 3. वपयाज े के िज्ञानात्मक विकिा के विद्ातों के आिार पर बालक की भाषा विकिा की अिस्था ां ां का विश्लेषर् कर िकें ग े । 4. चोमस्की के रूपातरर् वनष्पादन व्याकरर् के विषय में ज्ञान प्राप्त कर िकें गे । ां 5. क्राशने के वितीय भाषा ि जडे विद्ात की व्याख्या कर िकें ग े । ु ां 1.3 भाषा अधिगम के पाश्चात्य धिद्ातां भाषा एक िऐी व्यिस्था ह ै , जो िमाज के वलए बहत उपयोगी ह।ै इि बालक अपनी मातभाषा म े िहज ु ृ िातािरर् म े रहते हए उवचत प्रयािों ि िीखता ह।ै िरचनात्मक ि मनोभाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **15**

विज्ञान दोनों ही भाषा ु ां विज्ञान ि िबवित ह।ै िरचनात्मक भाषाविज्ञान जहा िाक्य की िरचना ,िाक्य विन्याि ि जडा ह ै ,िही ु ां ां ां ां ां मनोभाषाविज्ञान

में िाक विकार ि मानविक अवभरुवच ,स्मरर् के विषय में चचा भ की जाती ह।ै भाषा

Plagiarism detected: **0.09%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **16**

विज्ञान िज्ञै ावनक विद्ातों पर आिाररत ह ै इिके अतगतभ भाषा मनोविज्ञान ि िरचना की िमवन्ित प्र्राली ां ां ां पर विचार वकया जाता ह।ै िीिीं शताब्दी आने के बाद िरचनात्मक ि मनोभाषाविज्ञान पर बहद रूप म े ृ ां कायभ ि अनािान वकए जान े लग।े इनके अतगतभ मान्य अविगम विद्ात , िावचक व्यिहार ि भाषा के ु ां ां ां िािभभ ौवमक तत्ि, भाषा ,िज्ञान ि मनोविज्ञान क

े वमले-जले भावषक रूपों के िाथ भाषा की प्रिवत्त और ृ ु ां िरचना को िमझने के प्रयाि को एक िाथ अध्ययन का क्षेत्र माना जान े लगा ह ै ।िाथ ही बालक के ां शारीररक, मानविक परिरतभनों ,विकािात्मक अिस्था के अध्ययन को एक ितत प्रवक्रया मानकर भाषा विज्ञान को व्यापक दृवष्टकोर् ि िमझने का प्रयाि वकया जा रहा ह।ै 1.4 जॉन डीवी (1859-1952) जॉन डिीी अमरे रका के प्रविद् वशक्षाविद ि दाशवभ नक ह।ै उन्होंने हॉपवकि विश्वविद्यालय ि वशक्षा प्राप्त ां की ।1894 में उन्ह े वशकागो विश्वविद्यालय के दशनभ शास्त्र, मनोविज्ञान एि वशक्षा विभाग का अध्यक्ष ां वनयक्त वकया गया । उनकी कछ प्रमख रचनाए इि प्रकार ह-ै हाउ िी वथक, एजके शन ऑफ टडे, ु ु ु ु ु ां ां प्रॉब्लम्ि ऑफ मनै , द स्कल एड िोिाइटी, स्कल ऑफ टमारो, िीिो ऑफ िाइि एजके शन, चाइल्ड ू ू ु ु ां ां एड कररकलम,िाइकोलोजी, एप्लाइड िाइकोलॉजी, एक्िपीररयि एड नेचर, द थ्योरी ऑफ इक्िायरी ु ां ां ां ां ,वफलॉस्फी एड विविलाइजेशन ।डिीी के अनिार वशक्षा अनभि के पनवनभमाभर् की प्रवक्रया ह ै वशक्षा का ु ु ु ां अिली मकिद बच्चे में िही रुझानों के िारा बवद् को विकवित करना ह,ै इिवलए उन्होंने अनकल ु ु ू िातािरर् ि पररवस्थवतयों के वनमाभर् पर बल वदया ह,ै जो बच्चों म े िद्र्ुर्ों का विकिा करें। वशक्षा जीिन ु की प्रमख प्रवक्रया ह,ै इिवलए यह जीिन भर चलती रहनी चावहए। जॉन डिीी के दशनभ में अनभि को ु ु प्रमख स्थान वदया गया ह।ै उनके अनिार अनभि –

Quotes detected: **0.06%** id: **17**

"आनभविक दृवष्ट ि िस्तए ममस्भ पशी, कारुवर्क , ु ु ु ु ु ां िदर, हास्य कर, वस्थर अशात, िखद, कष्टकर, वनष्ठर, भव्य, भयकर होती ह-ै एि उनका आवशक ु ु ु ां ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 3 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 स्िभाि होता ह।ै "

अनभि एक दिरे ि िबवित और िमािशे ी होते ह।ैं उन्होंने ज्ञान और अनभि के ु ु ां ां ू िफल िामजस्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.viahindi.in/2024/07/k-kh-g-gh-in-eng… id: **18**

पर ध्यान कें वित वकया ह।ै िाथ ही उनके तावकभ क अन्िेषे र् जिै े विद्ात में प्रयोगात्मक ां ां तकभ शास्त्र के प्रयोग

ि हम वकिी भी कविन पररवस्थवत ि बाहर आ िकते ह,ैं क्योंवक िमस्या को स्पष्ट िमझना ,उिके कारर् को ज्ञात करना, िमझना बहत आिश्यक ह,ै उिके पश्चात ही हम उि पररवस्थवत ु को स्पष्ट िमझते हए उि बाहर आने के िमािान को ढढ िकत े ह।ैं रचनािाद के अनिार बच्चे

Plagiarism detected: **0.06%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **19**

ज्ञान के ु ू ु ां िजन के वलए अपने आिपा की घटनाओ का वनरीक्षर् करते ह,ैं प्रकवत ि लोगों के िावनध्य म ें रहते ृ ृ ां हए बहत ही िकल्पनाए बनात े रहते ह।ैं वशक्षक पहले विद्यावथभयों के पिभ ज्ञान क

ो टटोलने का प्रयिा करें ु ु ू ां ां वक वकी विषय ि िबवित बच्चों को वकतना ज्ञान ह।ै विवभन्न नीन िकल्पनाओ के वलए बच्चों म ें ां ां ां ां प्रश्नों के माध्यम ि वजज्ञािा उत्पन्न की जा िकती ह।ै डीिी के अनिार ज्ञान ि अन्िेषे र् िित्य को प्रमावर्त ु करने के वलए आिश्यक ह,ै और तकभ की विमशभ आत्मक वचतन प्रवक्रया के िारा हम िैज्ञावनक अन्िेषे र् ां करते ह ैं । तकभ मानि व्यिहार का एक प्रकार ह ै और मानिीय िमस्याओ को िलझाने के वलए यह एक ु ां

Quotes detected: **0%** id: **20**

'कारर्'

ह ै ।इिी कारर् इिी िजह ि तावकभ क अन्िेषे र् की पद्धवत

Quotes detected: **0%** id: **21**

"कारर् िाद"

के नाम ि भी जानी जाती ह।ै डीिी के अनिार वशक्षा अनभि के ितत पनवनभमाभर् की प्रवक्रया ह ै ।इिमें कायभ िारा िीखना ु ु ु

Quotes detected: **0%** id: **22**

"लवनिंग बाए डइग"

पर बल वदया जाता ह।ै बच्चों के िविक्रय रूप वजिमें िह वक्रयाशील उत्िक ि वजज्ञािु ू ु ु ां प्रिवत्त िाले व्यवक्तत्ि के रूप में हमारे िमक्ष आते ह,ैं वशक्षा योजना म ें उनकी इि वक्रयाशीलता को ध्यान ृ में रखते हए बच्चों के अनभिों को स्ितत्र रुप ि विकवित करने पर हम ें ध्यान कें वित करना होगा ।इिके ु ु ां वलए वशक्षा प्रदान करने में हमें उवचत पररवस्थती ि बच्चों के अनरूप िाितािरर् तैयार करने पर विशषे ु ध्यान दने ा होगा ।बच्चों में उत्िाह ,िाहि ,िद्गिर्ों का विकाि करने के वलए स्कली िाितािरर् म ें ू ु खलापन, कल्पनाशीलता, िजनात्मकता , िही िकारात्मक िोच,, व्यिवस्थत प्रजातत्र आत्मक ृ ु ां िाितािरर् तैयार करना होगा। जॉन डीिीके मतानिार शिक्षा जीवन के शिए तैयारी ह ै । बच्चों में वचतन को ु ां स्पष्ट करने के वलए उन्होंने इिके 5 पद बताए ह ैं – 1. वकिी व्यवक्त िमस्या या कविनाई की अनभवत ु ू 2. िपर् भ िस्त वस्थवत का विश्लेषर् ू ु ां 3. िमािान को खोजना और उिके वलए वनवश्चत िमािान ढढन े का प्रयिा करना ूां 4. िमािान उपयक्त ह ै अथिा नहीं इि को जाचना ु ां 5. उपयक्त िमािानों को िमस्या िलझाने में

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **23**

प्रयोग म ें लाना उिे स्िीकार अथिा स्िीकार करते हए ु ु ु पनः वनरीवक्षत करते हए नए िमािान को प्रयोग म

ें लाना ु ु उनके अनिार वशक्षा के दो पक्ष हःै पहला मनोिैज्ञावनक और दिरा िामावजक ।मनोिैज्ञावनक पक्ष म ें हम ु ू बच्चे के व्यवक्तत्ि , भािात्मक, बौवद्धक विशषे ता, , प्रिवत्त आवद का अध्ययन करते ह,ैं और िामावजक ृ पक्ष में हम उिके पररिार,, आि-पडोि, िमाज- िस्कवत, विद्यालय आवद के िामावजक िाितािरर् का ृ ां अध्ययन करते ह।ैं उन्होंने अनिार स्िय अनभि िारीखना ,खोज विवि ,िहिबि

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **24**

विवि, योजना विवि ु ु ां ां ां का अविकाविक प्रयोग करने पर बल वदया ह।ै इन िभी विवियों के अवतररक्त वनरीक्षर् विवि, आगमन - उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 4 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 वनगमन विवि, प्रयोग विवि, पिाय िहगामी वक्रयाओ, िामवहक कायभ वजिमें बहत ही बौवद्धक ि ु ृ ू ां िंविके पर्भ पद्धवत का प्रयोग

हो उन्ह ें अविक महत्ि वदया गया ह,ै क्योंवक इन िभी विवियों के िारा बच्चा ू अपनी योग्यता के अनिार पि भ अनभि के िारा िीखे ज्ञान ि नीन तथ्य के बीच में स्िय तकभ के िारा, ु ू ु ां ज्ञात ि अज्ञात के विद्धात के आिार पर िमस्या का वनदान ढढन े का प्रयिा करता ह।ै ितभमान , रचनािाद ू ां ां बच्चों के इि िीि

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **25**

ज्ञान का प्रयोग करता ह ै वजिमें बच्चा पि भ अनभि के आिार पर स्िय को नीन ू ु ां तथ्यों ि नए ज्ञान क

े िाथ जोडता ह।ै 1.5 जीन धपयाज े (1896-1980) जीन वपयाज े (1896-1980)का जन्म वस्िटजरलैंड म ें हआ। वपयाजे, अल्फ्े ड वबने के िाथ बवद् ु ृ ु परीक्षर्ों पर उनके प्रयोगशाला में काम कर रह े थे, उिी िमय उन बालकों के िज्ञानात्मक विकाि पर ां उन्होंने कायभ काम शरू वकया। उन्होंने 1923 ि 1932 के बीच म ें पाच पस्तकें प्रकावशत की वजिमें ु ु ां िज्ञानात्मक विकाि के विद्धात का प्रवतपादन वकया। वपयाज े के अनिार िज्ञानात्मक विकाि की जो ु ां ां ां विचारिारा ह ै उिे एक अतर वक्रया िादी विचारिारा मात्र ह।ै वपयाज े की के िज्ञानात्मक विकाि यह ां ां विद्धात में बालक की िविक्रय भवमका

मानी गई ह।ै इिवलए पाियक्रम तैयार करते िमय बालक की ृ ू ां आिश्यकता प्रेर्रा अवभरुवच पर विशषे बल दने े की बात कही गई ह ै उनके अनिार 7 िि 11 िषभ की ु आय में वशक्षा का मल उद्दश् े य बालक को एिे व्यवक्तत्ि में पररिवतभत करना ह ै जो वक िजिनशील, नई ृ ु ू खोजों की तरफ प्रेररत होने िाला िज्ञै ावनक तथ्यों के आिार पर अपनी बात को िमक्ष रखने योग्य हो। एिा करने के वलए उन्होंने खेल विवि के माध्यम िि बालकों म ें िज्ञानात्मक विकिा को ऊचे स्तर तक ले ां ां जाने में प्रभािी बताया ह ै िि उनमें स्ियत्तता ,आत्मविश्वाि जिै े ग ्रों का विकिा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ id: **26**

होता ह ै क्योंवक िह ु अपनी वक्रयाओ िारा एक नई िमझ विकवित करते ह ैं । ां उन्होंने बच्चों के िज्ञान

ात्मक विकिा पर कायभ वकया ह।ै वपयाज े के अनिार बालक में िास्तविक स्िरूप ु ां का वचतन ि पररपक्िता स्तर उिके अनभि पर वनभरभ करता ह।ै िह इन दोनों की अतवक्रभ या िारा वनिाभररत ु ां ां भी होताह ै अतः यह एक अतवक्रया िादी विचारािरा ह।ै बच्चों में तकभ , वचतन, जवै िक विकिा ि ां ां िरचनात्मक तत्िों पर के विकिा पर बल दते े हए उन्होंने िज्ञानात्मक विकिा की व्याख्या की ह।ै उन्होंने ु ां ां चार अिस्था में िज्ञानात्मक विकिा का प्रवतपादन वकया ह ै यह अिस्थाए ह-ैं ां ां 1. ििंदे चालक अिस्था(जन्म िि 18 या 24 माह तक) ां 2. पि भ िवक्रया अिस्था(2 िि 7 िषभ तक) ू ां 3. स्थल िवक्रया अिस्था(7 िि 12 िषभ तक) ू ां 4. ररवतक िवक्रया अिस्था(12 िि 19 िषभ वकशोरािस्था तक) ां उनके अनिार िज्ञानात्मक विकिा की चारों अिस्थाओ में पहली अिस्था जन्म िि 2 िष भ तक रहती ह ै ु ां ां इिमें बच्चा शारीररक रूप िि चीजों को पहचानन े िि पकडने की कोवशश करने लगता ह।ै वपयाजे के अनिार इि िमय तक वशश का बौवद्क अथिा िज्ञानात्मक विकिा 6 अिस्थाओ िि होकर गजरता ह।ै ु ु ु ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 5 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पहला प्रवतिती वक्रयाओ की अिस्था प्रवततिभ जो की जन्म िि 30 वदन तक रहती ह ै इिमें बालक प्रवतिती ां वक्रयाओ में चिने का कायभ करता ह।ै दिरा अिस्था एक िि 4 महीन े की अिवि तक रहती ह ै इिमें बच्चा ू ां ू शरीर की प्रवतिती वक्रयाओ को अनभवतयों के िारा दोहराता ह ै और उन वक्रयाओ में अविक िमवन्ित ु ू ां ां वक्रयाए होने लगती ह।ैं तीिरी अिस्था 4 िि 8 महीने की होती ह ै यह इिमें बच्चा िामान को उलटने- ां पलटने िि छने पर अपना ध्यान अविक ध्यान दते ा ह ै और जो चीज उिे मनोरजक लगती ह ै उि पर ू ां अविक ध्यान दते ा ह ै चौथा यह अिस्था 8 िि 12 महीन े की अिवि तक की होती ह ै इिमें िह िस्तओ की ु ां खोज िि बडों के िारा वकए गए कायों का अनकरर् शरू कर दते ा ह।ै पाचिी अिस्था में ततीय िित्तीय ृ ृ ु ु ां प्रवतवक्रया की अिस्था यह अिस्था 12 िि 18 महीन े की अिवि की होती ह ै इिमें बच्चा प्रयिा एि त्रवट ु ां िि िीखने की कोवशश करता ह ै छिी अिस्था , नए िािनों की खोज की अिस्था 18 िि 24 महीन े की अिवि

Plagiarism detected: **0.07%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **27**

की होती ह ै इिमें बच्चा िस्तओ के बारे में वचतन शरू कर दते ा ह ै ।जब कोई िस्त उिके िामन े िि ु ु ु ां ां हट होती ह ै तो िह अब उिके विषय म ें िोचना शरु कर दते ा ह।ै ु दिरा अिस्था 2 िि 4 िाल तक की होती ह

ै , इि अिस्था में िज्ञानात्मक विकिा बच्चे िस्त, शब्द ु ां ू वचतन के विषय में विचार करने लगते ह।ैं मानविक वचतन के िारा बातों को िमझने लगते ह।ैं तीिरी ां ां अिस्था, यह अिस्था 7 िषभ िि शरू कर 12 िषभ तक चलती ह।ै इिमें बच्चे दो िािों िस्तओ के आिार ु ु ां िि िवक्रयाए करके िमस्या का िमािान वनकालने लगते ह।ैं उनकी वचतन एि तकभ शवक्त अविक क्रमबद् ां ां ां ां िि तकभ िगत हो जाती ह ै । ां चौथी अिस्था, यह अिस्था 11 िाल िि प्रारभ होकर वकशोरािस्था तक चलती ह ै इि अिस्था में उनकी ां वचतन म ें क्रमबद्ता आ जाती ह।ै िह वकिी िमस्या का िमािान काल्पवनक रूप िि करने लग जाते ह ैं ां ।उनके वचतन में िस्तवनष्ठता िि िास्तविकता का िमािेश हो जाता ह ै वपयाज े के अनिार दो विषय एिे ह ैं ु ु ां वजन पर ध्यान दने ा बहत ही आिश्यक ह-ै बच्चों के मन का विद्ात और दिरा िोचना िीिान उपागम। ु ू ां ां ू वपयाज े ने िज्ञानात्मक विकिा के अपने विद्ात म ें बच्चों के िारा ितिारर् को स्ितत्र रूप में ि ां ां ां खोजबीन करके िज्ञानात्मक विकिा की प्रवक्रया पर बल वदया ह ै ।इिमें पररपक्िता एक महत्िपिभ तत्ि ू ां के रूप में उभरता ह ै ।िह अनभवत वपयाजे के विद्ात में बालकों के वचतन म ें उनकी पररपक्िता एि ु ू ां ां ां अनभवतया तलनात्मक रूप िि अविक महत्िपिभ होती ह।ै तकभ िि व्यिहाररकता का बालक के व्यिहार ु ू ु ू ां का िमािेश हो जाता ह।ै िह वनगमन तथा आगमन प्रवक्रया िारा अपने जीिन िि जडे व्यापर विचार- ु विमशभ िनिभ करने लग जाता ह।ै बालक

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **28**

के ज्ञानात्मक विकिा िास्ति में आतररक और बाहरी होता ह ै ां ।इिमें अिलोकन िि वनरीक्षर् को िमावहत वकया जाता ह।ै बालक के ज्ञान

ात्मक विकिा म ें प्रत्यय वनमाभर् िीरे-िीरे विकवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ id: **29**

त होता ह।ै उिका वचतन, कल्पनाशवक्त, रुवच, ध्यान िि इंद्रीय प्रत्यक्षीकरर् बिो उिकी ां ां आय के िाथ बढ़ते जाते ह।ैं ज

्ञानात्मक विकिा के क्षेत्र में टोलमनै िि फ्ॉयड ने भी उल्लेखनीय योगदान ु वदया ह।ै 1.6 लिव लिमनोलवच व्यगोत्स्की(1896-1934) व्यगोत्स्की, रूिी मनोिज्ञै ावनक थे। उन्होंने िज्ञानात्मक एि िमावजक िास्कवतक िबि के बीच एक ृ ां ां ां ां ां कडी

जोडने का प्रयिा वकया। उनके अनिार बच्चे ज्ञान का वनमाभर् स्िय करते ह ैं और इिके वलए भाषा ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 6 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 का विकिा ,िामावजक विकिा, िास्कवतक विकिा, शारीररक विकिा िभी उत्तरदाई होते ह।ैं व्यगोत्स्की ृ ां के अनिार बच्चों म ें विकिा में भाषा ि िामावजक विचार कारक विशेष भवमका वनभात े ह,ैं इिवलए ु ू उनके इि िज्ञानात्मक विकिा के विद्ात को िामावजक- िास्कवतक विद्ात भी कहा जाता ह।ै उनके ृ ां ां ां ां अनिार बच्चों के अतर व्यवक्तक िामावजक पररवस्थती ि िास्तविक विकिा के स्तर जहा तक बच्चे ु ां ां वबना वकिी मदद के स्िय कायभ कर िकते ह।ैं बच्चों के अतर व्यवक्तक िामावजक पररवस्थती ि िास्तविक ां ां विकिा के मध्य अतर होता ह,ै इिी अतर को उन्होंने समीपस्थ शवकास का क्षेत्र, कहा ह।ै जैि े- जैि े ां ां बच्चों की क्षमता ,ि अभ्यिा बढ़ता जाता ह ै वनदशे न की िख्या भी कम होती चली जाती ह।ै उनके ां अनिार बच्चे ज्ञान, व्यवक्तयों , िातिारर् एि िमदाय ि प्राप्त करता ह।ै उनके शब्दों म-ें

Quotes detected: **0.02%** id: **30**

" हमारे स्िय का ु ु ां ां विकिा, दिरों के िारा होता ह"

ै उनके अनिार जवै िक कारक मानि विकिा में कम वकत आिारभत ु ु ू ां ू भवमका वनभाते ह,ैं जबवक िामावजक कारक उच्चतर िज्ञानात्मक प्रवक्रयाओ जैि े भाषा, वचतन, स्मवत ृ ू ां ां ां आवद के विकिा में महत्िपर्भ भवमका वनभाते ह ैं । ू ू इिका िीिा मतलब यह ह ै वक जहा पर बच्चे कविन काम को खद नहीं कर पाते, िहा ि बडे और कशल ु ु ां ां व्यस्क व्यवक्तयों ि मदद लेते ह ैं और िही कायभ आिानी ि िपावदत कर लेते ह।ैं उनके अनिार बच्चों के ु ां के िमीपस्थ विकिा का क्षेत्र का दायरा बढ़ाने के वलए अथभपर् भ वक्रयाओ पर अविक ि अविक बल वदया ू ां जाना चावहए। उनके अनिार जब बच्चे अपने ि वकिी बडे अथिा विशषे ज्ञ के िाथ वमलकर िीखन े का ु प्रयिा करते ह ैं ,तो उनकी िमस्या वनिारर् क्षमता ि वनयोजन क्षमता अविक बढ़ जाती ह।ै उनके ज्ञान का दायरा जयादा विस्तत हो जाता ह ै

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.doubtnut.com/qna/648931270 + 2 resources! id: **31**

विद्यालयों म ें व्यवक्तक विवभन्नता के स्तर को ध्यान म ें रखते हुए बच्चों ु ृ की वक्रयात्मक िहभावगता पर जोर वदया जाता ह ै । व्यगोत्स्की ने स्कलों म ें विद्यालयों में सहायता प्राप्त ू खोज शवशि तथा साथी सगी के सहयोग ि िमीपस्थ विकिा का क्षेत्र

को और भी विकवित करने की ं आिश्यकता पर ध्यान कें वित करने के वलए कहा ह।ै उनके अनिार बच्चों में गवर्त, िावहत्य, िामावजक ु विज्ञान, विज्ञान जैि े ि महत्िपर्भ विषयों ि िबवित वशक्षकों को यह िलाह दी ह ै वक इन विषयों के ू ां ां माध्यम ि ि े बच्चों की को नई िचनाए प्रदान करें, उनकी वजज्ञािा को िशोवित ि पररमावजतभ करके ू ां ां उनकी िज्ञानात्मक वक्रयाओ को और भी बढ़ाए, वजििे बच्चे अपनी िस्कवत ि िमाज दोनों ि जडे। ृ ु ां ां ां ां व्यगोत्स्की के अनिार उनके अनिार एक वशक्षक चार या पाच छात्रों का िमह एक िहयोगी अविगम ु ु ू ां िमह बनाकर एक विषय या पररच्छेद पर बात करें, एक दिरे को उिका िाराश बताए, व्याख्या करें, ू ां ां ू स्पष्टीकरर् करें ि पि भ अनमान लगाने का भी काम करें इि पारस्पररक वशक्षर् ि बच्चों के िमीपस्थ ू ु विकिा का क्षेत्र और भी विकवित वकया जा िकता ह।ै उन्ह ें ज्ञात ि अज्ञात की ओर ले जाने का कायभ करें। व्यगोत्स्की न े व्यवक्तक वभन्नता,

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **32**

छात्रों की िवक्रय िहभावगता, के अनिार छात्रों की िमस्या को िलझाने ु ु ि वनयोजन करन े की शवक्त को और बढ़ाने ि वशक्षर् प्रवक्रया को और भी अथभपर् भ बनाने का प्रयिा वकया ू ह।ै इि तरह की के िहयोगात्मक अध्ययन ि छात्र का िामावजक अतवक्रया का दायरा बढ़ जाता ह।ै ां वशक्षक या कोई भी बडा व्यवक्त उिके वलए एक मॉडल के रूप म ें काम करता ह ै और उनका िमथभन छात्रों के कायभ वनष्पादन को और अविक िफल बनाता ह।ै िमीपस्थ विकिा का क्षेत्र क

े वलए उनका मत ह ै वक उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 7 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 बच्चों में पहले ि ही क्रमबद् ,िगत, उत्तम ि स्ित: प्रवतभत िप्रत्यय होते ह।ैं जब भी अपने ि बडे ि ां ां कशल व्यवक्तयों के िपकभ म ें जयादा िमय वबताते ह ैं तो िही विचार तकभ पर्,भ क्रमबद् तरीके ि पर्भ होते ह।ैं ु ू ू ां 1962 में व्यगोत्स्की ने बच्चों में वचतन ि िामावजक िचार के माध्यम ि स्िय को वनयवत्रत करके वनजी ां ां ां ां िभाषर् का उपयोग करते पाया। उनके विचार ि यह एक महत्िपर्भ िािन के रूप म ें प्रयोग वकया जाता ू ां ह।ै बच्चों के िभी मानविक कायभ, वचतन ि भाषा स्ितत्र रूप ि ही विकवित होते ह।ैं बाहरी दवनया के ां ां ु िपकभ म ें आने के बाद िह स्िय ि बातचीत करना शरू कर दते े ह।ैं िह अपनी बात को स्पष्ट बोलन े ु ां ां लगते ह,ैं स्िय कायभ भी करने लगते ह ैं ,और उन की आतररक िभाषर् की वक्रया भी विकवित होने लगती ां ां ां ह।ै इिी के िदभ भ में व्यगोत्स्की का कहना ह ै वक जो बच्चे स्िय ि अविक वनजी िभाषर् करते ह,ैं ां ां ां िामावजक रुप ि अविक दक्ष होते ह।ैं 1.7 नोम चाम्िकी (1935) नोम चोमस्की अमरे रकी भाषा िज्ञै ावनक ह।ै उन्होंने ने 1957 में विथेवटक स्रक्चर नामक ग्रथ वलखा ि ां ां उनके व्याकरवर्क विद्ात रूपातरर् वनष्पादन व्याकरर् के नाम ि जाना जाता ह।ै 1965 में आस्पेक्ट ां ां ऑफ द थ्योरी ऑफ विटेक्ि नामक ग्रथ में िशोवित व्याकरर् को दबारा प्रस्तत वकया गया। भाषा के ु ां ां ां ु वलए चोमस्की का कहना ह ै वक भाषा के व्यिहार की क्षमता मनष्य की जन्मजात प्रिवत्त ह ै ।मानि ृ ु मवस्तष्क की अतवनभवहत क्षमता ह ै ।उनके अनिार मन भाषा के तत्िों को िशोवित करके वनयमों म ें बिाता ु ां ां ां ह,ै वनिाभररत करता ह,ै और उिके पश्चात हम उि भाषा को अवजतभ करते ह।ैं चोमस्

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **33**

की भाषा की िजनात्मकता पर विशेष बल दते े ह ैं बच्चे के जन्म के बाद ि ही िह िीखने की प्रिवत्त की ओर बढ़ने ृ ृ लगता ह ै भाषा क

ो िनता ह।ै मन के अदर वनयमों को अवकत करता

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **34**

जाता ह ै ।इन्हीं अवकत वकए हए ु ु ां ां ां अथिा आत्मिात वकए हए वनयमों को ध्यान में रखते हए िह िाक्यों क

ा अथभ वनकलता ह ै । चोमस्की इन ु ु आत्मिात वकए हए ग ्रों को आतररक व्याकरर् कहते ह।ैं उनके अनिार आतररक वनयमों को व्याकरर् ु ु ु ां ां के क्रवमक वनयमों के िमच्य

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **35**

के रूप म ें वदखाना आिश्यक ह।ै भाषा म ें िाक्यों की िख्या िाक्य अनत ह,ै ु ां ां परत उनकी िरचना के िीिन प्रयोग का कोई

अत नहीं ह।ै इिवलए भाषा िज्ञै ावनक उन िभी िीिनो को ु ां ां ां प्रवक्रयाओ को िमझने का प्रयाि करते ह ैं वजनिे िाक्य का जन्म होता ह।ै चोमस्की नें 3 वनयम वनिाभररत ां वकए 1. भाषा के िामान्य विद्ात को िमझना ि िीिभभ ौवमक व्याकरर् का वनमाभर् करना। ां 2. िाक्य की वनमाभर् ि उिकी ज्ञान के विकाि की प्रवक्रया को िमझना। 3. अचेतन ज्ञान का पता लगाने का प्रयाि करना वजििे की कोई भी व्यवक्त अपनी भाषा का शद् ु ि िफल प्रयोग करता ह।ै चॉम्स्की के अनिार प्रेक्षर् की पयाभप्तता , िर्नभ की पयाभप्तता इन दोनों ग ्रों

Plagiarism detected: **0.05%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 3 resources! id: **36**

के माध्यम ि िक्ता के बोलने ु ु की क्षमता का िर्नभ भी हो जाता ह ै । इि मॉडल के अनिार िक्ता के मन की प्रवक्रया , भाषा अजनभ ि ु भाषा- दोषो का विश्लेषर् एक क्रमबद् तरीके ि होता ह,ै ज

ै- शब्द ,दो शब्द, िाक्य आवद ।छोटे बच्चे उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 8 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 भी भाषा िीखने के वलए एक क्रम के अनिार चलत े ह।ैं 5 या 6 िषभ तक ि अपनी मातभाषा को परे ृ ु ू अविकार के िाथ बोलन े ि िमझने लगते ह।ैं भाषा विज्ञान के आिार पर ि विश्लेषर् की पयाभप्तता का चरर् भी परा कर लेता ह।ै इि प्रकार यह प्रवक्रया तीन ग ्रों के िाथ िपर्भ होती ह ै इि िपर् भ प्रवक्रया के ू ु ू ू ां ां वलए दो तरह के कारक भी बताए गए ह-ै जहा व्याकरर् की दक्षता विशषे ह ै ,िही ग्राह्य व्यिहार का ां काफी महत्िपर् भ योगदान रहता ह।ै 1965 की उनके ग्रथ में तीन तरह के वनयमों की कल्पना की गई ह ै ू ां पदबि रचना वनयम ां रुपातरर् वनयम ां स्िवनमक वनयमपदबि ां भाषा िाक्यों का िमच्चय ह,ै और इि ध्यान में रखकर उन्होंने रूपातरर् प्रजनक व्याकरर् की रचना की ु ां वजिमें िाक्य विन्याि के दो भाग होते ह ैं -आिार िघटक \मल्य िाक रुपातर मल िाक्य की िरचना \ ् ू ू ां ां ां आतररक िरचना को जन्म दते ा ह ै और रुपातर घटक उिके बाहरी िरचना म ें पररितभन लाता ह-ै जैि े ां ां ां ां मोहन ने खाना खाया। (बीज िाक्य) मोहन के िारा खाना खाया गया। (रुपातररत िाक्य) ां रूपातरर् की िारर्ा म ें गहन िरचना और बाह्य िरचना की िारर्ा को व्यक्त वकया गया ह।ै चॉम्स्की के ां ां ां प्रारूप के अतगतभ िभी रूपातरर् वनयमों म ें व्याकरर् म ें अथभ का गया घटक जोडा ह।ै ां ां रचना वनयम के अनिार िही ि स्िीकार करने योग्य िाक्य को घटकों में वदखाते ह।ैं िाक्य िज्ञा पदबि ु ां ां ,वक्रयापद पदबि जैि े- गीता बाजार गई। इि िाक्य में िज्ञा पदबि, िज्ञा की ओर ध्यान कें वित करता ह-ै ां ां ां ां गीता ि वक्रया पदबि िज्ञा ि वक्रया पदबि को वदखाता ह-ै बाजार गई। यहा अलग-अलग वक्रयाओ के ां ां ां ां ां रूप को वदखा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 5 resources! id: **37**

या जाता ह।ै रूपातरर् वनयम के अनिार हम िाच्य वक्रया या नावभकीय बीज िाक्यों का ु ां प्रयोग करते ह ैं वजिमें िकरमक वक्रया का प्रयोग ह

ोता ह।ै रूप स्िवनवमक- इि वनयम के अनिार वक्रया के ु अलािा हम उपरोक्त दोनों वनयमों के बाद िामान्य िाक्य के उच्चारर् का रूप पररिवतभत

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ id: **38**

हो जाता ह।ै िाक्य विन्याि के तत्िों के अनिार बाह े िरचना पदबि वनयम िाक्य का अथभ ि स्िरूप िभी िाक्य ु ां ां की िरचन

ा आतररक का रुप बदल जात े ह।ैं 1965 के वनयमों का आिार पदबि रचना वनयम और ां ां ां शब्दािली ह ै यह िाक्य म ें गलत प्रयोग को रोकने का कायभ भी करती ह।ै 1965 के मॉडल म ें िमान बाह्य रूप विवभन्न आतररक िरचना , बाह्य िरचना के विकाि पर िरचनात्मक वस्थवत को स्पष्ट वकया गया ह।ै ां ां ां ां उनके मानक विद्ात की व्यिस्था को स्थावपत करने के बाद भी रूपातरर् विषयों में अथभ पररितभन होता ां ां रहता ह।ै इिके वलए उन्होंने विस्ताररत मानक विद्ात भी प्रस्तत वकया वजिमें रूपातरर् के िारा प्राप्त ु ां ां बाहरी िरचना को भी अथभ वनर्यभ के वलए स्िीकार वकया गया ह ै ।1972 के बाद विद्ात को

िशोवित ां ां ां विस्ताररत मानक विद्ात कहा गया ह ै ।इिमें िाक्य विन्यि में बाध्यता और अिशेष विद्ात का विकाि ां ां वकया गया ,वजिके अनिार जब िाक्य का कोई अिंयि अपने स्थान ि हटकर दिरे

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **39**

स्थान पर चला जाए ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 9 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 तो मल स्थान पर क

ोई अिंयि छोड दते ा ह,ै वजिे उिका िबि हो। 1981 में इि िार व्याकरर् की ू ां ां िंज्ञा दी गई थी। ां 1981 में लेक्चर इन गिनभमटें एड बाइवडग नामक अपनी पस्तक में उन्होंने अपने नए उपागम की घोष्रा ु ां ां ां की वजिमें िंचरर् में भी बदलाि आते रहते ह ैं ,क्योंवक िारी भाषाई िंरचनाओ को एक ही वनयम में बिा ां ां ां ां पाना बहत ही मवश्कल ह ै । िािभभ ौवमक व्याकरर् के उद्देश्े य ि हट कर उन वनयमों को अमतभ स्तर पर ु ु ू विखवडत करके दखे ा जा िकता ह।ै ।इिवलए उन्होंने भाषा के आतररक स्तर , िाक्य विन्यि के वनयम के ां ां अनरूप बाह्य िंरचना में बदलाि को अनशािन और अनबि का विद्ात कहा ह।ै इिमें वनयमों के ु ु ु ां ां ां व्याकरर् की उिकी जगह विद्ातों िंयिस्था की व्यिस्था प्रवक्रया को रखते हए उप

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 3 resources! id: **40**

का प्रयोग वकया ह ै ु ां इि अिस्था म ें व्याकरर् के वनयमों की जगह ऊप व्यिस्थाओ का विद्ातों की प्रिवत्त का प्रयोग

वकया ह ै ृ ां ां जो वक िािभभ ौम व्याकरर् के वनमाभर् म ें महत्िपर्भ भवमका वनभाने का कायभ करती ह।ै चॉम्स्की के अनिार ू ू ु भाषाई िािभभ ौम तत्ि को लक्ष्य करके िािभभ ौम व्याकरवर्क िंरचना को स्थावपत करने का प्रयाि वकया ां गया ।िािभभ ौम व्याकरर् िार की िभी िमाज भाषा का प्रयोग करते ह।ैं ि े िभी भाषा का व्यिहार भी ां करते ह ैं िब की भाषा िीखने िमझने ि व्यिहार करने की िजह ह,ै इिमें बहत िारे िािभभ ौम तत्ि ु वमलते ह ैं जैि े िभी भाषाओ में िंज्ञा, वक्रया ,िंिनभ ाम आवद शब्द प्रयोग में आते ह।ैं यह िभी तत्ि बोलन े ां ां की क्षमता, अवभव्यवक्त ,िहनशवक्त , िजन शवक्त को प्रदवशतभ करते ह।ैं मानिीय अवभव्यवक्त के वलए ृ िगवि

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 7 resources! id: **41**

त िाक्य, जो व्याकरर् के अनरूप भी हो उन्ह ें ग्रहर् करना िभि हो ,उन्ह ें अध्ययन का आिार ु ां ां बनाया जाता ह।ै चोमस्की नें भाषा िीखन े और उिके प्रयोग क

े िदभभ में यह कहा ह ै वक मानि वकिी ां भाषा को िीखने के बाद नए नए विचारों ि िाक्यों का िजन स्िय कर लेता ह।ै उन्होंने भाषा

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **42**

विज्ञान को ृ ां मनोविज्ञान ि िबद् माना ह ै उनके अनिार ि भाषा म ें मनिोज्ञै ावनक अध्ययन के िाथ िज्ञानात्मक ु ां ां मनोविज्ञान

भी िहायक होगा। 1.8 स्टीफन क्राशन (1941) स्टीफन क्राशन का का जन्म 1941 म ें वशकागो म ें हआ ।उन्होंने इवथयोवपया म ें शावत िेना म ें 2 िष भ कायभ ु ां वकया जहा उन्होंने िाििीं ग्रडे को अग्रेजी ि

Plagiarism detected: **0.04%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… + 2 resources! id: **43**

विज्ञान की वशक्षा प्रदान की। कै वलफोवनभया विश्वविद्यालय ि ां ां उन्होंने भाषा विज्ञान म ें पीएचडी प्राप्त की ।उिके पश्चात , ितभमान म ें ि े िाउथ कै वलफोवनभया यवनिविभटी में ू भाषा विज्ञान क

े प्रोफे िर

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **44**

के रूप म ें कायभरत हैं। उन्होंने लगभग 350 पस्तकें , लेख वलख े ि प्रकावशत ु वकए ह।ैं िह अपनी वितीय भाषा अविगम विद्ात के वलए जाने जाते ह।ैं वितीय भाषा के तौर पर िीखने ां की प्रवक्रया ि अविगम पर बल दते े हए उन्होंने एक पस्तक भी वलखी ह ै िकेड लैंग्िेज एक्यजीशन । ु ु ू ां अमरे रका म ें यह विद्ात वितीय भाषा के तौर पर अग्रेजी, जानी जाती ह

ै , िज्ञै ावनक िाक्षों की कमी और ां ां व्याकरर् पर अविक बल ना दने े की िजह ि इि बहत आलोचनाओ ि भी गजरना पडा ह।ै उनका ु ु ां यह विद्ात पाच अलग-अलग विद्ातों ि जडकर बना ह।ै इिम ें भाषाई दक्षता प्राप्त करने के वलए ु ां ां ां अविगम ि ग्राह्यता के बीच में िबि स्थावपत करने पर बल वदया गया ह।ै क्राशन के वित्ि भाषा ग्राह्यता ां ां िबिी विद्ात म ें पाच प्रमख विद्ातों का िमािशे ह।ै वजि

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **45**

का प्रयोग भाषा वशक्षर् म ें वकया जा रहा ह।ै ु ां ां ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 10 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 प्राकवतक क्रम विद्ात इिके अतगतभ िीखने िाला व्यवक्त वितीय भाषा को पिवभ नयोवजत िंरचनात्मक ृ ू ां ां ां आिार पर ही ग्रहर् करता ह,ै वजिम ें ि कछ तो बहत ही जल्दी ग्रहर् कर वलए जाते ह।ैं प्राकवतक क्रम ु ृ ु िकल्पना के अतगभत छात्र त्रवट को िािार करते रहते ह।ैं जब तक की िह िंरचनात्मक तौर पर भाषा को ु ु ां ां ां िही

ढग ि ग्रहर् नहीं करने लगते ह।ैं छात्रों के िारा वशक्षर् अविगम प्रवक्रया में ििार लाने के वलए ु ां भाषा िरचना के व्यिहार के िमय उनकी गलवतयों को ििारते हए िही ज्ञान वदया जाए, परत यहा यह ु ु ु ां ां ां बात ध्यान दने े योग्य ह ै वक

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **46**

हम भाषा के क्रम को नहीं बदलते हैं। क्राशन के विचार ि हम वबना वकिी चेतन शील प्रयाि के भाषा को वबना वकिी मवश्कल के आराम ि प्रस्तत कर िकते ह ैं ,अथाि बोल ु ु िकते ह।ैं इिके वलए उन्होंने पायक्रम म ें िबवित अध्याय अथाि पररवस्थवत का प्रयोग करन

े िमय यह ् ां ां ध्यान रख ें वक उनम ें िशािन वकया गया हो। ां इनके वितीय भाषा ग्राह्यता में मॉवनटर थ्योरी िबिे महत्िपर् भ ह।ै उनके अनिार वितीय भाषा म ें भाषाई ू ु कौशल के विकाि के वलए ग्राह्यता , अचेतन ि स्ि वक्रया िारा होती ह।ै यह पररकल्पना तीन प्रकार के मॉवनटर उपयोगकताभओ को ध्यान म ें रखता ह:ै (1) अवत-वनगरानी िाले उपयोगकताभ, यानी, जो छात्र ि े ां अपनी िीखा का उपयोग करके हर िाक्य का उत्पादन करते ह ैं क्षमता एिे बोलने िालों को वहचवकचाहट ि बोलना वनवश्चत ह ै और कोई प्रिाह नहीं ह ै (2) अडर मॉवनटर ां उपयोगकताभ, अन्य चरम, यानी, ि े िक्ताओ जो िास्ति म ें शद्ता की परिाह नहीं करत े ह,ैं के िल अथभ ह।ैं ु ां ये स्पीकर आमतौर पर बहत ही अच्छे ह ैं अपनी मातभाषा म ें भी बातनी ह ै अवत-वनगरानी िाले ु ृ ू उपयोगकताभओ की तलना म ें अविक गलती करते ह,ैं ि ु ां भी अविक अथभ व्यक्त करेंग े (3) इष्टतम मॉवनटर उपयोगकताभ, या अविग्रहर्कताभ जो के िल मॉवनटर का उपयोग करने का प्रबिन करते ह,ैं िीखना / अविग्रहर् भदे भाि- क्रस्न और अन्य एिएलए विशषे ज्ञों के ां अनिार (क्रोशने और टेरेल 1 9 83; वलवटलिड, 1 9 84; एवलि, 1 9 85)

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **47**

छात्रों की दिरी भाषा में ु ु ू कौशल विकवित करने के दो अलग-अलग तरीके ह:ैं अविगम और अविग्रहर्। िीखना ह ै एक जागरूक प्रवक्रया जो भाषा (िरचना) के रूप म ें छात्रों का ध्यान

कें वित करती ह।ै अविग्रहर्, एिी प्रवक्रया ह ै वजिके ां िारा हमने अपनी मातभाषा अवजतभ की, और जो प्रवतवनवित्ि करता ह ै अचेतन गवतविवि वजिके िारा ृ हम नई भाषा का आतररककरर् करते ह,ैं िदशे पर जोर दते े हए (अथभ) अविग्रहर् की िाविा के बजाय ु ु ां ां व्याकरर् के वनयम या उपयोग के वनयमों को पढ़ाते हए कक्षाओ म ें अग्रेजी; फलस्िरूप, हम उि प्रकार के ु ां ां गवतविवियों को बदलने के वलए आिश्यक ह ैं जो हम कक्षा म ें करते ह ैं छात्रों को एक िटीक, स्ित: और लबी-लबी दिरी भाषा विकवित करने म ें िहायता करने के वलए आदशे िािादात्मक भाषा वशक्षर् में ां ां ां ू कक्षा म ें वशक्षकों िारा उपयोग की जाने िाली तकनीकों म ें ििार हआ ह ै इनपट हाइपोथीवि कशने के ु ु ु वलए, इनपट पररकल्पना उनकी पाच िािारर्ाओ म ें िबिे महत्िपर् भ ह।ै उन्होंने कहा वक लोगों का ु ू ां ां अविग्रहर् िदशे ों को िमझकर भाषाए-अथाभत, जो िमझने योग्य इनपट को प्राप्त करते ह।ैं हम इि इि ु ां ां तरह का िर्नभ करें: वकिी व्यवक्त को ड्राइि करने का तरीका जानने म ें मदद के वलए, हम ें पहले उि वदखाए जाने चावहए वक िह कै ि करना ह ै होंग।े उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 11 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 प्रभावित वफल्टर हाइपोथीवि एक िदशे को िमझना भाषा अविग्रहर् को आश्वस्त करने के वलए पयाभप्त ां नहीं ह;ै एक को िदशे के वलए खला होना चावहए वाििे वक यह भाषा अविग्रहर् वडिाइि (एलएडी) ु ां (पहच) तक पहचता ह ै िभी इनपट लैड तक नहीं पहचता ह;ै कहीं कहीं िाथ वजि तरह ि इि वफल्टडभ ु ु ु ु ां ां ां वकया जाता ह,ै और इिके के िल एक वहस्िे का अविग्रहर् वकया जाता ह।ै यह वफल्टररग प्रवक्रया ां उत्तवे जत वफल्टर म ें होती ह ै तनािपर् भ या नकारात्मक िातािरर् म ें ह,ैं इनपट उपलब्ि कराने के हमारे ू ु प्रयाि बेकार होंग।े 1.9 िारांश बीििीं शताब्दी, भाषा के िरचनात्मक, मनोिादी भाषा विज्ञान के विकाि का काल रहा ह।ै पाश्चात्य ां दशे ों म ें बहत ि भाषा िज्ञै ावनकों ने भाषा िरचना, व्याकरर् िबिी अपने-अपने विचार प्रस्तत वकए ह।ैं ु ु ां ां ां इि पाि के माध्यम ि आप जॉन डीिी की रचनािाद ि पररवचत हए तथा उि उनके अनिार अनभि ु ु ु

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **48**

छात्र कें वित वशक्षा के विषय में आपने जानकारी प्राप्त की ।प्याज े की िज्ञानात्मक विकाि की अिस्था के ां माध्यम ि हमने बालकों की शारीररक, मानविक ि िज्ञानात्मक पक्ष को विशेष बल वदया ह।ै इिके िाथ ां ही व्यगोत्स्की के अनिार बच्चों के िज्ञान

ात्मक विकाि के िाथ ही उनमें िामावजक विचार ि भाषा के ु ां महत्िपर् भ योगदान पर बल दते े हए िमीपस्थ विकाि का क्षेत्र की िािारर्ा का विकाि वकया गया। ु ू उिके पश्चात व्यगोत्स्की, व्याकरर् रूपातरर् –वनष्पादन ि िािभभ ौवमक व्याकरर् के िप्रत्यय के माध्यम ां ां ि व्याकरर् िबिी ने विद्ातों का प्रवतपादन वकया गया। पाि के अत में स्टीफन क्राशन के वितीय ां ां ां ां भाषा अजनभ विद्ात ि उिकी प्रवक्रया को िमझने की पश्चात आप भाषा के विचारों एि भाषा विज्ञान के ां ां विकािात्मक रुप ि पररवचत हो गए होंग।े 1.10 शब्दािली 1. िज्ञानात्मक - मवस्तष्क ि िबवित भाग अथाि पक्ष ं ां ां 2. िप्रत्यय- िामान्य विचार या िारर्ा, िकल्पना ं ां 3. अतहनिहित- आतररक अथाि स्िय के अदर वनवहत ं ां ां ां 4. िािर्भौम- विश्व व्यापकता , िाविकभ ता अभ्यास प्रश्न 1. जॉन डीिी__________वशक्षाशास्त्री थे। (रूिी \ अमरे रकी \ अवफ्की \फ्रािीिी) ां 2. चॉम्स्की ने_________विद्ात का प्रवतपादन वकया । (रूपातरर् वनष्पादन \ िज्ञानात्मक \ ां ां ां िािदे नात्मक \ मनोिैज्ञावनक) ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 12 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3. स्टीफन क्राशन ने _______भाषा िबवित ग्राह्यता का वनयम वदया। (प्रथम \ ततीय \वितीय \ ृ ां ां उपरोक्त िभी) 4. वपयाज े के ________विकाि में चार अिस्थाए ह ैं । (िज्ञानात्मक\

भाषा-शै ावनक\ मनोविज्ञान ां ां \िमावजक िस्कवतक वनयम) ृ ां 5. जॉन डिीी ने बच्चों को वशक्षा दते े िमय_____पर विशेष बल वदया ह।ै (अनभि \योग्यता \ ु नीीन तथ्य \ उपरोक्त िभी) 1.11 अभ्यिा प्रश्नों के उत्तर 1. अमरे रकी 2. रूपातरर् वनष्पादन ां 3. वितीय 4. िज्ञानात्मक ां 5. उपरोक्त िभी 1.12 िदां भ भ ग्रांथ िची ू 1. डॉक्टर िमाभ, िरेिं (2005) पाश्चात्य दिनश की समकािीन प्रवशिया ,मध्यप्रदशे वहदी ग्रथ ृ ु ं ां ां अकादमी भोपाल 2. विह, अरुर् कमार(2003 , 2010) शिक्षा मनोशवज्ञान, भारती भिन पवब्लशिभ एड वडस्रीब्यटिभ ु ू ां ां 3. डॉक्टर वत्रपािी, शावलग्राम (2006) शिक्षा मनोशवज्ञान ,कवनष्क पवब्लशिभ वडस्रीब्यटिभ ू 4. 4.डॉक्टर विह, ओपी(2008) शिक्षा दिनश एव शिक्षा िस्त्री ,शारदा पस्तक भिन इलाहाबाद ु ां ं 5. वडिी, जॉन, अनिादक लाडली मोहन माथर (2004) शिक्षा और िोकतत्र ,श्यामवबहारी राय ु ु ं िारा ग्रथ वशल्पी इवडया प्राइिटे वलवमटेड ां ां 6. िहायक िामग्री Ibrahim Abukhattala1 English Language Teaching; Vol. 6, No. 1; 2013 ISSN 1916-4742 E-ISSN 1916-4750 1.13 धनबात्मिक प्रश्न ां 1. वपयाज े के िज्ञानात्मक विकाि विद्ात का शवै क्षक आशय का िनिभ करें? ां ां 2. वशक्षा म ें रचनाािाद के पररपेक्ष में जॉन डिीी के विचार की िविेचे ना कीवजए। 3. चॉम्स्की के रूपातरर् वनष्पादन विद्ात की व्याख्या कीवजए । ां ां 4. वलि व्यगोत्स्की के िामावजक - िस्कवतक विद्ात का िनिभ करें। ृ ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 13 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 2- भाषा अधिगम के धिधभन्न भारतीय धिद्ांत 2.1 प्रस्तािाना 2.2 उद्दश्े य 2.3 भारतीय दशभन ि वशक्षा दशभन 2.4 प्रवतपावदत विद्ात ां 2.5 भतभहरी िारा प्रवतपावदत विद्ात ृ ां 2.6 न्याय दशभन एि भाषा वशक्षर् ां 2.7 मीमािा दशभन एि वशक्षर् ां ां 2.8 िाराश ां 2.9 शब्दाििली 2.10 अभ्यिा प्रश्नों के उत्तर 2.11 िदभभ ग्रथ िची ू ां ां 2.12 वनबात्मिक प्रश्न ां 2.1 प्रस्तावना आप इि इकाई में भारतीय दशनभ के विषय में जानकारी प्राप्त करेंग।े आप जानत े ह ैं वक ििर के िभी दशे ां अलग अलग भौगोवलक पररवस्थवत, वनिावियों की जीिन पद्वत, िावहत्य, कला, विज्ञान, दशनभ , िमाज व्यिस्था को दशाभते ह।ैं िमाज के िव्यिस्था के िहा फल स्िरुप के नागररकों को जब ििअर वमलता ह ै ु ां वक िह जीिन ि जन्म ि लेकर मत्य तक घवटत होने िाली घटनाओ नए अनभि, नीवतयों, वनयमों के ृ ु ु ां वनष्कषभ पर पहचता ह,ै इि ररश्ते ि दशनभ , जीिन का आिश्यक पक्ष ह।ै हर व्यवक्त के जीिन का कोई न ु ां कोई दशनभ जरूर होता ह,ै चाह े उिके िबि म ें व्यवक्त िचेतन हो या ना हो। नई पररवस्थवतयों में वनष्कषभ ां ां वनकालना ,ित्य का अन्िषे र् करना, ित्य ि तथ्य का अन्िषे र् करना उिका स्िभाि ह।ै इि तरह हम पाते ह ैं हर व्यवक्त अपने जीिन दशनभ के अनरूप ििर के प्रवत अपनी एक अलग िारर्ा बनाते हए ु ु ां जीिन यापन करता ह।ै यहा हम इि पाि म ें भारतीय दशनभ के कछ पक्षों पर ध्यान दगें ,े िाथ ही वशक्षा ु ां दशनभ के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंग।े इिके अलािा भारतीय दशनभ की शाखाओ न्याय, मीमािा ि व्याकरर् ां ां के पररपेक्ष्य म ें पाववर्न, भतभहरी के विषय में पढ़ेंग।े ृ 2.2 उद्दश्े य प्रस्तत इकाई के अध्ययन पश्चात आप- ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 14 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1. भारतीय दशनभ की ििअारर्ा ि अिगत हो पाएग े । ां 2. भारतीय दशनभ ि वशक्षा दशनभ के मध्य के िबि को िमझ िकें ग े । ां ां 3. भारतीय दशनभ के अतगतभ आने िाल े षडदशनभ के विषय में जानकारी प्राप्त करेंग े । ् ां 4. पाववर्न के व्याकरर् के विद्ात ि प्रवतहारी िारा प्रवतपावदत विद्ात ि अिगत हो िकें ग े । ां ां 5. न्याय दशनभ ि मीमाशा दशनभ के अध्ययन िारा प्राचीन भारतीय वशक्षा प्रर्ाली का अनमान ु ां लगा िकें ग े । 2.3 भारतीय दशभन व धशक्षा दशभन दशनभ शब्द की उत्पवत्त दृश िात ि हई ह ै वजिका अथभ ह ै िम्यक रूप ि दखे ना , शजसे दखे ा जाए अथाभत ु ृ ु ज्ञान प्राप्त शकया जाए । ज्ञान प्राप्त करने के बहत ि ििान ह ै जैि े- प्रत्यक्ष, उपमान, अनमान लेवकन िभी ु ु में प्रमख ह,ै प्रत्यक्ष जो दखे ा जाए समझा जाए िह दशनभ ह ै इि तरह हम पाते ह ैं वक दशनभ शास्त्र म ें िभी ु विचाारिाराए जो यवक्तयों की किौटी पर प्रमावर्त की जाती ह,ैं िभी िवम्मवलत ह।ैं आज दशनभ का ु ां पाश्चात्य अथभ ह-ै वफलॉिफी जो वक दो यनानी शब्दों ि जडकर बना ह ै वफलो वजिका अथभ ह ै प्रेम तथा ू ु िोवफया वजिका अथभ ह ै विस्डम या ज्ञान, इि प्रकार वफलॉस्फी शब्द का अथभ ह-ै ज्ञान से प्रेम ।भारतीय दशनभ में अितोष ि अतवप्त ि दशनभ का उद्गम होता ह ै । मानि अपने अितष्ट ितभमान म ें कछ नया प्राप्त ृ ु ु ां ां करने के वलए खोज करता रहता ह ै यही िोच ईश्वर, जगत, आत्मा आवद को िमझने, जानने की इच्छा म ें भी वदखाई दते ा ह।ै यहा दशनभ व्यिवस्थत ि क्रमबद् तरीके ि वचतन करने की कला ह ै ,जो वक तावकभ क ां ां दृवष्टकोर् के िाथ जीिन के िमग्र िस्तओ पर विचार करती ह,ै अतः हम कह िकते ह ैं वक िमस्याओ का ु ां ां वचतन दशनभ कहलाता ह।ै भारतीय दशनभ में वचतन मनन के िाथ िदे ों को बहत महत्ि वदया गया ह।ै ु ां ां भारतीय दशनभ की कछ मल विशषे ताए ह ैं ,जो वनम्नवलवखत ह-ैं ु ू ां 1. चािाभक दशनभ को छोडकर िभी दशनभ पनजन्भ म के विद्ात पर विश्वाि करते ह।ैं मत्य ि शरीर ृ ु ु ां िमाप्त हो जाता ह ै और आत्मा एक शरीर के अत के बाद दिरे शरीर में प्रिशे कर जाती ह ै यहा ां ां ू यह जानना आिश्यक ह ै वक जब ज्ञान ि अज्ञान की िमावप्त हो जाती ह ै तब आत्मा बिन ि मक्त ु ां हो जाती ह।ै 2. आत्मा ज्ञाता, कताभ और भोक्ता ह।ै िह िख-दख अनभवतयों ि रवहत ह।ै भारतीय दशनभ ु ु ू ु आत्मा के अवस्तत्ि पर पर्भ विश्वाि रखता ह।ै ू 3. भारतीय दशनभ जीिन के लक्ष्य को िमझने ि परुषाथभ करने की प्रेरर्ा दते ा ह।ै ु 4. िभी दशनभ यह मानते ह ैं वक ििर दख म े ह,ै और इि दख का वनिारर् अिश्यभािी ह।ै ां ां ु ु 5. चािाभक दशनभ को छोडकर िभी दशनभ वनयम को स्िीकार करते ह,ैं शभ कमभ का शभ फल ि ु ु अशभ कम भ का अशभ फल होता ह।ै यह कमभ का वनयम ह,ै यही जगत की व्यिस्था का वनिाभरर् ु ु करती ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 15 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 6. मोक्ष का विद्ात लगभग िभी दशनभ ों में ह,ै विफभ चािाभक दशनभ इिे स्िीकार नहीं करता ह ै । ां 7. िभी दशनभ जगत की ित्यता में विश्वाि रखते ह ैं और उनके अनिार िभी कायभ वनयम और कम भ ु के अिीन ह,ै व्यिवस्थत ह,ै जगत ित्य ह,ै िह प्रकवत का पररर्ाम ह।ै ृ 8. िदे ों की प्रमावर्कता को मानना, न वक िदे ों का आिनकरर् करना ,यहा हम तकभ वितकभ ु ां ां अथि विश्लेषर् के िारा हम िदे ों को िम्मावनत मान िकत े ह।ैं

भारतीय िदिन नाहततक आहततक चािराक बौद्ध जैन तर्तत्र आधार ोराले ं ोरैहदक ग्रथों पर आधाररत ं (न्याय, िरैहिक, साख्य, ं योग ज्ञान काड पर आधाररत कमिकाड पर आधाररत ं ं मीमासा ं ोरेदात ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 16 ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **49**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 भारतीय वशक्षा िदिन - भारतीय भाषाओ म ें वशक्षा के पयाभय के रूप में ज्ञान ि विद्या शब्द को प्रयोग म ें ं लाया जाता ह,

ै वजिका अथभ है- जानना ,पता लगाना अथिा िीखना। डॉक्टर रािाकष्र् ने भारतीय दशनभ ृ के अनिार कहा है-

Quotes detected: **0.02%** id: **50**

" दशनभ यथाथभ के स्िरूप का तावकभ क िविेचे न ह।ै "

आत्मानभवत के िारा प्राप्त िित्य ु ु ू ज्ञान को आत्मिात करना ही वशक्षा दशनभ ह।ै िर जॉन ऐडम्ि के मतानिार-

Quotes detected: **0.04%** id: **51**

" वशक्षा, दशनभ का वक्रयात्मक ु पहल ह।ै यह दाशवभ नक विश्वाि का िवक्रय पहल ह ै तथा जीिन के आदशभ को िास्तविक रूप दने े का ू ू वक्रयात्मक िािन ह।ै "

उनके अनिार वशक्षा एक विमखी प्रवक्रया ह ै वजिमें एक व्यवक्तत्ि , दिरे व्यवक्तत्ि ु ु ू के विकाि म ें िािर के वलए अिर डालता ह।ै यह प्रवक्रया के िल चेतन शील , ही नहीं िरन आयोवजत भी ु ह।ै चेतना शील वशक्षक के मन म े छात्र के विकाि ि िािर का आशय रहता ह ै । वशक्षक के पाि दो ु िािन है- 1. वशक्षक के व्यवक्तत्ि का वशष्य पर िीिा प्रभाि 2.

Plagiarism detected: **0.05%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3... id: **52**

ज्ञान के विवभन्न रूपों का प्रयोग। दशनभ का िह भाग जो वशक्षा के िमस्याओ का अध्ययन करता ह,ै वशक्षा दशनभ कहलाता ह।ै ं वशक्षा दशनभ प्रयोगों पर आिाररत विज्ञान नहीं, अवपत तकभ प्रिान शास्त्र ह।ै वशक्षा दशनभ , एक वनश्चयात्मक ु विज्ञान

नहीं बवल्क वनदशे ात्मक शास्त्र ह।ै दशनभ शास्त्र ि वशक्षा शास्त्र का िंयक्त रूप ह ै , वशक्षा की ु ं िमस्याओ ि दाशवभ नक हल वनकालने का प्रयाि करता ह।ै वकिी भी शवै क्षक िमस्या का िभावित ं ं िमािान वनकालने का प्रयाि करता ह ै ।ि तभमान में जीिन यापन, वशक्षा ि कौशल में काफी अतर आ गया ं ह,ै इिवलए वशक्षा दशनभ का महत्ि भी बहत बढ़ गया ह।ै स्पेंिर के अनिार-

Quotes detected: **0.02%** id: **53**

" िास्तविक वशक्षा का ु ु िंचालन िास्तविक दशनभ ही कर िकता ह।ै "

दशनभ के िारा वशक्षा के उद्दश्े य, पाियक्रम, वशक्षर् विवि, ृ ं विद्यालय िंगिन, अनशािन आवद को वनवश्चत रुप वदया जाता ह।ै दशनभ का अध्ययन बहत ही आिश्यक ु ु ं ह ै क्योंवक इिी ि शवै क्षक दृवष्टकोर् ि वशक्षा का पथ प्रदवशतभ वकया जाता ह।ै दशनभ वशक्षर् विवि का लक्ष्य बताता ह,ै िह अनशािन का वनिाभरर् भी करता ह,ै दाशवभ नक विचार िाराओ के अनरूप अनशािन ु ु ु ं के विवभन्न रूप ि जीिन के दृवष्टकोर् के अनिार वशक्षा के उद्दश्े यों का वनिाभरर् वकया जाता ह।ै विचार, ु आिश्यकता ि आदशभ के अनरूप वशक्षा के पाियक्रम का वनिाभरर् करना उिकी िामग्री का चयन ृ ु करना,, पाि पस्तकों के वनमाभर् आवद म ें भी दशनभ आिार प्रदान करता ह।ै इि तरह पाियपस्तकों के ृ ृ ु ु निवनमाभर् म ें जीिन की मान्यताओ, आदशभ ि विद्ांत को ध्यान में रखकर दशनभ के िारा नए विचारों ि ं ं विद्ांतों का िमािेश करके पाि पस्तकों का वनमाभर् वकया जाता ह।ै हम कह िकते ह ैं वक वशक्षा दशनभ ृ ु ं वशक्षा शास्त्र की िह शाखा ह ै जो वशक्षा के उद्दश्े यों, पाियक्रमों, वशक्षर् विवियों, वशक्षा िबंवित अन्य ृ ं ं िमस्याओ के दाशवभ नक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन करता ह।ै विश्व म ें भारत का िावहत्य ं प्राचीनतम िावहत्य म ें वगना जाता ह ै ,और भाषा के िंबि में शरुआत के िके त उिी िमय ि वमल िकत े ु ं ं ं ह।ैं ऋग्िदे के मडलों के अत म ें भी यह इवगत वकया गया है- यजिदे िंवहता में यह कहा गया वक दिे ों ने ु ं ं ं ं दिे राज इि ि कहा वक हम लोगों के कथन को टकडों में कर दीवजए ताकि इि स्पष्ट ह ै वक िह जानते थे वक ु ं िाक्यों को खडों में विभावजत वकया जा िकता ह ै और भाषा िंबिी

Plagiarism detected: **0.06%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3... id: **54**

ज्ञान का भी पता था। विवभन्न ब्राह्मर् ं ं ं आरण्यक ग्रथों में भी उिके िके त वमले ह।ैं अनेक शास्त्रों, और भाषा विज्ञान की भारतीय भाषा िंबिी ं ं ं ं अध्ययन िभी दशे ों में होते रह े ह।ैं भारत म ें भाषा विज्ञान

िंबिी अध्ययन को दो िगों में रखा गया है- ं ं प्राचीन और आिवनक। प्राचीन अध्ययन का काल िवै दक ि 17िीं शताब्दी तक ह,ै जबवक आिवनक ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 17 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अध्ययन का काल 18 िीं शताब्दी के मध्य ि शरु होता ह।ै भारतीय िदे ात भारतीय दशनभ में िदे ाग के 6 ु ं ं िािन मान े गए ह,ैं 6 िदे ाग माने गए हैं , कल्प, कमकभ ाड, व्याकरर्, वनरुक्त अथाभत भाषा विज्ञान, छद ं ं ं और जयोवतष। इि िब में ि व्याकरर् को प्रमख स्थान वदया गया ह।ै व्याकरर् के वशक्षा के वबना बालक ु शद् रूप ि भाषा का ज्ञान प्राप्त नहीं कर िकता ह ै ।यह लक्ष्य शास्त्र ह ै और इिका अध्ययन भाषा की ु शद्ता के वलए वकया जाता ह।ै इिके वबना रचना ,अनिाद, िाक्य रचना, शब्द रचना िंभि नहीं ह।ै

ु ु ां व्याकरर् नए वनयम नहीं बनाता िरन िह वनयमों को खोजता ह ै ,व्याकरर् शब्दों पर शािन नहीं करता बवल्क उनका अनशािन करना और उनके प्रिाह को वनयत्रर् में रखता ह।ै ु ां 2.4 पाधिधन द्वारा प्रधतपाधदत धिद्ांत पाववनन की अष्टध्याई म ें 8 अध्याय ह,ैं एक अध्याय में चार पाद ह,ैं और प्रत्येक पाद म ें अनेक ित्र ू शावमल ह,ै िभी वमलाकर ित्रों की िख्या लगभग चार िहस्त्र ह।ै परी पस्तक ित्र वजन्ह ें माहश्वे र ित्र भी ू ू ु ू ू ां कहते ह ें ,पर आिाररत ह।ै पाववनन के अनिार भाषा का आरभ िाक्यों ि हआ ह,ै उनके अनिार िाक्य ही ु ु ु ां प्रािन ह।ै भाषा की परी िरचना ध्िवन प्रवक्रया ,स्िराघात िबिी रूप रचना, िाक्य रचना तथा व्याकरर् के ू ां ां ां स्तर पर वििके अथभ पक्ष का परा वििरर् इि म ें िवम्मवलत ह।ै वकिी भाषा के पररवनवष्ठत रूप म ें परे ू ू भौगोवलक एिं िामावजक विस्तार को एक िाथ म ें िमझने िाला यह पहला व्याकरर् ह।ै िाथ ही यह ां अभी तक इि क्षेत्र में अवतम भी ह।ै ब्लम फील्ड इन्ह ें ना भतो ना भशवष्यशत कहा ह।ै िभी दवष्ट ि यह ू ू ां पर् भ व्यिवस्थत व्याकरर् ह,ै बाद म ें ढाई हजार िषों में वजतन े भी व्याकरर् वलखे गए ह ैं इतनी िव्यिवस्थत ू ु नहीं पाए गए। 14 ित्रों के आिार पर लगभग 4000 ित्रों में भाषा के िभी स्तरों की व्यिस्था का ू ू विश्लेषर् िक्षेपर् और स्पष्टता के िाथ उपलब्ि ह।ै पाववनन के व्याकरर् विश्व के िबिे अविक िशै ावनक ां भाषा व्याकरर् म ें िवम्मवलत ह,ै पवश्चम के व्याकरर् इिके िमक्ष नहीं वटकत े ह।ैं लौवकक ि िवै दक िस्कत ृ ां का तलनात्मक अध्ययन भी इिकी प्रमख विशेषता ह।ै अष्टध्याई के अवतररक्त िात पिा ग्रथ भी वलखा ु ु ू ां वजिमें िातओ की िची प्रस्तत की गई ह।ै पाववनन के दिरे ग्रथ गर्पाि के अनिार वकिी भाषा की ु ू ु ु ां ां ू िाक्य रचना का अध्ययन उिके व्याकरवर्क अध्ययन का एक प्रमख अग ह ै ।प्रमख भाषा की पर् भ िाथभक ु ु ू ां इकाई िाक्य ही ह,ै अतः जब तक उिका िाक्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://hi.wikipedia.org/wiki/क id: **55**

में प्रयोग कर अन्य पदों के िाथ िबि वनिाभरर् ना ां ां वकया जाए। वकिी भी पद का महत्ि एिं अथभ िाक्य में प्रयोग करने पर ही ज्ञात वकया जा िकता ह-ै ां िाक्य, पद का िह िमह ह ै वजिमें पर् भ अथभ की अवभव्यवक्त होती ह।ै प्रवतहारी भी इि बात ि िहमत ह ै ू ू वक इन आकवतयों को अलग-अलग रूप में िाक्य नहीं कहा जा िकता जब यह िमग्र भािना के वलए ृ जोडकर अथभ बताते ह ें तब उनका अवस्तत्ि वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **56**

द् होता ह,ै जहा भाषा व्यिहार म ें व्याकरर् के पदों की ां पथकता को स्िीकारना कर मात्र िाक ्य को ही िास्तविक अनभि इकाई मानते ह ें । पाववनन के अनिार ृ ु ु कताभ वक्रया का स्ितत्र स्रोत ह ै िह वकिी भी कायभ की शरू अथिा िमावप्त के वलए दिरे पर वनभरभ नहीं ह ै ु ां ू िह कायभ की प्रेरक शवक्

Plagiarism detected: **0.02%** https://hi.wikipedia.org/wiki/पोटैशियम id: **57**

त होता ह।ै कमभ के वलए उन्होंने कहा ह ै वक िह कताभ का वक्रया िारा प्राप्त करन े का िबिे प्रमख कारक कमभ ह।ै अविकरर् को कारक नहीं माना ह ै , क्योंवक वक्रया ि इिका प्रत्यक्ष िबि ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 18 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 नहीं होता ह।ै पाववनन के

Quotes detected: **0%** id: **58**

"ईिाकतम कमभ "

ित्र के अनिार वक्रया को िपन्न करने के वलए वक्रया की ू ु ां ईिाक िस्तओ का होना आिश्यक ह।ै उन्होंने कताभ के िाथ करर् , वक्रया के माध्यम ि िबि करना ु ां ां ां चाहगे ा तब उि अथभ को िप्रदान की िज्ञा दी जाएगी ।अपादान कारक के पररपेक्ष्य म ें पाववनन बताते ह ैं ां ां वक वकिी िापेवक्षक रूप ि वकिी का वस्थवत ि हट जाना या अलग हो जाना अपादान कहलाता ह।ै पद विचार करते िमय एक अश को प्रकवत कहता ह ै तथा दिरे अश को प्रत्यय (विभक्ती प्रत्यय) । पाववनीय ृ ां ां ू वशक्षा के अनिार 64\ 63 िर् भ ह,ै स्िर 22, स्पश भ 25, अतस्थ4, उष्म 4, आयोगिाह 4, यम 4 । ध्िवन ु ां वििचे न उत्पादन म ें मख वििर में विवभन्न प्रवक्रयाओ के योग ि िाय िर्ों को जन्म दते ी ह ै वजिे हम ु ु ां पाच िर्ों म ें बाट िकते ह-ै स्िर ,,काल, स्थान, प्रयत्न और अनप। ध्िवन ि िबवित- मानि तत्र में पहले ू ां ां ां ां ां यह कि प्रदशे , वशरोभाग वफर मख रध्र ि होकर बाहर वनकलती ह,ै इि प्रकार यह बाह्य प्रवक्रयाओ योग ु ां ां ां ि िाय िर्भ को उत्पन्न करके बाहर वनकालती ह ै । दिरा मन की इच्छा ि प्रेररत होकर ध्िवन उिरावगनी ु ू को जगाती ह,ै जो अवग्न को प्रेररत करती ह ै और िह िाय को। इि प्रकार यह वक्रया ध्िवन उत्पन्न करती ु हई कि, प्रदशे की ओर जाती ह ै इिमें आतररक वक्रया का कायभ रहता ह ै । वजिमें आत्मा, बवद्, मन, ु ू ां ां इच्छा, अवग्न, िाय, मानि मख प्रदशे आवद िभी िवम्मवलत होते ह।ैं इिके अवतररक्त िाचन ि िामावजक ् ु ु भाषा म ें उच्चारर् की शद्ता पर गहराई ि विचार वकया गया ह।ै उनके अनिार िर्,भ पद, िाक्य को

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **59**

स्पष्ट ु ु और परा परा उच्चररत करना चावहए। इिके अलािा अथभ की प्रकवत ,अथभ ग्रहर् की प्रवक्रया, अथभ वनश्चय ृ ू ू के क्षेत्र में भ

ी प्राचीन भारतीय भाषा वचतकों का अपिभ योगदान रहा ह।ै ू ां 2.5 भृतहभ री द्वारा प्रधतपाधदत धिद्ातां आिवनक भारत में भाषा विज्ञान का इवतहाि प्राचीन रहा ह ै वजिमें यास्क, पावर्वन, पतजवल , भतभहरी का ृ ु ां नाम आदर ि वलया जाता ह।ै भतभहरी का एक मात्र ग्रथ ह ै वाक्य दीप जोवक भाषा की ििवेचे ना करता ृ ां ह,ै इिके तीन खड ह-ैं ब्रह्म काड(आगम काड), िाक्य काड और पद काड (प्रकीर् भ काड)।िाक्य दीप ां ां ां ां ां ां को व्याकरर् का दशनभ भी कहा जाता ह,ै इिमें भाषा की ििवेचे ना की गई ह।ै भतभहरी के िारा िफोट ृ विद्ात भारतीय व्याकरर् परपरा म ें महत्िपर् भ भवमका रखता ह।ै भाषा, वजिि हम अपने भािों की ू ू ां ां अवभव्यवक्त करते ह ैं उिे िफोट कहा जाता ह ै यह ह ै भाषा ि मन ि जडे भािों को जान े का प्रयाि करता ु ह।ै िफोट का तात्पयभ ह ै फट पडना, उदगार अथिा वकिी शब्द के माध्यम ि अथभ की परी अवभव्यवक्त ू ू वकए जाना ही िफोट विद्ात ह ै ।इिके अतगभत भतभहरी के अनिार - िाक्य दीप म ें वलखा ह ै की फोटो ि ृ ु ां ां ध्िवन दोनों ही एक िाथ शरू होते ह ैं उनमें कोई िमय अतराल नहीं होता उनके अनिार िाक्य को भाषा ु ु ां विज्ञान के अतगभत या स्पोटभ ध्िवन के अतगतभ दो भागों म ें विभावजत करके पढ़ा जा िकता ह ै यह िाक्य को ां ां िास्तविक अथभ प्रदान करता ह ै जो वक इिके िारा वकए शब्द अथभ ि िाक्य िास्तविक अथभ को व्यक्त करने के वलए परी प्रवक्रया चलात े ह।ैं भतभहरी शब्द अिैत शाखा ि िबवित थे, जो की भाषा ि िज्ञान की ृ ू ां ां ां वदशा में कायभ करता ह।ै उनके अनिार भाषा के चार रूप ह ै - ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 19 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ बैखारी- िाक का िह रूप ह ै वजिको हम बोलते अथिा िनते ह,ैं यह मख्य के िारा उच्चररत ु ु ध्िवनयों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **60**

के माध्यम ि बाहर आती ह।ै इिका ििाि िबि िशिा प्रवक्रया ि होता ह।ै ां ां □ मध्यमा- मानि अपने मन मवस्तष्क में जो कछ भी िोचता ह,ै उिका माध्यम

भाषा होती ह ै और ु मन के आतररक भाषा भिा हो मध्यमा कहा गया ह।ै यह हमारे मवस्तष्क में ही रहती ह।ै ां □ पश्यवत- एक ऐिी वस्थवत ह ै जहा पर भाषा हीनता का भिा आ जाता ह,ै यह भाषा का िक्ष्म रूप ू ां ां ह।ै पश्यवत में ध्िवन या पद का कोई क्रम नहीं रहता। यह के िल योवगयों के िारा महात्मा के िारा ां दखे ी जा िकती ह।ै □ परा - वजि े हम वनविकभ ल्प िमावि ि जोडकर दखे ते ह,ैं इि पराप्रकवत िाक भी कहा गया ह ै इि ृ वस्थवत म ें आने पर ज्ञान और जानने योग योग्य कोई िस्त का भदे वमट जाता ह।ै ु भतभहरी के अनिार िाक्य ब्रह्म का का रूप ह,ै वजि प्रकार जिी ब्रह्म अथाभत अवतम ित्य की ओर जाते ृ ु ां ह ैं ,उिी प्रकार शब्द उिकी चेतना की अवभव्यवक्त ह ै इिवलए शब्द अवभव्यवक्त की महत्िपर् भ इकाई ह।ै ू भतभहरी के अनिार िाक्य में वक्रया की िकल्पना िही होनी चावहए क्योंवक- कायभ या वक्रया वकए ृ ु ां अतगतभ कई वक्रयाए चल रही होती ह,ैं इिवलए िभी अन्य वक्रयाओ को छोड कर एक मख्य वक्रया का ु ां ां ां चनि वकया जाता ह ै अथाभत यह दो वस्थवतयों ि गजरती ह ै-िध्य ि विवद्। विवद् को करने के वलए ु ु ििान की आिश्यकता होती ह ै वजिमें कारक के भदे कताभ, कमभ, अविकरर्, करर्, िप्रदान, अपादान ां का प्रयोग वकया जाता ह।ै कताभ, कायभ करने िाला व्यवक्त करता ह,ै िह स्ितत्र ह।ै वक्रया की िमावप्त तक ां िह कारकों के िाथ िबवित रहता ह।ै कमभ, वकिी भी व्यापार ि वक्रया ि उत्पन्न फल को हम कम भ कहत े ां ां ह।ैं अविकरर् - कताभ ि कमभ के वक्रया को िपन्न करने के कायभ म ें महत्िपर्भ भवमका वनभाता ह।ै यह करर् ू ू ां वक्रया के होने म ें ििान का कायभ करता ह,ै जो वबना वकिी िव्यिान के वक्रया के फल को उत्पन्न करने का कायभ करता ह ै ।अत म ें िप्रदान ि अपादान वजि अथभ के िाथ कमभ ,कताभ या वक्रया के मध्य म ें िबि ां ां ां ां करना चाह े तब िह िप्रदान होती ह,ै तथा अपादान कारक जब िामान्यता वक्रया के कायभ परर्राम स्िरुप ां कोई वकिी ि दर होता ह,ै यह स्थान या काल के वकिी वबद पर िभि हो िकता ह ै यह अपादान कारक ां ां ू ु कहलाता ह ै इिके िाथ कारक के वक्रया वनष्पादन में िाक्य की अवभव्यवक्त म ें विवभन्न विभवक्त के ऊपर ध्यान रखना भी आिश्यक ह।ै इिी प्रकार काल के वनिाभरर्कायभ भी वकया गया ह ै वजिमें भत, भविष्य ि ू ितभमान एक दिरे ि जडे हए ह।ैं भत काल- अगर कोई काम या वक्रया शरू होकर खत्म हो गई ह ै अथाभत ु ु ू ु ू ितभमान म ें नहीं चल रही ह ै , िह भतकाल ह।ै ितभमान काल- जो वक्रया जो अभी चल रही ह,ै पर् भ नहीं हई ु ू ू ह ै िह ितभमानकाल कही जाती ह,ै ि भवि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… + 2 resources! id: **61**

ष्य काल ितभमान काल के बाद आने िाला िमय भविष्य काल ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय

20 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.6 न्याय दशभन एवां भाषा धशक्षि भारतीय दशनभ में

Quotes detected: **0%** id: **62**

'न्याय'

शब्द का अथभ ,

Quotes detected: **0%** id: **63**

'उवचत'

अथिा

Quotes detected: **0%** id: **64**

'िछनीय'

ह ै। न्याय दशनभ ि िही विचार तथा ां आलोचनात्मक द्दवष्ट ि िोचने िमिझने की शवक्त बढ़ती ह ै। इिमें मख्यता शद् विचार के वनयमों तथा ु ु तत्ि ज्ञान प्राप्त करने के उपायों का िर्नभ वकया गया ह।ै न्याय दशनभ के प्रमख विषय ज्ञान, ज्ञान प्रावप्त के ु िािन तथा प्रवक्रया ह।ै इिके अनिार बारी िस्तुओ का अवस्तत्ि हमारे ज्ञान पर वनभरभ नहीं करता ह।ै ु ु ां िस्तुओ का अवस्तत्ि हमिे स्ितत्र रहता ह ै िभी मानविक भाि ि िगे जिै े – खशी, दख, क्रोि, डर ु ु ां ां ां ु हमारे मन पर वनभरभ करते ह।ैं इिके अलािा एक और बात जो इि म ें िविम्मवलत ह ै की ह ै वक बच्चे के जन्म के बाद िह जो भी मनोभाि अवभव्यक्त करता ह ै िह पिजभ न्म की स्मवत के फल स्िरुप ह।ै न्याय दशनभ ृ ू भाग्य पर विश्वाि नहीं करता और कम भ को िही मानत े हए िख ि दख का कारर् कम भ को ही मानता ह।ै ु ु ू ु यह मख्यता तकभ का विचार करता ह।ै भौवतक जगत, जीिात्मा, परमात्मा के स्िरुप का दाशवभ नक विचार ु करता ह।ै न्याय को तकभ - शास्त्र, प्रमार् –शास्त्र, िाद विद्या कहा जाता ह।ै आचायभ गौतम न्याय दशनभ के प्रितभक थे, उन्ह ें अक्षपाद के नाम ि भी जाना जाता ह।ै उन्होंने न्याय सत्र की रचना की वजिके ऊपर ू िात्िायन ने न्यायभाष्य नामक भाष्य वलखा, उिके पश्चात उद्योत कर ने न्याय भाष्य के ऊपर न्याय वाशतशक वलखा। यह िभी ग्रंथ प्राचीन न्याय दशनभ ि िबवित ह।ै महवषभ गौतम के कालवनर्यभ का कायभ ां ां ां बहत मवश्कल ह ै क्योंवक उनका उल्लेख रामायर् ि महाभारत दोनों में ही प्राप्त होता ह ै अगर दोनों को ही ु ु ित्य मानकर चल ें तो लगभग िप्तम ईिा पि भ का िमय और काल होना चावहए। डॉक्टर विद्या भषर् ने ू ू एवशयावटक जनरल के एक लेख में वलखा ह ै जब कात्यायन और पाववर्न ने न्याय शब्द का उल्लेख वकया ह ै तो इिि यह स्पष्ट होता ह ै वक यह न्याय ित्र का प्रर्यन इिि पहले हो चका था। न्याय ित्र के ू ु ू प्रर्ते ा महवषभ गौतम का काल पाववर्न ि 1000 ईिा पि भ या 1500 ईिा पि भ के आि पाि होगा। न्याय ू ू दशनभ के अनिार वशक्षा का मख्य उद्दश्े य छात्र को यथाथभ प्रयत्न ि तकों िारा ित्यावपत ज्ञान दने ा ह।ै इिके ु ु अनिार ज्ञान की उप स्थापना पहले होती ह,ै बाद में उिकी पररभाषा आती ह।ै मानि कभी भी विचारहीन ु नहीं रहता ह,ै अतः उिके अनभि परपरा एि िस्कारों का ज्ञान उिके मवस्तष्क में विद्यमान रहता ह।ै ु ां ां ां इिवलए न्याय दशनभ में वशक्षा ज्ञान को तकभ के आिार पर ित्यावपत करती ह ै इिके अनिार व्यवक्त पि भ ु ू जन्म के कमों के कारर् िख-दख क्षमता योग्यता बवद् आवद प्राप्त करता ह।ै इिवलए वशक्षा का लक्ष्य ह ै ु ु ु वक ि

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 5 resources! id: **65**

ह छात्र के विवभन्नताओ के अनरूप वशक्षा प्रदान करने का कायभ करें। न्यायशास्त्र म ें वशक्षर् की िारी ु ां प्रवक्रया का कें ि छात्र रहता ह ै और यह आिवनक मनोिज्ञै ावनक आिारों की किौटी पर वबल्कल िही ु ु प्रतीत होता ह।ै वशक्षक ि छात्र का िबि वमत्रित होता ह,ै िह छात्रों पर अपने विचार या ज्ञान को लादता ां ां नहीं ह,ै छात्र

स्िय िीख वलया करता ह,ै ज्ञान प्राप्त करता ह,ै तकभ िारा उिे ित्यावपत करने के बाद जो ां वनष्कषभ वनकलता ह ै ,उिे स्िीकार करता ह।ै दशनभ के अनिार ज्ञान प्रावप्त म ें चार तत्ि होते ह-ैं प्रमाता, प्रम,े ु प्रमार् ,प्र◌्रीवत । प्रमाता- ज्ञा

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.apnakhata.co/how-to-check-bhulek… + 3 resources! id: **66**

न प्राप्त करने िाला छात्र, प्रमे- वजि विषय का अध्ययन करना ह,ै प्रमार्- वजि माध्यम ि ज्ञान प्राप्त

वकया जाता ह ै , प्रवमवत- यथाथभ ज्ञान को प्रवमवत कहते ह ैं ,जो वनवश्चत तथा त्रवट ु रवहत होती ह ै और पदार्थों का स्पष्ट प्रगटीकरर् ही ज्ञान कहलाता ह।ै न्याय दशनभ िभी प्रमख प्र◌्राली - ु प्रमार्, प्रत्यक्ष, अनमान, उपमान शब्द तथा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **67**

छात्रों की स्मवत िशिोन िभी को वक्रयावन्ित कर दते ा ह,ै ृ ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 21 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 छात्रों के व्यवक्तगत विवभन्नताओ को ध्यान

म ें रखते हए अध्यापक प्रजातावत्रक तरीके ि बच्चों को खले ु ु ां ां िाताि‍रर् में छोड कर स्िय अपने व्यिहार िा ज्ञान के अनिार वशक्षा प्रदान करता ह।ै ु ां ज्ञान (न्याय के अनसार) ु स्मवत ृ अनभि ु अप्रमा अयथाथभ प्रमा यथाथभ तकभ प्रमेय प्रमाता प्रमीवत प्रमार् िशय ां भ्रम स्मवत ृ शब्द उपमीवत प्रत्यक्ष अनभवत ु ू न्याय शास्त्र में प्रत्यक्ष प्र◌्राली -आगमन -वनगमन प्र◌्राली, प्रोजक्े ट विवि, प्रयोग त्मक प्र◌्राली आवद को मख्य रूप ि प्रयोग म ें लाया जाता ह।ै न्याय दशनभ के अनिार िाक्षात रूप ि ग्रहर् वकए जान े िाला ज्ञान ु ु प्रत्यक्ष ज्ञान ह ै ।इिको दो भागों में विभक्त वकया जा िकता ह ै -1. इवियजन्य ज्ञान 2. अतज्ञाभन। िह ज्ञान ां ां पदार्थों के िि ग भ ि प्राप्त होता ह ै ,इिवलए वनवश्चत होता ह।ै मनोविज्ञान में इि िश्लेषर् ि न्याय शास्त्र में ां ां इि वनविकभ ल्प अप्रत्यक्ष का नाम वदया गया ह,ै जबवक अतज्ञाभन स्िय अचानक ि उत्पन्न हो जाता ह ै ां ां ।ज्ञान प्रावप्त के िज्ञै ावनक विवियों पर अगर हम ध्यान द ें तो हम पाएग े वक - प्रत्यक्ष और अनमान दोनों के ु ां वमश्रर् ि बनती ह।ै अनमान, पि भ

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **68**

ज्ञान के बाद आता ह ै इिि हम यह वनष्कषभ वनकाल िकत े ह ैं वक ध्यान ु ू के बाद आने िाल े ज्ञान क

ो अनमान कहते ह,ैं जिै े - वकिी पहाड िए को दखे कर हम यह अनमान ु ु ु ां लगाते ह,ैं उि स्थान पर आग हो िकती ह ै । आग यहा प्रत्यक्ष ि अप्रत्यक्ष की ओर जात े हए मतलब िए ु ु ां ां को दखे कर आग अनमान लगाना व्यावप्त िाक्य के फलस्िरुप होता ह ै । अनमान में कम ि कम 3 पद या ु ु अियि ह-ै पक्ष, िाध्य और हते । पक्ष अनमान का अियि ह ै वजि

Plagiarism detected: **0.03%** https://educalingo.com/hi/dic-hi/ka id: **69**

के बारे म ें अनमान वकया जा रहा ह ै - ु ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 22 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पहाड। पक्ष के विषय में जो विद् वकया गया ह ै उि िाध्य कहा गया ह-ै आग।,क्योंवक पहाड पर आग होने को विद् करके बताया गया ह।ै अनमान में वजिके िारा पक्ष का िाध्य होना वदखाया गया ह ै िह हते ु ु कहलाता ह ै , यहा िए को हते मानकर पहाड पर आग होने का अनमान व्यक्त वकया गया ह।ै ऊपर ु ु ु ां ां वलखे तीनों पदों को क्रम ि रखकर आगमन ि वनगमन विवि िारा 5 पद के अनमान को अवभव्यक्त ु वकया गया ह,ै उदाहरर् - i. प्रवतज्ञा- हम वजि बात को विद् करना चाहते ह ैं उिका वनदशे करना ही प्रवतज्ञा ह,ै जिै े पहाड पर आग ह।ै ii. हते - अपनी प्रवतज्ञा को विद् करने के वलए प्रयक्त यवक्त को हते कहते ह।ैं जिै े पहाड पर दआ ह ै ु ु ु ु ु iii. उदाहरर्- िाध्य को प्रमावर्त करने के वलए वदरे उदाहरर् प्रस्तत करना जिै े दआ जहा ह ै िही ु ां ू ु आदमी ह ै जिै े रिोईघर iv. उपनय- हते और िाध्य के बीच के िबि को वदखाने के बाद अपना पक्ष वदखाना उपनय ु ां ां कहलाता ह ै जिै े पहाड पर िािा ह।ै v. वनगमन- जब यह विद्

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **70**

हो जाता ह ै वक तो इि वनगमन कहा जाता ह ै जिै े पहाड पर आग ह ै । आगमन वनगमन विवि का िाििेत्तम उदाहरर् ह ै यहा पहले ही स्पष्ट हो जाता ह

ै वक ज्ञान पहले ि ां ही उपवस्थत ह ै हम विफभ उिका पता लगाते ह ैं जबवक आगमन विवि म ें ज्ञान उत्पन्न होकर विकवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **71**

त होता ह।ै गौतम के प्राचीन न्याय दशनभ के अनिार अनमान तीन प्रकार के ह-ै पिूभि त, ु ु ू शषे ित ि िामान्त

ो दृष्ट । पिूभि त के अनिार भविष्य म ें होने िाले कायभ का पिूाभनमान ितभमान के ू ु ू ु कारर् ि वलया जाए जिै े- आकाश म ें काले बादलों को दखे कर बाररश का अनमान लगाना । ु ितभमान के कायभ अथिा प्रभािा िारा अविक म ें घवटत कारर्ों का अनमान लगाना जिै े परातन ु ु िभ्यता ि जडे स्थानों के अिशषे को दखे ने के बाद िहा क्या हआ होगा अनमान लगाना। ु ु ु ां िामान्तो दृष्ट में अनमान लगाने िमय िािन ि िाध्य दोनों िाथ पाए जात े जिै े चिमा को ु ां आकाश में अलग-अलग जगहों पर दखे कर हम यह अनमान लगाते ह ैं वक िह गवतशील ह।ै ु िामावजक विज्ञान में अनमान विवि का प्रयोग होता ह,ै इिके िारा छात्रों की विचारशवक्त को ु उिवे लत वकया जाता ह।ै इि में िमस्या विवि, प्रयोगात्मक विवि, खले विवि, वक्रयाविवि , प्रोजक्े ट विवि को शावमल वकया जा िकता ह।ै गवर्त म ें भी विश्लेषर्- िश्लेषर् की प्रवक्रया, दो ां अज्ञात तथ्यों के आिार प्रवतज्ञा तत्ि का अनमान लगाना ।इवतहाि म ें ज्ञात घटनाओ, लक्षर्ों, ु ां पररवस्थवतयों के आिार पर कारर् ि प्रभािा का अनमान लगाना। िभी विषयों के अध्ययन म ें ु बहत महत्िपर्भ भवमका वनभाती ह।ै भारतीय दशनभ म ें उपमान अथिा तलना िह िािन ह ै वजिे ु ू ू ु हम ज्ञात पदाथ भ के िाथ वकिी दिरी पदाथभ

Plagiarism detected: **0.09%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 7 resources! id: **72**

का ज्ञान प्राप्त करते ह ैं इि म ें दो तरह के लोग होते ह ैं ू अिि होते ह ैं । ज्ञान प्राप्त करने की एकमात्र विवि शब्द प्रमार् ह ै वजिमें शब्दो िए िाक्यों ि े ां िस्तओ का ज्ञान प्राप्त होता ह,ै िह ज्ञान जो हम ें वकताबों ि पढ़कर प्राप्त करते ह।ैं हम प्रश्न उत्तर, ु ां चचा,भ व्याख्यान, विचार- विस्तार, भाषर्, पयभिक्षे क -अध्ययन प्रर्ाली, के िारा प्राप्त

ज्ञान शावमल वकया जा िकता ह।ै अप्रमा के कारर् िंिै ज्ञान उत्पन्न करने िाले चार कारकों का उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 23 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ज्ञान अध्यापक को होना चावहए यह ह-ै स्मवत, िशय, भ्रम िए तकभ । पि भ के अनभि के आिार ृ ू ु ां ां पर स्मरर्ात्मक चेतना को स्मवत कहते ह।ैं िशय- अनमान ि पहले आता ह,ै और जब ज्ञान ृ ु ां िविनवश्चत हो जाता ह ै तो लप्त हो जाता ह-ै परस्पर विरोिी िाक्ष्य ि, प्रत्यक्ष ज्ञान की ु ु अवनयवमतता ि, ना वदखाई दने े के कारर् अथिा विस्मवत के कारर् िशय उत्पन्न होता ह।ै भ्रम ृ ां वक वस्थवत म ें जब मन यह िविनवश्चत नहीं कर पाता वक यथाथभ क्या ह-ै जिै े रस्िी को दखे कर िाप ु ां िमझना भ्रम ह ै और यह वनश्चय ना कर पाना वक रस्िी ह ै या िाप िशय ह ै , यथाथभ ज्ञान प्राप्त ां ां करने म ें तकभ जब कतकभ बन जाता ह,ै तब यह ज्ञान प्रावप्त में बािा उत्पन्न करता ह ै । ु 2.7 मीमांिा दशभन एवं धशक्षि मीमािा दशनभ भारतीय दशनभ में मीमाषा को िदे ों का ही अग माना गया ह ै । मीमािा को दो भागों में ां ां ां ां विभक्त वकया गया ह-ै पि भ मीमािा, उत्तर मीमािा वजि े िदे ात भी कहा जाता ह।ै पि भ मीमािा म ें कमभ तथा ू ू ां ां ां ां उत्तर मीमािा में ज्ञान पर विचार वकया गया ह ै ।मीमािा के अनिार िव्य, गर्कमभ ,िामान्य, परतत्रता, ु ु ां ां ां शवक्त ,िादृश्य िह िख्या नामक आि पदाथभ ह।ै वजिके अनिार 9 प्रकार के िव्य ह-ै पथ्िी, जल, अवग्न, ृ ु ां िाय, आकाश, आत्मा, मन, काल और स्थान ।मीमािा दशनभ के अनिार दिे ित्ता, स्िगभ- नकभ , कमभ, ु ु ां पनजन्भ म, आत्मा पर विश्वािा अटट ह।ै परी िविष्ट के वनमाभर् में ही िव्यों की आिश्यकता होती ह।ै इिवलए ृ ु ू ू जवै मनी की पिभ मीमािा म ें इि पाचिा शास्त्र मानकर लौवकक िावहत्य में जाना

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **73**

जाता ह।ै प्रिान कम भ का ू ां ां विचार करने के कारर् मीमािा को कम भ मीमािा अभी कहा जाता ह

।ै मीमाांिा उन कमों ,वनयमों को ां ां ां वनिाभररत करती ह ै वजिके अनिार िवै दक विवि के विरोिाभािों को दर करके उनमें िमरूपता आती ह ै ु ू ।मीमाांिा शब्द का तात्पयभ िमादृत शवचार ,पहले इिका प्रयोग िवै दक िमभ कवतयों की व्याख्या करने के ृ ां वलए होता था परत अब इिका अथभ वकिी िमीक्षात्मक अविवशे न के रूप में वलया जाता ह।ै आचायभ ु ां जवै मनी को मीमाांिा दशनभ का प्रर्ते ा माना जाता

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.aajtak.in/india/news/story/karnataka… id: **74**

ह,ै उन्होंने मीमाांशा िात्र वलखा तथा उि पर शबर ने एक ू ां ां भाष्य वलखा वजिे शाबरभाष्य कहा जाता ह

।ै उिके पश्चात कमाररल भट्ट ने तीन खडों में एक स्ितन्त्र ु ां ां टीका वलखा ह ै वजनके वजिका नाम श्लोक िावतभक तत्र िावतभक और दृवष्टका ह।ै आचायभ जवै मनी व्याि ां जी के वशष्य थे उनकी वशक्षा दीक्षा वहमालय पितभ के बिी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.doubtnut.com/qna/648931270 id: **75**

क्षेत्र वस्थत में आश्रम म ें हए स्िय िदे व्याि ि े ु ां उन्होंने वशक्षा प्राप्त क

ी थी और िह उनके चार प्रमख छात्रों में ि एक थे। उन्होंने कतभव्य, दशनभ ,राजकीय ु शािन का वनरूपर्, न्याय का वनरूपर् वकया। पि भ मीमाांिा की एक िची में जवै मनी कहते ह-ैं

Quotes detected: **0.01%** id: **76**

" अथातो ू ू ां िम भ वजज्ञािा"

अथाभत अब िमभ वजज्ञािा ि प्रारभ होती ह।ै जवै मनी ने शब्द को वनत्य माना ह,ै िह वस्थर ह,ै ां प्रकवत- विकवत िाला ह,ै बोलन े िाले की अविकता ि अविक हो जाता ह ै । मीमाांिा म ें दो िप्रदाय ह ैं ृ ृ ां ां वजिमें एक के प्रर्ते ा कमाररल भट्ट तथा दिरे के प्रभाकर वमश्र ह।ै इन दोनों में प्रमार्, पदाथभ, िव्यगर,, ु ु ू ज्ञान, भ्रम िबिी दाशवभ नक मतभदे ह।ै दशनभ में पिभ मीमाांिा िबिे बहद ह,ै इिमें 12 अध्याय ह,ैं िांिमदे ृ ू ां ां ां की 3 शाखाओ म ें जवै मनीय शाखा म ें चार पि भ ह,ै वजिमें मत्रों की िख्या इि प्रकार ह ै - आग्नेय पि भ -116 ां ां ां मत्र, इि पि भ - 352 मत्र ,पािमान पि भ - 119 मत्र, आरण्य पि-भ 55 मत्र ।जवै मनी के आश्रम में िदे ों पर ां ां ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 24 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अनिान, मत्रों का िगीकरर् का कायभ चला करता था। मीमाांिा दशनभ के अनिार ज्ञान की अपेक्षा कमभ ु ु ां ां ां का पद अच्छा ह।ै वशक्षा लेना भी एक िमभ ह ै परत इि कमभ का फल

Plagiarism detected: **0.03%** https://apnakhata.rajasthan.gov.in/ id: **77**

ज्ञान ह।ै मीमाांिा का तात्पयभ- ु ां ां विचे न, ज्ञान प्रावप्त विचे ना की प्रवक्रया ह ै इि वशक्षा की प्रवक्रया ि स्ि ज्ञान प

ृाप्त करने की प्रवक्रया कहते ह।ैं यथाथभिादी दृवष्ट ि वशक्षा की प्रवक्रया को जगत की िस्तओ ि बिी कराने का प्रयाि करता ह।ै ु ां मीमाांिा के अनिार वशक्षा लेना दने ा मानि िमभ ह,ै इिवलए व्यवक्तगत ि िामावजक वहत की प्रावप्त के ु ां वलए वशक्षा का प्रयत्न आिश्यभािी ह।ै इिका पहला उद्दश्े य, िदे ात कमों को िम भ के रूप में वशक्षा के िारा ां ां दने ा। दिरा, लोगों म ें िवै दक िमभ की स्थापना करना। तीिरा ,िवै दक यज्ञ िम भ का प्रिार करना करना। िदे ों ू के विषय विभाग, और अथभिाद का ज्ञान , िमझने की योग्यता प्रदान करना, भाषाशास्त्र ि शब्द िाक्य का िही ज्ञान दने ा, मनष्य के िामावजक नैवतक कल्यार् की पवत भ करने के वलए िदे ों और शास्त्रों की वशक्षा ु ू को भी पाठयचया भ म ें शावमल वकया जाना चावहए। भाषा और व्याकरर् के विषय, भाषा शास्त्र इिमें बने ृ शब्द, िाक्य, अथभ आवद के ज्ञान िबिी पक्ष पर मीमाांिा अविक जोर दते ी ह।ै मीमाांिा के 12 ित्रों में िमभ- ू ां ां ां ां कमभ, यज्ञ, तत्र आवद विषयों पर विचार वदए गए ह।ैं मीमाांिा दशनभ के अनिार वशक्षर् विवि में ित्र विवि, ु ू ां ां उपदशे , प्रिचन विवि प्रयोग परीक्षर् विवि, अभ्याि विवि, तकभ विवि ि वक्रया विवि का उल्लेख वमलता ह।ै वशक्षा दीक्षा के िमय िवै दक दशनभ के अनिार विद्याथी और अध्यापक दोनों को ही कमकभ ाडी बनना ु ां आिश्यक

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **78**

ह।ै छात्र ब्रह्मचारी ि त्याग तपस्या का जीिन गरु के आश्रम म ें रहकर वबताते ह।ैं िवै दक ु िस्कारों के अनरूप छात्र को यज्ञ- हिन पजा-पाठ िब िीखना आिश्यक ह,ै ि आजीिन व्यिहार म ें ु ू ां लाना ह।ै छात्र

Plagiarism detected: **0.03%** https://apnakhata.rajasthan.gov.in/ id: **79**

में ज्ञान प्रावप्त की इच्छा हो, इिकी यह कोवशश होती थी वक िह स्िय गरु के पाि जाकर ु ां ज्ञान प

ृाप्त करें या अवजतभ करें। िह आचायभ की तरह ज्ञानी, िस्कारों ि यक्त होने की कोवशश करता था। ु ां अध्यापक विद्याथी दोनों म ें घवनष्ठ िबि था। मीमाांशा दशनभ के अनिार िायोग गरु का िम भ ह ै वक िह ु ु ां ां ां ां विद्याथी को कतभव्य तथा अनशािन का ज्ञान प्रदान करें। वशक्षा में अनशािन िख- िक्रमभ ि आती ह ै ु ु ु ।िपर्भ िवै दक एि उत्तर िवै दक काल में वशक्षा विद्यालय एक विवशष्ट िातािरर् प्रदान करता था जहा ू ां ां ां विद्याथी स्िय िम भ कमभ की वजज्ञािा एि प्रेरर्ा गरु स्थान पर उपवस्थत होकर लाभ ज्ञान लाभ अवजतभ ु ां ां करता था । 2.8 िाराांश भारतीय दशनभ मानिीय िदे िमस्याओ के वचतन का दशनभ ह ै यह जीिन के िभी पहलिाि को ां ां ां व्यिवस्थत ि तार वकक दृवष्टकोर् के िाथ पहलओ पर विचार करता ह ै मानि के िभी प्रश्नों के उत्तर दने े ु ां का प्रयाि करता ह ै चाह े िह आध्यावत्मक हो अथिा व्यिहाररक इि पाठ को पढ़ने के पश्चात भारतीय

दशनभ ि जडी विशषे ताओ ि वशक्षा दशनभ का ििे िबििदशनभ का वशक्षा दशनभ का विद्यालय ु ु ां ां ां िमस्याओ के वनदान म ें महत्िपर्भ योगदान को िमझने में िहायता वमली ह ै वकि प्रकार भारतीय भाषा ू ां वचतकों का भाषा िकभ अथिा शब्द को ड्रम के रूप म ें ब्रह्म स्थावपत कर परे िविष्ट को शब्द में शावमल ृ ू ां करने का प्रयाि वकया ह ै भारतीय दशनभ भाषा वचतक को ने कारकों ध्िविन िमि पदबि काल के ां ां वनष्पादन ि िक्यों की वनमाभर् की प्रवक्रया को िरल रूप में वदखाने का प्रयाि वकया ह ै वदखाया ह ै पानी उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 25 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पावर्वन अष्टध्याई के भतभहरी के िफोट विद्ात न्याय दशनभ मीमिाा ि मीमिाा दशनभ के अतगतभ भारतीय ृ ां ां ां ां वशक्षा ि भाषा विज्ञान को उत्कषभ पर स्थावपत कर वदया ह।ै 2.9 शब्दाविी 1. प्रमाहणकता- िास्तविकता, मौवलकता 2. इहियजन्य- इवियों ि उत्पन्न ं ां 3. अतज्ञिान- आतररक ज्ञान ं ां 4. हनहिर्कल्प- वजिमें पररितभन या भदे न हो िदा एक िमान रहने बाला अभ्यास प्रश्न 1. ________आवस्तक दशनभ ि िबवित ह।ै ां ां i. चािाभक ii. मीमिाा ां iii. बौद् iv. जनै 2. ________स्पोटभ विद्ात का प्रवतपादन वकया। ां i. कर्ादी ii. कात्यायन iii. भतभहरी ृ iv. जवे मनी 3. पावर्वन िारा रवचत _________व्याकरर् का महत्िपर्भ ग्रथ ह।ै ू ां i. न्याय ित्र ू ii. िाक्य दीप iii. श्लोक िवितभक iv. अष्टध्याई 4. मीमिाा दशनभ _________ पर बल दते ा ह।ै ां i. पियचयाभ ् ii. िम भ कतभव्य iii. ज्ञान iv. विद्यालय स्थापना उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 26 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 5. ________ न्याय दशनभ के प्रर्ते ा थे। i. महवषभ गौतम ii. िात्ियन iii. पावर्वन iv. शकराचायभ ां 6. ________को वनविकभ ल्प िमावि कहा गया ह।ै i. बैखारी ii. परा iii. मध्यमा iv. पश्यवत ां 7. भारतीय दशनभ को________ दशनभ भी कहा जाता ह ै । i. षड ii. प्रथम iii. िप्त iv. अष्ट 2.10 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 1. मीमिाा ां 2. भतभहरी ृ 3. अष्टध्याई 4. ज्ञान 5. महवषभ गौतम 6. परा 7. षड 2.11 िदां भ भ ग्रांथ िची ू 1. प्रोफे िर विन्हा, हरेंि प्रिाद(1999) भारतीय दिनश की रूपरेखा ,मोतीलाल बनारीदाि बगलरु ु ां वदल्ली बैंगलोर रोड बेंगलरु ु 2. डॉक्टर वमश्रा ,जय नारायर् वमस्र हृदय(2013) भारतीय दिनश ,वशखर प्रकाशन इलाहाबाद उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 27 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3. डॉक्टर पाडे ,राम शकल(2005) भारतीय शिक्षा दिनश की रूपरेखा ,विनोद पस्तक मवदर ु ां ां आगरा 4. डॉक्टर एलेक्ि, शील मरै ी(2008) शिक्षा दिनश ,रजत प्रकाशन नई वदल्ली ू 5. डॉक्टर वमश्रा, महेिं कमार (2011) भारतीय दिनश , अजनभ पवब्लवशग हाउि नई वदल्ली ु ु ां 6. शमाभ, राजिें (2000) शिक्षा के दाशिनक आिार , श्याम प्रकाशन जयपर ु 7. डॉक्टर पाठक, आर पी (2008) प्राचीन भारतीय शिक्षा दिशन, कवनष्क पवब्लक वडस्रीब्यटिभ ू धनबात्मक प्रश्न ां 1. भारतीय दशनभ की मख्य विशषे ताओ का उल्लेख करें । ु ां 2. प्राचीन भारत म ें व्याकरर् वशक्षा ि िबवित विकाि की यात्रा पर एक वनबि वलखें। ां ां ां 3. मीमिाा दशनभ के शवै क्षक वनवहताथभ का िर्नभ अपने शब्दों में कीवजए। ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 28 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 3 - अधिगम योजना 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 अविगम योजना : अथभ एि पररभाषा ां 3.4 अविगम योजना के घटक 3.5 अविगम योजना का िरचनािादी या 5 – इ मॉडल ां 3.6 अविगम योजना के िरचनािादी मॉडल या 5-इ मॉडल का

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindireadduniya.com/barahkhadi-kakaha… id: **80**

प्रारुप ां 3.7 िरचनािादी मॉडल या 5-इ मॉडल पर आिाररत अविगम योजना का विस्तत ृ ां प्रारुप

3.8 अविगम योजना के िरचनािादी मॉडल या 5 – इ मॉडल पर आिाररत वहदी ां ां विषय की एक अविगम योजना 3.9 िाराश ां 3.10 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 3.11 वनबात्मक प्रश्न ां 3.1 प्रस्तावना वशक्षा एक गवतशील प्रवक्रया ह।ै वनरतर इिमें पररितभन होते रहता ह।ै िमाज ि वशक्षा का घवनष्ठ िबि ह।ै ां ां ां िमाज की वशक्षा ि अनेक अपेक्षाएँ होती ह।ैं अतः, िमाज म ें होने िाले पररितभनों के अनरुप वशक्षा में ु पररितभन भी िाछनीय ह।ै िमाज की वनरतर पररिवतभत होती अपेक्षाओ ने वशक्षा म ें उल्लेखनीय पररितभन ां ां ां वकए ह।ैं इन पररितभनों में ि एक ह ै विद्याथी कें वित वशक्षा। वशक्षा म ें जिै े ही मनोविज्ञान का िमािशे हआ ु या यँ कवहए वक शवै क्षक मनोविज्ञान का जन्म हआ ििै े ही पारपररक वशक्षा व्यिस्था वजिे की वशक्षक ु ू ां कें वित वशक्षा व्यिस्था या पियक्रम कें वित वशक्षा व्यिस्था भी कहा जा िकता ह ै म ें पररितभन की ् आिश्यकता अनभत होने लगी। पररर्ामस्िरुप विद्याथी कें वित वशक्षा व्यिस्था का ित्रपात हआ। इि ु ु ू ू पररितभन ने पाि योजना का अविगम योजना में पररितभन कर वदया। पाि योजना म ें वशक्षक स्िय को ध्यान ां में रखकर वकिी विशेष पाि पर कें वित वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया का वनयोजन करता था। अविगम योजना में विद्याथी को ध्यान में रखकर वकिी विशषे पाि पर कें वित वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया का वनयोजन वकया जाता ह।ै प्रस्तत इकाई म ें अविगम योजना पर आिाररत ह।ै इि इकाई म ें वशक्षर्- अविगम प्रवक्रया म ें ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 29 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 शावमल िमस्त व्यवक्तयों को अविगम योजना एि उिके विवभि पक्षों का िर्नभ वकया गया ह ै जो बहत ही ु ां उपयोगी ह।ै 3.2 उद्दश्े य इि इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. अविगम योजना के िप्रत्यय का िर्नभ कर िकें ग।े ां 2. अविगम योजना के विवभन्न घटकों की चचा भ कर िकें ग।े 3. अविगम योजना के िरचनात्मक मॉडल या 5 – इ मॉडल का िर्नभ कर िकें ग।े ां 4. वहदी भाषा वशक्षर् के वलए िरचनािादी मॉडल या 5 – इ मॉडल पर आिाररत एक अविगम ां ां योजना का वनमाभर् कर िकें ग।े 3.3 अधिगम योजना: अथ भ एवां पधरभाषा अविगम योजना का आशय, एक वनवश्चत िमय अिवि के वलए अविगम के वनयोजन हते प्रयोग वकए ु जान े िाले दस्तािजे ि ह।ै इिका स्िरुप िामान्यतः वक्रयात्मक एि ऑनलाइन होता ह ै लेवकन यह ां आिश्यक नहीं ह।ै इिका विकाि विद्याथी िारा वशक्षक, अवभभािक एि परामशकभ के िहयोग ि ां दीघकभ ालीन एि अल्पकालीन शवै क्षक उद्दश्े यों की प्रावप्त के वलए िामान्यतः माध्यवमक एि उच्च

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **81**

विद्यालय ां ां के स्तर पर वकया जाता ह।ै लेवकन यह आिश्यक नहीं ह ै वक इिका विकाि विफभ माध्यवमक एि उच्च ां विद्यालय

के स्तर पर ही वकया जा िकता ह।ै इिक प्रयोग प्राथवमक एिं उच्च वशक्षा के स्तर पर भी वकया ांं जा िक्ता ह।ै अविगम योजना के विकाि के पीछे यह मान्यता कायभ करती ह ै वक विद्याथी स्िंय को ांं वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया म ें अविक शावमल मह्िि करेगी और यवद िो इन बातों का वनश्चय कर लें को ू िो िीखना चाहते ह,ैं िे ेकै िे िीखना चाहते ह ैं तथा उन्ह ें िीखने की आिश्यकता क्यों पडी तो िो, िीखन े के वलए अविक अवभप्रेररत होगी, उनकी विद्यालयी उपलवब्ि अविक होगी, तथा अपने वशक्षा पर अविक स्िावमत्ि का अनभि करेगा। अविगम योजना व्यवक्तगत भी हो िकता ह ै और परी कक्षा के वलए भी हो ु ू िकता ह।ै अविगम

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 8 resources! id: **82**

योजना का प्रयोग विद्यावथभयों िारा िामान्यतः व्यवक्तगत रुप िे अपने अविगम को वनयोवजत करने के वलए वकया जाता ह ै लेवकन इिका प्रयोग िमह में भी वकया जा िकता ह।ै यहााँ तक वक ू वशक्षा के क्षेत्र म ें कायभ कर रही िंस्थाए ाँ भी इिका प्रयोग कर िकती ह।ै इि कायभ योजना के रुप म ें भी ांं िमझा जाता ह।ै यह एक ऐिी कायभ योजना का प

्रवतवनवित्ि करता ह ै वजिम ें वशक्षक िारा वशक्षर् के प्रभािी िंपादन के वलए एिं विद्याथी िारा व्यवक्तगत रुप िे या िामवहक रुप िे अविगम के प्रभािी ू ांं ांं िंपादन के वलए िंचावलत वकए जाने िाले कायभ-कलाप शावमल होते ह।ैं ांं ांं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 30 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3.4 अधिगम योजना के घटक एक िवनयोवजत अविगम योजना के वनम्नवलवखत घटक होते ह:ैं ु 1. अहधगम उद्देश्यों का एक समि- यह अविगम योजना का िबिे महत्िपर्भ घटक होता ह।ै अविगम ू ू उद्दश्े यों का एक िमह उन शवै क्षक उद्दश्े यों का िमह होता ह ै वजि े एक व्यवक्त या िमिह प्राप्त करना ू ू ांं चाहता ह।ै शवै क्षक उद्दश्े य दो प्रकार िे वलखे जा िकते हैं- दीघकभ ालीन उद्दश्े य एिं अल्पकालीन ांं उद्दश्े य। एक बेहतर अविगम योजना बनाने के वलए दीघकभ ालीन उद्दश्े यों को ऐिे अल्पकालीन उद्दश्े यों, वजन्ह ें वक एक िप्ताह या एक महीने भर के भीतर प्राप्त वकया जा िके ,

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 4 resources! id: **83**

के रुप म ें पररिवतभत कर के वलखना श्रेयस्कर होता ह।ै 2. ार्ततहर्क व्यिार के रुप में हियाओ का हनश्चयीकरण- प्रत्येक अविगम उद्दश्े य के वलए कछ ु ं वक्रयाए ाँ व्यािहाररक रुप म ें वनवश्चत की जानी चावहए। अविगमकताभ इन वक्रयाओ के िंपादन करता ह ै ांं ांं और उद्दश्े य प्रावप्त की ओर अग्रिर होता ह।ै 3. हिया का ससाधन या साक्ष्य के साथ सबध- िंिािन िे आशय उि वकिी भी चीज िे ह ै ं ं ं ं ांं वजिका प्रयोग यह अनभत करने के वलए वकया जा िकता ह ै वक उद्दश्े य की प्रावप्त के वलए वक्रयाओ ु ू ांं का िंगिन वकया गया ह।ै ये िंिािन मतभ भी हो िकते ह ैं तथा अमतभ भी। अथाभत यह वकिी उपकरर् ू ू ांं ांं तथा पाियपस्तक

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/... + 4 resources! id: **84**

के रुप म ें भी हो िकता ह ै या वफर वकिी विचार या कहानी के रुप म ें भी। वक्रयाओ ृ ु ांं के िंपादन के वलए िंिािनों की आिश्यकता होती ह।ै अतः, प्रत्येक वक्रया का वकिी न वकिी ांं ांं िंिािन के िाथ िबि अिश्य होना चावहए

। ांं ांं 4. साक्ष्य- िाक्ष्य िे आशय शवै क्षक उद्दश्े यों की प्रावप्त के िके तक िे ह।ै इि प्रकार यह कह िकते ह ैं वक ांं िाक्ष्य यह प्रदवशतभ करता ह ै वक िंपावदत वक्रया िारा वनिाभररत अविगम उद्दश्े यों की प्रावप्त म ें प्रगवत हई ु ांं या नहीं और अवतम रुप िे उद्देश्य की प्रावप्त हई या नहीं। ु ांं अभ्यास प्रश्न 1. अविगम योजना को अपने शब्दों म ें पररभावषत करें। 2. अविगम योजना के विवभन्न घटकों के नाम वलख ें । 3.5 अधिगम योजना का िंरचनावादी मॉडि या फाइव - इ मॉडि यह अविगम के िंरचनािादी उपागम पर आिाररत एक अविगम योजना ह ै जो मख्यतः यह बताता ह ै वक ु ांं विद्याथी अपने पराने विचारों के आिार पर नए विचारों का िजन करते ह।ैं इि फाइि - इ मॉडल इिवलए ृ ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 31 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 कहा जाता ह ै वक इिमें शावमल चरर्ों के नाम की शरुआत अग्रेजी भाषा के अल्फाबेट के एक िंदस्य

Quotes detected: **0%** id: **85**

'इ'

ु ांं िे शरु होती ह।ै ु ये 5 – इ (E) वनम्नवलवखत ह:ैं 1. इन्गजे 2. एक्िप्लोर 3. एक्िप्लेन 4. एलोबोरेट 5. इिल्ै यएशन ू i. इन्गेज- इि चरर् म ें विद्यावथभयों को उत्तवे जत वकया जाता ह ै एिं उनकी उत्िकता को आकवषतभ वकया ु ांं जाता ह।ै यहााँ विद्यावथभयों को पढ़ने के वलए बाध्य नहीं वकया जाता ह ै बवल्क उन्ह ें पढ़ने के वलए आमवत्रत वकया जाता ह।ै इिका उद्दश्े य विद्यावथभयों को िीखे जान े िाल े िंप्रत्यय, प्रवक्रया एिं कौशलों ांं ांं ांं में मानविक रुप िे व्यस्त रखना ह।ै इिमें वनम्नवलवखत वक्रयाओ को शावमल वकया जाता ह:ै ांं अतीत एिं ितभमान के अविगम अनभि के मध्य िबि स्थावपत करना; तथा ु ांं ांं ांं तत्कालीन वक्रया-कलाप के अविगम के िंविछत परररं्ाम के प्रवत विद्यावथभयों िारा प्रस्तत विचार ु ांं पर ध्यान कें वित करना; ii. एक्सप्लोर- इि चरर् पर अविगमकताभ अपने िंिितारर् म ें अिंिान करता ह।ै यह चरर् विद्यावथभयों ु ांं को अनभि का एक िामान्य आिार प्रदान करता ह।ै यहााँ अविगमकताभ िंप्रत्यय, प्रवक्रयाओ एिं ु ांं ांं ांं कौशलों की पहचान करते ह ैं तथा उन्ह ें विकवित करते ह।ैं यहााँ विद्याथी अपने िंिितारर् को िंवक्रय रुप िे िमझते ह ैं तथा अविगवमत वकए जाने िाले िंप्रत्ययों या अविगम म ें

प्रयक्त वकए जानिेाले ु ां िामवग्रयों को पररिवतभत करते ह।ैं iii. एक्सप्लेन- इि िोपान पर विद्याथी अपने िाितािरर् ि ढाँढ कर वनकाले गए ि

Plagiarism detected: **0.06%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-… id: **86**

प्रत्यय की व्याख्या ू ां करते ह।ैं उनके इि िप्रत्यय के प्रवत विकवित की गई अपनी िमझ को शावब्दक रुप दने े या नए ां कौशल को व्यिहार म ें प्रदवशतभ करने का इि चरर् में पयाभप्त अििर रहता ह।ै यह िोपान वशक्षकों को िप्रत्यय क

ी पररभाषाओ, व्याख्यायों, प्रवक्रयाओ एि कौशलों का औपचाररक पररभाषीकरर् का ां ां ां ां बहत अििर

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **87**

प्रदान करता ह।ै ु iv. एलोबोरेट- इिका शावब्दक अथभ ह ै विस्तार दने ा। यह िोपान विद्यावथभयों को अपने िाितिरर् ि ढढाँ ू कर वनकाले गए िप्रत्यय को विस्तार दने े तथा कौशल एि व्यिहार का अभ्यिा करने का अििर ां ां दते ा ह।ै नए अनभि के माध्यम ि विद्याथी मख्य िप्रत्ययों क

ा गहन

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **88**

एि व्यापक िमझ विकवित ु ु ां ां करता ह।ै इि पडाि पर अविगमकताभ अपनी रुवच के क्षेत्र के प्रवत अविक जानकारी प्राप्त करता ह ै तथा अपने कौशलों को िप्रेष्ीय रुप प्रदान करता ह।ै ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 32 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 v. इ्ैल्यएिन- यह िोपान विद्यावथभयों को िमस्या का मल्याकन करने के वलए प्रोत्िावहत करता ह ै ू ू ां तथा वशक्षकों को अविगवमत वकए जाने िाले मख्य िप्रत्यय के प्रवत विद्यावथभयों की िमझ तथा ु ां कौशलों के विकाि को मल्यावकत करने का अििर प्रदान करता ह।ै ू ां 3.6 अधिगम योजना के िंरचनावादी मॉडि या 5-इ मॉडि का प्रारुप अविगम योजना म ें मख्य रुप ि इि बात पर बल वदया जाता ह ै वक कै ि विद्याथी को अविगम के वलए ु अवभप्रेररत वकया जा िकता ह।ै इिके वलए वशक्षक िरचनिाादी उपागम को अपनाते हुए अविगम योजना ु ां के विवभन्न चर्ों, एकवत्रत िामवग्रयों, िपावदत की जा िकने िाली वक्रयाओ, आवद को एक क्रम में ां ां व्यवस्थत करता ह।ै इिका उद्देश्य िमस्त अविगम प्रवक्रया को व्यिवस्थत करना होता ह।ै इिके िाथ ही वशक्षक अविगम को महत्तम स्तर तक ले जाने के वलए प्रवक्रया का मल्याकन भी करता ह।ै अविगम के ू ां िरचनिाादी योजना को ही अविगम के 5-इ मॉडल की भी िज्ञा दी जाती ह।ै नीचे अविगम के 5-इ ां ां मॉडल का एक

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindireadduniya.com/barahkhadi-kakaha… id: **89**

प्रारुप उदाहरर् के वलए वदया गया ह:ै ताहलका 1 : 5-इ मॉडल पर आधाररत अहधगम योजना का प्रारुप

इन्गेज विद्याथी को व्यस्त करने के वलए िस्त, घटना या प्रश्न। ु विद्याथी क्या जानते ह ैं एि क्या कर िकते ह ैं के बीच में िबि स्थावपत करना। ां ां ां एक्िप्लोर खोजे गए िस्त एि घटनाएँ। ु ां वनदशे न के िाथ प्रत्यक्ष कायभ-कलाप। एक्िप्लेन िप्रत्यय एि प्रवक्रया के प्रवत अपनी िमझ का विद्याथी िारा व्याख्या वकया जाना। ां ां िप्रत्यय के और बेहतर िमझ के वलए तथा नए िप्रत्यय के िाथ उिका िबि स्थावपत करने के ां ां ां ां वलए नए िप्रत्ययों एि कौशलों को विद्यावथभयों ि पररवचत कराया जाना। ां ां एलोबोरेशन इि चरर् पर वकए जानिेाले वक्रया-कलाप विद्यावथभयों को विवभन्न प्रिगों में िप्रत्ययों की ां ां अपनी िमझ का प्रयोग करने तथा नए कौशलों को िीखने एि िीखे गए कौशलों को और ां प्रखर करने की अनमवत दते े ह ैं । ु इिैल्यएशन विद्याथी अपने ज्ञान, कौशल एि योग्यताओ का मल्याकन करते ह ैं । इि स्तर पर वकए जाने ु ू ां ां ां िाले कायभ-कलाप विद्याथी के विकाि एि पिा के प्रभिाशीलता को मल्यावकत करने की ू ां ां अनमवत दते े ह।ैं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 33 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3.7 िरां चनावादी मॉडि या 5-इ मॉडि पर आिाधरत अधिगम योजना का धवस्तृत प्रारुप तावलका 1 म ें अविगम योजना के 5-इ मॉडल के प्रारुप का िर्नभ वकया गया ह।ै इि िर्नभ म ें 5-इ मॉदल के पाचों चरर् एि उनके कायभ को बताया गया ह ै । लेवकन एक बेहतर अविगम योजना बनाने के वलए यह ां ां पयाभप्त नहीं ह।ै इिके वलए प्रत्येक चरर् पर विद्याथी िारा वकए जाने िाले कायभ तथा वशक्षक िारा वकए जानिेाली कायों का िर्नभ भी आिश्यक ह।ै 5-इ मॉडल पर आिाररत अविगम योजना के विस्तत िर्नभ , ृ वजिम ें वक अविगम योजना के प्रत्येक स्तर पर वकए जा िकने िाले कायभ–कलाप तथा वशक्षक एि ां विद्याथी िारा वकए जा िकने िाले कायभ का िर्नभ शावमल है, को वनम्नवलवखत तावलका म ें प्रस्तत वकया ु गया ह:ै ताहलका 3: 5-इ मॉडल पर आधाररत अहधगम योजना का हर्तत र्िन ृ 5 - इ के चरण हकए जा सकने्ाले काय- हिक्षक द्वारा हकए जा सकने हर्द्याथी द्वारा हकए जा सकने ्ाले कलाप ्ाले काय काय इन्गेज प्रदशभन रुवच विकवित करना प्रश्न पछेंग,े यथा- एिा क्यों ू वपन उत्िकता जागत हआ? मैं इिके विषय में पहले ृ ु ु स्ितत्र लेखन करना ि क्या जानता ह?ाँ म ैं इिके ां वचत्र विश्लेष् प्रश्न पछन े के वलए विषय में क्या ढढाँ पाऊाँ गा । ू ू मवस्तष्क झवझात तत्पर करना विषय म ें अपनी रुवच ां उन प्रवतवक्रयाओ को वदखाएगा ां चनना जो यह प्रकट ु करते हों वक विद्याथी क्या जानते ह ैं या िप्रत्यय के विषय म ें ां क्या िोचते ह ैं ? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 34 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 एक्िप्लोर अिनिान काय भ विद्यावथभयों को वबना वक्रया-कलाप के वलए तय ु ां िचनाओ को अपने वशक्षक ि े िमय िीमा के भीतर ू ां एकत्र करने के वलए प्रत्यक्ष रुप ि े वनदशे स्ितत्रतापिभक िोचना ू ां प्रामावर्क प्राप्त वकए वमलकर पिाभनमान एि उपकल्पनाओ ू ु ां ां िामवग्रयों को कायभ करने के वलए की जाँच करना पढ़ना प्रोत्िावहत करना नए पिाभनमान करना एि नई ू ु ां

िमस्या का विद्यावथभयों को उपकल्पनाओ का वनमाभर् ां िमिाान करना पारस्पररक अतवक्रभ या करना, विकल्पों की जाँच ां एक मॉडल या करते िमय करना िए अन्य व्यवक्तयों के ां प्रवतमान का अिलोवकत करना िथ तत्िबवित पररचचाभ ां ां वनमाभर् करना िए उनके िितभलाप करना ां को िनिना अिलोकनों िए विचारों का ु ां आश्यकता पडने पर अवभलेख रखना विद्यावथभयों के वनर्यभ ों को खाररज करना या अिनिान कायभ को नकारना ु ां पनवनभदवे शत करन े के ु वलए खोजी प्रश्न पछना विद्यावथभयों को ू िमस्या के िमिाान करने के वलए िमय प्रदान करना एक्िप्लेन विद्याथी का िप्रत्यय िए पररभाषा ां ां िभावित िमिाान िए ां ां विश्लेषर् िए को अपने शब्द म ें ां उत्तरों की व्याख्या अन्य व्याख्या प्रस्तत करन े के वलए ु व्यवक्तयों ि करना विषय के पक्ष म ें विद्यावथभयों को दिरों की व्याख्या को ू विचार िए िक्ष्य प्रोत्िावहत करना ां औपचाररक रुप ि िनिना ु िरचनात्मक रुप ि े विद्यावथभयों ि िक्ष्य ां दिरों की व्याख्या ि े ू प्रश्न पछना िए स्पष्टीकरर् माँगना ू ां िबवित प्रश्न पछना ू ां ां पिन िए पररचचाभ औपचाररक रुप ि े ां वशक्षकों िारा प्रदान की वशक्षक की पररभाषा दने ा, जानीाली व्याख्या को व्याख्या वचतन व्याख्या करना िए ां ां िनिना तथा उिकी ु कौशल ि िबवित नए नाम दने ा ां ां व्याख्या करने का प्रयि कायभ-कलाप यथा िप्रत्ययों की व्याख्या ां करना – तलना , करने के वलए ु पिभ वक्रया-कलापों को ू िगीकरर्, त्रवट विद्यावथभयों के पि भ ु ू िके वतत करना ां विश्लेषर् आवद अनभिों को आिार ु व्याख्याओ में पिभ म ें ू ां के रुप म ें प्रयक्त ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 35 ु

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **90**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 करना अवभलेवखत वकए गए अिलोवकत तथ्यों का प्रयोग करन

ा एलोबोरेट िमस्या िमिाान पिभ म ें प्रदान वकए गए ू नए नाम, पररभाषा, वनर्यभ लेना औपचाररक नामों, व्याख्या तथा कौशल प्रयोगात्मक पररभाषाओ िए ां ां का नई लेवकन िमान अिनिान व्याख्याओ के प्रयोग ु ां ां पररवस्थवत म ें अनप्रयोग ु वचतन कौशल ि े की विद्यावथभयों ि े ां करना िबवित काय-भ आशा करना ां ां प्रश्न पछन,े उत्तर ू कलाप यथा – नई पररवस्थवत में िीख े प्रस्तावित करन,े वनर्यभ तलना, िगीकरर्, गए िप्रत्यय िए ु ां ां लेन,े तथा अिनिान ु ां अनप्रयोग कौशलों के अनप्रयोग ु ु कायभ का प्रारुप वनमाभर् करन े िए उिका ां करन े म ें पिभ िचनाओ ू ू ां विस्तार करने के वलए िए ज्ञान का प्रयोग ां विद्यावथभयों को करना प्रोत्िावहत करना िक्ष्यों ि तावकभ क विद्यावथभयों को वनष्कषभ वनकालना िैकवल्पक व्याख्याओ ां अिलोकनों िए ां को याद वदलाना व्याख्याओ को ां उपलब्ि आँकडों िए ां अवभलेवखत करना िक्ष्यों को विद्यावथभयों िवथयों में िप्रत्यय के ां को बताना तथा उनि े िमझ की जाँच करना पछना वक आप पहले ू ि क्या जानते ह ैं तथा आप क्या िोचते ह?ैं एक्स्प्लोर िाले चरर् की वनवतयों को भी यहाँ लाग वकया जा ू िकता ह ै इिेल्यएट उपरोक्त में ि कोई जब विद्याथी नीिन अिलोकन तथा पिभ म ें ु ू भी एक अकन ि

Plagiarism detected: **0.02%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-… id: **91**

प्रत्ययों का स्िीकत वकए गए व्याख्याओ ृ ां ां ां उपकरर् का अनप्रयोग करते ह ैं तब का प्रयोग

करके मक्तात प्रश्नों ु ु ां विकाि करना उनका अिलोकन के उत्तर दने ा परीक्षर् करना वकिी िप्रत्यय या कौशल के ां वनष्पादन का विद्यावथभयों के ज्ञान ज्ञान या िमझ का प्रदशभन मल्याकन वकिी िए कौशलों का स्िप्रगवत िए ज्ञान का ू ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 36 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िस्त का वनमाभन मल्याकन करना मल्याकन करना ु ू ू ां ां करना विद्यावथभयों के वचतन भिी अिनिान को ु ां ां रोजनामचा या वदन िए व्यिहार में आए प्रोत्िावहत करने के वलए ां भर के कायभ-कलाप पररितभनों के िक्ष्य िबवित प्रश्न पछना ू ां ां का लेखा-झोखा ढाँढना ू वलखना विद्यावथभयों वक स्िय ां पाश्वभवचत्र के ज्ञान िए िमह म ें ू ां िािवत वकए जान े ां िाले कौशलों का मल्याकन करने की ू ां अनमवत दने ा ु मक्तात प्रश्नों यथा- ु ां आप ऐिा क्यों िोचते ह?ें , आपके पाि इि विषय में क्या िाक्ष्य ह?ैं आप इि विषय म ें क्या जानते ह?ैं आप इिकी व्याख्या कै ि े करेंग?े आवद को पछें? ू अभ्यास प्रश्न 3. िरचनािादी मॉडल या 5 – इ मॉडल म ें

Quotes detected: **0%** id: **92**

'5 – इ'

ि क्या आशय ह।ैं ां 3.8 अधिगम योजना के िरां चनावादी मॉडि या 5 – इ मॉडि पर आिाधरत हहदी धवषय की एक अधिगम योजना वकिी भी प्रकार की योजना के बेहतर वक्रयान्ियन के वलए उि योजना की स्पष्ट िमझ योजना म ें शावमल व्यवक्तयों को होना चावहए। अविगम योजना शब्द वजतना िरल ह ै उिका वनमाभर् िए वक्रयान्ियन उतना ां ही जवटल। कोई व्यवक्त विफभ योजना के प्रारुप िए उिम ें शावमल विवभन्न चरर्ों म ें वकए जाने िाले ां वक्रयाओ, वशक्षक के उत्तरदावयत्ि िए विद्याथी के उत्तरदावयत्ि को िैद्ावतक रुप म ें जानकर अविगम ां ां ां उओजना मो िमझ नहीं िकता ह।ै वफर उिके वनमाभर् िए वक्रयान्ियन की तो कल्पना ही नहीं की जा ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 37 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िकती ह।ै वशक्षकों िए विद्यावथभयों को अविगम योजना ि भले-भाँवत पररवचत कराने के वलए इि योजना ां का एक उदाहरर् आिश्यक ह।ै इि उद्दश्े य को ध्यान म ें रखते हए इि खड म ें अविगम योजना के ु ां िरचनािादी मॉडल या 5 – इ मॉडल पर आिाररत वहदी विषय के एक अविगम योजना का विकाि ां ां वकया गया ह।ै मेरा पररिार कक्षा –3 उद्देश्य – इिके वनम्नवलवखत उद्दश्े य ह:ैं विद्यावथभयों म ें पररिार के प्रवत िमझ विकवित करेगा विद्याथी बडा पररिार, छोटा पररिार, िंयक्त पररिार, एकाकी पररिार, आवद के िप्रत्यय को ु ां ां िमझ िकते ह ैं विद्याथी के शब्द-भडार म ें िवद् हगी तथा भाषाई कौशलों का विकाि

होगा ृ ां □ विद्याथी कछ गवर्तीय िप्रत्ययों यथा- िख्या, अकगवर्तीय िवक्रयाओ आवद को िीखेंग े ु ां ां ां ां ां इकाई के प्रश्न □ पररिार वकि कहते ह?ैं □ पररिार ि िबवित विवभन्न पद क्या ह?ैं ां ां □ विद्याथी अपने पररिार के विवभन्न िदस्यों ि के ि िबवित ह?ैं ां ां □ दादा पि दादी हमारे वलए क्यों आिश्यक ह ैं पि हम ें िद् व्यवक्तयों की दखे -भाल वकि प्रकार ृ ां ां करनी चावहए? □ एकाकी पि ियक्त पररिार वकि कहते ह?ैं ु ां ां □ बडा पि छोटा पररिार वकि कहते ह?ैं ां आर्श्यक ससाधन ं □ नीचे वदए गए वचत्र की भााँवत कायभपवस्तका 1 ु □ लडका पि लडकी, पिक पि पिती, िद् पि िद्ा का वचत्र ृ ृ ु ु ां ां ां □ पररिार का वचत्र तथा दादा-दादी ि िबवित कहानी ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 38 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ कायभपवस्तका - 2 ु □ ग्रीवटग काडभ बनाने के वलए उपयक्त रद्दी िामग्री ु ां 5-इ मॉडल के हर्हभन्न सोपान इन्गेज- इि चरर्

Plagiarism detected: **0.06%** https://hi.wikipedia.org/wiki/पोटैशियम id: **93**

म ें विद्याथी अनदशे ात्मक कायों की पहचान करेंग।े यहााँ ि े अपने पिभ अनभिों को नई ु ू ु िचनाओ को ग्रहर् करने के वलए िवक्रय करते ह।ैं िीख े जाने िाले िप्रत्यय म ें विद्याथी मनविक रुप ि ू ां ां व्यस्त हो जाते ह

।ैं यहा ाँ वशक्षकों को विद्यावथभयों के िमझ पि गलतफहमी का मल्याकन करने का अििर ू ां ां वमलता ह।ै 1. पिर्

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3... id: **94**

ज्ञान को सहिय करना- इि चरर् म ें िपावदत वकया जानिाला मख्य कायभ विद्यावथभयों के पिभ ू ु ू ां ज्ञान क

ो िवक्रय करना ह।ै िप्रत्यय के विषय म ें विद्यावथभयों की ितभमान िमझ को जानने के वलए यह बहत ु ां महत्िपर् भ ह।ै इिके वलए वनम्नवलवखत कायभ-कलापों को वकया जा िकता ह:ै ू □ अपने पररिार के विषय के म ें आप जो कछ भी जानते ह ैं मझे बताए ाँ – (जाने हए को जानना) ु ु ु □ अपने पररिार म ें उपलब्ि विवभन्न िबिों वजन्ह ें वक आप जानते ह ैं मझ े बता

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.doubtnut.com/qna/127009639 id: **95**

ए ाँ – (प्रश्न पछना/ ु ू ां ां िम्प्रत्यय वनमाभर्) □ अपने पररिार के विषय म ें जो आप नहीं जानते ह ैं िो मझ े बताए ाँ – (अज्ञात को ज

ानना) ु □ अपने पररिार के विषय म ें आप जो कछ और जानना चाहते ह,ैं मझ े बताएाँ – (आशाओ का पता ु ु ां लगाना) 2. गलतफिमी/गलत अर्धारणा का पता लगाना- पि भ

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3... id: **96**

ज्ञान को िवक्रय करने के बाद वशक्षक का ू दिरा महत्िपर् भ कायभ होता ह ै पि भ ज्ञान क

े िदभ भ म ें यवद कोई गलतफहमी हो तो उिका पता लगाना । नीच े ू ू ां ू कछ िभावित गलतफहवमयों को िचीबद् वकया गया ह।ै आप और गलतफहवमयों का पता लगाकर उन्ह ें ु ू ां िचेबद् कर िकते ह।ैं ू □ घर पि पररिार का अथभ ां □ कब चाचा पि चाची जिै े शब्

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **97**

द का प्रयोग करना ह ै (बालक बहत िारे बडे लोगों के वलए चाचा ु ां पि चाची जिै े शब्दों का प्रयोग करते ह)ैं ां □ कब भाई पि बहन जिै े शब्द का प्रयोग करना ह ै (बालक यह अिलोवकत करते ह ैं वक रक्त ां िबिों के इतर भी भाई –बहन का प्रयोग वकया जाता ह)ै ां ां □ क्या वबना ितान िाली दपवत को पररिार कहा जा िकता ह?ै ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 39 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ उनकी यह िमझ हो िकती ह ै वक एक घर म ें रहने िाले िारे िदस्य को पररिार कहते ह ैं । एक्सप्लोर- इि पडाि पर वि

Plagiarism detected: **0.02%** https://hi.wikipedia.org/wiki/पोटैशियम id: **98**

द्याथी िीख े जाने िाले कायभ पि अनभि म ें प्रत्यक्ष रुप ि शावमल हो जाते ु ां ह

ैं । विद्याथी एक िाथ वमलकर कायभ करते ह।ैं इिवलए ि े अपने विचारों पि अनभिों को िाझा करते ह ैं ु ां तावक एक िामान्य अनभि या िमझ का विकाि हो िके । इि पडाि पर विद्यावथभयों िारा पता लगाए ु जान े िाले कछ मख्य िप्रत्यय वनम्नवलवखत ह:ैं ु ु ां □ पररिार, घर, मकान □ भाई, बहन, चचरे भाई-बहन □ चाचा-चाची(पैतक/मातक) ृ ृ □ माता-वपता, दादा-दादी, परदादा- परदादी □ भतीजा-भतीजी □ छोटा पररिार, बडा पररिार, िियक्त पररिार, एकाकी पररिार ु ां विद्यथी दो की िख्या या छोटे िमह म ें कायभ करते हए इन िप्रत्ययों के विषय म ें पता लगाएगाँ े । इिके वलए ु ू ां ां ि े वनम्नवलवखत कायभ करेंग:े □ अविक ज्ञानिान व्यवक्तयों यथा मात-वपता, िररष्ठ विद्याथी, या भाई-बहनों ि पछेंग े (विशेषज्ञों का ू अनभि लेना)। ु □ पियपस्तकों पि अन्य पस्तकों म ें पररिार के विषय म ें क्या वलखा गया ह ै उिे पढ़ ें (स्ि ृ ु ु ां अध्ययन) □ शब्दकोश को पढ़ाना □ फ्लो चाटभ बनाना एक्सप्लेन - इि पडाि पर विद्याथी अपने िारा पता लगाए गए िम्

Plagiarism detected: **0.06%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-... id: **99**

प्रत्ययों का विश्लेषर् करता ह।ै वशक्षक िारा उनके िमझ को स्पष्ट वकया जाता ह ै तथा यवद आिश्यक हो तो उिमें िुिार वकया जाता ह।ै इि ु पडाि पर विद्याथी अपने अनुभिों का प्रयोग िम्प्रेषर्ीय रुप में करने लगता ह।ै यह पडाि वशक्षकों को ु ां औपचाररक पदों एि िम्प्रत्ययों क

ो वलखने एि व्याख्या करने का अििर प्रदान करता ह।ै ां ां छोटे िमूहों में िे अपने विचारों को िमूह के अन्य िदस्यों के िाथ िाझा करेंग े (िमूह कायभ) ू ू ू उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 40 ु

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **100**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 उपरोक्त िभी िम्प्रत्ययों पर प्रस्ततीकरर् दने ा। इिके वलए फ्लो चाटभ या पािर प्िाइट प्रस्ततीकरर् ु ु ां ां का प्रयोग वकया जा िकता ह ै (प्रस्तवतकरर्) ु िुकराती प्रश्नों की िहायता िे वशक्षक विद्यावथभयों की िहायता यवद िम्प्रत्यय क

ी व्याख्या करने म ें ु ां कुछ कमी रह गई हो तो उिकी पूवतभ करने म ें करता ह।ै ु ू विद्याथी इि कायभ पुवस्तका को अपने शटभ पर वपन करेगा एि इि प्रकार घूमेगा की अन्य ु ु ां विद्यावथभयों के पररिार के विषय म ें पढ़ िकें (स्ि-य का विज्ञापन)। ां विद्याथी अपने पररिार के विषय म ें पूरी कक्षा म ें बातचीत करेगा (िाताभलाप)। ू वशक्षक इन आकँ डों को िारर्ीबद् करेंग।े मेरा पररिार कायिपहततका – 1 लेकर उसे परा करें। ु ू कायिपहततका- 1 मेरा पररिार ु मेरे पररिार का हचत्र यहा वचपकाए ँ ां 1. मरे ा नाम...ह।ै 2. मरे े वपताजी

Plagiarism detected: **0.01%** https://hindireadduniya.com/barahkhadi-kakaha…   id: **101**

का नाम ....ह।ै 3. मरे ी माता जी का नाम.................................ह

।ै 4. मरे े पररिार म ें िदस्यों की िंख्या....................ह।ै ां 5. मरे ा पररिार ियुक्त/एकाकी...........................ह।ै ु ां 6. मरे ा पररिार छोटा/बडा.............................. ह।ै उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 41 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ताहलका 4: आकँ ड़ों का सारणीयन पररिार के सदतय ऐसे हर्द्याहथियों की सख्या हजनके घर में कल ु ं ये सदतय िैं टैली दादी दादा बहन भाई चाचा चाची ताहलका 5: आकँ ड़ों का सारणीयन पररिार में सदतय सख्या टैली कल ु ं भाई एक दो तीन तीन िे अविक बहन एक दो तीन तीन िे अविक उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 42 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 उपरोक्त आकँ डों की िहायता िे विद्याथी छोटे और बडे पररिार के िं

Plagiarism detected: **0.03%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-…   id: **102**

प्रत्यय का अनुमान ु ां लगाएगँ ।े इिके िाथ ही िाथ िे िे ियुक्त एि एकाकी पररिार के िम्प्रत्यय क

ो भी िमझने का प्रयाि ु ां ां ां करेंग े (दृश्य चीजों का िर्ीकरर् न करना)। विवभन्न वचत्रों की िहायता िे विद्याथी व्यवक्तगत रुप िे या िमूह म ें शावमल होकर विवभन्न ू प्रकार के पररिार का वचत्र बनाएगँ े (िम्प्रत्यय वनमाभर्) ां एलोबोरेट- इि पडाि पर विद्याथी िं

Plagiarism detected: **0.04%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-…   id: **103**

प्रत्यय के प्रवत अपनी िमझ का विस्तार करता ह।ै इि पडाि पर ही ां उन्ह ें अभ्याि करने का अििर भी प्रदान वकया जाता ह ै तावक िे े िम्प्रत्यय क

ी व्यापक एि गहन िमझ ां ां विकवित कर िकें । विद्यावथभयों िे लडकों एि लडवकयों, युिकों एि युिवतयों तथा िृद्ों एि िृद्ाओं के वचत्र लाने ृ ृ ु ु ां ां ां ां कह।े इन वचत्रों को विद्याथी िारा एक चाटभ पेपर पर वचत्रों को अलग-अलग िमूह म ें इि प्रकार ू लगिाए ँ वक छोटा एि बडा पररिार तथा एकाकी एि ियुक्त पररिार बनाया जा िके । ु ां ां ां पाररिाररक वस्थवत वजिमें एक अवभभािक िारा छोटे एि बडे बच्चों की दखे भाल तथा तथा ां वबना अवभभािक के छोटे एि बडे बच्चों की दखे भाल को दशाभया गया ह ै का िर्भन एि ां ां प्रस्ततीकरर् ु वशक्षक पूरी कक्षा को दादा-दादी के िबि म ें एक कहानी िुनाएगा तथा विद्यावथभयों को भी उिी ू ु ां ां प्रकार की कहानी िुनान े के वलए कहगे ा। इि वक्रया-कलाप का िंचालन िृद् व्यवक्तयों के प्रवत ृ ु ां प्यार एि दखे भाल के मूल्य को अविगम योजना म ें शावमल करने के उद्दश्े य िे वकया जाता ह ै । ू ां अवभभािक एि दादा-दादी के वलए ग्रीवटग काडभ बनाना। इि गवतविवि िे विद्यावथभयों म ें ां ां पयाभिरर् िंरक्षर् के मूल्य को प्रोत्िावहत वकया जाएगा करन े के उद्दश्े य िे वकया गया ह ै ू ां (हस्तकला)। माता-वपता के वलए विवभन्न भाषाओं में प्रयुक्त वकए जाने िाले शब्दों का पता लगाना (शब्द ु ां िंकलन)। ां अपने पडोि म ें वस्थत छोटे पररिार, बडे पररिार, ियुक्त पररिार या एकाकी पररिार का पता ु ां लगाना (िि)े । इिैल्यूएशन- यह पडाि विद्यावथभयों को िम्प्रत्यय के प्रवत अपने िमझ पर वचतन करने तथा उिका ु ां ां मूल्याकन करन े के वलए प्रोत्िावहत करता ह।ै वशक्षक विवभन्न िािनों

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources!   id: **104**

का प्रयोग करके विद्यावथभयों के ू ां मुख्य िम्प्रत्यय के प्रवत िमझ का मूल्याकन करता ह।ै हालाँवक इि आवखरी पडाि कहा जाता ह ै लेवकन ु ू ां ां उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 43 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 एिा ह ै नहीं। मल्याकन िितत चलता रहता ह।ै मल्याकन के पारपररक एि आिवनक दोनों उपागमों की ू ू ु ां ां ां ां चचाभ यहाँ की गई ह।ै 1. पारपररक मल्याकन- इिम ें वनम्नवलवखत तकनीकों को शावमल वकया जा िकता ह:ै सत्य एर् ू ं ं ं असत्य कथन सबधी प्रश्न यथा - ं ं एक छोटे पररिार के िदस्यों की िख्या अविक होती ह ै (ित्य/ अित्य) । ां ररक्त तथानों की पहति सबधी प्रश्न यथा - ू ं ं .... तथा उनके बच्चे एक पररिार बनात े ह।ैं बिहर्कल्पी प्रश्न यथा- ु जब विफभ बच्चे अपने माता-वपता के िाथ रहते ह ैं तो एिा पररिार कहा जाता ह ै – i. एकाकी पररिार ii. ियक्त पररिार ु ां iii. छोटा पररिार iv. बडा पररिार हमलान करें। ततभ

Quotes detected: **0%** id: **105**

'अ'

ततभ

Quotes detected: **0%** id: **106**

'ब'

ं ं i. वपताजी की माता जी (अ) चाचा ii. माताजी के वपताजी (ब) दादा iii. 3माताजी की बहन (ि) दादी iv. वपताजी के भाई (द) मौिी 2. िैकहल्पक मल्याकन- नीचे कछ िकै वल्पक मल्याकन के तकनीक वदए गए ह।ैं इिका प्रयोग ू ु ू ं ां आप यथारुप कर िकते ह ैं या वफर पररवस्थवत के अनिार आप इिमें पररितभन कर िकत े ह।ैं ु अनदिे - नीचे वदए गए विवभन्न कायभकलापों में आपके या आपके िाथी के वनष्पादन के प्रवत ु आपके मन म ें जो भाि ह ै उिको िािभवबक उपयक्त ढग ि व्यक्त करने िाले चेहरे पर िही का ु ां वनशान लगाएँ। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 44 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ताहलका 6: हनधािरण मापनी प्रकार - 1 िम सख्या हनकास क्या सधार करना ह?ै ु ं मेरा/साथी का हनष्पादन 1 पररिार का विज्ञापन करन े में 2 पररिार के विषय में बातचीत करने म ें 3 कक्षा के आँकडों को िारर्ीबद्ध करन े म ें 4 पररिार के प्रकार का वचत्र बनान े म ें 5 कहानी कहना 6 िप्रत्यय वनमाभर् ां हनधािरण मापनी प्रकार - 2 ताहलका सख्या 7: हनधािरण मापनी प्रकार - 2 ं िम सख्या व्यिहार हनधािरण ं बहत खराब बहत अच्छा ु ु एक दो 3 4:00 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 45 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 5:0 0 1 िािान 2 िमय बद्धता 3 िहभाग 4 िहयोग 5 िप्रेषर् ां 6 विश्वाि 3.9 िारांश ितभमान अविगम योजना वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया की माँग ह।ै वशक्षाथी-कें वित वशक्षर् व्यिस्था के प्रचलन म ें आने के कारर् पाि योजना का स्थान अविगम योजना ने ले वलया ह।ै अविगम योजना एक निीन िप्रत्यय ह।ै प्रस्तत इकाई म ें वशक्षर्-अविगम व्याििाय म ें कायभरत विवभन्न व्यवक्तयों के उपयोग हते ु ु ां अविगम योजना की विस्तत व्याख्या की गई ह।ै इकाई की शरुआत अविगम योजना के अथभ एि पररभाषा ृ ु ां ि की गई ह।ै इकाई के अगले भाग म ें अविगम योजना के विवभन्न घटकों को स्पष्ट वकया गया ह।ै इि प्रकार एक अविगम योजना की िरचना का िमग्र िर्नभ इि इकाई म ें वकया गया ह।ै वशक्षर् म ें मनोविज्ञान ां के िमािेश ने वशक्षर्-अविगम म ें िरचनािादी उपागम को जन्म वदया ह।ै िरचनािादी उपागम

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **107**

का प्रयोग ां ां कर अविगम योजना का वनमाभर् करने की प्रवक्रया का भी िर्नभ इि इकाई म ें वकया गया ह।ै इि प्रकार के अविगम योजना को 5-इ मॉडल पर आिाररत अविगम योजना भी कहा जाता ह

।ै अविगम योजना के विस्तत प्रारुप का िर्नभ कर इि िप्रत्यय को और भी अविक स्पष्ट वकया गया ह।ै इकाई के अत म ें वहदी ृ ां ां ां विषय ि िबवित

Quotes detected: **0%** id: **108**

'मरे ा पररिार'

शीषकभ पर आिाररत एक िरचनािादी या 5- इ मॉडल अविगम योजना ां ां ां का प्रस्ततीकरर् वकया गया ह।ै अविगम योजना का उदाहारर् िारा स्पष्टीकरर् इि अध्याय को और भी ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 46 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 रुवचकर एि उपयोगी बनाता ह।ै इि प्रकार, यह अध्याय वशक्षर्-अविगम म ें कायभरत व्यवक्तयों के वलए ां अत्यत ही उपयोगी ह।ै ां 3.10 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 1. अविगम योजना का आशय, एक वनवश्चत िमय अिवि के वलए अविगम के वनयोजन हते प्रयोग वकए ु जान े िाले दस्तािेज ि ह।ै 2. अविगम योजना के वनम्नवलवखत घटक होते ह:ैं i. अविगम उद्दश्े यों का एक िमह ू ii. िास्तविक व्यिहार के रुप में वक्रयाओ का वनश्चयीकरर् ां iii. वक्रया का िािान या िाक्ष्य के िाथ िबि ां ां ां iv. िाक्ष्य 3. 5 –

Quotes detected: **0%** id: **109**

'इ'

का आशय इिके पाँच चरर् जो वक अग्रेजी अल्फाबेट के

Quotes detected: **0%** id: **110**

'इ'

अक्षर ि शरु होते ह ैं ि ह।ैं य े ु ां पााँच चरर् वनम्नवलवखत ह:ैं i. इन्गजे ii. एक्स्प्लोर iii. एक्स्प्लेन iv. एलोबोरेट v. एिल्ै यएशन ु 3.11 धनबित्मक प्रश्न ां 1. अविगम योजना का अथभ स्पष्ट करें। 2. अविगम योजना के विवभन्न घटकों का िर्णभ करें। 3. अविगम योजना के िरचनािादी मॉडल का अथभ बताते हए उिके प्रारुप का विस्तत िर्णभ करें। ु ृ ां 4. अविगम के िरचनािादी मॉडल या 5- इ मॉडल पर आिाररत वहदी विषय के वकिी प्रकरर् के ां ां वलए एक अविगम योजना बनाए।ाँ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 47 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 4 - भाषायी कौशलों का धिकाि एिां उनका मूलयाांकन: धिन्दी भाषा के धिशेष िन्दभ में भ 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 भाषायी कौशल का अथभ 4.3.1 भाषायी कौशल का महत्ि 4.4 पिन कौशल का आशय एि प्रकार ां 4.4.1 िस्िर पिन एि उिका महत्ि ां 4.4.2 मौन पिन एि उिका महत्ि ां 4.4.3 पिन वशक्षर् की प्रमख विवियााँ एि िीिािवनयााँ ु ां 4.5 श्रिर् कौशल का आशय 4.5.1 श्रिर् कौशल के आिश्यक तत्ि 4.5.2 श्रिर् कौशल का विकाि 4.5.3 श्रिर् कौशल का महत्ि 4.6

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **111**

लेखन कौशल का आशय एिम महत्ि 4.6.1 लेखन कौशल का उद्दश्े य 4.6.2 लेखन कौशल

का विकाि 4.7 मौवखक अवभव्यवक्त कौशल का अवभप्राय 4.7.1 मौवखक अवभव्यवक्त कौशल का महत्ि 4.7.2 मौवखक अवभव्यवक्त कौशल के वशक्षर् का उद्दश्े य 4.8 उच्चस्तरीय भाषायी कौशल का आशय 4.9 िाराश ां 4.10 अभ्यिा प्रश्न के उत्तर 4.11 िदभभ ग्रन्थ ां 4.12 वनबन्िात्मक प्रश्न उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 48 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.1 प्रस्तावना भाषा ज्ञान का प्रिशे िार ह।ै बालक भाषा के िारा ही िस्तओ के बारे म ें जानने ि िमझने का प्रयाि करता ु ां ह।ै इिके वलए ज्ञानाजभन म ें बालक भाषा के दो रूपों का प्रयोग करता ह ै - मौवखक और वलवखत। मौवखक भाषा के प्रयोग िारा िह दिरों के विचारों को िनने ि अपने विचारों को अवभव्यक्त करने का प्रयाि करता ु ू ह ै तथा वलवखत भाषा िारा दिरों के वलवखत विचारों एि भािों को पढ कर िमझने तथा अपनी अनभवतयों ु ू ां ू एि भािों को वलखकर िप्रेवषत करने का कायभ करता ह।ै इि प्रकार बालक भाषा के िारा अपने विचारों, ां ां भािों, अनभवतयों के आदान-प्रदान एि िप्रेषर् के वलए चार वक्रयाए ाँ करता ह।ै िनना, बोलना, पढ़ना और ु ू ु ां ां वलखना। बालक को भाषायी व्यिहार के इन चार प्रमख कायों म ें अभ्यिा एि प्रवशक्षर् िारा कशल एि ु ु ां ां वनपर् बनाना ही भाषायी कौशल कहलाता ह।ै इकाई १.३ म ें भाषायी कौशल के अथभ पर चचाभ वकया गया ु ह।ै भाषा विकाि के वलए िनना या 'श्रिर्' अवनिायभ योग्यता ह।ै बालक िप्रथम अपने माता-वपता िारा ु बोली जाने िाली भाषा को िनकर उिका अनकरर् करता ह ै तथा अपने िातािरर् को िमझने ि जानने ु ु का प्रयाि करता ह।ै िनने में वकिी प्रकार की त्रवट या दोष ि उिका भाषायी विकाि अिरूद्ध हो जाता ु ु ह।ै इिीवलए बचपन ि बविर (श्रिर् अक्षम) बालकों म ें शब्दकोश के अभाि के कारर् ि े बोल नहीं पात े ह।ैं इि ईकाई १.४ के अन्तगभत हम श्रिर् कौशल के बारे म ें अध्ययन करेंग।े भाषा कौशल के विकाि की दिरी अवनिायभ योग्यता बोलना या मौवखक अवभव्यवक्त कौशल ह।ै इिके ू विकाि के वलए आिश्यक ह ै वक बालक म ें श्रिर् कौशल का विकाि हो गया हो अथातभ िह दिरों के ् ू विचारों को शद्-शद् और स्पष्ट िनने म ें दक्ष हो। प्रायः दखे ा जाता ह ै वक अशद् िनने िाला अशद् ु ु ु ु ु ु बोलता भी ह ै और वलखता भी ह।ै इिीवलए प्रारवम्भक कक्षाओ म ें श्रिर् और मौवखक अवभव्यवक्त के ां विकाि पर जयादा बल वदया जाना चावहए। ईकाई १.५ के अन्तगतभ मौवखक अवभव्यवक्त कौशल (बोलना) की विशषे ताएाँ, महत्ि ि विकाि पर चचाभ वकया गया ह।ै पढ़ना एक िोद्दश्े य एि िाथभक वक्रया ह।ै इिके आिश्यक तत्ि ह ै -एकाग्रता एि शब्दों म ें वनवहत ां ां अथभ एि भाि को ग्रहर् करना। इि कौशल के विकाि के वलए बालक वनरन्तर अनकरर् एि गहन ु ां ां अध्ययन की प्रवक्रया को अपनाता ह।ै ईकाई १.६ के अन्तगतभ पिन कौशल म ें दक्षता विकवित करने के वलए उिके महत्ि, प्रकार, गर् एि विकाि पर चचाभ वकया गया ह।ै ु ां लेखन अवभव्यवक्त का िरल माध्यम ह ै इिके वलए िनना, बोलना और पढ़ना कौशल का ु विकाि आिश्यक ह।ै

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **112**

लेखन कौशल म ें वनपर् एि दक्ष होने पर बालक अपने विचारों एि अनभवतयों को ु ु ू ां ां वलवप के माध्यम ि स्थावयत्ि प्रदान करता ह।ै ईकाई १.७ के अन्तगतभ लेखन कौशल की व

िशषे ता, महत्ि एि विकाि पर प्रकाश डाला गया ह।ै ां बालकों म ें भाषायी कौशल पर वनपर्ता एि दक्षता प्राप्त करना एक लम्बी प्रवक्रया ह।ै इिके वलए ु ां िभी भाषायी, कौशलों का पर् भ विकाि होना आिश्यक ह।ै इिके िारा ही बालक उच्चस्तर पर अपन े ू विचारों एि अनभवतयों को प्रभािशाली ढग ि रख पाता ह ै तथा व्यिहार भी करता ह।ै इि ही उच्चस्तरीय ु ू ां ां भावषक कौशल कहते ह।ैं ईकाई १.८ के अन्तगभत उच्च-स्तरीय भावषक कौशल पर चचाभ वकया गया ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 49 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.2 उद्दश्े य इि इकाई क अध्यायाकराने के पश्चात आप- ां 1. बालक भाषायी के िम्प्रत्यय को िमझ िकें ग।े 2. बालक भाषायी कौशल के प्रकारों को बता िकें ग।े 3. बालक भाषायी कौशल के प्रकारों (िनना, बोलना, पढ़ना और वलखना) के विशेषताए ाँ एि महत्ि को ु ां बता िकें ग।े 4. बालक भाषायी कौशल के विकाि के आिश्यक तत्िों का उल्लेख कर िकें ग।े 5. बालक भाषायी कौशल के विकाि के प्रमख विवियों को िमझकर उिका उल्लेख कर िकें ग।े ु 6. बालक भाषायी कौशलों के विकवित करने म ें अध्यापक की भवमका को बता िकें गे। ू 4.3 भाषायी कौशि का अथभ बालक अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के वलए भाषा को एक िािन के रूप म ें प्रयक्त करता ह।ै िह ु अपने कथन को दिरों तक पहचाँ ाने के वलए उपयक्त और िाथभक शब्दािली को िनकर उिी रूप म ें ु ु ु ू उिका अथभ ग्रहर् करता ह।ै िक्ता िारा कही गयी बात श्रोता तक उिी रूप म ें पहचाँ ने की वक्रया भाषायी ु िप्रेषर् कहलाता ह।ै भाषायी िप्रेषर् के अन्तगतभ दो वक्रयाएाँ होती ह।ै अपने

विचारों को अवभव्यक्त करना ं ं या िप्रेवषत करना तथा विचारों को ग्रहर् करना या िमिझना। विचारों को िप्रेवषत या अवभव्यवक्त हम ं ं बोलकर या वलखकर करते ह।ैं जबवक विचारों का ग्रहर् हम िनकर और पढ़कर करते ह।ैं भाषायी िप्रेषर् ु ं के ये चार प्रमख आयाम िनना, पढ़ना, बोलना तथा वलखना ही भाषायी कौशल

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 4 resources! id: **113**

कह े जाते ह।ैं इन्ह ें ु ु अभ्यिा एि बार-बार दहराने ि िदृढ़ता प्रदान होती ह।ै भ

ाषायी कौशल को वनम्न चाटभ िारा िमिझा जा ु ं ु िकता ह ै - भाषायी कौशल विचारों को ग्रहर् करना विचारों का िप्रेषर् ं (िमिझना) (अवभव्यक्त करना) िनकर ग्रहर् करना पढ़कर ग्रहर् करना ु (िनना) (पढ़ना) ु अवभव्यक्त करना अवभव्यक्त करना (बोलकर) (वलखकर) उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 50 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 बालकों के भाषा वशक्षर् या भाषायी विकिा म ें भाषायी कौशल का विशषे महत्ि ह।ै बालकों म ें भाषा विकिा का प्रारम्भ उिके पररिार ि माता-वपता ि ही होती ह।ै िह अपने माता-वपता ि बडों िारा बोली जाने िाली भाषा को िनता ह ै और उिका अनकरर् करता ह ै वकत बलक िारा िीखी जाने िाली भाषा ु ु ु ं यह रूप जरूरी नहीं वक शद् ही हो। इिके वलए आिश्यक ह ै वक प्राथवमक स्तर पर ही इिके विकिा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.viahindi.in/2024/07/k-kh-g-gh-in-eng… id: **114**

पर ु ध्यान वदया जाय। इि पर ध्यान न दने े पर िह त्रवटपर् भ भाषा िीखता ह ै और अपने व्यिहाररक जीिन म ें ु ू िि े ही उिका प्रयोग

करता ह।ै वजििे उिके चारों कौशल प्रभावित होते ह।ैं इिवलए आिश्यक ह ै वक बाल्यािस्था म ें ही बालकों के भाषायी कौशलों के विकािपर ध्यान वदया जाय। प्राथवमक स्तर बालकों में िीखने की प्रिवत्त तीव्र होती ह।ै अतः िह इन कौशलों को िहजता एि िगमता ि िीख लेता ह ै और उन ृ ु ं पर शीघ्रता ि दक्षता प्राप्त कर लेता ह।ै 4.3.1 भािायी कौिल का मित्ि i. बालक अपने विचारों एि अनभवतयों को अवभव्यक्त कर िकता ह।ै ु ू ं ii. बालक दिरों तक अपने भािों को आिानी ि पहचाँ ा िकता ह।ै ु ू iii. भाषायी कौशलों म ें दक्ष होने पर अपने ज्ञान एि अनभवतयों को स्थावयत्ि प्रदान कर िकता ह।ै ु ू ं iv. मौवखक अवभव्यवक्त िारा अल्प िमय म ें िरगवभभत विचारों को िप्रेवषत कर िकता ह।ै ं v. िमाज म ें बेहतर िमायोजन स्थावपत कर िकता ह।ै अभ्यास प्रश्न 1. भाषायी कौशल का आशय क्या ह ै । 2. भाषायी कौशल के अन्तगतभ कौन-कौन ि कौशल आते ह ैं । 4.4 पठन कौशि का आशय एवं प्रकार पिन कौशल भाषा वशक्षर् का आिश्यक अग ह।ै पिन कौशल को िाचन कौशल भी कहा जाता ह।ै ं िाचन शब्द 'िाक' िात ि बना ह ै वजिका अथभ ह-ै शब्द, िार्ी अथिा कथन। वलख े हए अथिा छपे हए ु ु ृ ु शब्दों का उच्चारर् करना िाचन होता ह।ै वकन्त िाचन का यह अथभ िकवचत ह।ै भाषा वशक्षर् म ें िाचन ु ु ं का अथभ वलवखत िामग्री को पढ़ते हए अथभ ग्रहर् करने की प्रवक्रया िाचन या पिन कहलाती ह।ै यह ु िोद्दश्े य, िाथभक ि विचार प्रिान होती ह।ै भाषा वशक्षर् म ें िाचन अत्यन्त महत्िपर् भ ह।ै यह ज्ञान प्रावप्त के ू िाथ-िाथ आनन्द प्रावप्त ि रिानभवत का भी िाधन ह।ै प्रारम्भ म ें बालक पररिार एि स्थानीय पररिशे के ु ू ं प्रभाि ि अस्पष्ट एि अशद् उच्चारर् करता ह।ै वजििे उिका ज्ञान भी अपररपक्ि होता ह।ै एिे में ु ं प्राथवमक स्तर पर बालक को विद्यालय म ें िाचन म ें पररपक्ि एि वनपड बनाने के वलये आिश्यक ह ै वक ु ं उन्ह े िाचन की िही ि स्पष्ट उच्चार का ग्यान कराया जाय। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 51 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **115**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पठन के प्रकार - भाषा वशक्षर् म ें बालक पिन कायभ दो प्रकार

ि करता ह।ै एक तो िह महाँ ि ध्िवनयों ु का उच्चारर् करते हए अथभ बोि एि भािानभवत करता ह ै वजिे मौवखक पिन या िस्िर पिन कहते ह।ैं ु ु ू ं दिरा शान्त रहकर महाँ ि वबना आिाज वनकाले मन, ही मन अथभ ग्रहर् करके पढ़ना, वजिे मौन िाचन या ु ू मौन पिन कहते ह।ैं पिन के प्रकार का विस्तत िर्नभ रेखावचत्रों िारा प्रदशनभ अग्रावकत ह ै – (रीता चौहान ृ ं ं 2016) पिन के प्रकार मौवखक पिन (िस्िर पिन) मौन पिन आदश भ पिन अनकरर् पिन ु (वशक्षक िारा) (छात्र िारा) स्िाध्याय पिन ित पिन गभीर पिन ं ु व्यवक्तगत पिन िामवहक पिन (िमिते पिन) ू 4.4.1 सतर्र पठन एर् उसका मित्त्ि ं िस्िर िाचन का अथभ स्िर िवहत िाचन करना ह।ै भाषा वशक्षर् म ें िस्िर िाचन का विशेष महत्ि होता ह।ै इििे बालकों का उच्चारर् शद् होता ह ै और उनके अन्दर की वझझक दर होती ह।ै ि े शद् और ु ु ू प्रभािपर् भ िाचन िारा श्रोता पर विवशष्ट प्रभाि डालते ह ैं और िगोवष्ठयों, व्याख्यानो एि िाताभओ में ू ं ं ं प्रभािशाली ढग ि अपने विचार रख पाते ह।ैं इिके िाथ ही उनकी उच्चारर् शद् होने पर वलखने म ें ु ं अशवद्धयाँ नहीं होती ह।ैं वजििे उनकी मौवखक और वलवखत दोनों कौशलों म ें िधार होता ह।ै यह छोटी ु ु कक्षाओ (6-8 तक) जयादा उपयोगी होते ह।ैं ं सतर्र पठन का मित्ि i. िस्िर िाचन ि बालक की वझझक, िकोच ि वहचवकचाकर आवद का वनिारर् होता ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 52 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. बालकों का शब्दोच्चारर् शद् होता ह।ै ु iii. बालकों के शब्द भण्डार म ें िवद् होती ह।ै ृ iv. बालकों की दखे ने ि िम्बिीत इवन्ियों, ध्िवन एि मवस्तष्क तीनों प्रवशवक्षत होते ह।ैं ं ं v. इििे बालकों को स्िराघात एि बलाघात का भी िमवचत ज्ञान हो जाता ह।ै ु ं vi. िस्िर िाचन के अभ्यिा ि बालक िाद-वििाद एि भाषर् कला म ें वनपर् होते ह।ैं ु ं vii. प्रारवम्भक स्तर पर बालकों के वलए िस्िर िाचन का विशषे महत्ि होता ह।ै क्योंवक इि स्तर पर बालक िगीत प्रेमी होता ह।ै ं 4.4.2 मौन पठन एर् उसका मित्र् ं वलवखत भाषा को वबना उच्चारर् (ध्िवन) वकए मन ही मन शावन्त पिकभ पढ़ने और पढ़कर अथभ ग्रहर् ू करने

की वक्रया को मौन पिन कहते ह।ै मौन पिन करते िमय पद्याश म ें िवर्भत भिोों और विचारों की ां ओर अविक ध्यान वदया जाता ह।ै व्यिाहाररक जीिन में मौन पिन बहत ही महत्िपर् भ होता ह।ै ु ू ििजभ वनक स्थानों, पस्तकालयों म ें पत्र-पवत्रकाओ, मनोरजन िावहत्य, िमदभ शनभ आवद को मौन पिन ि ु ां ां पढ़ना पडता ह।ै मौन पिन म ें पिनकताभ मौवखक पिन की अपेक्षा अविक मनोयोग ि पढ़ता ह।ै िह कम िमय म ें अविक पढ़ लेता ह ै तथा उिे थकान भी कम होती ह।ै विद्यालयी जीिन और उिके बाद स्िाध्याय म ें मौन पिन अत्यत उपयोगी ही होता ह।ै यह उच्च कक्षाओ म ें जयादा प्रभािशाली

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **116**

होता ह।ै ां ां मौन पठन का मित्र् i. मौन िाचन म ें बालक का ध्यान के वन्ित रहता ह।ै ii. मौन िाचन ि स्िाध्याय की आदत विकवित होती ह।ै iii. इिि िमय की बचत होती ह ै तथ

ा िागवे न्ियों म ें थकान कम होता ह।ै iv. मौन िाचन के िमय वचन्तन प्रवक्रया चलती रहती ह ै अतः पिा को बालक िमझते हए पढ़ता ु चलता ह।ै v. मौन िाचन दिरों को व्यिान नहीं पहचाँ ाता ह।ै ु ू vi. यह दवै नक जीिन म,ें िािवहक स्थानों पर अखबार पढ़ने, िावहत्य पढ़ने, यात्रा के िमय पत्र- ू पवत्रकाओ को पढने म ें महत्िपर् भ होता ह।ै ू ां vii. उच्च कक्षाओ म ें मौवखक िाचन की अपेक्षा मौन िाचन जयादा वहतकर होता ह।ै ां 4.4.3 पठन हिक्षण की प्रमख हर्हधयाँ एर् सार्धाहनयाँ ु ं i. र्णिबोध हर्हध - इि विवि म ें िबिे पहले बालकों को िर् भ माला के ि

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 9 resources! id: **117**

ोरों का ज्ञान कराया जाता ह ै वजिम ें िििप्रभ थम स्िरों का बाद म ें व्यजन का ज्ञान कराया जाता ह।ै िोरों के पहचान के ां बाद मात्राओ का पर् भ ज्ञान ि शद् उच्चारर् तथा िोरों को वमलाकर शब्द पढ़ने का अभ्याि ू ु ां कराया जाता ह।ै जिै े - क, म, ल

= कमल, न,ट,ख,ट = नटखट। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 53 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. ध्िहन साम्य हर्हध - इि विवि म ें इि बात पर विशषे ध्यान वदया जाता ह ै वक प्रारवम्भक अिस्था म ें बालकों के िामने ि े ही शब्द रख े जायें वजिम ें िमान ध्िवनयाँ उच्चाररत ह।ै जिै े - राम, शाम, नाम, काम। प्रारवम्भक अिस्था म ें यह विवि उपयोगी होता ह।ै iii. तर्ोच्चारण हर्हध- इि विवि म ें अक्षरों तथा शब्दों की ध्िवनयों को विशेष महत्ि वदया जाता ह।ै इिम ें अध्यापक एक-एक अक्षर को श्यामपट्ट पर वलखकर उिका उच्चारर् करता ह।ै छात्र िोरों को दखे ते ह ैं और उिका उच्चारर् करते ह ैं इिि बालकों म ें िोरों का ज्ञान होता ह ै तथा ध्िवनयों के शद् उच्चारर् की पहचान होता ह।ै ु iv. अनकरण हर्हध - भाषा अनकरर् ि ही िीखी जाती ह।ै इि विवि म ें अध्यापक एक िर्भ, शब्द ु ु का उच्चारर् करता ह ै और उिका अनकरर् करते हए बालक शब्दों तथा िोरों का उच्चारर् ु ु करना िीखता ह।ै बालक िीरे िीरे स्ितन्त्र रूप ि े िोरों या शब्दों को पहचानन े लगता ह।ै यह अग्रेजी भाषा वशक्षर् म ें जयादा उपयोगी होती ह।ै ां v. ड. देखो और किो हर्हध - इि विवि म ें शब्द ि िबवित िस्त या वचत्र वदखाकर पहले शब्द ु ां ां का ज्ञान कराया जाता ह।ै जिै 'आम' का वचत्र वदखाकर बच्चों ि पछा जाता ह ै यह क्या ह ै ू बालक वचत्र या िस्त को देखकर उिि िाहचयभ स्थावपत कर शब्द को बोलने का अभ्याि ु करता ह।ै वकन्त इि विवि म ें ि ही शब्द वलए जाए जो बालक की अनभि पररवि म ें हो। ु ु पठन करते समय सार्धाहनयाँ बालकों को पिन करते िमय वनम्नवलवखत िाििावनया रखनी चावहये। i. पिन के िमय मजे , वदिार आवद का िहारा न ले। ii. पस्तक बायें हाथ ि पकडे तथा नेत्र ि 35 िमी की दरी पर रख।ें ु ू iii. पिन करते िमय परा ध्यान पस्तक पर ही न रख,ें बीच-बीच म ें श्रोताओ पर भी ध्यान दते े ह।ैं ू ु ां iv. पिा का प्रारम्भ और अत मद गवत ि करें वजि बालकों को आवद और अन्त का स्पष्ट बोि हो। ां ां v. पिन करते िमय दावहने हाथ ि भािानकल भाि प्रकाशन भी करें। ु ू vi. पिन आत्मविश्वािपर्भ, कर्वभ प्रय तथा रोचक हो। ू vii. कक्षानिार, उवचत आरोह-अिरोह, यवत, गवत ि हाथ का ध्यान द।ें ु अभ्यास प्रश्न 3. पिन कौशल का अथभ वलखें । 4. मौन पिन के दो गर् वलख।ें ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 54 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.5 श्रर्ि कौिि का आशय भाषा िीखने का प्रथम स्तर श्रिर् ह।ै यह अन्य कौशलों को विकवित करने का प्रथम आिार ह।ै हम श्रिर् को िनने के अथ भ म ें भी िमझते ह।ैं िनना दो प्रकार का होता ह।ै वबना िमझ े हए िनना और दिरा ु ु ु ु ू भाषा को िनकर अथभ ग्रहर् करना वजििे वक हम वफर

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 2 resources! id: **118**

भाषा के माध्यम ि प्रवतवक्रया व्यक्त कर िकें । ु भाषा वशक्षर् के िन्दभ भ में िनने का आशय भाषा को िनकर अथभ ग्रहर् करना एि भाषा के माध्यम ि ु ु ां प्रवतवक्रया दने े ि ह।ै अतः पररभाषा रूप म ें कह िकते ह ैं वक वकिी भी व्यवक्त िारा प्रयक्त िाथभक ध्िवनयों, ु शब्दों एि भािों को कानों के माध्यम

ि ग्रहर् कर, उिका अथभ ग्रहर् करने की प्रवक्रया श्रिर् या िनना ु ां कही जाती ह।ै हम बचपन ि ही िनकर ही भाषा को ग्रहर् करते ह ैं और बाद म ें िनने के आिार पर ही विचारों ु ु को अवभव्यक्त करते ह।ैं बच्चा अपने पररिार में माता-वपता, भाई-बहन एि अन्य िदस्यों िारा प्रयक्त ु ां विचारों एि भाषा को िनकर अनकरर् करता ह ै वजििे उिके शब्द भण्डार म ें िवद् होती ह ै और उिी ृ ु ु ां प्रकार बोलने का प्रयाि भी करता ह।ै अतः भाषा के अजनभ एि व्यिहार के वलए िनकर िमझने के ु ां कौशल का बहत महत्ि ह।ै जिै जयादातर बविर (बहरे) व्यवक्त भाषा के िारा बोलकर अपनी अवभव्यवक्त ु

Plagiarism detected: **0.12%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **119**

नही कर पात े ह।ै ं उिका कारर् यह नहीं ह ै वक उनकी िागवे न्ियाँ खराब ह।ै बवल्क ि े भाषा की ध्िवनयों को न िनपाने ि शब्द भण्डार िवमत हो जाता ह ै और उिका अथभ भी ग्रहर् नहीं कर पाते ह ैं यवद उनको ु उवचत यन्त्रो िारा िनने का प्रवशक्षर् वदया जाय तो बविर भी भाषा का प्रयोग कर िकते ह।ैं अतः कह ु िकते ह ैं वक वबना िने भाषा अवजतभ नहीं की जा िकती। अच्छी तरह िनने के कारर् ही बालक इन ु ु ध्िवनयों म ें िक्ष्म अन्तर कर पाता ह

।ै ू 4.5.1 श्रर्ण कौैल के आर्श्यक तत्र् श्रिर् कौशल के विकाि का आशय ह ै उन्ह ें मौवखक भाषा िनकर उि अथभ एि भाि िमझने की वक्रया में ु ां वनपड करना। इिके वलए बालकों को िनने के आिश्यक तत्िों का विकाि वकया जाय। श्रिर् कौशल के ु ु आिश्यक तत्ि (रमन वबहारी लाल, २००८) वनम्नवलवखत ह ै - i. श्रोता को भाषा की ध्िवनयों, ध्िवन िमहों एि शब्दों का ज्ञान। ू ां ii. श्रोता म ें मल ध्िवनयों एि ध्िवन िमहों म ें अन्तर करने की योग्यता। ू ू ां iii. श्रोता म ें िनने की तत्परता। ु iv. श्रोता म ें िनने म ें उिकी रूवच एि िआिन ु ां v. श्रोता म ें ैियभपिकभ पर् भ मनोयोग ि िनने की आदत ू ू ु vi. िनी हई िामग्री का अथभ एि िमझने की योग्यता ु ु ां vii. बोलने िाले के हाि-भाि के अनिार अथभ एि भाि िमझने की योग्यता ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 55 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.5.2 श्रर्ण कौैल का हर्कास बालकों म ें श्रिर् कौशल के विकाि की प्रवक्रया प्राथवमक स्तर ि ही प्रारम्भ हो जाती ह ै और ितत प्रयाि एि अभ्याि के आिार पर पर् भ होती ह।ै इिके वलए आिश्यक ह ै वक वशक्षक को इन कौशलों के विकाि ू ां के वलए वनम्नवलवखत वबन्दओ पर ध्यान दने ा चावहए। ां ु i. माता-वपता िारा इनको छोटी-छोटी रोचक कहावनयाँ िनाई जायें। ु ii. बच्चों के रूवचयों के अनिार छोटे-छोटे गीत िनाए जायें। ु ु iii. श्रिर्े न्ियों की उवचत दखे -रेख करें तथा कर् भ दोष होने पर उवचत उपचार कराया जाय। iv. िनाए गये कहावनयों, कविताओ एि गीतों पर आिाररत एक या दो रोचक प्रश्न पछे जायें। ु ू ां ां v. वशक्षक पािों का स्पष्ट एि शद् उच्चारर् करें , उवचत स्िर, गवत एि भाि-भवगमा का प्रदशनभ ु ां ां ां करें। vi. उच्च कक्षाओ म ें विद्यालय म ें अन्त्याक्षरी, भाषर्, िाद-िििाद, प्रवतयोवगता का अयोजन कराया ां जाय। vii. बच्चों िारा दखे े गये या िने गये विषय िस्त ि िबंि कछ आलोचनात्मक प्रश्न पछे जाय। ु ु ु ू ां ां 4.5.3 श्रर्ण कौैल का मित्र् अविगम प्रवक्रया म ें श्रिर् कौशल का विशेष महत्ि ह।ै श्रिर् कौशल भाषा विकाि की आिार वशला ही

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 3 resources! id: **120**

प्रारम्भ म ें बालक श्रिर् कौशल के िारा ही अपने आि-पाि के िाताित्र्र् एि िस्तओ के बारे म ें ज्ञान ु ां ां प्राप्त करता ह ै तथा श्रर्ण कौैल का मित्र् म

ाता-वपता, पररिार के िारा विवभन्न िचनाओ को िनकर ू ु ां अपने शब्द भण्डार म ें िवद् करता ह।ै श्रिर् कौशल का महत्ि वनम्नवलवखत वबन्दओ के आिार पर िमझ ृ ां ु िकते ह।ैं i.

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amrdictionary.net/dictionary.aspx?w… id: **121**

प्रारम्भ स्तर पर बालक म ें ज्ञान प्रावप्त का आिार श्रिर् ही होता ह ै िह िनकर ही अपन े आि- ु पाि एि पररिार के बारे म

ें जानता ह।ै ां ii. बालक के व्यवक्तत्ि के विकाि म ें श्रिर् कौशल का अविक महत्ि ह।ै िह वजन ध्िवनयों को अपने बडों ि िनता ह ै िह उिके मन मवस्तष्क म ें अवकत हो जाता ह ै अवकत ध्िवनयाँ ही उिके ु ां ां भाषा ज्ञान का आिार बनती ह।ै iii. भाषा अनकरर् के िारा िीिी जाती ह ै नय- नये शब्दों को िनकर बालक अपने शब्द भण्डार म ें ु ु िवद् करता ह।ै ृ iv. बालक पररिार के िदस्यों एि अध्यापकों की बात िनकर स्िय अपने उच्चारर् हाि-भाि, ु ां ां उतार-चढ़ाि उवचत स्िर गवत के अनिार बोलने का प्रयाि करता ह ै इि प्रकार उिकी मौवखक ु अवभव्यवक्त का विकाि होता ह।ै v. एक अच्छा श्रोता ही एक अच्छा िक्ता होता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 56 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 vi. िवहत्य की वििवि वििाओ का अध्ययन, व्याख्या एि अथभ ग्रहर् श्रिर् पर ही आिाररत होता ां ां ह।ै अभ्यास प्रश्न 5. श्रिर् कौशल का आशय ह ै – i. िनना ु ii. िमझना iii. ध्यान दने ा iv. िनना और िनकर अथभ ग्रहर् करना ु ु 4.6 िखे न कौशि का आशय एवं महत्व बालक अपने भािों एि विचारों की अवभव्यवक्त दो रूपों ि करता ह।ै बोलकर या मौवखक और वलखकर। ां जब बालक अपने विचारों को ध्िवनयों के माध्यम ि महाँ ि उच्चररत करके बोलता ह ै तो उि मौवखक ु अवभव्यवक्त कहते ह।ै वकन्त बालक जब उन्हीं भािों, विचारों या स्िनभि को िाथभक विवशष्ट ध्िवन ु ु प्रतीकों के िारा वलखकर अवभव्यक्त करता ह ै तो उि वलवखत अवभव्यवक्त कहते ह।ैं या य ाँ कह ें वक बालक ू जब मौवखक अवभव्यवक्त को िाथभक ध्िवन प्रतीकों को िारा वलखकर व्यक्त करता ह ै तो उि वलवखत अवभव्यवक्त कहते ह।ैं वलवखत अवभव्यवक्त के वलए बालक वजन िाथभक ध्िवन प्रतीकों एि विवशष्ट वचन्हों ां

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **122**

का प्रयोग करता ह।ै उि 'वलवप' कहते ह।ैं (भागिभ , २००९) प्रत्येक भाषा क

ी अपनी एक वलवप ह।ै जैि े अग्रेजी रोमन वलवप में, पजाबी गरूमखी वलवप म ें और वहन्दी दिे नागरी वलवप म ें वलवख जाती ह।ै बालकों ु ु ां ां को वलवखत कायों म ें या वलखकर अपने विचारों व्यक्त करने म ें वनपर् एि दक्ष बना ही लेखन कौशल ु ां कहलाता ह।ै बालकों को लेखन म ें वनपर् बनाने के वलए दिेनागरी वलवप

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **123**

का ज्ञान होना एि पहचान होना ु ां आिश्यक ह।ै वलवखत अवभव्यवक्त कई अथों म ें मौवखक अवभव्यवक्त ि अविक महत्िशाली होती ह।ै क्योंवक वलवखत भाषा ही मौवखक भाषा के रूप को पररमावजभत कर उि वनवश्चत रूप प्रदान करती ह।ै

ठि स्थावयत्ि प्रदान करती ह

।ै वलवखत भाषा के माध्यम ि ही एक पीढ़ी की उपलवब्ियों ए विचारों को दिरी पीढ़ी को ां ू हस्तान्तररत वकया जाता ह।ै यह हमारे विकिा का ििबि बडा आिार ह।ै िाथ ही वलवखत भाषा ि बालक अपने विचारों को वकिी दिरे को जहााँ िह नहीं पहचाँ िकता, िप्रेवषत कर िकता ह।ै बालक को लेखन ु ां ू कौशल म ें वनपरु् होने के वलए भाषायी कौशल के विकिा के िझै ावनक क्रम (िनना, बोलना, पढ़ना और ु ु वलखना) के कौशलों म ें दक्ष होना आिश्यक होता ह।ै बालकों को वलवखत अवभव्यवक्त का महत्ि वनम्नवलवखत वबन्दओ (भागिभ , २००९) के आिार पर स्पष्ट ह ै - ां ु i. वलवखत अवभव्यवक्त बालक के हाथ और मवस्तष्क म ें ितलन बनाए रखती ह।ै ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 57 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. वलवखत अवभव्यवक्त ही िावहत्य के भण्डार म ें िविद् करता ह।ै ृ iii. व्यवक्त के विचारों का िरक्षर्, िरक्षा ए स्थावयत्ि वलवखत अवभव्यवक्त िारा ही होता ह।ै ु ां ां iv. िव्यािावयक और औद्योवगक प्रगवत का आिार भी वलवखत भाषा ह।ै v. वलवखत भाषा या अवभव्यवक्त िारा िदर व्यवक्तयों को अपने िदशे या विचारों को आिानी ि ु ां ू पहचाँ ाया जा िकता ह।ै ु vi. दवै नक जीन का िविरर् ि वहिाब वकताब तथा िव्यािावयक कायभ वलवखत भाषा पर ही आिाररत ह।ै 4.6.1 लेखन किौल का उद्देश्य वलवखत अवभव्यवक्त कौशल को भाषायी विकिा के वलए महत्िपर् भ मानते हए िविानों ने इिके विकिा ु ू के वलए वनम्नवलवखत उद्दश्े य वनिाभररत वकए ह ैं (गगा राम, २०१२)- ां i. बालकों को िन्दर, स्पष्ट और िडौल अक्षर वलखने म ें वनपरु् बनाना। ु ु ु ii. छात्रों को वलवप, शब्द, महािरों का ज्ञान कराना। ु iii. बालकों म ें ध्िन्यात्मक शब्दों को वलवपबद् करना तथा िजनात्मक शवक्त का विकिा करना। ृ iv. बालकों म ें विषयानिार भाषा शलै ी का प्रयोग करना विखाना। ु v. बालकों म ें अपने अनभिों ि विचारों को वलखकर व्यक्त करने की योग्यता का विकिा करना। ु vi. बालकों म ें िाक्य रचना के वनयमों ि पररवचत करना तथा ििरों का िीकिीक बनािट वलखना िीखाना। 4.6.2 लेखन किौल का हर्कास भाषा िीखने का एक स्िाभाविक क्रम होता ह ै - िनना, बोलना, पढ़ना और वलखना। भाषा की वशक्षा दने े ु के वलए प्राथवमक स्तर ि ही बच्चों म ें इन चारों कौशलों को विकवित करने का प्रयाि करना चावहए। प्रारम्भ म ें मौवखक भाषा की वशक्षा तत्पश्चात बोलने ि पढ़ने की वशक्षा दने ी चावहए और जिै ी ही बालकों म ें अक्षरों की पहचान ि शद् उच्चारर् करने की क्षमता विकवित होने लग े लेखन कायभ िीखाना शरू ु ु करना चावहए। लेखन कौशल को विकवित करने के वलए वनम्नवलवखत विवियों का उपयोग करना चावहए- i. बच्चों को लेखन तभी िीखाना प्रारम्भ करे जब उिकी ऊाँ गवलयााँ ए हाथों की मािपेवशयााँ ां ां कलम पकडने के योग्य हो जाय। ii. प्रारम्भ म ें बच्चों ि पेंविल या चाक ि कागज या श्यामपट्ट पर तरह-तरह की रेखाए ाँ खींचने का अभ्याि कराना चावहए। iii. बालकों ि तरह-तरह के बीजों की िहायता ि खले -खले म ें विवभन्न िरों की आकवतयााँ बनाने ृ का अभ्याि करना चावहए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 58 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. बच्चों को जमीन पर, बाल या रेत पर उाँगली घमाकर िरों की आकवतयों का अनिरर् कराना ृ ू ू ु चावहए। v. बच्चों को विवभन्न िरों की आकवतयों ि बने वचत्र या प्रवत वदखाकर उि बनाने का अभ्याि ृ कराना चावहए। vi. अक्षरों को छोटे-छोटे टकडे म ें विभक्त कर एक-एक टकडे का अभ्याि कराए और पनः उनको ु ु ु वमलाकर परा अक्षर बनािाना चावहए। जिै े आवद ू vii. अनवलवप, प्रवतवलवप ि श्रवतवलवप के माध्यम ि िरों को शद्-शद् वलखने का अभ्याि कराना ु ु ु ु चावहए। viii. कलम को अगंि और मध्य अगली के बीच रखा जाना चावहए तथा तजनभ ी अगली कलम के ू ु ू ां ां ां ऊपर हो। िाथ ही कमल को नीब ि १.५ ि े २ िमी ऊपर ि पकडना चावहए। अभ्यास प्रश्न 6. मौवखक अवभव्यवक्त (बोलना) कौशल के विकिा के दो उपाय बतायें । 4.7 मौधखक अधभव्यधि (बोि

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 3 resources! id: **124**

ना) कौशि का आशय मानि एक िामावजक प्रार्ी ह।ै िह िमाज म ें बेहतर िमायोजन ए अपने विचारों ि भािों की अवभव्यवक्त ां भाषा के माध्यम ि करता ह।ै िह अपनी यह अवभव्यवक्त दो रूपों म ें करता ह।ै बोलकर और वलखकर। जब बालक अपने विचारों, भािों की अवभव्यवक्त िाथभक ध्िवनयों के माध्यम ि े उच्चररत भाषा के रूप म

ें करता ह ै तो उि बोलना या मौवखक अवभव्यवक्त कहते ह।ैं प्रो रमन वबहारी लाल के शब्दो म ें "अपने भाि एिम विचारो को मौवखक

Plagiarism detected: 0.03% https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 2 resources! id: **125**

भाषा के माध्यम ि अवभव्यक्त करना बोलना ह"ै । वकन्त जब बालक अपने ु विचारों का आदान-प्रदान िदर व्यवक्त को िाथभक िके तों के माध्यम

ि वलखकर करता ह ै तो उि वलवखत ू ां ू अवभव्यवक्त कहते ह।ैं मौवखक अवभव्यवक्त म ें वनपरु् ए दक्ष होने पर बालक एक कशल िक्ता बनता ह।ै ु ु ां जो अपने अनभवतयों ए विचारों को रोचक ए प्रभािशाली ढग ि व्यक्त करने म ें िफल हो पाता ह।ै ु ू ां ां ां भाषा वशक्षर् म ें मौवखक अवभव्यवक्त कौशल या बोलना कौशल का विशेष महत्ि होता ह।ै बालक प्रारम्भ म ें भाषा की वशक्षा मौवखक भाषा ि ही प्रारम्भ करता ह।ै मौवखक भाषा ही वलवप का िरदान पाकर वलवखत भाषा का रूप िारर् करती ह।ै प्रो0 रमन वबहारी लाल मौवखक अवभव्यवक्त को पररभावषत करते हए वलखते ह ै वक & "मानि अपने विचारो ि अनभिों को अवभव्यक्त करने के वलए ु ु वजि िमाज ध्िन्यात्मक िके त िाँिन

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **126**

का प्रयोग करता ह।ै उिे उिकी भाषा कहते ह।ैं " ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 59 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.7.1 मौहखक अहभव्यहक्त कौिल का मित्र मौवखक अवभव्यवक्त कौशल का वनम्नवलवखत महत्ि है- i. मौवखक भाषा विचारों एि भािों की अवभव्यवक्त का िरल ि िशक्त िािन ह।ै ां ii. मौवखक अवभव्यवक्त वलवखत अवभव्यवक्त की आिारवशला ह।ै iii. पररिार, िमाज तथा मनष्य के दवै नक वक्रयाकलाप म ें विचारों को व्यक्त करने म ें मौवखक भाषा ही ु प्रयक्त होती ह।ै ु iv. मौवखक अवभव्यवक्त की कशलता ि विचारों को प्रभािपर् भ ढग ि े िवक्षप्त और िशक्त रूप म ें ु ू ां ां अवभव्यक्त कर िकते ह।ैं v. मौवखक भाषा के िारा ही विचारों का आदान-प्रदान कर निीन तथ्यों की जानकारी होती ह ै और ज्ञान म ें िवद् होती ह।ै ृ vi. मौवखक भाषा के िारा ही अवशवक्षत व्यवक्त बोलकर ही अपने विचारो वक अवभव्यवक्त करता ह।ै vii. मौवखक अवभव्यवक्त िारा ही बालक के विचारों, भािों तथा मनोिवत्तयों का पता चलता ह ै तथा ृ इनका विकाि भी वकया जा िकता ह।ै 4.7.2 मौहखक अहभव्यहक्त कौिल हिक्षण के उद्देश्

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **127**

य विद्यालयों म ें भाषा वशक्षर् का प्रारम्भ मौवखक भाषा की वशक्षा ि ही प्रारम्भ होता ह।ै मौवखक अवभव्यवक्त पररपक्िता एिम कशलता के वलए विद्यालय

ों म ें भाषा वशक्षर् के वनम्नवलवखत उद्दश्े य वनिाभररत वकये गय े ु ह-ैं (भागभि, २००९) i. बालक को इि योग्य बनाया जाय वक ि े अपने अनभि, भाि ि विचारों को िरल ि िहज ढग ि ु ां व्यक्त कर िकें । ii. बालकों को इि योग्य बनाना वक ि े अपने मन म ें उत्पन्न होने िाली िकाओ का िमािान ां ां वनःिकोच रूप ि प्रश्न पछ कर करें। ू ां iii. बालकों को उवचत गवत, यवत, हािभाि ि स्िर के िाथ शद् उच्चारर् के िाथ बोलना िीखाना। ु iv. बालकों को अििर के अनकल भाषा शलै ी का प्रयोग करने और आत्मविश्वाि के िाथ उवचत ु ू हाि-भाि का प्रदशनभ करते हए बोलने म ें वनपर् बनाना। ु ु v. बालकों को िारा प्रिाह प्रभािपर् भ एि प्रभािोत्तपादक ढग ि बोलना िीखाना। ू ां ां vi.

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **128**

छात्रों का ध्िवन, ध्िवन िमहों, शब्द, िवक्त लोकोवक्तयों तथा महािरों का ज्ञान करान

ा। ू ू ु 4.7.3 मौहखक अहभव्यहक्त कौिल का हर्कास मौवखक अवभव्यवक्त का विकाि बालक के भाषायी विकाि एि व्यवक्तत्ि के विकाि की दवष्ट ि े ां आिश्यक होता ह।ै इिम ें िि अपने भाि, विचार ि अनभवतयों के प्रकाशन का परा-परा अििर वमलता ु ू ू ू ह।ै इिवलए इिका विकाि प्रारवम्भक स्तर ि ही अत्यन्त महत्िपर् भ हो जाता ह।ै वशक्षक बालकों म ें ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 60 ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **129**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 मौवखक अवभव्यवक्त म ें कशलता एि वनपर्ता लाने के वलए अनेक वशक्षर् विवियों (रीता, २०१६) का ु ु ां प्रयोग करता ह

।ै i. वशक्षक को कक्षा में पढ़ाते िमय बालकों को िाताभलाप की पर् भ स्ितन्त्रता प्रदान करें। बच्चों को ू िाताभलाप के वलए प्रोत्िावहत करें तथा उनिे पढाए गए विषयिस्त ि प्रश्न पछकर मौवखक उत्तर ु ू प्राप्त करें। ii. िप्ताह म ें कम ि कम एक घण्टा िाताभलाप का रखा जाय तथा िाताभलाप म ें बालकों की अशवद्यों को मनोिैज्ञावनक ढग ि शद् वकया जाय। ु ु ां iii. बालक वचत्रों के प्रवत जयादा रूवच रखते ह।ैं अतः बालकों के िामने वकिी घटनात्मक, प्राकवतक ृ या िामावजक वचत्र को टागकर उनिे प्रश्न पछकर िर्नभ कराया जाय। ू ां iv. छोटे बच्चों को कहानी िनना अत्यविक वपद ह।ै अतः अध्यापक को बालकों को िन्दर ि ु ु ां रोचक कहानी िनाकर उिि प्रश्न पछकर उत्तर प्राप्त करना चावहए तथा उि कहानी को पनः कहन े ु ू ु के वलए प्रेररत करना चावहए। v. िाद-वििाद प्रवतयोवगता मौवखक भाषा के विकाि का अवत उत्तम िािन ह।ैं अतः वशक्षक बालकों के अनभि के अनकल वकिी रोचक विषय पर िाद-वििाद प्रवतयोवगता का आयोजन ु ु ू करें। तथा बालकों को उि विषय के पक्ष एि विपक्ष पर विचार रखने के वलए प्रोत्िावहत करें। ां vi. वशक्षक कभी-कभी कक्षा म ें बालकों के बीच अन्त्याक्षरी प्रवतयोवगता भी करायें। इि बालक अपने कण्ठस्थ कविताओ को एक दिरों को िनायेंग े तथा शद् उच्चारर् करना िीख जायेंग।े ु ु ां ू अभ्यास प्रश्न 7. वलवखत अवभव्यवक्त (लेखन) कौशल के विकाि के वलए उपयक्त दो विवियाँ बताए ँ । ु 4.8 उच्चस्तरीय भाधषक कौशि का आशय जन्म के कछ माह के पश्चात ही बालकों म ें भाषा विकाि प्रारम्भ हो जाता ह।ै बालक ििप्रभ थम अपने ु माता-वपता ि पररिार के लोगों िारा प्रयोग की जाने िाली भाषा को िनता ह ै और उिका अथभग्रहर् करने ु का प्रयाि करता ह।ै इि उिके शब्द भण्डार म ें िवद् होती ह ै तथा उिके ज्ञान म ें विस्तार होता ह।ै तत्पश्चात ृ िह इनका अनकरर् करके बोलकर अपने भािों को व्यक्त करने का प्रयाि करता ह।ै इि प्रकार भाषा ु विकाि का यह रूप अनौपचाररक होता ह।ै जो जरूरी नहीं की शद् एि पररमावजतभ भाषा हो। अतः ु ां बालकों म ें शद् और मानक भाषा विकाि का प्रारम्भ औपचाररक रूप ि विद्यालय ि प्रारम्भ

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 7 resources! id: **130**

होता ह।ै ु यहाँ पर बालक िारा पि भ म ें अवजतभ ज्ञान एि भाषा म ें पररष्करर् एि पररमाजनभ लाया जाता ह ै तथा भाषा ू ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 61 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 के शद् रूप को िीखाया जाता ह

।ै इिीवलए प्राथवमक स्तर ि ही भाषायी

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **131**

कौशल के विकिा पर विशेष ु बल वदया जाता ह।ै उच्चस्तरीय भावषक कौशल का अथभ भाषा के उि रूप ि ह ै वजिके अन्तगतभ बालक भाषा के व्यिहार के विवभन्न क्षेत्रों म ें भाषा के शद् और मानक रूप

का प्रयोग करता ह।ै अथाभत इि उच्च्स्तरीय ु ु भावषक कौशल का आशय उच्च कक्षाओ म ें बालकों िारा वकये जाने िाले विचार-विवनमय एि भावषक ां ां अवभव्यवक्त के विवभन्न कौशलों म ें दक्षता एि कशलता प्राप्त करन े ि ह।ै इन कौशलों को प्राप्त करन े के ु ां वलए बालक दो प्रकार की वक्रयाए ँ करता ह।ै िनकर अथभग्रहर् करना और विचारों की अवभव्यवक्त। इन ु वक्रयाओ के वलए भाषायी कौशल के चारों स्तर िनना, बोलना, पढ़ना और वलखने में बालक वनपड

Plagiarism detected: **0.02%** https://doc.sarkariresults.org.in/MPESB_Group… id: **132**

हो ु ु ां जाता ह ै और बालकों म ें वनम्नवलवखत भाषायी व्यिहार की अपेक्षा की जाती ह

।ै जो इि वचत्र िारा स्पष्ट ह ै – (रस्तोगी, २००१) भाषायी कौशलों के स्तर एि अपेवक्षत व्यिहार ां अथभ गह िबी अवभव्यवक्त िबी ृ ां ां ां ां िनना पढ़ना बोलना वलखना ु िचनात्मक आलोचनात्मक िमनभ ात्मक प्रत्यास्मरर् रचनात्मक िजनभ ात्मक ू व्यिहार व्यिहार व्यिहार व्यिहार व्यिहार उच्च स्तरीय भावषक कौशल के विकिा के वलए आिचश्यक ह ै वक उपरोक्त िवर्भत प्रमख अपेवक्षत ु व्यिहार/स्तर का बालक म ें विकिा हो तथा उिका अपने भाषायी व्यिहा

Plagiarism detected: **0.03%** https://educalingo.com/hi/dic-hi/ka id: **133**

र म ें उपयोग करें। अभ्यास प्रश्न 8. उच्चस्तरीय भावषक कौशल वकि कहते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 62 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.9 िारांश इि इकाई के अध्ययन के बाद आप िमझ चके होंग े वक - ु बालक अपने विचारों, भािों एि अनभवतयों की अवभव्यवक्त के वलए भाषा का प्रयोग करता ह।ै ु ू ां बालक भाषा के दो रूपों मौवखक और वलवखत के िारा विचारों की अवभव्यवक्त करता ह।ै भाषा विकिा के वलए भाषायी कौशलों म ें वनपर् एि कशल प्राप्त करना आिश्यक ह।ै ु ु ां विचारों और भािों को िनना और िनकर अथभग्रहर् करना ही श्रिर् कहलाता ह।ै ु ु शद् उच्चारर् िारा बोलकर विचारों की अवभव्यवक्त मौवखक अवभव्यवक्त कौशल कहलाता ह।ै ु लेखन कौशल म ें कशल एि दक्ष होने के वलए आिश्यक ह ै शब्दों, िर्ों की स्पष्ट पहचान हो एि ु ां ां भाषायी कौशल के विकिा का िश्ै ावनक क्रम ह ै - िनना, बोलना, पढ़ना और वलखना। ु 4.10 अभ्यिा प्रश्न के उत्तर 1. भाषा के माध्यम ि विचारों के आदान प्रदान के वलए भाषायी िप्रेषर् के चार प्रमख आयामों िनना, ु ु ां बोलना, पढ़ना और वलखने को ही भाषायी कौशल कहलाता ह।ै 2. भाषायी कौशल के अन्तगतभ चार प्रमख कौशल (िनना, बोलना, पढ़ना ि वलखना) आते ह।ैं ु ु 3. वलवखत िामग्री को पढ़कर अथभ ग्रहर् करना िहन कहलाता ह।ै 4. क. िाचन म ें बालक का ध्यान के वन्ित रहता ह।ै ख. स्िाध्याय की आदत विकवित होती ह।ै 5. (घ) िनना और िनकर अथभ ग्रहर् करना ु ु 6. क. बच्चों को वपय विषयों म ें िाताभलाप के स्ितन्त्र अिर द।ें ृ ख. िन्दर ि रोचक कहावनयाँ िनाकर उिि िबवध्ित प्रश्न पछें। ु ु ू ां ां 7. क. जमीन या बाल पर ऊँ गली घमाकर िर्ों की आकवतयों का अनिरर् कराकर ृ ू ु ु ख. विरों को छोटे-छोटे टकडें म ें तोडकर उिका अभ्यिा कराना चावहए। ु 8. उच्च कक्षाओ म ें बालकों िारा वकये जाने िाले विचार-विवनमय एि भावषक अवभव्यवक्त के विवभन्न ां ां कौशलों म ें दक्षता एि कशलता प्राप्त करता ह।ै ु ां 4.11 िंदभ भ ग्रांथ िची ू 1. लाल, रमन वबहारी, (२००७) वहन्दी वशक्षर्, रस्तोगी पवब्लके शन्ि वशिाजी रोड, मरे ि। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 63 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2. कौवशक, जयनारायर् (२००६) वहन्दी वशक्षर्, हररयार्ा िावहत्य अकादमी, पच कला। ू ां 3. शमाभ, गगाराम एि भारिाज, िीर कमार (२०१२), वहन्दी भाषा वशक्षर्, राखी प्रकाशन, ु ु ां ां आगरा। 4. चैहान, रीता (२०१६), वहन्दी वशक्षर्, अग्रिाल पवब्लके शन्ि, आगरा। 5. श्रीिास्ति, रीनन्िनाथ (१९७९), वहन्दी वशक्षर्, वद मकै वमलन कपनी आफ इवडया वलवमटेड, नई ां ां वदल्ली। 6. राष्रीय पाियचयाभ की रूप रेखा, (२००५), (२००६), एन.िी.ई.आर.टी. प्रकाशन विभाग, नई ृ वदल्ली। 7. भागगभ , लक्ष्मी (२००९), वहन्दी वशक्षर्, विजय प्रकाशन मवन्दर, िारािर्ी। 8. रस्तोगी, कष्र्गोपाल, (२००१) मातभाषा वशक्षर्: शब्दों का आथी विश्लेषर्, ृ ृ एन.िी.ई.आर.टी., नई वदल्ली-११.१३ 4.12 धनबन्िात्क प्रश्न 1. भाषायी कौशल वकि कहते ह,ैं भाषायी कौशल के महत्ि की चचाभ करें। 2. पिन कौशल का आशय क्या ह।ै पिन कौशल के विकिा के प्रमख विवियों का िर्नभ करें। ु 3. लेखन कौशल की विशेषताओ का विस्तत िर्नभ करें। ृ ां 4. मौवखक अवभव्यवक्त (बोलना) कौशल के महत्ि पर प्रकाश डालें। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 64 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 5- भाषा धशक्षक: धिन्दी के धिशेष िन्दभ में भ 5.1 प्रस्तािना 5.2 उद्दश्े य 5.3 भाषा वशक्षक: वहन्दी के विशेष िन्दभभ में भाषा वशक्षक ि आशय 5.3.1 भाषा वशक्षक के गर् ु 5.4 भाषा वशक्षक की योग्यता 5.5 भाषा वशक्षक के वलए आिश्यक कौशल 5.5.1 भाषायी कौशल 5.5.2 श्रिर् कौशल 5.5.3 िाचन कौशल 5.5.4 पिन कौशल 5.5.5 लेखन कौशल 5.1 प्रस्तावना वशक्षा वत्रिध्रीय प्रवक्रया ह।ै वशक्षक, वशक्षाथी और पाियक्रम तीनों महत्िपर् भ स्तम्भ ह,ै अब हम चौथे ृ ु ू स्तम्भ िातािरर् को भी िवम्मवलत कर िकते ह।ैं वशक्षाथी वशक्षक के व्यवक्तत्ि ि प्रभावित होकर उिके आचरर्, आदश भ तथा व्यवक्तत्ि के विवभन्न गर्ों का अनकरर् करता ह।ै वशक्षा का कायभ इिी आदान- ु ु प्रदान ि े चलता रहता ह ै िवै दक यग म ें वशक्षक का विशषे स्थान था परन्त आज उिका िम्मान कम हो ु ु गया ह,ै इिका वजम्मदे ार स्िय अध्यापक ही ह ै क्योंवक आज िह अपना उत्तरदावयत्ि भल गया ह।ै ू ां आज के यग म ें वशक्षा बालक के वन्ित हो गयी ह,ै वकन्त इिका यह आशय कदावप नहीं ह ै वक ु ु वशक्षक वनवष्क्रय हो गया ह।ै वशक्षक को अत्यविक िवक्रयता का पररचय दने ा होगा तथा अपने िम्मान को िरवक्षत करना होगा। वशक्षक को अपने व्यवक्तत्ि को इतना प्रभािशाली बनाना होगा वक बालक उिि ु प्रभावित होकर उिि वनदवे शत हो िके और अनकरर् कर िके । ु अध्यापक को कक्षाओ म ें िावहवत्यक, िास्कवतक प्रवत्तयों को भी अपनाना चावहए। िाद-वििाद, िाद, ृ ृ ां ां ां कविता पाि, िगीत, नत्य,

अवभनय, झााँवकयााँ, कौतहल, कौतक, क्रीडाए ाँ आवद कायभक्रम का भी ृ ु ु ां आयोजन करते रहना चावहए। आज के प्रत्येक गवतशील वशक्षा के प्रेमी को

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **134**

विद्यालय म ें गवतविवियों का न होना बहत अखरेगा। ये प्रवतयोवगताए ाँ यवद विद्यालय

ों म ें नहीं होती ह ैं तो अप्रगवतशील, प्रवतभागी और ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 65 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 कवण्ित मवस्तष्क का प्रतीक होगी। वशक्षर् कोई िरल कायभ नहीं ह।ै इिके वलए वशक्षकों को प्रवशवक्षत ु करने की आिश्यकता ह।ै वशक्षक के कछ गर् जन्मजा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.shabdwale.in/2023/07/ka-ki-matra-… id: **135**

त होते ह ैं परन्त अनेक ग ार्ों को प्राप्त करने के वलए ु ु ु ु उिे प्रवशक्षर् की आिश्यकता होती ह।ै प्रवशक्षर् महाविद्यालयों म ें छात्राध्यापकों को प्रिशे वमलने ि पिभ ू यह दखे ना आिश्यक ह ै वक उनम ें वशक्षर् के वलए क्षमता ह ै वक नहीं। वशक्षर् व्यििाय के वलए उन्हीं व्यवक्तयों को चयवनत वकया जाना चावहए वजनम ें कछ क्षमता अिश्य हो और एिा हो रहा ह।ै ु 5.2 उद्दश्े य इि इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- ु 1. भाषा वशक्षक के ग ार्ों ि पररवचत हो िकें ग।े ु 2. भाषा वशक्षक की योग्यता की जानकारी प्राप्त कर िकें ग।े 3. भाषा वशक्षक के वलए आिश्यक कौशल को बता िकें ग।े 4. भाषा वशक्षक के ितभमान दशा को स्पष्ट कर िकें ग।े 5. भाषा वशक्षक की ितभमान दशा को िािरने के उपायों की चचाभ कर िकें ग।े ु 5.3 भाषा धशक्षक: धहन्दी के धवशेष िन्दभ भ म भाषा धशक्षक ि आशय ें ितभमान शताब्दी म ें इि विषय पर पयाभप्त कायभ हआ ह ै वक वशक्षकों की िफलता वकि बात पर वनभरभ ु करती ह।ै परर ारामों म ें यह दखे ा गया ह ै वक विद्याथी प्रायः योग्य और स्पष्टािादी तथा उवचत प्रकार ि े अपनी बात को अवभव्यक्त करने म ें कशल वशक्षकों को पिन्द करते ह।ैं जो वशक्षक अपने इन विवशष्ट ग ार्ों ु ु के िाथ-िाथ विद्यावथभयों ि प्रमे भी करते ह ैं और उनके कायों म ें रूवच लेते ह ैं तथा िभी विद्यावथभयों के प्रवत वनष्पक्ष भाि रखते ह,ैं बच्चे उनका अपेक्षाकत अविक िम्मान करते ह।ैं परन्त वशक्षक के इन ग ार्ों के ृ ु ु अवतररक्त उनका जीिन दशनभ , उनका चररत्र और िमाज के प्रवत उत्तरदावयत्िों का प्रभाि अविक पडता ह।ै 5.3.1 भाषा हिक्षक के गण ु i. अपने हिषय का पणि ज्ञान - वशक्षक को अपने विषय के िभी

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **136**

क्षेत्रों तथा उििे िम्बवन्ित अन्य ू क्षेत्रों का पर् भ ज्ञान होना चावहए। प्रत्येक विषय के विवभन्न क्षेत्र आपि म ें िहिम्बवन्ित होते ह।ैं यवद ू वशक्षक वकिी विषय के एक ही क्षेत्र को पढ़ाता ह ै और िह अपना कायभ तब तक दक्षता के िाथ नहीं कर िकता जब तक की उिे उि विषय के विवभन्न क्षेत्रों क

ा ज्ञान न हो। उदाहरर् के वलए गवर्त विषय को ही लीवजए। यवद वशक्षक को अकगवर्त का िही ज्ञान नहीं ह ै तो िह रेखागवर्त को कदावप ां उवचत तरीके ि नहीं पढ़ा िकता। वशक्षक को के िल अपने ही विषय का ज्ञान नहीं अवपत अन्य ु विषयों का भी ज्ञान होना वनतान्त आिश्यक ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 66 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िास्ति म ें दखे ा जाय तो बहतेरे वशक्षकों को अपने विषय के िभी प्रत्ययों का िही ज्ञान नहीं होता ु और परर ाराम स्िरूप विद्यावथभयों म ें भी ज्ञान का अभाि होता ह।ै अध्यापक िैद्ावन्तक रूप ि बातों को जानते ह ैं परन्त व्यिहाररक रूप ि उिका प्रयोग नहीं कर पाते। ु ii. व्यिसाय में दक्षता - वशक्षक को अपने व्यििाय म ें दक्ष भी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **137**

होना चावहए। वशक्षक को वशक्षर् विवि, पाि ित्र वनमाभर् म ें तथा प्रश्न पछने म ें वनपर् होना चावहए

। अध्यापक को विषय के ज्ञान के ू ू ु िाथ-िाथ उि ज्ञान को विद्यावथभयों तक पहचाँ ाने की कला भी आनी चावहए। एक वशक्षक अपन े ु विषय म ें दक्ष ह ै इिका यह अथभ नहीं ह ै वक िह अपने व्यििाय म ें भी दक्ष है, उिे व्यििाय म ें दक्ष होने के वलए अपने विषय का वििान भी होना आिश्यक ह।ै पढ़ाना एक कला ह ै और इि कला म ें दक्ष होने के वलए प्रवशक्षर् आिश्यक ह।ै वशक्षक को कक्षा म ें िफलतापिकभ पढ़ाने के वलए पाियिस्त को पर् भ रूप ि े तैयार कर लेना चावहए ृ ू ु ू िाथ ही कछ प्रश्न जो पाि ि े िम्बवन्ित हो उन्ह ें पहले ि ही िोच लेना चावहए। िाथ ही अध्यापक ु को कक्षा म ें िवक्रय होना चावहए और वशक्षर् कौशलों का ज्ञान एि अभ्याि विशषे रूप ि महत्िपर्भ ू ां ह।ै वशक्षर् विवि और शलै ी म ें आिश्यकतानािार पररितभन आिश्यक ह।ै वशक्षक म ें आत्मविश्वाि ु और िमस्या-िमािान की क्षमता भी होनी चावहए। iii. ियैहक्तक हभन्नता का ज्ञान - आिवनक मनोविज्ञान ने यह विद् कर वदया ह ै वक बालकों म ें ु व्यवक्तगत वभन्नता होती ह ै इिवलए अध्यापक का यह कतभव्य ह ै वक िह बालकों के मानविक तथा शारीररक स्तर के आिार पर वशक्षा प्रदान करे। वशक्षक को चावहए वक िह विवभन्न बालकों का स्िभाि, रूवच, बवद् का स्तर, अवभरूवच एि आिश्यकता को भली-भााँवत िमझ कर उपयक्त विषय ु ु ां की वशक्षा प्रदान करे। यवद ियै वक्तक वभन्नता पर ध्यान नहीं वदया गया तो वशक्षर् कायभ का महत्ि िमाप्त हो जायेगा। अध्यापक को वपछडे और विमायोवजत बालकों की परिीमाओ को िमझना और उनि ु ां िहानभवतपर् भ व्यिहार करना आिश्यक हो जाता ह ै अन्यथा ि े विकाि के माग भ पर कभी नहीं आ ु ू ू िकते। वशक्षक को चावहए वक िह मल्याकन की निीन प्रविवियों का ज्ञान प्राप्त करे और इन्हीं ू ां प्रविवियों के माध्यम ि विद्यावथभयों की िास्तविक प्रगवत का रूपरेखा तैयार करे। वशक्षक को निीन प्रकार की िफल

परीक्षाओ, बवद् परीक्षाओ, अवभरूवच परीक्षाओ तथा व्यवक्तत्ि परीक्षाओ आवद ु ां ां ां ां का ज्ञान होना आिश्यक ह।ै इन्हीं परीक्षाओ के परर्ामों के आिार पर िामवहक आलेख पत्रों को ू ां िही प्रकार ि भर िकता ह।ै वजििे विद्यावथभयों के मल्याकन म ें िहायता वमलती ह।ै ू ां iv. प्रभाविाली व्यहक्तत्र् - एक वशक्षक का व्यवक्तत्ि प्रभािशाली होना चावहए। बालक अपने वशक्षक का अनकरर् करते ह ैं तथा उिके कायों, रूवचयों तथा आदशों को अपनाते ह।ैं बालक म ें अध्यापक ु के व्यवक्तत्ि की छाप पडे वबना नहीं रहती। यवद अध्यापक का व्यवक्तत्ि प्रभािशाली होगा तो बालक के व्यवक्तत्ि पर उिका प्रभाि अिश्य पडेगा। यवद वशक्षक का व्यवक्तत्ि प्रभािशाली नहीं ह ै तो बालक के व्यवक्तत्ि पर उिका कोई प्रभाि ही नहीं पडेगा। एक चररत्रिान, पररश्रमी और लगनशील अध्यापक का अनकरर् करके बालक ि ै ा ही बनता ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 67 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 v. बालकों के प्रहत सिानभहत - अध्यापक को विद्यावथभयों ि प्रेम और उनके प्रवत िहानभवत रखनी ु ू ु ू चावहए। अध्यापक को वनष्पक्ष होना चावहए। तभी विद्याथी उि अध्यापक के प्रवत श्रद्ा का भाि प्रकट कर िकें ग े और आदर कर िकें ग।े विद्याथी उि वशक्षक के व्यवक्तत्ि के गर्ों को अपनाने का ु प्रयाि करेंग।े vi. हिन्दी भािा पर अहधकार - बालकों को िभी विषयों का ज्ञान प्रदान करने हते अध्यापक भाषा का ु आश्रय लेते ह ैं इिवलए यह आिश्यक ह ै वक भाषा पर उिका पर् भ अविकार हो। अध्यापक को िरल ू तथा स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चावहए तथा जवटल भाषा ि बचने का प्रयाि करना चावहए। िरल भाषा ि विषय-िस्त की रोचकता बढ़ जाती ह ै और विद्याथी उिे िरलता ि िमझ लेता ह।ै ु vii. मानहसक तत्परता -अध्यापक का मानविक स्िास्थ्य ठीक रहना चावहए। ितभमान िमय में अन्तराभष्ट्रीय स्तर पर जो पररदृश्य पररलवक्षत हो रहा ह ै उिके पीछे मानविक स्िास्थ्य एक कारक के रूप म ें विद्यमान ह।ै अस्िस्थ मानविकता ि भय, अिरक्षा की भािना, किमायोजन तथा विरोि का ु ु भाि बढ़ रहा ह।ै इिवलए यह आिश्यक ह ै वक वशक्षक का मानविक स्िास्थ्य ठीक हो। अध्यापक म ें आत्म-हीनता की भािना नहीं होनी चावहए। ितभमान म ें अध्यापकों म ें आत्महीनता की भािना बढ़ती जा रही ह।ै इिका प्रमख कारर् ह ै वक वशक्षक अपने उत्तरदावयत्िों तथा कतभव्यों को ु भलता जा रहा ह ै वजििे िमाज म ें श्रद्ा और आदर का भाि कम होता जा रहा ह।ै ू viii. िेश-भूषा - अध्यापक का िेश -भषा उवचत

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **138**

प्रकार का होना चावहए। उिे िािारर् िस्त्रों का प्रयोग ू ू करना चावहए। िस्त्रों को पहनने का ढग भी उवचत प्रकार का होना चावहए। ये बात बालकों के ां मवस्तष्क पर गहरा प्रभाि डालती ह।ै वशक्षक का अनकरर् कर बालक भी उवचत प्रकार क

ा कपडा ु पहनना िीखता ह।ै ix. उत्तम सगठनकिता - अध्यापक का कायभ के िल कक्षा वशक्षर् तक ही िीवमत नहीं ह।ै उिे बच्चों की ं रूवचयों, योग्यताओ और आिश्यकताओ का पता लगाकर उनका शवै क्षक मागभ-दशनभ करना होता ह।ै ां ां कक्षा वशक्षर् की पवतभ हते पस्तकालय एि िाचनालय का िगिन करना होता ह।ै उनके शारीररक, ् ू ु ु ां ां मानविक, िामावजक और िास्कवतक विकाि के वलए शारीररक वक्रयाओ और िावहवत्यक एि ृ ां ां ां िास्कवतक वक्रयाओ का िगिन करना होता ह ै अध्यापक को इन कायों म ें वनपर्

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **139**

होना चावहए। ृ ु ां ां ां अध्यापक को विद्यालय िगिन के विद्ान्तों और विवियों का ज्ञान होना चावहए और उनके प्रयोग म ें ां वनपर् होना चावहए

। भाषा वशक्षर् म ें भाषर्, िाद-वििाद, बाल-गोष्ठी, अन्त्याक्षरी, कवि दरबार, कवि ु गोष्ठी कवि िम्मले न ि नाटक मचन की भवमका महत्िपर् भ होती ह ै भाषा वशक्षक की इिम ें रूवच होनी ू ू ां चावहए इिके आयोजन म ें दक्ष होना चावहए। 5.4 भाषा धशक्षक की योग्यता ितभमान िमय में गरू का स्थान वशक्षक ने ले रखा ह।ै आज वशक्षा एक व्यििाय का रूप ले चकी ह ै ु ु स्िवित्त पोवषत िस्थाए ँ िन-उपाजनभ का िािन बन चकी ह।ै एिी िस्थाओ म ें वशक्षकों ि वशक्षक जैि ा ु ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 68 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 व्यिहार नहीं वकया जा रहा ह ै एक उद्योगपवत की दृवष्ट म ें वशक्षक एक कमचभ ारी

Plagiarism detected: **0.04%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **140**

के िमान ह।ै यहाँ वशक्षक की कछ योग्यताओ का िर्नभ वकया जा रहा ह।ै ु ां i. प्रेरणा का स्रोत- अध्यापक हमशे ा विद्यावथभयों के वलए प्रेरर्ा का स्रोत होता ह ै िह

हमशे ा विद्यावथभयो को प्रोत्िावहत करता रहता ह।ै बालकों को कक्षा म ें आमोद-प्रमोद करने की क्षमता भी

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **141**

होनी चावहए वजििे पढ़ने के िाथ-िाथ मनोरजन भी होता रह े और यह योग्यता अध्यापक म ें ां भी होनी चावहए

वजििे प्रेरर्ा प्रदान कर िके । मनोरजक कक्षा म ें अविगम की भी िम्भािना ां अविक रहती ह।ै पाि को रोचक और आकषकभ बनाना अध्यापक की योग्यता पर वनभरभ करता ह।ै ii. हिषय का ज्ञान - वहन्दी विषय के वशक्षक का ज्ञान अविक विस्तत और गहन होना चावहए। ृ ज्ञान की व्यापकता और गहनता के अभाि म ें वहन्दी नहीं पढ़ाया जा िकता। िामान्यतया वहन्दी को िचना स्तर तक पढ़ाया जाता ह।ै अध्यापक वकताबों ि वजन िचनाओ को प्राप्त करता ह ै िही ू ू ां वशक्षाथी तक पहचाँ ाता ह।ै ज्ञान का स्तर बहत ऊँ चा ह ै उि स्तर पर पहचाँ ने के वलए गहन अध्ययन ु ु ु की आिश्यकता होती ह।ै वहन्दी विषय के अध्यापक को विवभन्न

स्रोतों ि ज्ञान म ें िवद् करनी ृ चावहए विषय को िीवमत न िमझें। ज्ञान की िवद् के वलए वशक्षक को वकिी काल विशषे का ृ विस्तत अध्ययन करने के वलए िास्कवतक, िामावजक एि ि्ञावनक तथ्यों पर अविक ध्यान दने े ृ ृ ां ां की आिश्यकता ह।ै स्रोत के रूप म ें उि काल के लेख ताम्र पत्र, वशला-लेख, मवतभयों, विक्कों, ू कहािातों, िावमकभ ग्रन्थों, वशल्प कला तथा लोक गाथाए ाँ

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **142**

होती ह।ैं ये स्रोत उि काल विशषे के िामावजक, िास्कवतक तथा िज्ञै ावनक पक्षों का ज्ञान िगमता ि प्रदान करते ह।ैं ृ ु ां एक कशल वशक्षक के वलए विषय के ज्ञान क

े िाथ ही विद्यावथभयों म ें बोिगम्यता प्रदान करने की ु क्षमता का होना आिश्यक ह।ै िामान्यतया ये दोनों गर् एक व्यवक्त म ें बहत कम दखे ने को ु ु वमलते ह।ैं वजि व्यवक्त म ें विषय का ज्ञान होता ह ै उिम ें वशक्षर् को प्रिर्ता नहीं होती ह।ै इिवलए प्रवशक्षर् िस्थाओ को यह चावहए वक छात्राध्यापकों म ें उवचत दृवष्टकोर् विकवित करें। ां ां वहन्दी-वशक्षक को वहन्दी भाषा एि िावहत्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **143**

का ज्ञान होना चावहए। राष्ट्रीय वहन्दी को िमझने के ां वलए वहन्दी िावहत्य का ज्ञान भली प्रकार ि होना चावहए

। भारतीय वशक्षा प्रर्ाली म ें वहन्दी भाषा और िावहत्य को कम महत्ि वदया जाता ह।ै विश्व बन्ित्ि की भािना का विकाि वबना वहन्दी ु िावहत्य का अध्ययन नहीं हो िकता। िास्कवतक एि िामावजक विकाि को भी वहन्दी िावहत्य ृ ां ां

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **144**

के ज्ञान ि ही िमझ िकते ह।ैं iii. मनोहर्ज्ञान का पारखी - वहन्दी वशक्षक को मनोविज्ञान की िमझ आिश्यक ह।ै मनोविज्ञान के ज्ञान

िारा ही अिस्था तथा स्तर के अनरूप उदाहरर् िारा विषय की प्रािवगकता को स्पष्ट वकया ु ां जा िकता ह।ै विद्यावथभयों के मनोभािों का उदात्तीकरर् विशषे स्थलों के वशक्षर् के िमय वकया जा िकता ह।ै मनोविज्ञान का ज्ञान अिस्थानिार होने िाले व्यिहार पररितभन को िामायोवजत ु करने म ें भी वकया जा िकता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 69 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. मौहलक हचन्तन - अध्यापक को िदिै वचन्तनशील

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **145**

होना चावहए। नये ज्ञान के विकाि हते ु मौवलक वचन्तन आिश्यक ह ै अध्यापक को के िल विद्वानों िारा कही गयी बातों को ही पढ़कर िन्तष्ट नहीं होना चावहए उिे स्ितत्र वचन्तन करना चावहए। तथा विद्यावथभयों को भी मौवलक ु ां वचन्तन हते प्रोत्िावहत करना चावहए। स्ितत्र राष्ट्र के वनमाभर् हते वहन्दी वशक्षक म ें यह गर् होना ु ु ु ां चावहए

वजिि िामावजक रूवढ़यों और अथभहीन परम्पराओ ि मवक्त पायी जा िके । नये िमाज ु ां को नये रूप ि िवजत वकया जा िके और नये विचारों ि प्रेररत होकर नि रूपातररक वकया जा ृ ां िके । v. कक्षा हिक्षण की समतयाओ के समाधान की क्षमता - एक योग्य वशक्षक को छात्रों की ं िमस्याओ के प्रवत िंिदे नशील भी होना पडता ह।ै उनकी िमस्याओ के िमािान के वलए ां ां ां िज्ञै ावनक तरीका भी अपनाना पडता ह।ै एक कशल वशक्षक कक्षा म ें अध्यापन के िाथ ही ु िमस्याओ के िमािान के वलए योजनाओ का वक्रयान्ियन भी करता रहता ह।ै विद्यावथभयों की ां ां िमस्याओ को िमझने और उि दर करने के वलए वक्रयात्मक अनिुिान वकया जाता ह।ै ु ां ां ू अध्यापक इि प्रकार के अनिुिानों के माध्यम ि कक्षा-कक्ष की िमस्याओ का िमािान तथा ु ां ां स्िय की गवतविवियों म ें िुिार एि विकाि भी करता ह।ै वहन्दी वशक्षक को शवै क्षक वनदशे न एि ु ां ां ां कायभ विश्लेषर् का भी ज्ञान होना चावहए। vi. सदव्यिहार - वहन्दी वशक्षक का दृवष्टकोर् उदारता, िवहष्र्ता एि िहयोग ि अनप्रावर्त होना ु ु ां व चावहए। वजिि विद्याथी भी उच्चकोवट के जीिन मल्यों को आत्मिात कर िके । वशक्षक का ू िकवचत एि अनदार तथा िाम्प्रदावयक दृवष्टकोर् का प्रभाि विद्यावथभयों पर भी अिश्य पडता ह।ै ु ु ां ां अतः वहन्दी िावहत्य के वशक्षक का यह नैवतक कतभव्य ह ै वक अपने चररत्र, आदश भ और जीिन मल्यों िारा उदाहरर् प्रस्तत करें वजिि विद्याथी को प्रेरर्ा प्राप्त हो िके । ू ु vii. सम्बहन्धत हिषयों का ज्ञान - मात भाषा वशक्षक के पाि अन्य विषयों की इतनी जानकारी ृ अिश्य होनी चावहए वक यवद पाठ्य-पस्तक म ें अन्य विषय ि िम्बवन्ित कोई तथ्य आ जाय तो ् ु उिे िफलता पिवकभ िमझा िके । ू 5.5 भाषा धशक्षक के धिए आवश्यक कौशि भाषा एक कला ह,ै कौशल ह।ै भाषा वशक्षर् का अथभ ह ै बच्चों को भाषायी कौशलों-िनने, बोलने, पढ़न े ु और वलखने म ें दक्ष करना। मातभाषा िीखने म ें बच्चा जन्म के कछ वदन पश्चात ही अपने माता-वपता के ृ ् ु िम्पकभ म ें आने िाले अन्य व्यवक्तयों का अनकरर् कर स्िाभाविक रूप ि िीखने लगता ह।ै विद्यालयों में ु तो उन्ह ें उनके िमभ ान्य रूप ि पररवचत कराया जाता ह,ै और उिका पढ़ना-वलखना िीखाया जाता ह ै परन्त मात्रेतर भाषा को बच्चे विशषे प्रयत्न ि िीखते ह।ैं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 70 ु

Plagiarism detected: **0.15%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **146**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 भाषा प्रयोग म ें चार वक्रयाए ाँ िवम्मवलत ह ैं - भाषा का िनना, बोलना, भाषा का पढ़ना और भाषा का ु वलखना। वक्रयाशील भाषा बोलने म ें कण्ठ, मख िवर तथा नाविका का प्रयोग करना होता ह ै तथा भाषा ु

िनने म ें कानों का प्रयोग करना होता ह।ै भाषा लेखन म ें लेखनी, स्याही, कागज आवद का प्रयोग करना ु होता ह।ै िाथ ही भाषा पढ़न े म ें आिो, कण्ि, मख विर और नाविका का प्रयोग वकया जाता ह।ै इन चारों ु ों वक्रयाओ को िम्पन्न करने में मन और मवस्तष्क का प्रयोग करना होता ह,ै वबना मन और मवस्तष्क के ां भाषा का प्रयोग

तो वकया ही नहीं जा िकता। भाषा वशक्षर् की दृवष्ट ि ये िभी भाषा के मल तत्ि ए ू ां आिार ह।ै तथा भाषा वशक्षक के वलए यह आिश्यक कौशल थी। किौल का अथि एर् पररभािा ं प्रत्येक व्यािहाररक, प्रयोगात्मक तथा तकनीकी के कायों म ें कौशल की आिश्यकता

Plagiarism detected: **0.08%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 2 resources! id: **147**

होती ह।ै कायभक्षमता कायभ कौशल पर वनभरभ होती ह ै कौशल का कोई रूप नहीं होता परन्त उिके प्रभािशीलता की प्रतीवत की ु जाती ह।ै कौशल के तत्ि तथा वक्रयाए ाँ होती ह।ै वक्रयाओ के विवशष्ट िमह को कौशल कहते ह ें वजिि कायभ की िक्षमता म ें िवद होती ह।ै कायभ िम्पादन ृ ू ां म ें विवशष्ट वक्रयाए ाँ होती ह

ें और उनकी प्रिर्ता म ें कौशल की भवमका अहम होती ह।ै ू i. भािायी किौल - भाषा एक अवभव्यवक्त का िािन ह।ै अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.22%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **148**

का माध्यम कौशल होते ह।ें भाषा विज्ञान तथा व्याकरर् अवभव्यवक्त का िैद्ािवन्तक पक्ष होता ह ै और भाषा कौशल अवभव्यवक्त का व्यािहाररक पक्ष। व्यवक्त की िम्प्रेषर् क्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही वनभरभ होती ह।ै भाषा की ग्राहशीलता का मानदण्ड बोिगम्यता होती ह।ै व्यवक्त वजन भािों और विचारों की अवभव्यवक्त करना चाहते ह ैं उन्ह ें वकतनी िक्षमता ि बोिगम्य कराते ह ैं िह भाषा कौशलों के उपयोग पर वनभरभ होती ह।ै भािा किौल की हविेर्ताए ँ - भाषा कौशल की िामान्य विशषे ताए ाँ वनम्नित ह।ैं ृ i. कौशल भाषा का व्यािहाररक पक्ष होता ह।ै ii. भाषा कौशल िम्प्रेषर् का िािन तथा मख्य माध्यम ह।ै ु iii. भाषा कौशल म ें मानविक, शारीररक अगों, ज्ञानेवन्ियों तथा कमवे न्ियाँ कमशभ ील होती ह।ै ां iv. भाषा कौशल अवजभत वकये जाते ह ैं इिके वलए अभ्याि तथा प्रवशक्षर् प्राप्त वकया जाता ह।ै v. भाषा कौशल का उद्दश्े य बोिगम्यता ह।ै vi. भाषा कौशल ि शावब्दक अन्तः प्रवक्रया होती ह।ै vii. भाषा कौशलों का मख्य आिार भाषा विज्ञान तथा व्याकरर् होता ह।ै ु viii. भाषा कौशल क

े दो प्रिाह - (1) वलखना-पढ़ना (2) बोलना-िनना ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 71 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. श्रर्ण किौल - चार भाषायी कौशलों (िनना, बोलना, पढ़ना, वलखना) म ें श्रिर् (िनना) एक ु ु महत्िपर् भ कौशल ह।ै बालक के जन्म ि ही इि कौशल को िीखने का क्रम आरम्भ हो जाता ह ै और ू जीिन पयभन्त चलता रहता ह।ै हम अविकतर ज्ञान िनकर ही प्राप्त करते ह।ें िामान्यतः हम जागत ृ ु अिस्था का लगभग 42 प्रवतशत िमय िनने म ें ही व्यतीत करते ह।ें एक अध्ययन के अनिार बच्चा ु ु कक्षा ि बाहर खले कद, आकाशिाणी, दरदशनभ आवद के कायभक्रम िनने म ें प्रवतवदन लगभग चार ू ु ू घण्टे का िमय व्यतीत करता ह।ै श्रिर् का भाषर् और पिन ि िीिा िम्बन्ि ह।ै कशाग्र बवद् का ु ु बालक श्रेष्ठ श्रोता माना गया ह ै ध्यानपिकभ िनने िाला बालक िीिान पािक भी होता ह ै और ू ु अच्छा िक्ता भी। श्रर्ण की प्रकहत - िनना एक प्रकवत प्रदत्त शवक्त ह ै और इि शवक्त का लाभ िही उिा िकते ह ैं वजनकी ृ ृ ु श्रिवे न्िय िीक हो। इिम ें विकार होने ि े श्रिर् दोष उत्पन्न हो जाते ह।ें श्रिर् का अथभ वकिी ध्िवन, बातचीत, िाद्य-गीत आवद िनने ि वलया जाता ह ै वकन्त यह िनने का बहत िीवमत अथभ ह।ै भाषा ु ु ु ु ां वशक्षर् के िन्दभ भ म ें श्रिर् का अथभ िनकर भाि-अविगम या भािग्रहर् करना ह।ै इिका अथभ के िल ु ध्िवनयों को िनने ि नहीं होता। श्रिर् म ें वकिी कथन को ध्यान पिकभ िनने, िनी हई बात पर वचन्तन ु ु ू ु ु मनन करने, अपना मन्तव्य वस्थर करने और उिके अनिार आचरर् करने जैि ी जवटल प्रवक्रयाएँ ु िवम्मवलत ह।ैं श्रर्ण किौल का मित्र् - िनना मानि जीिन के भाषा व्यिहार का एक अवनिायभ पक्ष ह।ै एक ु अध्ययन के अनिार मनष्य अपनी वदनचयाभ म ें भाषा व्यिहार के अन्तगतभ 45 प्रवतशत िमय िनने म,ें 30 ु ु ु प्रवतशत बोलने म ें तथा शषे 25 प्रवतशत पिन तथा लेखन के वलए लगता ह।ै विद्याथी भी लगभग आिा िमय िनने म ें लगाता ह।ै ु श्रिर् के िल एक शारीररक वक्रया नहीं ह।ै यवद कर्वे न्िय दोष रवहत ह ै तो कानों को िनाई दगे ा ही। वकन्त ु ु अच्छे श्रिर् के वलए िैिे अविक की अपेक्षा रहती ह।ै एक अच्छा श्रोता िनने के िाथ प्रस्तत िाताभलाप ु ु के िित्र को, विचार के विकाि को, तकभ के वबन्दओ को तथा िक्ता के मनोभािों को भी िमझता ह।ै अतः ू ां ु श्रिर् एक मानविक वक्रया ह।ै श्रिर् कौशल का विकाि भाषा वशक्षर् का एक महत्िपर् भ पक्ष ह ै तथा एक ू अध्यापक होने के कारर् अपने विद्यावथभयों म ें इिके विकाि के वलए िमवचत प्रयाि करना चावहए। ु श्रर्ण किौल के हर्कास के अर्सर - विद्यावथभयों को िामान्यतया वनम्नवलवखत वस्थवतयों म ें िाथभक श्रिर् के अििर प्राप्त होते ह।ैं i. कक्षा वशक्षर् के िमय ii. िहशवै क्षक वक्रयाओ के िमय ां iii. कक्षेत्तर वक्रयाकलापों के िमय उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 72 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. कक्षा हिक्षण के समय - कक्षा वशक्षर् के िमय विद्यावथभयों को बालगीत कविता, कहानी आवद के माध्यम ि श्रिर् कौशल के विकाि का अििर प्रदान वकये जा िकते ह।ें v. सहिैक्षक हियाओ के समय - िहशवै क्षक वक्रयाओ के िारा भी श्रिर् शवक्त का विकाि ं ां कराया जा िकता ह।ै उदाहरर् स्िरूप वजि एकाकी को विद्यावथभयों ने कक्षा म ें पढ़ा ह ै उिका ां कक्षा म ें अवभनय कराए।ाँ इिि श्रिर् का लाभ होगा तथा मनोरजन भी। श्रिर् बावित विद्यावथभयों ां को इि प्रकार के कायभक्रमों म ें विशषे रूप ि िवम्मवलत करें। वनम्न आयोजनों िारा विद्यावथभयों को लाभ पहचाँ ाया जा िकता ह।ै ु i. िाद-वििाद प्रवतयोवगता ii. कहानी प्रवतयोवगता iii. कविता िाचन प्रवतयोवगता iv. आश भाषर् प्रवतयोवगता ु v. िमाचार िाचन vi. प्राथभना के िमय भाषर् iii.

कक्षेत्तर हियाकलापों के समय - कक्षेत्तर वक्रयाकलापों िारा भी श्रिर् कौशल का विकिा कराया जा िकता ह।ै इिके वलए वनम्न िािनों का प्रयोग वकया जा िकता ह।ै ां i. आकाशिा्री कायभक्रम िारा ii. दरदशनभ िारा ू iii. िाप्तावहक छात्रिभाओ िारा ां iv. ित्त चलवचत्रों िारा ृ v. टेप-ररकाडभ िारा श्रर्ण कौिल का मल्याकन - मल्याकन उद्दश्े य आिाररत होता ह।ै श्रिर् कौशल का मल्याकन करते ू ू ू ं ां ां िमय इिके उद्दश्े यों को लघ इकाईयों म ें विभावजत कर लें। ु मल्याकन ितत चलने िाली प्रवक्रया ह।ै प्रत्येक विद्याथी के श्रिर् स्तर का व्यवक्तगत ररकाडभ भी ृ ू ां रखा जा िकता ह।ै कर् भ िम्बन्िी रोग ि ग्रस्त विद्यावथभयों की पहचान करके उनकी ओर विशषे ध्यान दने े की आश्यकता ह।ै श्रिर् िम्बन्िी कौशल का मल्याकन व्यवक्तगत स्तर पर करना श्रेष्ठ होता ह।ै यवद िमयाभाि हो ू ां तो िामवहक रूप ि भी मल्याकन िम्भि ह।ै मल्याकन के िमय श्रिर् िम्बन्िी मशीनों का भी प्रयोग ू ू ू ां ां वकया जा िकता ह।ै प्रेक्षर् भी मल्याकन की पद्धवत हो िकती ह।ै ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 73 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 श्रर्ण दोि, कारण, हनदान और उपचार श्रर्ण दोि - िनने की क्षमता का अभाि ही श्रिर् दोष कहलाता ह।ै िामान्य रूप ि िनने की जो क्षमता ु ु प्रत्येक बालक को प्रकवत ि वमली रहती ह ै उिि कम मात्रा म ें िनना ही श्रिर् अिमथभता मानी जाती ह।ै ृ ु श्रिर् दोष मख्यतः दो प्रकार की मानी जाती ह।ै (5) िामान्य रूप ि ऊँ चा िनना और (2) गम्भीर रूप ि ु ु बहरापन। िामान्य विद्याथी ही विद्यालय म ें प्रिशे पाते ह।ैं वजन्ह ें विशषे उपकर्रों की िहायता ि वशक्षर् पद्धवत तथा कक्षा प्रबन्िन म ें कछ फे र-बदल करके भाषा का विकिा वकया जा िकता ह।ै ु कारण - बालकों म ें श्रिर् दोष के कई कारर् होते ह।ैं जिै े - िशानगत, पयाभिरर्, कपोषर्, दघटभ ना ु ु ां ु या आघात, उपचार का अभाि, माता-वपता की उपेक्षा, मानविक अिरूद्धता आवद। हनदान - कान िम्बन्िी दोष अदृश्य होने के कारर् श्रिर् बावित विद्यावथभयों को कक्षा म ें तरन्त ु पहचानना कविन होता ह।ै एिे विद्यावथभयों को उनकी छवि एि हाि-भाि और विद्याथी तथा ां अध्यापक के बीच कक्षा म ें होने िाली पारस्पररक वक्रयाओ ि पहचान कर वनदान वकया जा िकता ां ह।ै उपचार - विशषे आश्यकता िाले बच्चों की पहचान हो जाने के पश्चात अध्यापक उनके दोषों म ें ृ यथा िम्भि िार लाने तथा उिके भाषा िम्बन्िी कविनाइयों को दर करने के वलए उपचारात्मक ु ू िहायता कर िकते ह।ैं i. श्रिर् दोष के बच्चों के माता-वपता एि अवभभािक ि िम्पकभ करके । ां ii. श्रिर् दोष यक्त बच्चों को कक्षा की अगली पवक्त म ें बिैाने की व्यिस्था करके । ु ां iii. पढ़ाते िमय शब्दों को ऊँ चे और स्पष्ट आिाज म ें तथा उवचत गवत ि बोलकर। iv. श्रिर् बावित बच्चों के िहपावियों को प्रोत्िावहत करके । v. कविन शब्दों या िाक्याशो के अथभ को स्पष्ट करने हते िािो िस्त या पररवस्थवत ि जोडकर। ु ु ां iv. ्राचन कौिल - िाचन कौशल को िािारर् भाषा में

Quotes detected: **0%** id: **149**

'बोलचाल'

भी कहा जाता ह।ै िमाज म ें हम अपना अविकाश कायभ-व्यिहार बोलचाल िारा ही िम्पन्न करते ह।ैं यह विचारों के आदान-प्रदान का ां िरलतम माध्यम ह।ै वलवप के आविष्कार ि पि भ िमस्त ज्ञान बोलकर ही वदया जाता था और यह ू विलविलों पीवढ़यों तक चलता रहता था आज भी जीिन के िभी क्षेत्रों म ें िफलता प्राप्त करने के वलए एक िािन के रूप म ें िाचन की कशलता आश्यक ह।ै ु बोलने म ें मौवखक अवभव्यवक्त ह ै वजिम ें ध्िवन, व्यिस्था, बल, लय, स्िराघात, गवत और विराम का िमवचत उपयोग करना ही बोलना ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 74 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ्राचन का मित्र् - िाचन का जीिन के प्रत्येक क्षेत्र म ें आश्यकता होती ह।ै िाचन भी एक कला ह ै वजिकी ऊँ च-नीच, वनिभनता-िािन िभी को आश्यकता पडती रहती ह।ै िाचन की योग्यता न रखने ि े व्यवक्त िािार की िास्कवतक महानता म ें अपने अवस्तत्ि का आनन्द नहीं ले िकता। जीिन-चररत्र, ृ ां ां इवतहाि काव्य, कहावनयाँ, लेख, उपन्याि, नाटक मनष्य के वलए वजि उद्दश्े य ि वलख े जाते ह,ैं उनका ु पर्तभ या आनन्द और लाभ स्िय पढकर ही उिाया जा िकता ह,ै परन्त िािारर् पढ़ने और िाचन म ें थोडा ू ु ां अन्तर ह।ै िाचन म ें िािारर् रूप ि पढ़न े की अपेक्षा शद्धता, स्पष्टता तथा प्रभािोत्पादकता अवि

Plagiarism detected: **0.04%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **150**

क होती ु ह।ै शद् िाचन के िारा हम िावहत्य के विशाल िाम्राजय म ें प्रिशे करते ह,ैं वजिम ें हम ें एक अलौवकक ु आनन्द की प्रावप्त होती ह

।ै िाचन की शद्धता एि उिकी िहायता ि हम ें िाताभलाप का ढग आता ह ै वजिके परर्रामस्िरूप ु ां ां हम िमाज, दशे और जावत के अच्छे योग्य नागररक हो िकते ह।ैं िमाज म ें महत्िपर्भ स्थान प्राप्त हो ू िकता ह ै तथा िाचन िारा हम अन्य अवशवक्षत भाइयों को लाभ पहचाँ ा िकते ह।ैं ु ्राचन के उद्देश्य - िाचन के वनम्न उद्दश्े य वनिाभररत वकये जा िकते ह।ैं i. बालकों को स्िर के आरोह-अिरोह का एिा अभ्याि करा वदया जाय वक ि े यथा िअिर भािों के अनकल स्िर म ें लोच दके र पढ़ िकें । ु ू ii. िाचन इतना प्रभािोत्पादक बन जाये वक वजि उद्दश्े य ि िाचन वकया गया हो, िह िफल हो और व्यवक्त या िमाज उिि प्रभावित हो। iii. बालकों के अक्षर, शब्दोचारर्, उवचत ध्िवन, बल तथा िस्िरता का उवचत िस्कार करना। ु ां iv. पस्तक पढ़कर बालक उिका भाि िमझ िके तथा दिरों को िमझा िके । ु ू िाचन का प्रयोग तथा अभ्याि प्रारम्भ ि ही करा दने ा चावहए, क्योंवक बाल्यािस्था म ें एक बार आदत पड जाने पर िह शीघ्र नहीं छटती तथा बालक उिके अभ्यस्त हो जाते ह।ैं ू ्राचन की हिशिेताए ँ - िाचन की वनम्न विशषे ताए ँ ह।ैं i. िाचन म ें िन्दरता के िाथ प्रिाह बनाये रखना। ु ii. मिरता, प्रभािोत्पादकता तथा चमत्कार पर् भ ढग ि आरोह-अिरोह के िाथ िाचन करना। ु ू ां iii. प्रत्येक शब्द शद् तथा स्पष्ट उच्चररत करना। ु iv. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों ि अलग करके उवचत बल तथा विराम के िाथ पढ़ना। v. आश्यकतानिार उवचत भाि-भवगमाओ का होना तथा

िमान गवत ि पढ़ना। ु ां ां उपरोक्त विशेषताओ का उवचत प्रकार ि अनकरर् करने ि अच्छे िाचनकार आगे चलकर अच्छे ु ां िाताभकार, प्रभिाशाली िक्ता तथा िफल अवभनेता हो जाते ह।ैं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 75 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ाचन की सामग्री - िाचन की िामग्री का चयन बडी िािाानी ि करना चावहए। इि िामग्री के विश्लेषर् ि पता चलता ह ै वक इि व्यापक होना चावहए। िाचन के वलए वनम्न िामग्री उपादये हो िकती ह।ै i. वनबन्ि - विचार-प्रिान, भिा-प्रिान, व्यग्य एि विनोद-प्रिान, व्यवक्तपरक एिम विषयपरक ां ां वनबन्ि ii. िस्मरर्, शब्दवचत्र ां iii. आत्मकथा, जिीनी, डायरी, ररपोताभज पत्र iv. नाटक, एकाकी, िािद ां ां v. कहानी-चररत्र-प्रिान, िाताभरर्-प्रिान, िमस्या-प्रिान vi. उपन्याि vii. कविता ाचन की हर्धयाँ - प्रारम्भ म ें बालकों को िाचन की वशक्षा दने े म ें शब्दों को पहचानन े पर बल दने ा पडता ह।ै बालक अपने चारों तरफ के पररिशे म ें भाषा के उच्चररत रूप को िनता रहता ह ै और उिका ु दृवष्टपरक प्रतीक भाषा का वलवपबद् मवित रूप होता ह।ै भाषा की दृवष्टपरक प्रतीक प्र ाली के दो रूप होत े ु ह।ैं अवभव्यवक्त िम्बन्िी रूप। ग्रहर् िम्बन्िी रूप, िाचन दिरे रूप का प्रवतवनवि ह।ै ू मनोिज्ञै ावनक दृवष्ट ि िाचन की विवियों को तीन िगों म ें रखा जा िकता ह।ै िश्लेष ात्मक विवियाँ। ां विश्लेष ात्मक विवियाँ। िश्लेष ात्मक विश्लेष ात्मक अथिा िमाहारक विवियाँ। ां िश्लेष ात्मक विवि म ें शब्दों और उनकी ध्िवनयों के तत्िों पर प्रारम्भ म ें बल वदया जाता ह।ै ां िश्लेष ात्मक विवि को तीन भागों म ें विभक्त कर िकते ह।ैं ां िर्भ ाला पद्वत ध्िन्यात्मक पद्वत (फोवनक मेथड) अक्षर विवि (विलेवबक मथे ड) उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 76 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िर्भ ाला के क्रम ि िर्ों को विखाकर पढ़ना िीखाना भारतीय विद्यालयों म ें प्रारम्भ ि ही चला आ रहा ह।ै ध्िन्यात्मक म ें जब िर्ों की ध्िवनयाँ शीघ्रता ि बोली

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-feet-to-… + 2 resources! id: **151**

जाती ह ै तो ि े शब्द की उत्पवत्त करती ह।ै िर्भ का नाम महत्िपर् भ न होकर ध्िवन महत्िपर् भ ह।ै इिमें पहले स्तर िखाये जाते ह

ैं वफर व्यजन। यह विवि ू ू ां रोमन विवि के आिार पर विकवित ह।ै जहाँ िर् भ और ध्िवन अलग-अलग ह।ै अक्षर विवि म ें इि बात पर ध्यान वदया जाता ह ै वक पढ़ाने के वलए मल इकाई वकि बनाया जाय। अग्रेजी म ें िाचन की दृवष्ट ि इिका ू ां महत्ि ह।ै विश्लेष ात्मक विवियाँ इि मान्यता पर आिाररत ह ै वक िाचन के वशक्षर् के िमय िाथभक भाषाई-इकाई ि प्रारम्भ वकया जाय। जो लोग शब्दों को िाथभक इकाई मानते ह ैं ि े

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindivarnamala.in/hindi-alphabet-letters + 2 resources! id: **152**

शब्द विवि का िमथभन करते ह।ैं अन्य िािान िाक्याश विवि या िाक्य विवि का िमथभन करते ह।ैं शब्द-विव

ि म ें

Quotes detected: **0.01%** id: **153**

‘दखे ो और ां कहो’

विवि की अविक चचाभ रहती ह।ै िाक्याश विवि अग्रेजी वशक्षर् में अविक उपयोगी ह।ै िाक्य विवि ां ां का विस्तार

Quotes detected: **0%** id: **154**

‘कहानी विवि’

के रूप म ें हआ ह।ै िमाहारक विवि म ें िश्लेष ात्मक एि विश्लेष ात्मक दोनों ु ां ां पद्वतयों का िमन्िय करन े का प्रयाि वकया जाता ह।ै आिवनक प्रिवत्त िमाहारक विवियों की ओर ृ ु अविक ह।ै ितभमान वशक्षा जगत म ें िाचन की वशक्षा के वलए अनेक विवियाँ प्रचवलत ह ैं वजनका उल्लेख वनम्नित ह।ै ु दखे ो और कहो अक्षर-बोि विवि ध्िवन-िाम्य विवि अनध्िवन विवि ु भाषा वशक्षर् की यन्त्र-विवि िमिते पाि विवि िगवत विवि ां ाचन

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **155**

के प्रकार िाचन के दो प्रकार होते ह।ैं ? िस्िर िाचन मौन िाचन v. ितर्र ाचन - स्िर िवहत िाचन को िस्िर िाचन कहा जाता ह

।ै इिम ें छात्र पढ़ने के िाथ- िाथ बोलता भी जाता ह।ै इिम ें चार वक्रयाए ाँ िवम्मवलत ह।ैं वलवपबद् अक्षरों को दखे ना। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 77 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पवहचानना शब्दों को िमझना एि उच्चारर् करना, ां अथभ ग्रहर् करना। ितर्र ाचन का मित्र् - हम अपने दवै नक व्यिहार म ें िस्िर िाचन का प्रयोग प्रायः करते ह।ैं िभाओ ां म ें भाषर् दने े के वलए पहले ि वलख कर बोलते ह।ैं हमारे नेता भाषर् दते े िमय िाचन ही करते ह।ैं इि प्रकार अनेक औपचाररक अििरों पर भाषर् दने े के वलए िाद-वििाद एि गोवष्ठयों म ें अपनी बात को ां प्रभिाशाली ढग ि रखने के वलए िस्िर िाचन की आिश्यकता पडती ह।ै ां शद् एि प्रभािी तथा प्रिाहपर् भ िाचन श्रोताओ को मन्त्र मग्ि करता ह ै तथा िाताभलाप के िमय िाताभलाप ु ू ु ां ां को रूवचकर बना दते ा ह।ै शवै क्षक िािद, िेवमनार, कायभगोष्ठी, िम्मले न आवद म ें अच्छे िस्िर िाचन का ां अपना अलग महत्ि ह।ै उत्तम िस्िर िाचन ि िाचक म ें आत्मविश्वाि बढ़ता ह ै उिके भाषा प्रयोग की

क्षमता म ें िविद् होती ह,ै औपचाररक िअिरों पर उिकी वझझक दर हो जाती ह ै तथा नेतत्ृि के ग◌ुरों का ◌ृ ◌ृ ◌ु ◌ू विकिा होता ह।ै सतर ◌्राचन के उद्देश्य - िस्िर िाचन के वनम्नवलवखत उद्देश्य ह।ै विद्यावथभयों को िा

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **156**

क्य रचना का ज्ञान कराना। विद्यावथभयों को वलवप का स्पष्ट ज्ञान कराना। व

िरामावद वचन्हों का िमिवचत ध्यान रखते हए पढ़ना। ◌ु ◌ु उवचत बल एि आरोह-अिरोह के िाथ पढ़ना। ◌ं भािानरूप िअिर के अनरूप पढ़ना। ◌ु ◌ु श्रोताओ को िख्या एि िअिर के अनिार ि◌ारी को वनयवत्रत करना। ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं उच्चारर् एि िर म ें स्थानीय बोवलयों का प्रभाि न आने दने ◌ा। ◌ु ◌ं मौन ◌्राचन मौन िाचन का अथभ ह ै वबना हिो वहलाये चपचाप पढ़ना तथा चपचाप पढ़ते हए अविक ि अविक अथभ ◌ु ◌ु ◌ु ग्रहर् करना। मौन िाचन के िमय शावन्तपर् भ िाितिरर्, िाचन की मिा, िैयभ की भािना, विकवित शब्दकोश तथा ◌ू ◌ु एकाग्रता और उवचत प्रिाह एि गवत का ध्यान रखना आिश्यक होता ह।ै ◌ं मौन ◌्राचन का मित्र् - मौन िाचन म ें वनपर्ता का आना व्यवक्त के विचारों की प्रौढ़ता का द्योतक ह ै ◌ु और भाषायी दक्षता पर अविकार का िचक ह।ै मौन िाचन म ें थकान कम होती ह ै क्योंवक इिम ें िाग्यन्त्रों ◌ू पर जोर नहीं पडता। मौन िाचन म ें िमय की भी बचत होती ह ै इिम ें वमतव्यवयता होने के कारर् दवै नक उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 78 ◌ु

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **157**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 जीिन म ें व्यवक्त इिका अविकाविक प्रयोग करता ह

।ै इिम ें िाथ-िाथ वचन्तन की प्रवक्रया भी चलती रहती ह।ै मौन िाचन िारा स्िाध्याय की आदत पडती जाती ह।ै स्िाध्याय म ें रूवच उत्पन्न होने ि छात्र िाचन िारा आनन्द प्राप्त करने का प्रयाि करता ह।ै मौन ◌्राचन के उद्देश्य - मौन िाचन के उद्दश्े य वनम्नवलवखत ह।ै विद्यावथभयों को मौन िाचन का अभ्याि कराना वजििे ि कम ि कम िमय म ें अविक ि अविक िामग्री आत्मिात कर िके । ◌ृ विद्याथी पवित िामग्री का के न्द्रीय भाि ग्रहर् कर िकें । विद्याथी तथ्यों भािों एि विचारों की क्रमबद्ता की पहचान कर िकें । ◌ं विद्याथी पवित िामग्री ि वनष्कष भ वनकाल िके । विद्याथी भाषा िम्बन्िी कविनाइयों को िामने रख िकें । विद्याथी प्रिगानिार अपररवचत शब्दों उवक्तयों एि महािरों के अथभ का अनमान लगा िके । ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं विद्याथी शब्दों के लक्ष्याथभ एि व्यग्याथभ जान िके । ◌ं ◌ं vi. पठन कौिल - पिन भाषा के चारों कौशलों - िनना, बोलना, पढना और वलखना म ें ि एक ◌ु कौशल ह।ै िनना और बोलना तो बच्चे

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **158**

विद्यालय म ें आने ि पि भ ही िीख लेते ह।ैं परन्त पढ़ना ◌ु ◌ू ◌ु और वलखना िीखने के वलए उन्ह ें विद्यालय

म ें विविवत वशक्षा लेनी पडती ह।ै भाषा वशक्षा-प्रावप्त का एक महत्िपर् भ िािन ह।ै भाषा के वबना ज्ञानाजनभ नहीं वकया जा िकता ह।ै ज्ञान विस्फोट के ◌ू इि यग म ें पिन के िारा ही अपने ज्ञान को अिनातन बना िकते ह।ैं पिन का उपयोग जीिन- ◌ु ◌ु पयभन्त रहता ह।ै अतः भाषा-वशक्षर् म ें विद्यावथभयों के पिन-कौशल के विकाि पर विशेष बल दने ◌ा चावहए। पठन का मित्र् - पिन भाषा ज्ञान का ही नहीं, अवपत िमस्त विषयों के ज्ञानाजनभ का मख्य िािन ◌ु ◌ु ह।ै इि कारर् इिका अथभ व्यापक हो गया ह ै और िह वशक्षा का पयाभय बन गया ह।ै िस्ततः पिन ◌ु वशक्षर् की िफलता पर भाषा के अनेक कौशलों का विकाि विवि विषयों का ज्ञानाजभन, आनन्द और प्रेर◌्रा की प्रावप्त, बौवद्क और भािात्मक विकाि तथा भावषत एि िावहवत्यक योग्यताओ की ◌ं ◌ं िमवद् वनभरभ ह।ै ◌ृ पठन के उद्देश्य - पिन वशक्षर् के वनम्नित उद्दश्े य वनिाभररत वकये जा िकते ह।ैं ◌ृ विद्याथी िहज रूप ि िाताभलाप कर िकते ह।ैं विद्याथी कहावनयों को पढ़कर उिे िना िकते ह।ैं ◌ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 79 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 विद्याथी िस्तओ तथा उनके वचत्र को दखे कर उनका नाम याद कर िकते ह।ैं ◌ु ◌ं विद्याथी िमान ध्िवनयों म ें अन्तर कर िकते ह।ैं विद्याथी पिन कौशल तथा पिन योग्यता की कवमयों को दर कर िकते ह।ैं ◌ू पठन की सामग्री - पिन की िामग्री का चयन कक्षाओ के अनरूप वकया जाना चावहए। ◌ु ◌ं पिन के आरम्भ म ें आकवतयों तथा वचत्र आवद का िहयोग लेना चावहए। ◌ृ प्राथवमक

Plagiarism detected: **0.02%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **159**

कक्षाओ म ें िर्मभ ◌ाला, लेख, कहानी, जीिनी, िािद कविता आवद। ◌ं ◌ं उच्च प्राथवमक कक्षाओ म

ें प्रारवम्भक कक्षा की िामग्री के अवतररक्त मानवचत्र पिन तथा ◌ं कोश/विश्वकोश-पिन। पठन की हर्धयाँ - पिन की विवभन्न वशक्षर् विवियों म ें िर् भ विवि, शब्द विवि, िाक्य विवि, व्यािहाररक विवि अथिा ियक्त विवि। ◌ु ◌ं a. िर्ण हर्ध - इि विवि के अन्तगतभ ि◌र्ों की िािी पहचान कराई जाती ह।ै जिै े - स्िरों और व्यजनों का वलवखत रूप की पहचान कराना और उन्ह ें उनकी विवियों म ें िर्मभाला पर विशेष ◌ं ध्यान वदया जाता ह ै िर्मभ ◌ाला के पश्चात बारहखडी याद करा

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 8 resources! id: **160**

यी जाती ह।ै ◌ृ b. िब्द हर्ध - इि विवि के अन्तगतभ शब्दों पर बल होती ह।ै शब्द के माध्यम ि िर् भ िीखाये जाते ह ें और क्षमता िाले ि◌र्ों को पहले पढ़ाया जाता ह ै और कम क्षमता िाले ि◌र्ों को बाद म ें िीखाया जाता ह

।ै c. ◌्राक्य हर्ध - यह विवि इि विद्◌ान्त पर आिाररत ह ै वक िाक्य

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **161**

ही भाषा की अथभपर् भ इकाई ह ै ू इिवलए िर्ों को िीखाने के वलए भी प्रारम्भ म ें िाक्य ही प्रस्तत करना चावहए। इि िाक्य म ें इि ु प्रकार के मल शब्द होने चावहए वजनके विश्लेषर् ि अपेवक्षत िर् भ प्राप्त हो िके । इिके वलए ू आज्ञाथभक िाक्य उपयक्त ह ैं क्योंवक ि े लघत्तम होते ह।ैं ज

ै-अमर आ। घर चल। छत पर चढ़। ु ु d. व्याि्ारररक अथर्ा सयक्त हर्ध - वशक्षर् विवियााँ िीन ह,ैं िाध्य नहीं, इन िभी विवियों ु ं का उद्दश्े य िर्बभ िो कराना ह।ै व्यािहाररक द्दवष्ट यह ह ै वक विद्यावथभयों की आय, रूवच, स्िभाि ु तथा िमय और िामग्री की िीमाओ के आिार पर कीन्हीं दो या दो ि अविक विवियों को एक ां िाथ उपयोग म ें लायी जाय। vii. लेखन कौिल - लेखन कला मानि िमाज का महत्िपर् भ आविष्कार ह,ै िभ्यता के विकाि के ू िाथ मानि ने अपने भािों को वचवत्रत करने के स्थान पर ध्िवनयों को वचत्रों के प्रतीकों के माध्यम ि अवकत करना िीखा और इि प्रकार वलवप का आविष्कार हआ। अतः वलवप वचन्ह मान ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 80 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ध्िवनयों के वलए स्िीकत वभन्न-वभन्न आकवत प्रतीक ह।ै जिै -वहन्दी भाषा में

Quotes detected: **0%** id: **162**

'कमल'

शब्द में ृ ृ उच्चररत

Quotes detected: **0%** id: **163**

'क'

Quotes detected: **0%** id: **164**

'म'

तथा

Quotes detected: **0%** id: **165**

'ल'

की ध्िवनयों के वलए क, म तथा ल आकवत प्रतीक ह।ै ृ लेखन-कला के विकाि का ही यह पररर्ाम ह ै वक मनष्य का अवजतभ ज्ञान वलवपबद्द रूप में प्राप्त ु ह।ै आज हम लेखन के वबना िभ्य िमाज की कल्पना भी नहीं कर िकते। अतः लेखन कला में कशलता का विकाि वशक्षर् का महत्िपर् भ लक्ष्य ह।ै ु ू लेखन कौिल के उद्देश्य - भाषा वशक्षर् का एक प्रमख उद्दश्े य ह ै भािावभव्यवक्त जो वलवखत और ु मौवखक दोनों रूपों म ें होती ह।ै वलवखत भािावभव्यवक्त वलखने के अभाि म ें अिम्भि ह।ै हम वलखने को वशक्षा का आिश्यक अग मानते ह।ैं ां वलखकर हम अपने विचारों को दर-दर तक पहचाँ ा दते े ह।ैं वलवखत अवभव्यवक्त के अनेक रूप ह ैं वजनमें ु ू ू पत्र-लेखन, प्राथभना-पत्र-लेखन, वनबन्ि लेखन, जीिन चररत्र-लेखन, आत्मकथा लेखन, कहानी-लेखन, िंिाद-लेखन प्रमख ह।ैं लेखन के उद्दश्े य वनम्नित हैं- ृ ु ां विद्याथी स्पष्ट िलेख वलख िके । ु विद्याथी शब्दों की शद्द ितभनी वलख िके । ु विद्याथी विराम-वचन्हों का यथोवचत प्रयोग कर िके । विद्याथी व्याकरर्-िम्मत शद्द भाषा का प्रयोग कर िके । ु विद्याथी िाक्यों म ें शब्दों, िाक्याशों तथा उपिाक्यों का क्रम अथाभनकल रख िके । ु ू ां विद्याथी वलवखत अवभव्यवक्त के विवभन्न रूपों

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **166**

के माध्यम ि अवभव्यवक्त कर िके । विद्याथी वलवखत अवभव्यवक्त के विवभन्न रूपों के माध्यम

ि अवभव्यवक्त कर िके । लेखन कौिल का मित्र् - भाषा पर अविकार प्रावप्त के वलए वजि प्रकार वकिी भाषा का िनना, ु बोलना और पढ़ना महत्ि रखता ह ै उिी प्रकार वलखने का भी अपना महत्ि ह।ै अतः इिकी उपेक्षा नहीं कर िकते। वकिी भाषा पर पर् भ अविकार प्राप्त करने के वलए यह आिश्यक ह ै वक पढ़ने के िाथ-िाथ उि ू भाषा को वलखा भी जाय। िािवनक िास्कवतक जीिन में भाग लेने के वलए वलखना अवत आिश्यक ह।ै ृ ु ां बौवद्दक विकाि के वलए भी वलखना िीखना आिश्यक ह।ै विचार करने तथा मनन करने के वलए लेखन

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **167**

का ज्ञान विशेष आिश्यक ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 81 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अपने दशे की िभ्यता तथा िस्कवत का ज्ञान

हम ें लेखन कला

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **168**

के माध्यम ि ही हआ ह।ै ु ृ ां िर के विवभन्न दशे ों ि परस्पर िम्बन्ि वलवखत भाषा के माध्यम ि ही होता ह।ै ां लेखन के प्रकार - िामान्यतया लेखन का अभ्यिा तीन प्रकार का होता ह।ै i. सलेख-न्दिर लेख को िलेख कहते ह।ैं यह लेखन का प ्रथम और आिश्यक गर् ह।ै िलेख ु ु ु ु ु वलखते िमय िर् भ के विवभन्न अियों की बनािट, उिकी स्पष्टता तथा िडोलता, िरों म ें स्िर- ु मात्राओ का उवचत योग, िर् भ ि िर् भ और शब्द ि शब्द की उवचत दरी, िी वशरो रेखा आवद ां ू वबन्दओ पर विशषे ध्यान वदया जाता ह।ै ां ु ii. अनलेख-अनलेख ि अवभप्राय ह ै श्यामपट्ट अथिा पस्तक की िामग्री को जयों का त्यों दखे कर ु ु ु लेख वलखना। अनलेख का उद्दश्े य शद् ितभनी िवहत लेखन का अभ्यिा कराना। अनलेख म ें ु ु िलेख का ध्यान रखना चावहए। ु iii. श्रतलेख - िनकर वलख े गये लेख को श्रतलेख कहते ह।ैं इिका उद्दश्े य िक्ता िारा उच्चररत ु ु ु ध्िवनयों को कान लगाकर िनना तथा उिके अनरूप उवचत गवत, स्पष्टता एि शद्ता ि वलखने ु ु ु ां का स्िच्छतापिकभ अभ्यिा करना ह।ै ू लेखन किौल हईधयाँ - लेखन की विवियाँ वनम्नवलवखत ह।ै खण्डशः लेखन विवि रूप अनिरर् विवि ु अनलेखन विवि ु तलना विवि ु इन विवियों के माध्यम ि लेखन कायभ को स्पष्ट, िन्दर और िमझने योग्य वकया जा िकता ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 82 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 खण्ड 2 Block 2 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 83 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई1- पाठ्यक्रम और पाठ्य िामग्री का धनमाण 1.1 प्रस्तािना 1.2 उद्दश्े य 1.3 पियक्रम ् 1.3.1 पियक्रम का अथभ ् 1.3.2 पियक्रम की पररभाषा ् 1.3.3 पियचयाभ का अथभ ् 1.3.4 पियिस्त का तात्पयभ ् ु 1.3.5 पियक्रम,पियचयाभ एिम पियिस्त में अन्तर ् ् ् ु 1.4 पियक्रम वनमाभर् की प्रवक्रया ् 1.4.1 शैवक्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर् 1.4.2 शैवक्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् की आिश्यकता 1.4.3 शैवक्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् की उपयोवगता, स्रोत एिम प्रकार 1.4.4 पियक्रम वनमाभर् में ब्लम के वनिाभरर् का महत्ि ् ू 1.4.5 शैवक्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् के मानदण्ड 1.4.6 आिवनक भारत की शैवक्षक आिश्यकताएँ ु 1.5 अविगम अनभिों का चयन ु 1.5.1 अविगम अनभिों का िजन ृ ु 1.5.2 अविगम अनभिों के चयन का मानदण्ड ु 1.5.3 अविगम अनभिों का िगीकरर् ु 1.6 विषयिस्त का चयन ु 1.6.1 पियिस्त के स्रोत ् ु 1.6.2 पियिस्त चयन के मल आिार ् ु ू 1.7 पियक्रम का िगिन ् ां 1.7.1 पियक्रम िगिन के प्रकार ् ां 1.8 िामग्री का चयन 1.9 गवतविवियों या वक्रया-कलापों का विकाि उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 84 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.10 पिय-पस्तकों का वनमाभर् ् ु 1.11 पियपस्तक वनमाभर् का वििात ् ु ां 1.12 िाराश ां 1.13 वनबिात्मक प्रश्न ां 1.14 अभ्यिा प्रश्नों के उत्तर 1.15 िदभभ ग्रन्थ िची ू ां 1.1 प्रस्तावना वशक्षा वत्रध्रीय प्रवक्रया ह,ै इन वत्रध्रों म ें वशक्षक, वशक्षाथी तथा पियक्रम िवम्मवलत ह ैं । तीनों म ें ि ् ु ु वकिी एक की अनपवस्थवत ि वशक्षा प्रवक्रया पर् भ नहीं हो िकती । कछ वििान िातिरर् को भी एक धि ु ू ु ु के रूप म ें मान्यता प्रदान करन े लग े ह ैं । वशक्षा मानि विकाि का िित्तम िािन ह ै । ितभमान िमय में व्यवक्त ,िमाज तथा राष्र की आिश्यकताओ एि आकाक्षाओ की पवतभ उत्तम वशक्षा ि ही िभि ह ै । ू ां ां ां ां ां वशक्षा की प्रवक्रया म ें विवभन्न यगों म ें दशे , काल एि पररवस्थवत के अनिार अलग अलग पक्षों को ु ु ां प्राथवमकता दी जाती रही ह ै । कभी वशक्षकों को कभी छात्रों को तो कभी विषय िस्त और कभी वशक्षर् ु उद्दश्े यों को भी महत्ि वदया जाता रहा ह ै ितभमान िमय म ें उद्दश्े यों को विशषे महत्ि वदया जा रहा ह ै । वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया की व्यिस्था तथा वशक्षर्-परीक्षर् प्रवक्रया म ें भी उद्दश्े यों को ही महत्ि वदया जा रहा ह ै । उद्दश्े य िाध्य होते ह,ैं इनकी प्रावप्त के वलए िािन की आिश्यकता होती ह ै । वशक्षा के उद्दश्े यों की प्रावप्त का िित्तम िािन पियक्रम और पिय-पस्तकें ह ैं । वशक्षा की प्रवक्रया की िाथभकता ् ् ु एि प्रभािशीलता के वलए िाध्य एि िािन म ें िमन्िय स्थावपत करना अवत आिश्यक ह ै । गाँिी जी ां ां कहते ह ै वक–

Quotes detected: **0.02%** id: **169**

“उत्तम िाध्य के वलए उत्तम िािन का होना अवनिायभ ह ै ।”

बीिीं शताब्दी के प्रारम्भ म ें पियक्रम की निीन िकल्पना का विकाि हआ तथा उद्दश्े यों को अविक ु ् ां महत्ि प्रदान वकया गया । पियक्रम की निीन िकल्पना ि विचारकों, वशक्षाविदों एि विषय विशेषज्ञों ् ां ां का ध्यान

Quotes detected: **0%** id: **170**

“पियक्रम विकाि”

की ओर गया । शताब्दी के उत्तरािभ म ें इि वदशा म ें अनेक महत्त्िपर्भ ् ू प्रयाि भी वकये गए तथा वकये जा रह े ह ैं । अत:

Quotes detected: **0%** id: **171**

‘पियक्रम विकाि’

वशक्षा की विषयिस्त का एक ् ु महत्िपर् भ अग बना हआ ह ै । पियक्रम के वनमाभर् एि मल्याकन पर अनिन्िान कायभ भी हो रह े ह ैं तथा ु ् ू ू ु ां ां पियक्रम विकाि के अनेक प्रवतमान भी विकवित वकये गये ह ैं । प्रस्तत इकाई म ें

Quotes detected: **0.01%** id: **172**

‘पियक्रम और ् ् ु पियक्रम िामग्री का वनमाभर्’

के िन्दभ भ की चचाभ की गयी ह ै । ् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 85 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.2 उद्दश्े य इि इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- 1. पियक्रम ,पियचयाभ तथा पियिस्त का अथभ बता िकें ग े ् ् ् ु 2. पियक्रम

,पियचयाभ तथा पियि-स्ति के अतर को िमझ िकें ग े । ृ ृ ृ ु ां 3. पियक्रम वनमाभर् को स्पष्ट कर िकें ग े । ृ 4. शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर्, आिश्यकता, स्रोत, उपयोवगता और प्रकार का िर्नभ कर िकें ग े । 5. अविकतम अनभिों की जानकारी प्राप्त कर िकें ग े । ु 6. पियक्रम के िगिन के प्रवतमान का विश्लेषर् कर िकें ग े । ृ ां 7. अनदश्े ात्मक िामग्री के वनमाभर् के तत्िों को िमझ िकें ग े । ु 8. पियपस्तक के विद्ात को बता िकें ग े । ृ ु ां 1.3 पाठ्यक्रम पियक्रम का तात्पयभ ह ै वक विषयि-स्ति के वहिाब ि क्या पढ़ाया जाये और ि े ज्ञान, कौशल एि ृ ु ां अवभिवत्तयाँ वजन्ह ें खिा रूप ि विवशष्ट उद्दश्े यों के िाथ बढ़ाा वमले । पियक्रम शवै क्षक लक्ष्यों को प्राप्त ृ ृ करने का एक िािन ह ै । इिम ें विचार-प्रिान विषयों को विशषे स्थान वदया जाता ह ै । पियक्रम िारा ृ बालकों म ें कला, िावहत्य, दशनभ , िम,भ नीवत-शास्त्र, इवतहाि, मनोविज्ञान, िगीत, विज्ञान आवद विषयों ां का विकाि वकया जा िकता ह ै । 1.3.1 पाठयिम का अथि व पियक्रम शब्द अग्रेजी भाषा के कररकलम शब्द का वहदी रूपातर ह ै । कररकलम शब्द लैवटन भाषा ि ृ ु ु ां ां ां अग्रेजी भाषा म ें ग्रहर् वकया गया ह ै यह लैवटन भाषा के करेर शब्द ि बना ह ै । करेर शब्द का अथभ होता ह ै ु ु ां

Quotes detected: **0.01%** id: **173**

“दौड का मदै ान”

। वजिे वकिी व्यवक्त को अपने गतव्य स्थान पर पहचन े म ें िहायता वमलती ह ै अतः ु ां पियक्रम िह िािन ह,ै वजिके िारा वशक्षा ि जीिन के लक्ष्यों की प्रावप्

Plagiarism detected: **0.04%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 2 resources! id: **174**

त होती ह ै । पियक्रम अध्ययन का ृ ृ वनवश्चत एिम तकभ पर् भ क्रम ह,ै वजिके माध्यम ि विद्याथी के व्यवक्तत्ि का विकाि होता ह

ै तथा ज्ञान एिम ृ ू अनभि को ग्रहर् करता ह ै । ु 1.3.2 पाठयिम की पररभािा व पियक्रम की िािभमान्य पररभाषाए ँ इि प्रकार ह ैं । ृ □ िाल्टर एस० मनरो के अनसार –

Quotes detected: **0.09%** id: **175**

“ पियक्रम को वकिी विद्याथी िारा वलए जाने िाले विषयों ृ ु ु के रूप म ें पररभावषत नहीं वकया जाना चावहए । पियक्रम की कायाभत्मक िकल्पना के अनिार ृ ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 86 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इिके अतगभत अनभि आ जाते ह ैं जो विद्यालय म ें वशक्षा के लक्ष्यों की प्रावप्त के वलए प्रयक्त वकये ु ु ां जाते ह ैं ।”

□ बहर्ट के अनसार–

Quotes detected: **0.03%** id: **176**

“ उच्चतर जीिन के वलए प्रवतवदन और २४ घन्टे की जा रही िमस्त ु वक्रयायें पियक्रम के अतगतभ अ जाती ह ैं ।”

ृ ां □ ले के अनसार–

Quotes detected: **0.02%** id: **177**

“ पियक्रम का विस्तार िहा तक ह ै जहाँ तक जीिन ह ै ।”

ृ ु ां □ कहनघम के अनसार–

Quotes detected: **0.05%** id: **178**

“पियक्रम कलाकार (वशक्षक) के हाथ म ें एक िािन ह ै वजिे िह ृ ु ं अपनी िामग्री (वशक्षाथी) को अपने आदश भ (उद्दश्े य) के अनिार अपनी वचत्रशाला (विद्यालय) ु म ें ढाल िके ।”

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **179**

□ माध्यहमक हिक्षा आयोग– “पियक्रम का अथभ के िल उन िद्ावन्त विषयों ि नहीं ह ै जो ृ विद्यालयों म ें परपरागत रूप ि पढाये जाते ह ैं बवल्क इिम ें अनभिों की िह िम्पर्तभ ा भी ु ू ां िवम्मवलत होती ह ै वजनको विद्याथी विद्यालय, कक्षा, पस्तकालय, प्रयोगशाला, कायभशाला, ु खले के मदै ान तथा वशक्षक एि छात्रों के अनेक अनौपचाररक िम्पकों ि प्राप्त करता ह ै इि ां प्रकार विद्यालय का िम्पर् भ जीिन पियक्रम हो जाता ह ै जो छात्रों क

े जीिन के िभी पक्षों को ृ ू प्रभावित करता ह ै और उनके िितवलत व्यवक्तत्ि के विकाि म ें िहायता दते ा ह ै ।” ु ां □ ब्लातस के अनसार-

Quotes detected: **0.07%** id: **180**

“पियक्रम को वक्रया एि अनभि के पररर्ाम के रूप म ें िमझा जाना ृ ु ु ं ां चावहए न की अवजभत वकये जाने िाले ज्ञान और िमावहत वकये जाने िाले तथ्यों के रूप म ें । विद्यालय जीिन के अतगभत विवभि प्रकार के कलात्मक, शारीररक एि बौवद्क अनभि तथा ु ां ां प्रयोग िवम्मवलत रहते ह ैं ।”

उपरोक्त पररभाषाओ के आिार पर कहा जा िकता ह ै वक- ां

Quotes detected: **0.03%** id: **181**

“पियक्रम जिीन को उत्कृष्ट बनाने हते ज्ञान प्रावप्त के िमस्त स्रोत और िािनों का िमन्िय ृ ् ु ां ह।ै ”

1.3.3 पाठयचयिा का अथि व पियचयाभ पियक्रम के ि पक्ष को कहते ह ैं विे कक्षा म ें प्रयोग हते व्यिवस्थत वकया जाता ह ै । इिम ें ् ु पियिस्त के अवतररक्त वशक्षकों, छात्रों तथा प्रकाशकों के उपयोगाथभ िहायक िामग्री ए कायभविवि ् ु ां आवद के वनदशे भी िवम्मवलत होते ह ैं । गड के अनसार–

Quotes detected: **0.09%** id: **182**

“पियचयाभ वकिी कक्षा को वकिी विषय के वशक्षर् म ें िहायता के वलए वकिी ् ु ु विद्यालय विशेष अथिा व्यिस्था के वलए तैयार वकया जाता ह ै । पियचयाभ में पियक्रम के लक्ष्य, ् ् आपेवक्षत परर्राम, अध्ययन िामग्री की प्रकवत ए विस्तार तथा उपयक्त िहायक िामग्री वशक्षर् ृ ु ां विवियााँ, िहगामी वक्रयाए तथा अनपरक पस्तकें ए उपलवब्ि मापन के िझाि िवम्मवलत वकये जाते ह।ैं ”

ु ू ु ु ां ां 1.3.4 पाठयर्तत का तात्पयि (Meaning of syllabus) व ु पियिस्त परे शवै क्षक ित्र म ें विवभन्न विषयों म ें वशक्षर् की विषय-स्ति का वनिाभरर् करता ह ै । ् ु ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 87 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िनरी िरेप के अनसार–

Quotes detected: **0.05%** id: **183**

“पियिस्त के िल मवित िदवशभका ह ै जो यह बताती ह ै वक छात्र को क्या ् ु ु ु ां िीखना ह ै ? पियिस्त की तयारी पियक्रम विकिा के कायभ का एक तकभ िम्मत िोपान ह ै ।”

् ् ु 1.3.5 पाठयिम, पाठयचयिा एर् पाठयर्तत में अन्तर व व व ु ं ितभमान िमय म ें पियक्रम के वलए करीक्यलम के िाथ–िाथ पियिस्त तथा पियचयाभ शब्दों का भी ् ् ् ु ु प्रयोग वकया जाता ह ै वकन्त मल रूप ि इन तीनों म ें अन्तर ह ै । जब तक पियक्रम शब्द पिय विषयों के ् ् ु ू िीवमत अथभ म ें प्रयक्त वकया जाता ह ै तब तक ये तीनो शब्द प्रायः िमानाथी मने जाते रह,े लेवकन आज ु इनम ें व्यापकता होने के कारर् वभन्नता आ गई ह ै । □ पाठयिम (Curriculum)- के अतगतभ विद्याथी जिीन म ें विद्याथी िारा प्राप्त िभी अनभि व ु ां आते ह ैं तथा वजनम ें कक्षा के अन्दर ए बाहर आयोवजत की जाने िाली पिय ए पियेत्तर ् ् ां ां वक्रयाए िवम्मवलत होती ह ैं । ां □ पाठयचयिा (Course of study)- पियचयाभ, पियक्रम के वलए प्रचवलत शब्दों म ें व ् ् अपेक्षाकत नया शब्द ह ै । इिका प्रयोग वकिी पियक्रम के क्रमबद्, स्पष्ट, विषयिार ए ृ ् ां विस्तत स्िरुप के वलए तैयार वकया

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **184**

जाता ह ै । पियचयाभ, पियक्रम के ि पक्ष को कहा जाता ह ै ृ ् ् विे कक्षा म ें प्रयोग हते व्यिवस्थत वकया जाता ह ै । ु □ प

ियचयाभ म ें पियक्रम के लक्ष्य, अपेवक्षत परर्राम, अध्ययन िामग्री, िहायक िामग्री, वशक्षर् ् ् विवियााँ, िहयोगी वक्रयाए ाँ आवद िवम्मवलत रहती ह ैं । □ पाठय-र्तत (Syllabus)- पियिस्त पिय-विषयों के वशक्षर् हते अन्तिस्भ त, इिके

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 3 resources! id: **185**

ज्ञान की व ् ् ु ु ु ु िीमा, छात्रों िारा प्राप्त वकये जाने िाले कौशलों को वनशवचत करता ह ै तथा शवै क्षक ित्र म ें पढाय े जाने िाले व्यवक्तगत पहलओ ए वनष्कषों की विस्तत जानकारी प

्दान करता ह ै । ृ ु ां ां पियि-स्ति वकिी पिय-विषय के वलए अविगम के एक स्तर विशेष पर पियक्रम का एक ् ् ् ु पररष्कत ए विस्तत रूप होता ह ै । पियि-स्ति का िम्बन्ि के िल ज्ञानात्मक पक्ष ि होता ह ै । ृ ृ ् ु ां 1.4 पाठ्यक्रम धनमिा की प्रधक्रया पियक्रम

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **186**

विद्यालय की वशक्षा व्यिस्था का कें ि वबद ह ै । विद्यालय म ें उपलवब्ि िभी िािन जिै े- ् ां ां ु विद्यालय

भिन, उपकरर्, पस्तकालय की पस्तकें तथा अन्य वशक्षर् िामग्री का एक मात्र उद्दश्े य ह–ै ु ु पियक्रम के प्रभािी वक्रयान्ियन म ें िहयोग दने ा । कक्षा की िमस्त वक्रयाए, पिय िहयोगी वक्रया- ् ् ां कलाप तथा मल्याकन की िमस्त प्रवक्रया विदयालयी पियक्रम के अनिार ही वनयोवजत की जाती ह ै । ् ू ु ां पियक्रम शवै क्षक प्रवक्रया का िह अग ह ै जो वशक्षक ए वशक्षाथी दोनों को अध्ययन ए अध्यापन की ् ां ां ां वदशा प्रदान करता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 88 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पियक्रम वनमाभर् का कायभ एक विवशष्ट कायभ ह ै । इिके वलए इिम ें प्राप्त वकये जाने िाले उद्दश्े यों तथा वदए ् जाने िाले अविगम अनभिों और पियक्रम के विवभन्न वक्रया-कलापों िारा बालकों म ें लाये जाने िाले ् ु पररितभनों के मलयाकन की पर् भ जानकारी होनी चावहए । पियक्रम वनमाभर् की िविनयोवजत प्रवक्रया को ् ू ू ु ां िपन्न करने के वलए हम े वनम्न िोपानों का अनगमन करना चावहए – ु ां i. शवै क्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर् ii. अविगम अनभिों का चयन ु iii. विषय-स्ति

का चयन ु iv. विषयि-स्ति का िगिन ु ां v. पियक्रम का मल्याकन ृ ू ां 1.4.1 िैहक्षक उद्देश्यों का हनधािरण िमाज के यथाथभ शवै क्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर् वकया जाना ह ै । उद्दश्े य उपेवक्षत उपलवब्ियों को विवशष्टता प्रदान करते ह ैं । उद्दश्े यों को वनिाभररत करते िमय वनम्न बातों का ध्यान दने ा चावहए । □ उद्दश्े यों का िम्बन्ि वशक्षा के विस्तत लक्ष्यों ि

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **187**

होना चावहए जो उनका स्रोत ह ै । ृ □ उद्दश्े य विद्यावथभयों की आिश्यकताओ के अनिार उपयोगी, अथभपर् भ और प्रिावगक होने चावहए । ु ू ां ां □ उद्दश्े य िस्पष्ट होने चावहए

। ु □ िभी उद्दश्े य छात्रों की रूवच और आिश्यकताओ को परा करने िाले

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **188**

होने चावहए । ू ां □ उद्दश्े यों पर िमय-िमय पर पनविचभ ार करना आिश्यक ह ै । ु □ उद्दश्े यों का िगीकरर् िििमभ ान्य विचार के अनरूप ि तावकभ क होना चावहए

। ु 1.4.2 उद्देश्यों के हनधािरण की आिश्यकता- पियक्रम मल रूप ि एक वनयोवजत शवै क्षक कायभक्रम ह ै ृ ू इि इिवलए तैयार वकया जाता ह ै वक हम िमाज िारा स्िीकत व्यिहार िीख िकें । पियक्रम को वनवश्चत ृ ृ करने ि पहले यह िवनवश्चत वकया जाना आिश्यक ह ै वक िमाज के िदस्यों की आिश्यकता क्या ह ै ? ु तथा िमाज वशक्षा के विवभन्न स्तरों ि क्या पाना चाहता ह ै । इिके उपाय वनम्नित ह ैं । □ पियक्रम हते विशेष िििेक्षे र् एि क्षेत्रीय अध्ययन िारा शवै क्षक आिश्यकताओ का वनिाभरर् वकया ृ ु ां ां

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **189**

जाना चावहए। □ आिश्यकता का वनिाभरर् वशक्षा आयोगों की ररपोटभ, िरकारी नीवतयों आवद के विश्लेषर् िारा वकया जाना चावहए

उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 89 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.4.3 उद्देश्यों के हनधािरण की उपयोहगता, स्रोत एिां प्रकार- पियक्रम के उद्दश्े यों के वनिाभरर् की ृ ां पयोवगता वनम्नित ह ै । □ शवै क्षक कायभक्रमों को वनवश्चत वदशा वमलती ह ै □ शवै क्षक कायभक्रमों के वनयोजन एि व्यिस्थीकरर् को को वनवश्चत आिार वमलता ह ै । ां □ शवै क्षक वनर्भयों के वलए उवचत मागदभ शनभ प्राप्त होता ह ै । □ अविगम के विवभन्न पक्षों म ें विभदे ीकरर् िभि होता ह ै । ां □ शवै क्षक कायभक्रमों की प्राथवमकताओ को िवनवश्चत करने म ें िहायता वमलती ह ै । ु ां □ अविगम को कायाभत्मक बनाने म ें िहायता वमलती ह ै । स्रोत- शवै क्षक उद्दश्े यों के स्रोतों की प्रकवत एि विस्तार क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने की दवष्ट ि े वनम्न िगों में ृ ां बाटा जा िकता ह ै । ां 1- समाज 2- व्यहक्त 3- ज्ञान 1- समाज (Society)- शवै क्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर् िमाज िारा अपनी आिश्यकताओ की पती ू ां तथा िमस्याओ के िमािान के वलए वकया

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **190**

जाता ह ै । िमाज का आवथभक, राजनीवतक, तथा ां िास्कवतक आिार क्या ह ै तथा इिकी आिश्यकताए वकि प्रकार क

ी ह ैं ये बातें शवै क्षक उद्दश्े यों ृ ां ां के वनिाभरर् के महत्िपर् भ होती ह ै । ू 2- व्यहक्त (Human)- शवै क्षक उद्दश्े यों का दिरा प्रमख स्रोत व्यवक्त ह ै । व्यवक्त का महत्ि इि ु ू कारर् ह ै वक उिकी अपनी स्ितत्र इच्छा शवक्त एि कछ विवशष्ट आिश्यकताए ँ होती ह ै । इन ु ां ां आिश्यकताओ का िम्बन्ि उिै वक्तक वि

Plagiarism detected: **0.05%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 4 resources! id: **191**

काि ि होता ह ै । बालक का शारीररक , मानविक, ां िामावजक एि िििगात्मक विकाि कै ि होता ह ै ? विवभन्न आिश्यकताओ म ें उिकी ां ां ां आिश्यकताए, रुवचयों एि रुझान वकि प्रकार के होते ह ैं ? उिक

ी योग्यताए एि क्षमताए कै िी ह ैं ां ां ां ां ां ? आवद बातों का शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् म ें बहत महत्ि ह ै । ु 3- ज्ञान (Knowledge)- िभ्यता के विकाि का मल ज्ञान ही ह ै । वशक्षा िभ्यता के विकाि का ू माध्यम ह,ै अतः इि

Plagiarism detected: **0.05%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **192**

ज्ञान के विकाि और उपयोग म ें भी िहायक होना चावहए । ज्ञान के भी अपने अनेक अग एि पक्ष ह ैं । जिै े- तथ्य, प्रवक्रयाए, विचार, िििारर्ाए, वचतन, प्रर्ावलयाँ, ां ां ां ां ां आवद । ज्ञान क

े भण्डार को विवभन्न िगों म ें आयोवजत करके उन्ह ें अलग-अलग विषयों का नाम प्रदान वकया जाता ह ै । िििे स्पष्ट ह ै वक शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् म ें ज्ञान एक प्रमख घटक ह ै । ु प्रकार– शवै क्षक उद्दश्े यों के दो प्रकार ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 90 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1- सामान्य उद्देश्य 2- हहिष्ट उद्देश्य 1- सामान्य उद्देश्य (General objective)- कछ उद्दश्े य व्यापक एि स्थल प्रकवत

Plagiarism detected: **0.06%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **193**

के होते ह ै । ये ृ ु ू ां िम्पर् भ िमाज अथिा दशे के वलए िाथभक हो िकते ह ैं । ऐिे उद्दश्े यों के कथन का प्रमख लक्ष्य वकिी ू ु शवै क्षक प्र्ाली को आिार प्रदान करना होता ह ै । य

े पाियक्रम विकाि के वलए वदशा वनदशे वनिाभरर्त ् करते ह ैं ऐिे उद्दश्े यों को िामान्य उद्दश्े य कहते ह ैं । 1.4.4 पाठयिम हनमाण में ब्लम के हनधारण का मित्र- पाियक्रम के क्षेत्र ि े िम्बवन्ित िभी व ् ू व्यवक्त ब्लम एिं िहयोवगयों िारा प्रस्तावित शवै क्षक उद्दश्े यों के वनवश्चत एिं स्पष्ट उद्दश्े यों की अवनिायभता ू ां ां को स्िीकार करते ह ैं । पाियक्रम वनयोजन की दृवष्ट ि इि वनिाभरर् का महत्ि वनम्नित ह ै । ् i. यह वनिाभरर्

Quotes detected: **0.01%** id: **194**

'िरल ि जवटल की और'

के विद्ात पर आिाररत ह ै । ां ii. िीखने िाले के स्तर का िही ज्ञान होने पर मल्याकन की प्रविवियों, उपकर्ों आवद को वनवश्चत ू ां करने तथा उन्ह ें तैयार करने की भी िवुििा होती ह ै । ु iii. इि वनिाभरर् की िहायता ि मल्याकन विवियों की िाथ ै ता की जाँच भी िरलता ि की जा ू ां िकती ह ै । iv. यह वनिाभरर् तकभ आिाररत ह ै । अतः िइि अध्ययन िामग्री तथा वशक्षर् अविगम वस्थवतयों के क्रवमक वनयोजन म ें बहत िहायता वमलती ह ै । ु v. इि वनिाभरर् ि उवचत परीक्षा वस्थवतयों के चयन म ें भी िवुििा होती ह ै । ु vi. इि वनिाभरर् म ें वशक्षर् एिं मल्याकन दोनों के िमस्त पक्षों पर िमवचत ध्यान दने े के कारर् ू ु ां ां विद्यावथभयों के िाांगीर् एिं ितवलत विकाि के िम्बन्ि म ें वनवश्चत हआ जा िकता ह ै । ु ु ां ां vii. ज्ञानात्मक, भािनात्मक, एिं वक्रयात्मक तीनों पक्षों ि िम्बवित होने ि यह िगीकरर् औद्योवगक ां ां एिं व्याििावयक प्रवशक्षर् के पाियक्रमों के वनमाभर् म ें अविक महत्िपर् भ ह ै । ् ू ां 1.4.5 िहक्षक उद्देश्यों के हनधारण के मानदण्ड- प्रत्येक िमाज की वशक्षा के उद्दश्े य मख्य रूप ि ु उिके व्यवक्तयों के जीिन दशभन पर आिाररत होते ह ैं । िमाज की िरचना उिकी िभ्यता तथा िावमकभ , ां राजनीवतक एिं आवथभक वस्थवत का भी वशक्षा के उद्दश्े यों का प्रभाि पडता ह ै । वशक्षा को प्रत्येक यग के ु ां प्रभाि को भी स्िीकार करना पडता ह ै । िाथ ही मनष्य के स्िय की प्रकवत भी वशक्षा के स्िरूप को ृ ु ां प्रभावित करती ह ै । डी० के ० व्हीलर ने आिवनकतम वस्थवत और दृवष्टकोर् को ध्यान म ें रखते हए ु ु शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् के कछ महत्िपर् भ मानदण्ड प्रस्तावित वकये ह ैं । जो वनम्नित ह ैं ।- ु ू i. मानिीय अविकारों ि तदात्म्य (Related with Human Right) ii. लोकतावन्त्रक दृवष्ट ि अनकवलत (Democratic view) ु ू iii. िामावजक दृवष्ट ि िाथभक (Social Significance) उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 91 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. िैयै वक्तक आिश्यकताओ की ितवष्ट के वलए प्रित्त (Inted to satisfy individual needs) ृ ु ां ां v. ितलन (Balance) ु ां 1.4.6 आधहनक भारत की िहक्षक आवश्यकताएँ- प्रत्येक िमदाय, िमाज और राष्र की अपनी– ु ु अपनी आिश्यकताए ँ होती ह ैं तथा उनकी पती के वलए िह उनके अनरूप वशक्षा की व्यिस्था करता ह ै । ू ु आिवनक लोकतावन्त्रक भारत की भी अपनी विवशष्ट आिश्यकताए ँ ह ैं । भारतीय वशक्षाविदों और ु पाियक्रम आयोजकों को इन आिश्यकताओ को जानना और िमझना अत्यन्त आिश्यक ह ै क्योंवक ् ां आिश्यकताओ के िन्दभ भ म ें ही शवै क्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर् वकया जाता ह ै । ितभमान भारत की शवै क्षक ां आिश्यकताए ँ इि प्रकार ह ैं । i. वशक्षा िारा चाररवत्रक विकाि करने की आिश्यकता वजििे ईमानदार, कतभव्यवनष्ठ और मेहनती नागररक तैयार हो िकें । ii. नागररकों म ें उन प्रिवत्तयों को िमाप्त करने की आिश्यकता जो राष्रीय एकता, िमभ-वनरपेक्षता ृ तथा लोकतावन्त्रक शािन व्यिस्था के विकाि म ें बािक ह ैं । iii. िज्ञै ावनक दृवष्टकोर् एिं वचतन के विकाि की आिश्यकता वजििे दशे , विश्व की अग्रिम पवक्त म ें ां ां ां खडा हो िके । iv. नागररकों की कायभ-कशलता म ें िवद्, उत्पादन क्षमता का विकाि एिं प्राकवतक िािनों के ृ ृ ु ां ां िदपयोग के दृवष्टकोर् का विकाि भी आिश्यक ह ै वजििे भारत िािन-िम्पन्न राष्र बन िके । ु v. भारतीय नागररकों के स्िास्थ्य िार की आिश्यकता वजििे अतराभष्रीय खले म ें यिक अच्छा ु ु ां प्रदशनभ कर िकें । vi. भारतीय िस्कत के िरक्षर्, पररमाजनभ एिं ििंभन की आिश्यकता वजििे भारत अपनी प्राचीन ् ां ां ां ां गौरिशाली िस्कवत को पनः स्थावपत कर िके । ृ ु ां vii. आिवनक िज्ञै ावनक दृवष्टकोर् विकवित करने की आिश्यकता वजििे अन्िविश्वाि, रूवढ़िावदता ु एिं भाग्यिावदता ि मवक्त वमल िके । ु ां viii. वशक्षा िारा स्िय के पररमाजनभ की आिश्यकता वजििे मानिीय द वष्टकोर् के िाथ-िाथ ां िामवजक एिं राष्रीय दृवष्टकोर् का विकाि हो िके । ां 1.4 अधिगम अनुभवों का चयन शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् के पश्चात प्रमख कायभ इन उद्दश्े यों की प्रावप्त के वलए उपयक्त िािनों को ढढना ु ु ू तथा उनको प्रस्तत करना ह,ै अविगम की वक्रया उि िमय प्रारम्भ होती ह ै जब छात्रों को कछ अनभि ु ु ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 4 resources! id: **195**

प्राप्त हो जाते ह ैं । अनभि तभी प्राप्त होता ह ै जब छात्र वकिी पररवस्थवत के प्रवत प्रवतवक्रया व्यक्त करते ह ैं । ु अविगम–अनभि शवैक्षक उद्दश्े यों को प्राप्त करने क

ा िािन ह ै ।औपचाररक वशक्षा के अतगभत अनभिों के ु ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 92 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 प्रस्ततीकरर् ि बालकों के व्यिहार म ें अपेवक्षत पररितभन लाने के व्यिवस्थत प्रयाि वकये जाते ह ैं । ु विद्यालय म ें बालक वशक्षा ग्रहर् करने के वलए आते ह ैं ।िह विद्यालय म ें विवभन्न प्रकार के अनभि प्राप्त ु करते ह ैं और इन अनभिों ि उनके ज्ञान में िवद्, िोचने के ढग म ें पररितभन, कायभ करने की शैली में ृ ू ां पररितभन होना तथा उिकी िदे नशीलता तथा अवभिवत्त का विकाि होता ह ै । बालक के इि व्यिहार ृ ां पररितभन म ें ज्ञानात्मक, भािनात्मक तथा वक्रयात्मक पक्ष िवम्मवलत ह ैं । 1.5.1 अहधगम अनभ्वों का सजन- अविगम अनभिों के िजन ि बालकों को उपलवब्ियों िारा ृ ृ ु ु उद्दश्े यों की प्रावप्त

म ें िहायता वमलती ह ै। अविगम अनभिों को शवै क्षक उद्दश्े यों तथा पाियि-स्ति िारा ृ ु ु वनयवत्रत वकया जाता ह ै। वशक्षर् अविगम अनभिों िारा अविक प्रभािशाली होता ह ै। ु ां डीिरी के अनसार-

Quotes detected: **0.06%** id: **196**

"वशक्षक का परम कतभव्य यह ह ै वक बालकों को िीखने की वक्रयाओ के वलए ु ां िमवचत प्रेरिा और प्रोत्िाहन द ें तथा उपयक्त िाितािरर् एि अििर प्रदान करें, वजििे छात्रों को अविक ु ु ां ि अविक िोदश्े य वक्रयाओ को िम्पावदत करने का अििर वमल िके ।"

ां अविगम अनभिों का िजन उपलब्ि िािनों के अनिार ही वकया जाना चावहए उदहारर् के ृ ु ु वलए

Quotes detected: **0%** id: **197**

'बनारि'

के िम्बन्ि म ें वशक्षर् हते बनारि और आि-पाि के अध्यापक स्थानीय यात्रा का ु आयोजन कर िकते ह,ैं जबवक दवक्षर् भारत के विद्यालयी वशक्षक, इिके वलए वचत्र माडाँ ल आवद का प्रयोग कर िकते ह ैं । वशक्षक को मल्याकन उपागम म ें पाियि-स्ति को छात्रों के स्तर एि आिश्यकताओ ृ ू ु ां ां ां के अनिार प्रस्तत करना होता ह।ै प्रस्ततीकरर् म ें अविगम-अनभिों के विवभन्न िीखने के वबद वनवश्चत ु ु ु ु ां ु वकये जाते ह ैं । उनकी िहायता ि अविगम की ऐिी पररवस्थयाँ प्रदान की जाती हैं, वजििे बालकों की क्षमताओ का विकाि तथा शवै क्षक उद्दश्े यों की प्रावप्त की जा िके । ां 1.5.2 अहधगम-अनभिों के चयन के मानदण्ड- प्रमख विद्वान बटभन ने कछ मानदण्ड प्रस्तत वकये ह ैं । ु ु ु ु बटभन ने अविगम- अनभिों की छः शतों का वििेचे न वकया ह ै। ु i. िह विद्यावथभयों की दृवष्ट ि उद्दश्े य प्रावप्त के प्रयक्त वकये जाने योग्य हो । ु ii. वशक्षकों की दृवष्ट म ें िह िाछनीय िामावजक उद्दश्े यों की ओर ले जाने िाला हो । ां iii. िह िग भ के पररपक्िता स्तर के वलए उपयक्त हो अथाभत िग भ के वलए चनौतीपर्,भ प्राप्य तथा निीन ु ु ू अवभप्राय की ओर ले जाने िाला हो । iv. अविगम-अनभिों म ें विद्यावथभयों के ितवलत विकाि के वलए विवभन्न प्रकार की िैवक्तक तथा ु ु ां िगगभ त वक्रयाओ का िमािशे हो । ां v. उिका आयोजन विद्यालय तथा िमाज म ें उपलब्ि िािन-िवििाओ के िारा वकया जाना िभि ु ां ां हो । vi. अविगम-अनभिों म ें व्यवक्तगत वभन्नताओ की दृवष्ट ि इतनी विवििता हो की िग भ के िभी ु ां िदस्यों को उपयक्त प्रवित्तया िलभ हो िकें । ृ ु ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 93 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.6 हवषय-वस्तु का चयन शवै क्षक उद्दश्े यों के वनिाभरर् एि अविगम-अनभिों के चयन के बाद इन उद्दश्े यों की पवतभ के वलए उपयक्त ु ू ु ां विषयों या विषय-िस्त का चयन करना आिश्यक ह ै। ु विषय-िस्त के चयन के अतगभत वनम्नवलवखत वबन्दओ पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै। ु ां ां ु i. विषय-िस्त के विवभन्न स्रोतों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **198**

का ज्ञान प्राप्त करना । ु ii. विषय-िस्त का आिार वनवश्चत करना । ु iii. विषय-िस्त के चयन की प्रमख िमस्याओ का ज्ञान

एि उनके िमािान का प्रयाि । ु ु ां ां iv. विषय-िस्त चयन का मानदण्ड वनिाभररत करना । ु v. विषय-िस्त चयन प्रवक्रया के प्रमख पदों का ज्ञान । ु ु 1.6.1 हवषय-वस्तु के स्रोत ु वशक्षा ि िम्बवन्ित तीन प्रमख पक्ष ह,ैं िमाज, व्यवक्त तथा िास्कवतक विराित । यही तीन पक्ष पाियक्रम ृ ृ ु ां के प्रमख आिार भी ह ैं वजन्ह ें हम वििा की दृवष्ट ि दाशवभ नक, मनोिज्ञै ावनक, िामावजक, ऐवतहाविक, ु ु िास्कवतक एि िैज्ञावनक आिारों म ें विभक्त कर लेते ह ैं । अतः जो पक्ष पाियक्रम को आिार प्रदान करते ृ ृ ां ां ह ैं उन्ही म ें पाियक्रम की विषय-िस्त के मल स्रोत वछपे रहते ह ैं । विषय-िस्त के मल स्रोत इि प्रकार ह।ैं ृ ु ू ु ू i. पोवषत मल्य । ू ii. आिश्यकताए । ां iii. िमाज का ितभमान एि िम्भावित भािी स्िरुप । ां iv. वशक्षाथी की प्रकवत । ृ v. लोकतावन्त्रक नागररकता की भािी आिश्यकताओ के रूप म ें प्रौढ़ वक्रयाए ँ। ां vi. जनमत । vii. मानिीय ज्ञान का बढ़ता हआ भडार । ु ां viii. विषय अथिा अनशािन की प्रकवत एि स्िरुप । ृ ु ां 1.6.2 हवषय-वस्तु चयन के मल आधार ु ू चयन की अन्य िामान्य वस्थवतयों की तरह ही पाियक्रम के वलए विषय-िस्त चयन म ें भी प्रायः ृ ु उपयोवगता और िाथभकता के आिार पर ही वकया जाता रहा ह ै परन्त इि िम्बन्ि म ें विशषे जागरूकता ु एि वनरतरता बीििीं शताब्दी के प्रारम्भ म ें आयी ह ै तथा इि वदशा म ें विवित प्रयाि अपेक्षाकत ृ ां ां आिवनक प्रवित्त ह ै। वशक्षा का उद्दश्े य केिल पाियक्रम के विषय-िस्त का ही नहीं बवल्क वशक्षर् ृ ृ ु ु विवियों, विद्यालयों के स्िरुप तथा वशक्षा की मात्रा का भी वनिाभरर् करता ह ै। ितभमान शताब्दी के उत्तराद्ध का िमाज यह अनभि करता ह ै वक प्रभािी रूप ि काम करने के वलए उिके नागररकों को ऐिी ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 94 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 वशक्षा वमलनी चावहए जो ज्ञान, कौशल, िजनात्मकता तथा नैवतक गिों का अविक ि अविक विकाि ृ ु कर िके । पाियक्रम को शवै क्षक विषयों के अनरूप िमायोवजत करने के स्थान पर विद्यावथभयों की ृ ु आिश्यकता के अनिार िमायोवजत वकया जाना चावहए । ु 1.7 पाठ्यक्रम का िंगठन एच० एन० गाइल्स के अनसार- "पाियक्रम आकल्पन वजिे कभी-कभी पाियक्रम िगिन भी कहा ृ ृ ु ां जाता ह ै। शवै क्षक उद्दश्े यों का वनिाभरर्, वशक्षाथी की प्रकवत का अध्ययन आवद की उपयोवगता पाियक्रम ृ ृ के िगिन के कायभ के तैयारी के रूप म ें होती ह ै। ां सेलर एर् एलेक्क्जेंडर के अनसार- "पाियक्रम प्रकल्प िह ढाचा या िरचना ह ै वजिका विद्यालय में ृ ु ं ां ां शवै क्षक अनभिों के चनने, वनयोवजत करने तथा कायाभववन्ित करने म ें प्रयोग वकया जाता ह ै।" ु ु 1.7.1 पाठयिम सगठन के प्रकार व ं पाियक्रम का िगिन वभन्न- वभन्न दृवष्टकोिों ि वकया जाता ह ै। विवभन्न दृवष्टकोर् के कारर् ही विद्वानों ने ृ ां पाियक्रम के अनेक प्रवतमान विकवित वकये ह ैं । प्रवतमानों एि

द्वष्टकोर्ों के आिार पर पाियक्रम के ◌ ◌ ं विवभन्न प्रकार हो िकते ह ैं । i. विषय के वन्ित पाियक्रम ◌ ii. परपरागत पाियक्रम ◌ ं iii. बाल के वन्ित पाियक्रम ◌ iv. वक्रया के वन्ित पाियक्रम ◌ v. अनभि के वन्ित पाियक्रम ◌ ◌ vi. जीन की स्थायी वस्थवतयों पर आिाररत पाियक्रम ◌ vii. िम्बद् पाियक्रम ◌ ◌ viii. आिश्यकता विकाि पाियक्रम ◌ ix. वमवश्रत पाियक्रम ◌ x. वि्याय के वन्ित पाियक्रम ◌ xi. वशल्प-कला के वन्ित पाियक्रम ◌ xii. िमवन्ित िामान्य पाियक्रम ◌ xiii. एकीकत पाियक्रम ◌ ◌ xiv. पर्तभ या मक्त पाियक्रम ◌ ◌ ◌ xv. िमस्या आिाररत पाियक्रम ◌ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 95 ◌ हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 xvi. जीन िमायोजन पाियक्रम ◌ 1.8 िामग्री का चयन पाियक्रम शवै क्षक उद्दश्े यों की प्रावप्त का एक महत्िपर् भ िािन ह ै । पाियक्रम वनमाभर् के उपरान्त िबिे ◌ ◌ ◌ अविक महत्िपर् भ प्रश्न यह ह ै वक वनिाभररत पाियक्रम को वशक्षावथभयों तक कै िे पहचाँ ाया जाये तथा उिके ◌ ◌ ◌ वलए इि कै िे ग्रहर् करने योग्य बनाया जाये । इिके वलए अनदशे नात्मक िामग्री का वनमाभर् ए प्रयोग ◌ ं महत्िपर् भ ह ै । अनदशे नात्मक िामग्री के अभाि म ें वशक्षर् अविगम प्रवक्रया िफल नहीं हो िकती । ◌ ◌ 1. अनदिेनात्मक सामग्री- प्राचीन िमय म ें अनदशे नात्मक िामग्री के रूप म ें के िल वकस्थ ◌ ◌ ं ज्ञान का ही उपयोग वकया जाता था, वकन्त कालातर म ें के िल मौवखक वशक्षर् अपर् भ विद् हो ◌ ◌ ं गया ह ै । वशक्षर्-अविगम की िफलता के वलए परपरागत अनदशे न िामग्री के िाथ-िाथ अन्य ◌ ं कई प्रकार की िामवग्रयों का प्रयोग वकया जा रहा ह ै । ितभमान की प्रचवलत अनदशे ानात्मक ◌ िामग्री वनम्न ह ै l a. पाि-पस्तकें (Text books) ◌ ◌ b. पाियक्रम िदवशकभ ाए (Curriculum guides) ◌ ं ं c. िमद्कारी िामग्री –अनपरक पस्तकें (Enrich material-Supplementary) ◌ ◌ ◌ ◌ d. श्रव्य-श्य िामग्री (Audio-visual aids) e. अवभक्रवमत - िामग्री (Programmed material) 2. पाठय पततकें - अनदशे न िामग्री के रूप म ें िािभविक प्रयोग की जाने िाली िामग्री पाि– व ◌ ◌ ◌ पस्तकें ही ह ैं । आिवनक वशक्षा-प्रर्ाली म ें पाि–पस्तकों का महत्ि िािभ िविदत ह ै । पस्तकों के ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ माध्यम ि अतीत

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **199**

के ज्ञान तथा अनभिों को िंवचत वकया जाता ह,ै वजििे आने िाली पीढ़ी ◌ ं उनका उपयोग करके लाभावन्ित हो िके । 3. पाठय-पततक का अथि– वकिी विषय के ज्ञान

को जब एक स्थान पर पस्तक

Plagiarism detected: **0.03%** https://doc.sarkariresults.org.in/MPESB_Group… + 2 resources! id: **200**

के रूप म ें िंगवित व ◌ ◌ ं ढंग ि प्रस्तत वकया जाता ह ै तो उिे पाि–पस्तक की िंज्ञा प्रदान की जाती ह

।ै ◌ ◌ ◌ ं ं िरोहलकर के अनसार– "पाि–पस्तक ज्ञान, आदतों, भािनाओ, वक्रयाओ तथा प्रिवत्तयों का िम्पर् भ ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ ं ं योग ह ै ।" पाि–पस्तकों के प्रकार- पाि-पस्तकों को तीन भागों म ें बाँट िकते ह।ै ◌ ◌ ◌ ◌ i. सामान्य पाठय- पततकें - ये पस्तकें वकिी विषय–विशेष पर िामान्य अध्ययन की द्वष्ट ि व ◌ ◌ वलखी जाती ह ैं । इनम ें वकिी वनिाभररत पाियक्रम को आिार नहीं बना

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **201**

या जाता ह ै तथा प्रकरर्ों ◌ को विषयिामग्री की उपलब्िता ए उपयोवगता की द्वष्ट ि विस्तार प्रदान वकया जाता ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 96 ◌ हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. पाठयिम पर आधाररत पाठय-पततकें - इि प्रकार क

ी पाि–पस्तकें वकिी वनवश्चत व व ◌ ◌ ◌ पाियक्रम के आिार पर वकिी वनवश्चत कक्षा स्तर के वलए वलखी गयी होती ह ै । इन पस्तकों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… + 2 resources! id: **202**

का ◌ ◌ विस्तार क्षेत्र िीवमत होता ह ै । लेवकन ये विद्यावथभयों के वलए बहत उपयोगी होती ह ै । क्य

ोंवक य े ◌ पाियक्रम ि िीिी जडी होती ह ै । ◌ ◌ iii. सन्दभि- पततकें - ये विवशष्ट प्रकार की पस्तकें होती ह ै तथा इनम ें विस्तत ज्ञान का िमािेश होता ◌ ◌ ◌ ह ै । इनम ें तथ्यों, प्रत्ययों, ित्रों, घटनाओ आवद की व्याख्या गहनता ि की जाती ह ै । वशक्षक ◌ ं इनका प्रयोग िन्दभों के रूप म ें करता ह ै । उच्च कक्षाओ के वशक्षर् म ें इन पस्तकों का अध्ययन ◌ ं ए प्रयोग उपयक्त होता ह ै । ◌ ं 4. श्रव्य–

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.apnakhata.co/ + 2 resources! id: **203**

द्रश्य सामग्री- वशक्षा अनभिों का परर्ाम ह ै । बालक ज्ञानेवन्ियों के माध्यम

ि े िीखना ◌ प्रारम्भ करता ह ैं । दखे न,े िनने, स्पश भ करन,े चखने तथा िनने ि बालक को प्रत्यक्ष अनभि होता ◌ ◌ ◌ ह ै । प्रत्यक्ष अनभि म ें िीखने के अनभि अविक स्थायी होते ह ैं । ज्ञानेवन्ियों िा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.apnakhata.co/how-to-check-bhulek… + 4 resources! id: **204**

रा प्राप्त अनभि ◌ ◌ ◌ बालकों की मानविक वक्रयाओ पर गहरा प्रभाि डालते ह ैं । श्रव्य–द्रश्य वशक्षर् िामग्री के िारा ं विद्यावथभयों को प्रत्यक्ष अनभि प्राप्त होता ह

े । विवभन्न अध्ययनों िारा यह विद् हो चका ह ै वक ु ु विद्यावथभयों श्रव्य–दृश्य वशक्षर् िामग्री के वजतने अविक अनभि प्राप्त वकये जायेंग े उतना ही ु अविक उनकी क्षमताओ ए नीन विचारों का विकि हो िके गा । ां ां श्रव्य–दृश्य िामग्री का महत्ि- i. श्रव्य–दृश्य िामग्री की िहायता ि कविन प्रत्ययों ए तथ्यों को िरलता ि स्पष्ट वकया जा ां िकता ह ै । ii. इनकी िहायता ि अमतभ आिर ाओ को मतभ रूप प्रदान वकया जा िकता ह ै । ू ू ां iii. इनकी िहायता ि विद्यावथभओ का ध्यान एक वबन्द पर के वन्ित वकया जा िकता ह ै । ां ु iv. इनके प्रयोग ि छात्र ज्ञान के िैिावन्तक पक्ष के िाथ िाथ व्यािहाररक पक्ष ि भी पररवचत हो जाते ह ैं । v. इनके

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindialphabet.com/ + 4 resources! id: **205**

प्रयोग ि विद्यावथभयों की कल्पना शवक्त का विकि होता ह ै । vi. इनके प्रयोग ि वशक्षर् िमय की बचत होती ह ै । vii. इनके प्रयोग ि िीखी हई बातों को अविक िमय तक स्मरर् रख िकते ह ैं । ु viii. इनके प्रयोग ि विवभन्न प्रकार की वक्रयाओ को करने के अिर प्राप्त होते ह ैं । ां श्रव्य–दृश्य िामग्री के प्रकार– श्रव्य–दृश्य िािनों को वनम्न प्रकार

ि िगीकत वकया जा िकता ह ै । ृ i. श्रव्य िािन– रेवडयो, टेपररकाडभर, ग्रामोफोन आवद । ii. दृश्य िािन- श्यामपट, िचनापट, िास्तविक पदाथ, वचत्र, मा नवचत्र, पोस्टर, ग्राफ, माँडल, ृ ृ ू प्रोजक्े टर, धि्वनरवहत वफल्म (चलावचत्र) आवद । iii. श्रव्य–दृश्य िािन– धि्वनयक्त चलवचत्र, दरदशनभ , िीवडयो, िीडी प्लेयर आवद । ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 97 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. विवि िािन- भ्रमर्, प्रदशनभ ी, िग्रहालय, नाटकीय वक्रयाए आवद । वशक्षर् को अविकाविक ां ां प्रभािशाली बनाने के वलए श्रव्य–दृश्य िािनों का प्रयोग आिश्यक ह ै । 5. अहभिहमत अनदिेन सामग्री (programmed material for Instruction)- ु अवभक्रवमत अनदशे न वशक्षर् की एक ऐिी पद्वत ह ै वजिमें छात्र अपनी गवत ि िीखता ह ै । ु इिम े

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **206**

छात्रों को अविगम के वलए पाियिस्त को क्रमबद् रूप म ें छोटे–छोटे पदों म ें प्रस्तत ् ु ु वकया जाता ह ै । प्रत्येक पद को पढ़ने के िाथ ही छात्र को अनवक्रया करनी होती ह,ै तथा ु अविगम पररर्ाम की जाच भी स्ियं ही करता ह ै । िही अनवक्रया के फलस्िरूप छात्र क

ो ु ां पनबभलन प्राप्त होता ह ै ए िह अपने िीखने के गवत के अनिार आग े बढ़ता ह ै । ु ु ां अवभक्रवमत अनदशे न िामग्री का वनमाभर्- अवभक्रवमत अनदशे न िामग्री के वनमाभर् में ु ु वनम्नवलवखत िोपानों का अनिरर् वकया जाता ह ै । ु i. इकाई अथिा प्रकरर् का चयन । ii. उददश्े यों का वनिाभरर् ए उन्ह ें व्यािहाररक रूप म ें वलखना । ां iii. पाियिस्त विश्लेषर् ए अनदशे न क्रम का वनिाभरर् । ् ु ु ां iv. मानदण्ड परीक्षा का वनमाभर् । v. िमवचत अनदशे न प्रारूप का वनिाभरर् । ु ु vi. अवभक्रम के पदों को वलखना । vii. अवभक्रम का अवन्तम रूप तैयार करना । viii. अवभक्रवमत िामग्री का मल्याकन । ू ां 1.9 गधतधवधियों या धक्रया-किापों का धवकाि वशक्षा म ें अनेक विवियों खले विवि का अपना महत्ि ह ै । बच्चा खले -खले में बहत जल्दी िीखता ह ै । ु खले ि वशक्षा दने े की बात माटिेरी, वकडरगाटभन, डाल्टन यो जना, प्रोजक्े ट मथे ड एिम बेविक वशक्षा ि ां ां की गई ह ै । खले िारा वशक्षर् रुवचकर ए स्थायी होता ह ै । खले की भािना को नाटक म ें प्रस्तत वकया जा ु ां िकता ह ै । िाद-वििाद, िामवहक चचाभ, वलखना, पढ़ना िभी म ें खले की भािना को प्रोत्िावहत वकया जा ू िकता ह ै । बालकों ि विवभन्

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindialphabet.com/ + 2 resources! id: **207**

न प्रकार के वक्रया-कलापों को भी करिाया जाना चावहए वजिि े िजनभ ात्मक क्षमता का विकि होता ह

ै । नाटकों का मचन, भाषर्-प्रवतयोवगता, िाद-वििाद, विवभन्न खले ो का ां आयोजन तथा लेखन प्रवतयोवगताओ ि विद्यावथभयों म ें विकि की गवत तेज हो जाती ह ै । उन्ह ें वजम्मदे ारी ां िौपना भी एक तरीका हो जो उनम ें विचार की प्रवक्रया तीव्र कर िकता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 98 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.10 पाठ्य-पुस्तकों का धनमाि माध्यवमक वशक्षा आयोग (1952) ने स्पष्ट वकया था वक उि िमय की पाियचयाभ बहत

Quotes detected: **0%** id: **208**

'िकीर्'

भ , ु ् ां वकताबी ए िैिावन्तक" थी वजिम े पाियक्रम का बोझ था और अनपयक्त पाि-पस्तकें थी । आयोग ने ् ् ु ु ु ां यह िझाि वदया था वक पाियचयाभ को बहत वनवश्चत िीमा िाले विषयों म ें नहीं बाँटना चावहए, बवल्क ु ् ु विषयों म ें आपि म ें जडाि हो, प्रािवगक ए महत्िपर् भ विषयिस्त हो तावक िह विद्यावथभयों के जीिन को ु ू ु ां ां छ पाए । आयोग ने कहा वक प्रत्येक वक राजय म ें एक शवक्तशाली िवमवत का गिन हो पाि-पस्तकों का ् ू ु चयन करे ए उपयक्त आिार बनाए । ु ां आयोग ने बल दके े र कहा वक –

Quotes detected: **0%** id: **209**

"

वकिी भी अध्ययनीय विषय के वलए कोई एक पाि-पस्तक ् ु वनदवे शत नहीं होनी चावहए, बवलक मानकों पर खरी, िोची-िमझी, परखी हई पाि-पस्तकों के िझाि ु ् ु ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **210**

विद्यालयों को द े वदये जाए ाँ वजिम ें ि ि े जो विकल्प चाह े चन लें ।" वशक्षा आयोग ु (1964-66) ने भी विद्यालय ी वशक्षा की खराब गि्रत्ता पर प्रकाश डाला । आयोग ने कहा वक पिाय- ् ु पस्तकों

Plagiarism detected: **0.02%** https://ndtv.in/lifestyle/what-is-micro-wedding-k… id: **211**

की तैयारी िए वनमाभर् म ें शिो के अभिा के कारर् पिाय-पस्तकें वनम्न कोवट की हो जाती ह

ै । ् ु ु ां इिका एक कारर् उच्च श्रे्री के िििानों की अरुवच भी ह ै । पिाय-पस्तक के वनमाभर् का प्रमख पक्ष विद्यावथभयों को उिके िामावजक कतभव्य तथा अविकारों ् ु ु ि अिगत कराना ह ै िाथ ही प्रेम िदभिा तथा राष्ट्रीय विकािात्मक िस्कवत ि पररवचत कराता ह ै । ृ ां 1.11 पाठ्य-पुस्तक धनमाि के धिद्ान्त ितभमान िििभगीर् विकाि हते विद्यालय िचावलत वकये जा रह े ह ैं । जहााँ उन्ह ें वनवशचत िमय म ें वनवश्चत ु ां विषय-स्ति का ज्ञान प्रदान वकया जाता ह ै । ु पियक्रम का स्िरूप एिा होना चावहए जो िामावजक आिश्यकताओ, प्रचवलत मल्यों िए ू ां ां िमय की मााँग को परा करन े िाला हो । बालकों का िििभगीर् विकाि भी तभी िम्भि हो िकता ह ै । जब ू पियक्रम उनम ें उपयक्त जीिन कौशलों को विकवित करने म ें िहायता करे ।पियय-स्ति वनमाभर् के कछ ् ु ु ु ु प्रमख िििान्तों का िििेच न वनम्नित ह ै । ु i. बाल के वन्ित वशक्षा का विद्ान्त ii. लचीलेपन का विद्ान्त iii. िस्कवत का विद्ान्त ृ ां iv. िजनात्मकता का विद्ान्त ृ v. उपयोवगता का विद्ान्त vi. नैवतकता का विद्ान्त vii. राष्ट्रीयता की भािना के विकाि का विद्ान्त viii. अतराभष्ट्रीय िदभािना का विद्ान्त ां ix. वक्रया का विद्ान्त उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 99 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 x. जीिन ि िबद्ता का विद्ान्त ां xi. रुवच का विद्ान्त xii. अवभप्रेर्ा का विद्ान्त xiii. प्रजातावत्रक िरर्ा का विद्ान्त ां xiv. अिकाश के िमय के िदपयोग का विद्ान्त ु अभ्यास प्रश्न 1. पोवषत मल्य _______का स्रोत ह ै । ू 2. िरल ि जवटल की ओर एक_______ह ै । 3. िमाज, व्यवक्त और ज्ञान उद्दश्े यों के वनिाभरर् में_______ह ैं । 4. टेपररकाडभर _______िािन ह ै । 5. पिाय-पस्तकों के _______प्रकार ह ैं । ् ु 6. उद्दश्े य _______प्रकार ह ैं । 7. पियय-स्ति का िम्बन्ि के िल _______पक्ष ि होता ह ै । ् ु 8. करेर शब्द का अथभ _______ह ै । ु 1.12 िाराांश वशक्षा की वत्रिी प्रवक्रया म ें पियक्रम एक धिि ह ै । एक अच्छे पियक्रम के अभिा म ें बालक के ु ु िििभगीर् विकाि की कल्पना नहीं कर िकते । शवै क्षक लक्ष्यों को प्राप्त करने के वलए इि प्रकार के पियक्रम का वनमाभर् करना चावहए वक विदायथी को जीिन यापन म ें कम ि कम कविनाई हो तथा िमाज को उन्नत दशा प्रदान कर िके । पियक्रम एिा हो जो आिवनक िमाज ि जडकर भिी पथ का वनमाभर् करे । विकवित हो रह े ु ु राष्ट्र म ें मानिीय मल्यों, चररत्र तथा जीिन यापन के िििानों का विकाि कर िके । हम िििवन्तक बातों ू ां पर बहत बल दते े ह ैं वकन्त हमारा व्यिहाररक पक्ष अत्यन्त कमजोर ह ै । िमाज वनरन्तर गवतमान ह ै । ु ु िामावजक पररितभन हमारे िमस्त वक्रया-कलापों म ें पररितभन करते ह ैं । इिवलए बदलते िमाज के अनरूप ु पियक्रम म ें बदलाि करते रहना चावहए वजििे िमाज और व्यवक्त म ें अविक दरी न बन जाये और एक ् ू िमाज दिरे िमाज ि वनम्न स्तर का आका जाय । पिाय-पस्तकों को िाितिर् के अन्य लोगों िए ् ु ां ां ू िहपावियों के िाथ अत:वक्रया कराने िाली होनी चावहए । िह एक मागदभ वशकभ ा के रूप म ें कायभ करे । ां वजििे बच्चा िवक्रय रूप ि पिा, विचारो, िस्तओ, िाितिर् और लोगों ि अपने को जोडते हए अपनी ु ु ां िमझ का वनमाभर् कर िके । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 100 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 1.13 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 1. विषय-स्ति ु 2. वशक्षर् ित्र ू 3. स्रोत 4. श्रव्य 5. तीन 6. दो 7. ज्ञानात्मक 8. दौड का मदै ान 1.14 िन्दभ भ ग्रन्थ िची ू 1. चोपडा, रविकाता ि व्यिा आनन्द प्रकाश (१९९८). मातभाषा वहन्दी वशक्षर्. वदल्ली: राष्ट्रीय ृ ां शवै क्षक अनिन्िान और प्रवशक्षर् पररषद । ु 2. विह, िावित्री (2007). वहन्दी वशक्षर्. मरे ि: इटरनेशनल पवब्लवशग हाउि । ां ां ां 3. राष्ट्रीय फोकि िमह का आिार पत्र (२००८). पियचयाभ, पियक्रम और पियपस्तकें , ् ् ् ू ु वदल्ली: राष्ट्रीय शवै क्षक अनिन्िान और प्रवशक्षर् पररषद । ु 4. शमाभ, खेमराज ि शमाभ, ब्रजराज (२०११). वहन्दी वशक्षर्. आगरा: अग्रिाल पवब्लके शन । 5. पाण्डेय, रामशकल (२०१४). वहन्दी वशक्षर्. आगरा: अग्रिाल पवब्लके शन्ि । 6. लाल, रामन वबहारी (२०१७). वहन्दी वशक्षर्, वहन्दी वशक्षर् विज्ञान. मरे ि: आर० लाल बक ु वडपो । 1.15 धनबिात्मक प्रश्न ां 1. पियक्रम के अथभ स्पष्ट कीवजए । 2. पियक्रम, पियचयाभ एिं पियय-स्ति म ें अन्तर बताइये । ् ् ु ां 3. शौवक्षक उददश्े यों के वनिाभरर् की आिश्यकता क्यों होती ह ै ? 4. आिवनक भारत की शौवक्षक आिश्यकता क्या ह ै ? ु 5. श्रव्य-दृश्य िामग्री की उपयोगीता एिं महत्ि का स्पष्ट करे । ां 6. अवभक्रवमत अनदशे न िामग्री का िर्नभ करें । ु 7. पिाय-पस्तक वनमाभर् के विद्ान्त का उल्लेख करें । ् ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 101 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 2- हिदी धशक्षण की पाठ्यपुस्तकों का मूलयाांकन 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 पियपस्तकों का अथभ ् ु 2.4 वहदी -वशक्षर् में पियपस्तकों का महत्त्ि ् ु ां 2.5 पियपस्तकों के प्रकार ् ु 2.6 पियपस्तकों के गर् ् ु ु 2.6.1 बाह्य-गर् ु 2.6.2 आन्तररक गर् ु 2.7 पियपस्तकों के दोष ् ु 2.8 िाराश ां 2.9 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 2.10 िन्दभभ ग्रन्थ िची ू 2.11 वनबिात्मक प्रश्न ां 2.1 प्रस्तावना प्राचीन काल म ें वलवप के आविष्कार ि पि भ भाषा की वशक्षा मौवखक रुप ि दी जाती थी । वलवप का ू आविष्कार हो जाने पर हस्तवलवखत पाडवलवपयों का प्रयोग होने लगा । वकत हाथ ि े वलखकर ग्रथ तैयार ु ु ां ां ां करने म ें बडा पररश्रम होता था । अतः पिाय पस्तकों का प्रचलन उि रूप में नहीं हो पाया वजि रूप में ् ु आज ह ै । पाडवलवपया कम हआ करती थी, अतः वशक्षक मौवखक रूप ि पढ़ाता था और छात्र उि ु ु ां ां िामग्री को याद कर लेते थे । मिर् कला के अविष्कार ने पियपस्तकों को िलभ बना वदया और िीरे- ् ु ु ु िीरे पिाय पस्तकें िपर् भ वशक्षा प्र्ाली का आिार बन गयी । आिभचीन वशक्षा पियपस्तकों पर ् ् ु ू ु ां आिाररत ह ै । आिवनक यग म ें ज्ञान, विज्ञान एिं तकनीकी के अत्यविक विकाि के कारर् मौवखक ु ु ां वशक्षा दने ा दष्कर ही नहीं अिभि कायभ

ह ै यवद यह कहा जाए तो कोई अवतशयोवक्त नहीं होगी वक भाषा ों ु की पस्तके तो िान िाध्य दोनों रूपों म ें प्रयोग की जाती ह ैं । बच्चों को उनके उच्चारर् को शद् करन,े ु ु पिन कला म ें वनपर् करने, उनकी बिो ए कल्पना शवक्त का विकिा करने, उनकी रचनात्मक िवत को ृ ु ों िचेष्ट करने और उन्ह ें विवि विषयों

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **212**

का ज्ञान करा कर उनका चररत्र वनमाभर् करने हते पस्तकों का प्रयोग ु ु वकया जाता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 102 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.2 उद्दश्े य इ इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. पियपस्तक का अथभ िमझ पाएग े । ् ु ों 2. वहदी वशक्षर् म ें पियपस्तकों का महत्त्ि िमझ पाएगाँ े । ् ु ों 3. पियपस्तक के विवभन्न प्रकार ि पररवचत हो पाएगाँ े । ् ु 4. उनम ें पियपस्तकों की विशेषताओ को पहचानने की क्षमता उत्पन्न होगी । ् ु ों 5. पियपस्तक के गर् ए दोष ि अिगत हो पाएगाँ े । ् ु ु ों 2.3 पाठ्य पुस्तकों का अथ भ प्राचीन भारत म ें पिय पस्तक के वलए

Quotes detected: **0%** id: **213**

'ग्रथ'

शब्द का प्रचलन था । ग्रथ का अथभ ह-ै 'गथना' , बिाना, ् ु ू ों ों ों ों क्रम ि रखना, वनयवमत ढग ि जोडना आवद । गरुकलों में आचायभ लोग भोजपत्र या ताडपत्र को अपन े ु ु ों विद्यावथभयों के िमक्ष क्रम ि रखते थे । उनके बीच म ें छेद करके वकिी िाग े ि गथाँ भी दते े थे,अतः इन्ह ें ू

Quotes detected: **0%** id: **214**

'ग्रन्थ'

नाम वदया गया वकन्त हाथ ि वलखकर ग्रन्थ तैयार करने म ें बडा श्रम होता था ,अतः पिय-पस्तकों ् ु ु का प्रचलन उि रूप म ें नहीं हो पाया वजि रूप म ें िह आज ह ै । इिी प्रकार अग्रेजी म ें

Quotes detected: **0%** id: **215**

'Book'

शब्द की ों उत्पवत्त जमनभ भाषा के

Quotes detected: **0%** id: **216**

'िीक Beach'

शब्द ि हई ह ै । फ्रािीिी भाषा म ें भी इिका अथभ िक्ष की छाल या ु ृ ों तख्ती पर वलखने ि ह ै । प्राचीन काल म ें पाडवलवपयाँ कम हआ करती थी ,अतः अध्यापक मौवखक रूप म ें पढ़ा दते ा था और छात्र ु ु ों उि िामग्री को याद कर वलया करते थे । मिर् कला के आविष्कार ने पिय-पस्तकों की रचना को िलभ ् ु ु ु बना वदया और िीरे िीरे पिय-पस्तक वशक्षा प्रर्ाली का अवनिायभ अग बन गयी । ् ु ों चाँवक हर पस्तक को पिय-पस्तक की िज्ञा नहीं द े िकते इिी तथ्य को ध्यान म ें रखते हए िविान गड ने ु ् ू ु ु ु ों पररभाषा दी ह ै –"एक वनवश्चत पियक्रम के अध्ययन के प्रमख िान के रूप म ें एक वनवश्चत शवै क्षक स्तर ् ु पर प्रयक्त करने के वलए वकिी खाि विषय पर वलखी व्यिवस्थत पस्तक पिय-पस्तक कहलाती ह ै ।" ् ु ु ु अभ्यास प्रश्न 1. ग्रन्थ का शाविब्दक अथभ बताए ाँ । यह शब्द आवदकाल म ें पस्तकों के वलए क्यों प्रचवलत हआ ? ु ु 2.4 हहदी धशक्षि म मातृभाषा का महत्त्व ें पिय-पस्तकें वशक्षर्-अविगम की प्रवक्रया म ें िान रूप म ें प्रयक्त होती ह ैं । पियपस्तकों को िाध्य मान ् ् ु ु ु लेने ि इनको रटना ए िपर् भ िब वशक्षा को वकताबी बना देना महत्िपर् भ हो जाता ह ै । यहा पियपस्तक ् ू ू ु ों ों ों का उद्दश्े य रटना नहीं ह ै । पिय पस्तकों के उद्दश्े य वबद रूप म ें वनम्नवलवखत ह-ै ् ु ों ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 103 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://educalingo.com/hi/dic-hi/ka id: **217**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ छात्रों की काल्पवनक शवक्त को विकवित करना । □ विषय-विविविता के बारे म

ें ज्ञान कराना । □ स्िाध्याय के प्रवत रुवच उत्पन्न करना । □ पिय-पस्तकों के माध्यम ि ज्ञान की िीमा को विस्तत करना । ृ ् ु □ ज्ञान को व्यिहाररक रूप दने े की प्रेरर्ा प्रदान करना । □ ित्य-अित्य का वििेक कराना । □ शभ-अशभ

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **218**

का ज्ञान कराना । ु ु □ उनम ें स्िाध्याय की रूवच उत्पन्न करना । िक्षेप म ें पिय-पस्तकों का उद्दश्े य भाषा के िाि

्कवतक लक्ष्यों को परा करना ह ै । ृ ् ु ू ों ों पाठय पततकों की उपयोहगता व ु पस्तकों की वनम्नवलवखत आिश्यकताए वनम्नवलवखत ह ैं : ु ों □ पिय पस्तकें वशक्षा का मागदभ शनभ करती ह ैं । ् ु □ पस्तकें ज्ञान प्रावप्त का िशक्त िान ह ै । पस्तकों के िहारे व्यवक्त वबना गरु के भी अपना ज्ञान ु ु ु अवजतभ कर िकता ह ै । □ पस्तके अनेक िचनाओ का िग्रह ह,ैं ज्ञान प्रावप्त के वलए पस्तक िि भ िलभ ए वमतव्ययी िान ु ू ु ु ों ों ों ह ै । □ पस्तकें अवजतभ ज्ञान का स्थायीकरर् ह ैं ।

पस्तक के मौवलक वचतन की िशक्त पष्ठभवम तैयार ृ ु ु ू ां करती ह ै । पस्तकों ि छात्रों म ें स्िाध्याय की भािना जागत होती ह,ै उच्च कक्षाओ के वलए पस्तकें ृ ु ु ां अवनिायभ ह ैं । छात्र और वशक्षक दोनों को ही पस्तकों के माध्यम ि पिा का ज्ञान रहता ह ै । ु पस्तकें ज्ञान के िाथ-िाथ मनोरजन करती ह ैं । ु ां भारतीय वशक्षर् व्यिस्था म ें पाठ्यपस्तक की अहम भवमका ह ै । पाठ्य-पस्तक ही िह िरी ह ै वजिके इद-भ ृ ृ ु ू ु ु वगद भ कक्षा म ें होने िाला वशक्षर् घमता ह,ै िह आिार वजि पर परीक्षा ली जाती ह ै ि एक ऐिा जररया ू वजिि राजय कक्षा म ें होन े िाली वशक्षर् प्रवक्रया पर वनयत्रर् रखता ह,ै पाठ्यपस्तक ही ह ै । आिवनक ृ ु ु ां वशक्षा व्यिस्था का जन्म औपवनिवे शक पररवस्थवतयों म ें हआ।-19 िीं िदी की वशक्षाव्यिस्था के - ु इवतहाि ें पाठशालाए ँ वशक्षक के िारा ही िचावलत की जाती थीं। पाठ्यक्रम ि पाठ्य िामग्री भी छपी ृ ृ ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 104 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 हई नहीं थीं। पारम्पररक पाठ्यपस्तक थी जो प्रायस्थानीय जरूरतों की पवतभ करती थी। एक स्थान म ें दी : ु ृ ु ू दिरे स्थान की वशक्षा ि कछ वभन्न ि कछ िमान थी। जाने िाली वशक्षा या पाठ्य िामग्री वकिी ृ ु ु ू व्याकरर् की वशक्षा या भाषा पढ़ाने के तरीके म ें तो कछ िमानताए ँ थीं लेवकन वकि प्रकार का गवर्त ु पढ़ाया जाएगा, इिको लेकर वभन्नताए ँ भी थीं। इि वशक्षाव्यिस्था का रूपान्तर जब आिवनक वशक्षा - ु व्यिस्था म ें हआ, तो इि क्रम म,ें पाठ्यपस्तक

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **219**

के माध्यम ि े ही एक तरह का वनयत्रर् स्थावपत हो िका। ु ृ ु ां पाठ्यपस्तक के माध्यम

ि ही स्िीकृत ज्ञान िम्प्रेवषत हआ एक ऐिा ज्ञान जो वशक्षक के वलए -बच्चों को ु ृ ृ ु दने ा आिश्यक था। इिके वलए वशक्षक का प्रवशक्षर् आरम्भ हआ। पाठ्यपस्तक को पढ़ाना ि उिके ु ृ ु जररए एक प्रकार का मानक स्थावपत करना, औपवनिवे शक व्यिस्था म ें िम्भि हआ और ये व्यिस्था ु काफी वटकाऊ विद् हई। वशक्षक का खद का बौवद्क जीिन पहले चाह े वकतना भी िीवमत रहा हो, उिके ु ु शिक्षकीय कमचभ ारी बन जाने के बाद और भी िकीर् भ हो गया। अब वशक्षक मानों पाठ्यपस्तक पढ़ाने के ृ ु ां वलए ही वनयक्त होने लगा। इि तरह ि पाठ्यपस्तक की केन्द्रीयता जो 19िीं िदी के उत्तराभ म ें बननी ृ ु ु प्रारभ हई, िह आज तक वस्थर ह।ै ु ां पाठ्य-पस्तकों पर इि वनभरभ ता के अन्य कारर्ों को हम कवतपय अन्य वबन्दओ िारा िमझने का प्रयाि ृ ु ां ु करेंग े । मल्याङ्कन में सायक-पाठ्य-पस्तक के प्रचलन ि पिभ अविगम वकए गए ज्ञान का िस्तपरक व ृ ू ु ू ु मल्याङ्कन अिभि था । पाठ्य-पस्तकें इि िमस्या का िमािान प्रस्तत करती ह ैं । वशक्षा में ृ ृ ू ु ु ां वनयामक अवभकरर्ों के माध्यम ि विद्यालयों की विवभन्न कक्षाओ और स्तरों के वलए िमान ां पाठ्यिस्त का िंप्रािान वकया जाता ह ै । वजिि भाषा-वशक्षर् मनीषी ािवनक रूप ि िितवलत,उपयोगी ृ ु ु ां और िस्तपरक हो जाता ह ै । इिि पाठ्यिस्त के िकलन म ें मिभन्य िंविानों,कशल ृ ु ु ू ु ां प्रशिक्षकों,वशक्षाविदों और मनीषी ािवनकों का योगदान िभि होता ह ै । ां िैक्षहणक हनयोजन में सायक-पाठ्यपस्तकों िारा पाठ्यिामग्री का वनिाभरर् होने के कारर् ृ ृ ु विद्याथी और वशक्षक के वलए वशक्षर्-गवतविवियों के वनयोजन िारा वशक्षर्-अिवि का िदपयोग ु िभि हो जाता ह ै । वशक्षक और विद्याथी दोनों यह जान पाते ह ै वक उन्ह ें क्या,वकतना और वकि क्रम ां ि पढ़ना,जानना और अभ्याि करना ह ै । इि उपाय ि वशक्षक भाषा-वशक्षर् की योजना ,िहायक िामग्री,उपकरर्ों इत्यावद की व्यिस्था कर िकता ह ै और दिरी ओर विद्याथी भी मन-मवस्तष्क िबि ू पाठ्यिस्त के अध्ययन के वलए तैया

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **220**

र हो जात े ह ैं । तदनिार वशक्षक विद्यावथभयों को कक्षा-कायभ और ृ ु ु गहकाय भ के माध्यम ि उपयोगी वशक्षर् गवतविवियों में िलग्न कर िकता ह ै । इि प्रकार विद्याथी ृ ां स्िय वशक्षर्, पररयोजना, परीक्षर् इत्यावद के माध्यम ि भाषा के विविि पक्षों का अभ्याि एि ां ां व्यिहार कर िकता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 105 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 हिक्षण की परक के रूप में पाठयपततकें - जो विद्याथी वकिी शारीररक या बौवद्क िीमाओ के व ू ु ां चलत े कक्षा के अन्य विद्यावथभयों के िाथ वशक्षर् वबदओ का अविगम नहीं कर पाते, िह घर पर ां ां ु अवभभािकों एि पस्तक की िहायता ि उिका अभ्याि कर िकते ह ैं । रोग, अिकाश या अन्य ु ां वकिी व्यस्तता के चलते जो विद्याथी वकिी वशक्षर् वबद के वशक्षर् के दौरान कक्षा ि अनपवस्थत रह ु ां ु जाते ह ैं ि े भी वकवचत वनदशे न और पाठ्य पस्तकों की िहायता ि उनका अविगम अभ्याि कर पात े ृ ु ां ह ैं । यवद कोई विद्याथी स्थानातरर् जिै े कारर्ों ि वशक्षर् ित्र के आरभ होने के बाद कक्षा म ें प्रिशे ां ां लेता ह,ै तो िह भी पाठ्य- िस्त के माध्यम ि अन्य विद्यावथभयों िारा कक्षा में पवित एि अभ्यस्त ृ ु ां पाठ्यक्रम का अध्ययन कर िकता ह ै । ृ मल्याकन के आधार के रूप में- विद्यालय पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की अपेक्षा भाषा वशक्षर् का ृ ू ं मल्याकन कहीं अविक जवटल कविन एि चनौतीपर् भ कायभ ह ै । भाषा की प्रकृवत भािनात्मक एि ृ ू ु ू ां ां ां उन्मक्त ह ै । इि िटीक िस्तपरक मल्याकन का विषय बनाना वनवश्चत पाठ्यपस्तकों के अभाि में ृ ु ु ू ु ां कदावचत अिभि होता । पाठ्यपस्तकों म ें िकवलत पाठ्यवबदओ को आिार बनाकर प्रश्नपत्र का ृ ृ ु ां ां ां ां ु वनमाभर् करना िरल

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ id: **221**

हो जाता ह ै । पाठ्य पस्तक के माध्यम ि भाषा वशक्षर् मतभ, िवनवश्चत और मानक ृ ु ू ु हो जाता ह

ै । इि रूप म ें उिका मल्याकन भी विश्विनीय और िस्तगत होता ह ै । ू ु ां अभ्यास प्रश्न 2. पाठ्यपस्तकें शारीररक चनौती का िामना कर रह े व्यवक्त की िहायता कैि े करती ह ै ? ृ ु ु 2.5 पाठ्यपुस्तक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 3 resources! id: **222**

के प्रकार ितभमान यग म ें भाषा के विवभन्न पक्षों के वशक्षर् को िरल और िभि बनाने के वलए पियपस्तकों का ृ ु ु ं प्रयोग अनेक प्रकार ि वकया जाते ह ै । च

ाँवक पियपस्तक विद्यावथभयों को पियक्रमानिार और उद्दश्े यपर् भ ृ ृ ू ु ु ू भाषा ज्ञान उपलब्ि कराने

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ id: **223**

का माध्यम ह ै इिवलए िह वशक्षक के वलए भी उपयोगी मागदभ वशभका होती ह ैं । पियपस्तक के लक्ष्य,पियिामग्री के प्रकार और उपयोग विवि के अनिार पिय-पस्तकों को चार ृ ृ ृ ु ु ु श्रेवर्यों के अतगतभ रखा जाता ह ै । ं i. पाठयपततक- वकिी कक्षा के वलए अनशवषत भाषा पियपस्तक उि स्तर के विद्यावथभयों की व ृ ु ु ु ं भाषायी,ज्ञानात्मक एि व्यिहाररक आिश्यकताओ की पवतभ का िािन होती ह ैं । उदाहरर् के ू ं ं वलए कक्षा 9 की वहदी पियपस्तक म ें 13 ि 15 आय िग भ के विद्यावथभयों की भाषा िम्बन्िी ृ ु ु ं आिश्यकताओ के अनिार िामग्री का िकलन होता ह ै । ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 106 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ज्ञानात्मक,भािनात्मक,विचारात्मक,िचनात्मक और अभ्यािपरक िामग्री के माध्यम ि छात्रों ू की परीक्षर्-मल्याङकन योग्य भाषा-दक्षता की प्रावप्त िवनवश्चत की जाती ह ै । कशल वशक्षक ृ ू ु ु अपने वनदशे न और मागवभ नदेश म ें पियपस्तक की िहायता ि बालकों के भाषा-पक्ष को िबल ृ ु करता ह ै । ii. परक पततक - परक पस्तकों का स्िरुप पियपस्तक की अपेक्षा कम औपचाररक होता ह ै । ृ ू ु ू ु ु इिके वनमाभर् का उद्दश्े य विद्यावथभयों म ें स्िाध्याय ,मौन-पिा और िावहत्यालोचन की प्रवित का ृ विकाि करना ह ै । इिके कारकों का चनाि इि प्रकार वकया जाता ह ै वक विद्याथी भाषा पर ु अविकार के िाथ-िाथ दशे के इवतहाि,िस्कवत,परम्पराओ और विवििता के बीच व्याप्त एकता ृ ं ं ि पररवचत हो िकें । iii. राष्ट्रीय शवै क्षक अनिन्िान और प्रवशक्षर् पररषद (एन.िी.इ.आर.टी.) िारा उच्च प्राथवमक ु ृ कक्षाओ की परक पस्तकों के रूप म ें प्रकावशत िवक्षप्त रामायर्,िवक्षप्त महाभारत,िवक्षप्त ू ु ं ं ं ं बदचररत और प्रेरर्ास्पद कहावनयों ,जीवनयों एि एकाकी के अध्ययन ि इनके उद्दश्े य और ु ं ं प्रकवत को िमझा जा िकता ह ै । ये पस्तकें विद्यावथभयों के ज्ञान के िाथ ही चाररवत्रक,विचारात्मक ृ ु और व्यवक्तगत विकाि म ें भी वनस्िदहे उपयोगी भवमका वनभा रही ह ैं । ू ं iv. अभ्यास-पहततका- अभ्याि-पवस्तका का प्रकाशन मख्य पियपस्तक के भाषा तत्िों की ृ ु ु ु ु पनरािवत्त और अभ्याि की दृवष्ट ि वकया जाता ह ै । प्रायः इिका प्रकाशन पियपस्तक के ृ ृ ु ु रचनाकार अथिा प्रकाशक िारा वकया जाता ह ै । यह पवस्तका मख्यतः पियपस्तक म ें िकवलत ृ ु ु ु ं िामग्री पर आिाररत होती ह ै ।अभ्याि-पवस्तका म ें पियपस्तक के अभ्याि योग्य अशों की ृ ु ु ं आवत हते विवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **224**

प्रकार की िामग्री प्रस्तत की जाती ह ै । इिके माध्यम ि वशक्षक नए भाषा के ृ ु ु प्रयोग

ों और उपयोगी वनयम विद्ातों की प्रावप्त भी िवनवश्चत करता ह ै । दिरी ओर इिका उपयोग ु ं ू उपरोक्त भाषा तत्िों के मल्याङकन के वलए भी वकया जाता ह ै । ृ ू v. व्याकरण पततक- व्याकरर् भाषा-वशक्षर् का अवनिायभ िहचर ह ै । प्राथवमक

Plagiarism detected: **0.03%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **225**

कक्षाओ म ें जब ु ं विद्यावथभयों को स्िर-व्यजन िर्मभ ाला, मात्राओ,ितभनी,शब्दाथभ और िाक्य-योजन जिै े अभ्याि ं ं ं कराए जाते ह

ैं तब ि े िस्ततः व्याकरर् का ही अभ्याि कर रह े होते ह ैं । बाद में ु िमानाथी,विलोम,अनेकाथी,पाररभावषक और िमानाथी शब्दों आवद का ज्ञान और अभ्याि कर रह े होते ह ैं तब भी ि े व्याकरर् का ही ज्ञान पाते ह ैं । ितभमान वशक्षा प्रर्ाली के अतगतभ भाषा के विवि पक्षों का मानक,व्यिहायभ और मल्याङकन ृ ू ं योग्य ज्ञान और अभ्याि उपलब्ि कराने की दृवष्ट ि े पथक व्याकरर् पस्तकों की िहायता

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **226**

प्राप्त ृ ु की जाती ह ै । मख्य-पियपस्तक और परक पस्तकों के िाथ ही उनम ें वनवहत व्याकरर्-अभ्यािों ृ ु ु ू ु का पररपर् भ ज्ञान और अभ्याि कराने के वलए व्याकरर् पस्तकों की रचना की जाती ह

ै । हालााँवक ू ु कक्षा तीन ि ही व्याकरर् की पस्तकें उपलब्ि ह ैं वकन्त छिी कक्षा ि अलग व्याकरर् पस्तकों ु ु ु का उपयोग वकया जाने लगा ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 107 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 माध्यवमक कक्षाओ के वलए एन.िी.इ.आर.टी िारा प्रकावशत पस्तकें

Quotes detected: **0.01%** id: **227**

'वहदी व्याकरर् और ु ं ं रचना'

उपयोगी पस्तकें ह ैं । इनका मख्य लाभ व्याकरर् के पर्,भ क्रमानिार और पयाभप्त अभ्याि ु ु ू ु िवहत ज्ञान के रूप म ें होता ह ै । इन पस्तकों म ें भाषा के व्याकरर् पक्ष को िामने रखकर ु पियिामग्री और अभ्याि उपलब्ि कराए जाते ह ै वजिि वक विद्याथी भाषा के िास्तविक रूप ृ ि पररवचत हो िकें और उन्ह ें पयाभप्त अभ्याि का अििर वमले । इि प्रकार व्याकरर् की पस्तकों ु की िहायता ि विद्यावथभयों की भाषा को शद्,वनयवमत और प्रभािकारी बनाया जा िकता ह ै ु vi. सन्दभि पततकें - िन्दभ-भ पस्तकों

का उपयोग िरिष्ठ कक्षाओ म ें पिाय तथा परक पस्तकों िारा ृ ु ु ू ु ां प्रदत्त ज्ञान के विस्तार के वलए वकया जाता ह ै । विद्यालय के पस्तकालय म ें भाषा का ु इवतहाि,िावहत्य का इवतहाि,विख्यात कवियों और लेखकों की जीिवनयाँ एि रचनािािवलयाँ , ां कोष एि िग्रहों की उपलब्िता िवनवश्चत की जाती ह ै वजिि की िहि-बि की िहायता ि े ु ां ां ां ां विद्याथी विषयगत वजज्ञािा की शावत के वलए उपयोगी ज्ञान ,िचना , आकडों ,विस्तत वििरणों ृ ू ां ां इत्यावद का िग्रह और उपयोग कर िकें । ां एक अन्य हर्ंिचन के अनसार पततकें दो प्रकार की िोती िैं i) सक्ष्म अध्ययनाथि पततकें ii) ु ु ू ु हर्तत अध्ययनाथि पततकें ृ ु िक्ष्म अध्ययन िाली पस्तकों का अध्ययन बडी गभीरता ि वकया जाना अपेवक्षत होता ह ै । इनका उद्दश्े य ू ु ां बालकों के शब्द-भडार म ें िवद् करना,उनका भाषा-ज्ञान बढ़ाना,उनके िवक्त-भडार या लोकोवक्त भडार म ें ृ ू ां ां ां िवद् करना एि प्रिगों को भली-भावत स्पष्ट करना ह ै । इन पस्तकों को ही िािारर्तया पिाय-पस्तकें ृ ृ ु ु ां ां ां

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **228**

कहा जाता ह ै । इन्ह ें गहन-अध्ययन की पस्तकें भी कहते ह ै । इनके अध्ययन ि छात्रों के ज्ञान म ें िवद् होती ृ ु ह ै और ि े लेखक या कवि के विचारों ि पररचय प्राप्त करते ह ै । विस्तत अध्ययन के वलए िहायक पस्तकों का प्रयोग ित पिा हते होता ह ै । पररवचत शब्दािली का प्रयोग ृ ु ु ु कर

यह विद्यावथभयों को िित गवत ि पढ़ने के वलए अभ्यिा कराना इिका उद्दश्े य होता ह ै । िित पिा के ु ु िाथ-िाथ बोि-ग्रहर् के कौशल को भी यह विकवित करता ह ै । शब्दाथभ स्पष्ट करना या व्याख्या करना इन पस्तकों के वशक्षर् का उद्देश्य नहीं होता । कहीं-कहीं आिश्यकता पडने पर ही शब्दकोष की िहायता ु लेनी पडेगी । अभ्यास प्रश्न 3. परक पस्तकों के स्िरूप और वनमाभर् का उद्दश्े य क्या होता ह ै ? ू ु 4. िन्दभ भ पस्तकों का उद्दश्े य बतायें। ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 108 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.6 पाठ्यपुस्तकों के गिु अच्छे पाियपस्तकों की कछ विशेषताए होती ह ैं । यही विशषे ताए उिके गर् का वनिाभरर् करती ह ैं । ृ ु ु ु ां ां पाियपस्तकों के गर् को हम मख्य रूप ि दो दृवष्टयों ि दखे िकते ह ैं । इन्ह ें पाियपस्तक के गर्ों को दो ृ ृ ु ु ु ु ु रुप भी कहा जाता ह ै । यह ह ै आभ्य-आतररक और ां बाह्य गर् ु 2.6.1 बाह्य-पक्ष पस्तकों में वचत्रों की िख्या, आकार, रग और शलै ी प्राथवमक ि माध्यवमक और

Plagiarism detected: **0.05%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **229**

उच्च कक्षा तक बदलती ु ां ां रहती ह ै । जहा प्राथवमक कक्षाओ म ें वचत्रों की िख्या अविक, आकार बडा, रग चटकील े और शलै ी ां ां ां ां िस्तपरक होती ह ै िही उच्च कक्षाओ

तक आते आते उनका आकार छोटा, िख्या कम, रग िाद े और ु ां ां ां शलै ी प्रतीकात्मक होती जाती ह ै । पस्तक के बाह्य-पक्ष पर ध्यान वदए वबना गिर्त्तापर् भ पस्तकें भी ु ु ू ु महत्त्िहीन हो जाती ह ैं । पाियपस्तकों के बाह्य-गर्ों का क्रमिार वििेचन यहाँ प्रस्तत ह ै । ृ ु ु ु i. आिरण पष्ठ - आिरर् पष्ठ आिरर् पष्ठ वकिी भी पाय पस्तक का विज्ञापन होता ह ै । उि ृ ृ ृ ृ ु दखे न े मात्र ि विद्यावथभयों के मन म ें आकषभर् और वजज्ञािा के भाि उभरने चावहए । एक आकषकभ और उपयोगी आिरर्पष्ठ म ें कछ गर् अवनाय भ रूप ि

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **230**

होने चावहए । इन म ें प्रमख ह ैं : ृ ु ु ु गणर्त्ता -आिरर्-पष्ठ पस्तक के अन्य पष्ठों की अपेक्षा मोटा,मजबत और वचकना होना ृ ृ ु ु ू चावहए

। एिा होना ना के िल पस्तक की मजबती और दीघजभ ीविता के वलए श्रेयस्कर ह ै अभी तो ु ू उिकी वदखािट के वलए भी बेहतर ह ै । पष्ठों का रग -आमतौर पर पाय पस्तक के पष्ठ िफे द रग के होते ह ैं । इिवलए उनके आिरर् का ृ ृ ृ ु ं ां उपरी और तलीय पष्ठ का वििििर्ी और िविचत्र होना स्िभाितः आकषभर् उत्पन्न करता ह ै । ृ कछ रग चटकीले माने जाते ह ैं जबवक अन्य मद और िजीदा माने जात े ह ैं । प्राथवमक कक्षाओ के ृ ु ां ां ां ु विद्याथी चटकीले रगों को पिद करते ह ैं जबवक िरिष्ठ कक्षाओ के विद्यावथभयों को िजीदा रग ां ां ां ां ां जयादा भाते ह ैं । इि िगीकरर् का उपयोग प्राथवमक, माध्यवमक और उच्च कक्षाओ के वलए ां पाय पस्तकों के आिरर् पष्ठों के िजन में वकया जा िकता ह ै । ृ ृ ृ ु हचत्राकन- पाय पस्तकों पर वचत्रों का अकन एक अवनायभ िा वनयम ह ै । वकिी भी पस्तक पर ृ ु ु ं ां वचवत्रत छवि ि उिमें नीवहत िामग्री का आकलन वकया जा िकता ह ै । भाषा की पाय पस्तकों ृ ु पर भी उनमें िकवलत िामग्री, लक्ष्य और स्तर के अनकल वचत्राकन

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **231**

होना चावहए । वचत्रों का ु ू ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 109 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 चनिा, क्रम एि वचत्राकन एिा होना चावहए

वक उन्ह ें दखे कर विद्याथी पाियपस्तक के विषय ृ ु ु ां ां ,अतिस्भ त और अवभप्राय का अनमान लगा िकें । उदाहरर् के वलए िर्ों ,अक्षरों लेखनि-िामग्री, ु ु ां विख्यात लेखकों एि कवियों, प्राकवतक दृश्य अथिा पस्तक की वकिी पाि ि िबवित वचत्रों के ृ ु ां ां ां अकन ि मख्यपष्ठ को आकषभक और उपयोगी बनाया जा िकता ह ै । यह वचत्राकन अविकाविक ृ ु ां ां िास्तविक, उपयोगी, आनपावतक और रगीन होना चावहए तावक िह विद्यावथभयों के हास्य या ु ां उपेक्षा का विषय ना बनें । सचनात्मक पक्ष -आिरर् पष्ठ पर पस्तक का नाम, लेखक का नाम और उद्दश्े य -कथन अिश्य ृ ू ु मवित होना चावहए । िामान्यतया िबि पहले

पस्तक का नाम वफर उद्दश्े य कथन और अत म ें ु ु ां लेखक का नाम रहता ह ै । आिश्यकतानिार प्रकाशक का प्रतीक वचन्ह लोगो और नाम भी ु मवित हो िकता ह ै । ु इन उल्लेखों का आकार,रग और लेखन-शलै ी आिरर् के रग और शलै ी के अनरूप और ु ां ां आनपावतक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **232**

होने चावहए तावक ि े स्पष्टता ि वदखाई द े िकें । इिी प्रकार आिार-परट्टका पर भी ु कम ि कम पस्तक और लेखक का नाम और प्रकाशक का लोगो या प्रतीक वचन्ह होना चावहए

। ु आर्रण की सज्जा-आिरर् का तलीय पष्ठ यद्यवप िचना और अथभित्ता की दवष्ट ि कम महत्त्ि ृ ू रखता ह ै । वकन्त मखपष्ठ का अग होने के काररर् इि पर ध्यान दने ा उवचत ह ै । इिे खाली छोडने ृ ु ु ां की अपेक्षा आर-पार रगीन परट्टयों या बडे वडजाइन ि िजाना अच्छा रहता ह ै । इि प्रकार ां आिरर्-पष्ठ के िल पस्तक का कलिर ना होकर लेखक या प्रकाशक िारा इि विषय म ें प्रदत्त ृ ु ध्यान,कलात्मकता और प्रस्तवतकरर् के स्तर को भी दशाभता ह ै । पिा के आरभ म ें कवि अथिा ु ां लेखक का िवक्षप्त पररचय वदया जाना चावहए । वजिमें उनकी वशक्षा, पष्ठभवम और अन्य कवतयों ृ ृ ू ां का उल्लेख होना जरूरी ह ै । हो िके तो पिा के मल स्रोत अथाभत वजि िकलन या रचना ि इिे ू ां िकवलत वकया गया ह,ै इिका उल्लेख भी वकया जाए इन उपायों ि विद्यावथभयों के वलए पिाों ां को िमझना िरल हो जाता ह ै । ii. नाम- पाियपस्तक के बाह्य-गर्ों में नाम का भी प्रभाि पडता ह ै । पस्तक का नाम िरल, िवक्षप्त, ु ु ु ु ां स्पष्ट एि आकषकभ हो इिे विषय का भी वकवचत आभाि वमल जाना चावहए । ां ां iii. आकार- पाियपस्तक म ें पिाों का आकार बहत छोटा या बडा ना रह े । इि प्रकार िपर्भ पस्तक ु ु ु ू ु ां का आकार भी बहत छोटा रह े ना बडा । छोटी कक्षाओ में पष्ठ िख्या कम रह े वकत बडी ु ृ ु ां ां ां कक्षाओ में यह िख्या िीरे िीरे बढ़ती जाए । ां ां iv. कागज की गणत्तता - कागज बहत पतला ना हो और ऐिा ना हो वजि की चमक आखों पर ु ु ां पडे । यह इतना पराना भी ना हो वक शीघ्र फट जाए और छात्र को िषभ म ें दो बार नई वकताब ु खरीदने पडे । छोटी कक्षाओ में बडे आकार के कागज की पाियपस्तक हो िकती ह ै । पािय ु ु ु ां पस्तक के पष्ठ िाफ मजबत और उत्तम श्रे र्ी के होने चावहए । कागजों की गर्त्ता ऐिी होनी ृ ु ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 110 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 चावहए वक उन पर अक्षरों और वचत्रों की छपाई की स्याही ना फै ले । अखबारों जिै ा पनचभवक्रत, ु िीला, कमजोर और िस्ता कागज पािय पस्तकों के मिर् के वलए प्रयोग नहीं वकया जाना ु ु ु ु ां चावहए । इिी प्रकार के कागज पर मवित पस्तक न के िल घवटया और परानी वदखती ह ैं बवल्क ु ु ु उनपर शब्द, वचत्र और रग कछ भी नहीं वखल पाता । ऐिी पस्तकों को दखे कर विद्याथी ु ु ां आकवषतभ या उत्िक नहीं होते । यह एक मनोिैज्ञावनक तथ्य ह ै वक उच्च प्राथवमक कक्षाओ तक ु ां के विद्याथी पािय पस्तकों के कलिर और रग रुप ि काफी प्रभावित होते ह ैं । इिीवलए पािय ु ु ु ां पस्तकों के पष्ठों की गर्त्ता पर ध्यान वदया जाना चावहए । ृ ु ु v. मिण - पस्तक की छपाई शद् होनी चावहए । अक्षर बहत छोटे ना हो । प्रारवभक

Plagiarism detected: **0.03%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **233**

कक्षाओ म ें मोटे ु ु ु ु ां ां अक्षरों म ें छपाई हो और िीरे िीरे ऊपर के कक्षाओ म

ें अच्छे बारीक हो िकते ह ैं । अभ्यािाथभ ां वदए प्रश्नों के अक्षर मल पिा के अक्षर ि वभन्न हो । शीषकभ ों के वलए भी अलग टाइप टाइप के ू अक्षर हों । शब्दों के बीच की दरी ,एक िाक्य ि दिरे िाक्य की दरी अनच्छेद योजना आग े पर ु ू ु ू भी ध्यान रह े । vi. हचत्र - पािय पस्तकों के चयन म ें इि मनोिैज्ञावनक तथ्य का ध्यान रखना चावहए वक वचत्र वकिी ृ ु पस्तक को िजान-िँिारन े

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **234**

का माध्यम ना होकर विद्यावथभयों की कल्पनाशीलता, आकषभर् ,रुवच ु ां और वजज्ञािा की अवभिवद् का माध्यम

होते ह ैं । उनके वलए शब्दवबम्ब ि जयादा महत्त्ि ृ वचत्रवबम्ब का होता ह ै । िह वचत्र ि शब्द और वफर भाि की ओर गमन करते ह ैं । वचत्रों ि कथ्य को िहज और भाि को अनभि गम्य बनाया जा िकता ह ै । इिवलए उनकी उपयोवगता और ु यवक्तयक्तता को भी ध्यान में रखा जाना चावहए । वचत्रों ि विषय स्पष्ट हो जाते ह ैं । पस्तक की ु ु ु उपयोवगता में िवद् के वलए वचत्र होने चावहए । प्रारवभक कक्षाओ के पािय पस्तकों म ें वचत्र ृ ृ ु ां ां अिश्य हो । िीरे िीरे ऊची कक्षाओ में इन वचत्रों की कमी होती जाए और उच्च कक्षाओ में ां ां ां वचत्रों के विशेष आिश्यकता नहीं ह ै । एक अन्य तथ्य पर भी विचार आिश्यक ह ै वक वचत्रों की अविकता ि पस्तक वचत्रकथा ना बन ु जाए अथाभत इिमें वचत्रों की भरमार ना हो वजि ि विद्यावथभयों की कल्पनाशीलता को िाँिार ही ना वमले । िाथ ही वचत्रों की ऐिी न्यनता भी ना हो वक पस्तक श्वेत पष्ठों पर व्याप्त काले शब्दों के ृ ू ु रेवगस्तान जिै ी लग े । अवतम बात वजिका इि िदभभ म ें ध्यान रखा जाना चावहए िह वचत्राकन ां ां ां का िर्भ िंयोजन या रग व्यिस्था । इि विषय में भी प्रकाशक को व्यिहाररक दवष्टकोर् अपनाना ां ां चावहए रगों के जयादा चटकीले या फीके होने ि वचत्रों की िास्तविकता और आकषभर् कम हो ां जाते ह ैं ऐिी वस्थवत में उनके होने का उद्दश्े य ही िकट म ें पड जाता ह ै । ां vii. हजल्द- पािय पस्तकों के जल्दी मजबत

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **235**

होनी चावहए छोटी कक्षाओ म ें छात्र वकताबें बहत ु ृ ु ू ां फाडते ह ैं और दभाभग्यिश आजकल उन्हीं की वजल्दें िबिे

कमजोर होती ह ैं । ु viii. मल्य -पिाय पस्तक का मल्य उवचत होना चावहए

वििज ेवक छात्रों ि िरलता ि खरीद िकें ्ू ु ू और अवभभािकों पर अविक पर न पडे । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 111 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.6.2 आतररक गण ु ं आभ्यतररक पस्तक के ि भीतरी गर् ह ै जो उिकी भाषा, शलै ी,पिाय- विषय,आवद की द्दवष्ट ि होते ह ैं ्ु ु ां और बाह्य ग र्ों म ें पस्तक का आिरर् ,मिर् और िाज-जिा आवद आते ह ैं । दाशवभ नक शब्दािली म ें ु ु ु पिायपस्तक का बाह्य- पक्ष शरीर ह ै तो आतररक पक्ष उिकी आत्मा ह ै । बाह्य पक्ष वकतना भी िदर, ्ु ु ां ां मोहक और िवनयोवजत हो वकत अतपभक्ष के िाथभक,िाथभक,िशक्त और उपयोगी न होने तक पस्तक ु ु ु ां ां वनष्प्रार् ही रहती ह ै । इिवलए पस्तक में िकवलत िामग्री, उिकी भाषा, प्रस्तवतकरर्, शद्ता और ु ु ु ां मलयाकन विवियों का िम्यक अन्िीक्षर् वकया जाना चावहए । पस्तक के आतररक पक्ष का क्रम ि ू ु ां ां वििे न यहा प्रस्तत ह ै । - ु ां i. हिर्य सामग्री- विषय िामग्री ि तात्पयभ ह ै -पस्तक में िकवलत गद्य- पद्यात्मक िामग्री और ु ां उनके कवियों अथिा लेखकों का िवक्षप्त पररचय । इि विषय के चयन और प्रस्ततीकरर् के ु ां आिार पर पिाय पस्तक की गिर्त्ता वनभरभ करती ह ै । परत पिाय पस्तक के िकलन म ें विद्याथी ् ्ु ु ु ु ां ां के स्तर, आिश्यकताओ और रुवचयों के अवतररक्त कछ मलभत तथ्यों को ध्यान में रखा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **236**

जाना ु ू ू ां चावहए वजनका उल्लेख वकया वकया जा रहा ह ै ।- □ एक पिाय पस्तक म ें विषय-िामग्री का चयन पस्तक के उद्दश्े य को ध्यान म ें रखते हए वकया ु ्ु ु जाना चावहए

। मख्य पस्तक काउद्दश्े य विद्यावथभयों को भाषा के विवि पक्षों ि पररवचत कराना ु ु और उनके ज्ञानात्मक, विचारात्मक और भािात्मक आिश्यकताओ की पवतभ करना ह ै । इि द्दवष्ट ू ां ि मख्य पिायपस्तक म ें िावहत्य की विवभन्न वििाओ जिै े कहानी, वनबि,आत्मकथा, जीिनी, ्ु ु ां ां यात्रा-ितात, पत्रावद के िाथ खले , विज्ञान, राजनीवत, िमाज, कला और दशनभ जिै े विषयों का ृ ां भी यथेष्ट िमन्िय

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **237**

होना चावहए । □ चयवनत िामग्री के माध्यम ि विद्यावथभयों में भाषा -व्यिहार की कशलता के िाथ ही ु कवियों,लेखकों, कवतयों और वििाओ ि पररचय भी प्रगाढ़ होना चावहए

तावक ि भाषा के ृ ां स्िरूप और उपयोवगता को जान िकें । भाषा की पिाय िामग्री विद्यावथभयों को इवतहाि और ् ितभमान के पररिशे ि पररवचत कराए तो भाषा वशक्षर् बहत उपयोगी हो िकता ह ै । ु □ भारतीय िंिविान म ें दशे को एक िंपर्भ प्रभत्िंपन्न, पथवनरपेक्ष, लोकतावत्रक गर्राजय बनाने ू ु ां ां ां ां ां के वलए न्याय, स्ितत्रता, िमानता और बिता के भािों के विकाि का लक्ष्य स्थावपत वकया गया ु ां ां ह ै । यह लक्ष्य नागररकों में वशक्षा और वशक्षकों के माध्यम ि कायाभवन्ित होता ह ै । राजय िारा वनिाभररत और वनयोवजत होने के कारर् पिायक्रम और पस्तकों की भवमका यहाँ अत्यत ्ु ू ां महत्िपर् भ ह ै । भाषा की पस्तकों को इन िंििै ावनक मल्यों को बढ़ािा दने े िाला होना चावहए । ू ु ू ां इिके वलए हमें विज्ञान कथाओ िमभ के प्रितभकों के िबि म ें कारी चररत्रों एि वशक्षाओ का ां ां ां ां ां िमािशे करना चावहए । िाथ ही भारत की विवििता में एकता, िंिभ मभ-िमभाि, एकता और अनशािन, िवहष्र्ता और भाईचारे के भाि को पष्ट करने िाली िहायक िामग्री का िकलन ु ु ु ां वकया जाना चावहए । इिके बाद पौरावर्क कहावनया या महापरुषों की गाथाओ िारा उदात्त भािों ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 112 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 को प्रस्तत वकया जाता ह ै । इि क्रम का अनपालन विद्यावथभयों की मानविकता पर िकारात्मक ु ु प्रभाि डालता ह ै । □ पिायपस्तक की िामग्री दशे के लक्षर् आिवनकता और मानिता की पोषक और उत्प्रेरक होनी ्ु ु चावहए । पािों एि कविताओ के िकलन ि पि भ उन

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **238**

के माध्यम ि यिा-शवक्त की मानविकता या ू ु ां ां ां विचारिारा पर पड िकने िाले प्रभाि का आकलन वकया जाना चावहए । इन उपायों को अपनाकर पिाय पस्तकों के माध्यम

ि राष्ट्र वनमाभर् के कायभ को िरल बनाया जा िकता ह ै । ्ु □ पिाय पस्तकों के वलए िामग्री का चयन करते हए राष्ट्रीय लक्ष्यों के िाथ ही व्यवक्तगत उद्दश्े यों ु ्ु को भी िमन े रखा जाना चावहए । ध्यान रह े वक व्यवक्त िमाज की इकाई ह ै और िमाज राष्ट्र की। वशक्षा यवद व्यवक्त के ज्ञान अनभि और चररत्र का वनमाभर् कर िके तो िमाज और राष्ट्र की ु उन्नवत िहज ही िवनवश्चत की जा िकती ह ै । इि द्दवष्ट ि पस्तक में उच्चादशों की पोषक ु ु कथाओ, घटनाओ, प्रेरक-प्रिगों, महापरुषों की गाथाओ इत्यावद का िमािशे होना चावहए । ु ां ां ां ां □ पिाय पस्तक के वलए िामग्री चयन करते हए ितलन के पक्ष पर भी ध्यान वदया जाना चावहए । ु ्ु ु ां ितलन का तात्पयभ विवि िमिवग्रयों के प्रवतवनवित्ि, गद्य एि पद्य और कक्षा या स्तर के ु ां ां अनरूप िामग्री की मात्रा के अनपात ि ह ै । इि पक्ष पर पिाय पस्तक की उपयोवगता और ्ु ु ु िाथभकता काफी हद तक वनभरभ करती ह ै । इनमें वकिी भी पक्ष के आविक्य या न्यनता ि े ू पिायपस्तकों पररपर्भ नहीं कहा जा िकता ह ै । ्ु ू □ विवभन्न कक्षाओ के वलए िामग्री-िकलन में पिाय पस्तक की प्रकवत, िरलता यह कविनाई के ृ ्ु ां ां िाथ ही उिके पररमार् पर भी ध्यान वदया

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **239**

जाना चावहए । तदनिार कल िकवलत िामग्री का ु ु ां पररमार् इतना होना चावहए

वक व्याकरर् और परक पस्तकों के पिन-पिान और अन्य ू ु िावहवत्यक गवतविवियों के िचालन के िाथ ही एक वशक्षर् ित्र के वनिाभररत िमय अिवि में ां उनका अध्ययन िपन्न कराया जा िके । ां □ एक अन्य ध्यातव्य वबद पािों की लबाई के िन्दभ भ म ें ह ै । पािों म ें यथािभि इतनी ही पािय- ् ां ां ां ु िामग्री होनी चावहए वक उन्ह ें अविकतम एक या दो कालाशों म ें िपन्न कराया जा िकें । ऐिा ां ां करन े ि पािय पस्तक के अध्ययन में विद्यावथभयों की रूवच और वजज्ञािा बनी रहती ह ै और िदभ भ ् ु ां को िमझने म ें िरलता होती ह।ै □ पाठय सामग्री की भािा- िामग्री के िचय

Plagiarism detected: **0.04%** https://doc.sarkariresults.org.in/MPESB_Group… + 2 resources! id: **240**

के दौरान इि बात का ध्यान रखा जाना चावहए वक व ां िकवलत पािय िामग्री की भाषा कक्षा और विद्यावथभयों के अिस्था स्तर के अनरूप हो । ् ु ां पाियपस्तक-वनमाभर् के दौरान

िमस्त िामग्री का िजन नहीं अवपत िकलन वकया जाता ह ै ।यह ृ ् ु ु ां िामग्री ऐिे विख्यात लेखकों और कवियों िारा िवजत होती ह ै वजनकी भाषा िहज और स्पष्ट ृ और शलै ी िअिरानकल होती ह ै । कछ विषयों पर कक्षागत आिश्यक्ताओ के चलते पािय- ् ु ू ु ां िामग्री का िजन भी करा

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… + 3 resources! id: **241**

या जाता ह ै । ऐिा प्रायः खले ,विज्ञान एि तकनीक कला,िगीत जिै े ृ ां ां िामान्य जनजीिन ि िबवित विषयों के बारे म ें वकया जाता ह ै । इि िदभ भ म ें विशेषज्ञ और ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 113 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 कलाकारों की िहाए लेते हए उन्ह ें भी रचना के उद्दश्े य एि स्तर के विषय म ें िचना दी

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **242**

जानी ु ू ां ां चावहए । इि प्रवक्रया िारा प्राप्त लेखों का मल्याङ्कन उपयक्त मानकों के अनिार वकया जाना ् ू ु ु चावहए । ii. सोद्देश्यता- प्रत्येक पाियपस्तक की रचना कछ उद्दश्े यों को ध्यान में रखकर की जानी चावहए

। ् ु ु पस्तक म ें इन उद्दश्े यों को परा करने की प्रेरर्ा विद्यमान होनी चावहए । भाषा की पािय पस्तक

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **243**

का ् ु ू ु उद्दश्े य भगोल और विज्ञान का ज्ञान दने ा नहीं होता । अतः ऐिे विषयों पर आिाररत पािों का ू उद्दश्े य के िल जानकारी प्रदान करना ना होकर भाषा ज्ञान बढ़ाना ह ै । अतः पािों को भाषा ज्ञान िवद् का उद्दश्े य

परा करना चावहए । ृ ू iii. उपयक्तता- मनोिैज्ञावनक दृवष्ट ि मानि-व्यवक्तत्ि के विकाि की अिस्थाए ह ैं जिै े बाल्यािस्था, ु ां वकशोरािस्था,प्रौढ़ािस्था आवद । इन अिस्थाओ की िामान्य प्रकवत के अनकल विषयों पर ृ ु ू ां आिाररत पाि उपयक्त होते ह ैं । ु iv. हिविध्य हर्षधता -एक ही प्रकार के विषय पर आिाररत अनेक पािों की अपेक्षा अनेक विषयों पर आिाररत पाि अच्छे होते ह ैं । इि प्रकार िावहत्य के विवभन्न वििाओ का पस्तक में ु ां प्रवतवनवित्ि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **244**

होना चावहए । गद्य-पद्य नाटक, कहानी, वनबि इत्यावद िभी विषयों पर पाि होने ां चावहए

। v. रोचकता -वजन विषयों म ें छात्रों की रुवच होती ह,ै उनके अध्ययन ि ि े उबते नहीं और उन्ह ें शीघ्र िमझ लेते ह ैं । रूवच का विद्ात आज एक मनोिैज्ञावनक विद्ात ह ै और इि विद्ात को वशक्षा ां ां ां के प्रत्येक क्षेत्र में व्यिहार वकया जाना चावहए । vi. जीर्न से सम्बद्धता- पाियपस्तक ि आय े हए विषय जीिन ि िबवित

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **245**

होने चावहए । जीिन ु ् ु ां ां ि अिबवित विषयों को िीखने म ें छात्रों को कविनाई होती ह ै । ां ां vii. िमबद्धता/ पाठय सामग्री का प्रस्तुतीकरण - पाियपस्तकों के पाि क्रमबद् होने चावहए । व ् ु ु यह क्रम छात्रों की आय के अनिार होने चावहए

तथा

Quotes detected: **0.01%** id: **246**

'विषयों को िरल ि कविन की ओर'

के ु ु विद्ात पर के आिार पर व्यिवस्थत करना चावहए । िामग्री के िकलन के उपरात उिके ां ां ां प्रस्ततीकरर् को भी िमवचत क्रम और उपादये ता प्रदान की जानी चावहए । इिके वलए एक ु ु पररपावटयों का अनपालन वकया गया ह ै । इन म ें िििप्रभ थम ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **247**

'िरल ि कविन की ओर'

। पिाय ् ु पस्तक के आरवभक पिा पढ़ने और िमझने की दृवष्ट ि िरल,रुवचकर और प्रेर◌्ास्पद होने ु ◌ां चावहए । इि परपरा के अनिार भाषा,भिा,विषय और शलै ◌ी की दृवष्ट ि िरल पिों को पहले ु ◌ां रखा जाना चावहए । viii. आदिि◌्ाहदता- पिायपस्तक में कछ पिा ऐिे

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **248**

होते ह ैं जो विद्याथी को नया िदशे , नई प्रेर◌्ा एि ् ु ु ु ◌ां ◌ां नए आदशभ प्रदान करने म ें िक्षम हो । ix. व्यि◌्ाररक –पिाय-पस्तक की भाषा क

ै ि भी होने चावहए जो बालक की व्यिहाररक बवद् को ् ु ु विकवित कर िकें और उिे लोकाचार की वशक्षा द े िकें । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 114 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 x. ततरानकलता- पिाय पस्तकों की भाषा छात्रों के अनकल होनी चावहए । प्रारवभक

Plagiarism detected: **0.03%** https://matrawaleshabd.org/hindi-ka-kha-ga/ id: **249**

कक्षाओ म ें ् ु ू ु ु ू ◌ां ◌ां इनकी भाषा बहत िरल हो और शनैः-शनैः व्यिस्थानिार भाषा के स

◌्तर को बढ़ाया जाए । ु ु xi. िद्धता- भाषा की दृवष्ट ि पिाय-पस्तकों को शद् होना चावहए । यवद पस्तक की भाषा अशद् ् ु ु ु ु ु ह ै तो यह आशा कै ि की जा िकती ह ै वक छात्र उन्ह ें पढ़कर भाषा पर अविकार कर िकें ग े । xii. साथिकता- पिायपस्तक का प्रत्येक शब्द िाथभक हो, प्रत्येक िाक्य तथा प्रत्येक अनच्छेद ् ु ु िाथभक हो । ऐिा ना हो वक शब्द, िाक्य और अनच्छेद अनािश्यक रुप ि ि ि न वदए गए हो । ु ू ां अनािश्यक शब्दों या िाक्यों को पस्तक में स्थान नहीं वमलना चावहए । ु xiii. ससबद्धता - पस्तक का प्रत्येक िाक्य दिरे िाक्य ि िबवित हो । एक अनच्छेद का दिरे ु ु ु ं ◌ां ◌ां ू ू अनच्छेद ि िबि हो । एक अनच्छेद के अदर विवभन्न िाक्य एक दिरे ि िबद्

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **250**

होने चावहए । ु ु ◌ां ◌ां ◌ां ◌ां ◌ां ू xiv. भािाहधकार र्धिकता- पिाय पस्तकों की भाषा ऐिी होनी चावहए

वक

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **251**

छात्रों के शब्द भडार म ें ् ु ◌ां िवद् हो । शब्दों का चयन, िाक्यों की योजना इि प्रकार ि हो वक छात्रों क

े शब्द- भडार एि ् ू ◌ां ◌ां िवक्त- भडार म ें िवद् हो और उनका भाषा पर अविकार बन िके । ृ ू ◌ां xv. मौहलकता - पिाय पस्तक के पिाे में मौवलकता ि छेडछाड नहीं वकया जाना चावहए । कभी- ् ु कभी अध्यापक िकलन करते िमय लेखक के मल लेख को छोटा कर दते े ह ैं और लेख को इि ू ◌ां प्रकार मौवलकताविहीन कर दते े ह,ैं ऐिा नहीं होना चावहए । जो पिा नए वलखे जाए, उनमें ध्यान ◌ां रह े वक अवभव्यवक्त की निीनता बनी रह े । xvi. िैलीगत हर्धता -

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **252**

प्रत्येक पिायपस्तक म ें विवभन्न िाविवत्यक विधाएँ तो होनी ही चावहए ् ु वकत प्रत्येक विधा में शलै ◌ीगत विवभन्नता भी होनी चावहए

। मान लीवजए कविता के पिा पस्तक ु ु ◌ां में िकलन होने ह ैं उन पिों म ें श ,हास्य, करुर् रि, भयानक, िीर, शात आवद विविि रिों गार ृ ◌ां ◌ां ◌ां की कविताए हो और दोहा, चौपाई, कवित्त, िियै ◌ा, पद, तकात, अतकात आवद विविि छद हों । ु ु ◌ां ◌ां ◌ां ◌ां xvii. ऋतओ/मासों का ध्यान - जो पिा त्योहारों, ऋत िर्नभ , महापरुषों की गाथाओ, जीिवनयों ु ु ु ं ◌ां इत्यावद ि िम्बद् हो उनका िकलन ऐिे ही क्रम म ें वकया जाए वक जब उन्ह ें पढ़ाया जाए तो ◌ां उनकी जयती, पण्यवतवथ या अन्य िम्बद् ििर िवन्नकट या आिपाि हो । उदाहरर् के वलए ु ◌ां भारतीय विद्यालयों का ित्र अप्रैल माह ि शरु होता ह ै । इि माह में महािीर जयती, गड फ्◌ाइडे, ु ु ◌ां बैिाखी, रामनिमी और भारतीय ििंषभ िि े पि भ का आयोजन होता ह ै । यवद वहदी पिायक्रम म ें ् ◌ां भगिान महािीर, ईिा मिीह या भगिान श्री राम जिै े महापरुषों पर िशै ◌ाखी, ििंषभ िि े पि भ का ु िर्नभ ििय हो तो उिे पिायपस्तक के आरभ में रखा जाए । ् ु ◌ां xviii. पाठयर्तत का सरलीकरण -िकवलत पिों की प्रस्तवत के उपरात दिरा महत्िपर्भ कायभ ह ै व ु ु ू ◌ां ◌ां ू पिायिस्त का िरलीकरर् । िामग्री िकलन के दौरान पयाभप्त ध्यान वदए जान े पर भी पिों म ें ् ु ◌ां अनेक दबोि शब्द ,पाररभाविक शब्द, प्रचवलत महािरे या क्षेत्रीय लोकोवक्तया और अप्रवद्, ु ◌ां ु ऐवतहाविक और पौरावर्क प्रिग अवनिायभतः आ जाते ह ैं । इन्ह ें िरल न वकया जाए तो ◌ां विद्यावथभयों के वलए पिा का िास्तविक भाि ग्रहर् कर पाना िभि नहीं हो पाता । पिा पहले ◌ी ◌ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 115 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 बन जाते ह ैं और विद्याथी उनके शब्द जाल म ें फि रह जात े ह ैं । इि िमस्या के वनराकरर् के वलए ◌ां पिा के दौरान ही विवभन्न विवियों ि कविन अशों का वनिारर् वकया जाना चावहए । ◌ां xix. हचत्राकन पक्ष - यद्यवप वचत्राकन वकि शलै ◌ी और प्रस्तवत पिायपस्तक के बाह्य पक्ष का विषय ् ु ु ं ◌ां ह,ै वकत प्रस्तत वचत्रों की मल पिा ि िबद्ता और विषय को जानने- िमझने म ें उनकी ु ु ू ◌ां ◌ां उपयोवगता का परीक्षर् अतपभक्ष का ही दावयत्ि ह े । अनपयोगी तथा अनापेवक्षत वचत्र पिायिस्त ् ु ु ◌ां को िोवझल बनाने की अपेक्षा विद्यावथभयों को भ्रवमत कर िकते ह ें ु xx. मल्याकन पक्ष- पिों के अत म ें पिाय िस्त के मल्याकन के वलए िरल और िटीक भाषा म ें ् ू ु ू

ं ां ां प्रश्न वदए जान े चावहए । प्रश्नों का उद्दश्े य बिो परीक्षा िए महत्िपर्भ अशों का अभ्यिा होना ू ां ां चावहए । मल्याकन को िरल, व्यिहाररक और िस्तिपरक बनाने के वलए िभी प्रकार के प्रश्नों – ू ु ां वनबिात्मक, लघउत्तरात्मक और िस्तिवनष्ठ का िितलन कायम वकया जाना चावहए । ु ु ु ां ां xxi. हि्रिय सची -

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 3 resources! id: **253**

पिों का स्थान, लेखक और िविा की िचना के वलए पिाय िस्त के प्रारभ म ें ु ू ू ु ां विशेष िची का प्रकाशन अवनिाय भ ह ै । िइि विद्यावथभयों को वकिी भी पिा के स्थान

या पररचय ू जानने में िविा होती ह ै । इन आतररक एि बाह्य ग ृर्ों के अवतररक्त भी कछ वबद पिाय पस्तक ु ु ु ु ु ां ां ां ु चयन की दृवष्ट ि ध्यातव्य ह ै । इनमें पस्तक की िरल उपलब्िता और उवचत मल्य प्रमख ह ै । ु ू ु िगिभ र् िपन्न पिायपस्तक भी यवद बाजार म ें दलभभ हो तो विद्यावथभयों के वलए उिकी ु ु ु ां ु उपयोवगता िवमत हो जाती ह,ै दिरी तरफ महगी पिायपस्तकें भी िभी विद्यावथभयों की ु ु ां ू अपेक्षाओ को परा नहीं कर पाती ।इन अपेक्षाओ पर खरा उतरने िाली पिाय पस्तकें वशक्षकों ु ू ु ां ां तथा विद्यावथभयों के बीच वशक्षर् अविगम को िरल बनाती ह ैं और वशक्षर् के लक्ष्य को कायाभवन्ित करती ह ैं । 2.7 पाठ्यपुस्तकों के दोष पिायपस्तक के वजन ग ृर्ों की चचाभ उपर की गई ह ै , उनका न होना ही पिाय-पस्तक की कमी मानी जा ु ु ु ु ु िकती ह ै । वफर भी पिाय-पस्तक के दोषों के रूप म ें वनम्नवलवखत वबन्दओ का उल्लेख वकया जा िकता ु ु ां ु ह ै । 1. जीर्न से असम्बद्दता: राष्ट्रीय पिायचयाभ प्रारूप-2005 अपने अनशिाओ म ें इि बात की िकालत ु ु ां ां व करती ह ै वक कक्षाओ म ें पढ़ाये जाने िाला ज्ञान बालकों के जीिन ि िम्बद् हो अतः पिायपस्तकों ु ु ां को भी बच्चों के जीिन को प्रवतवबवबत करने िाला होना चावहए । िाथ ही वशक्षक के वलए यह ां िभािना रह ें वक ि े बालकों के जीिन के िविर ृर्ों को पिायपस्तक म ें दी गई िामग्री ि जोड िकें । ु ु ां अगर वशक्षक के वलए यह उद्देश्य ह ै वक बच्चों का जीिन कक्षा म ें की जाने िाली पढाई का िन्दभभ बनें तो पिायपस्तक उि काम को िहारा दने े का काम करती ह ै । इिके अभाि म ें पिायपस्तक के िल ु ु ु ु अनपयोगी तथ्य ज्ञान ही द े पाएगी । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 116 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2. प्रयोजनीनता: पिायपस्तकों म ें िवर्तभ िामग्री बालकों के जीिनोपयोगी होनी चावहए । भारत जिै े ु ु विविितापर् भ दशे म ें हालााँवक यह कविन कायभ ह ै वकन्त राष्ट्रीय पिायचयाभ प्रारूप-2005 के ु ू ु विफाररशों को ध्यान म ें रखकर बनाई गयी पस्तकों म ें भिी जीिन को लवक्षत वकया गया ह ै । ु 3. अनपयक्तता: वशक्षा प्रदान करना एक लोक-कल्यार्कारी कायभ ह ै वकन्त व्यािावयकता का दबाि ु ु ु इि क्षेत्र पर बडा ह ै । इि क्षेत्र के बाजारीकरर् के चलते नीजी प्रकाशकों िारा प्रकावशत पिायपस्तकों ु ु का मल्य इतना हो गया ह ै वक उि एक वनवश्चत आवथभक िगभ का व्यवक्त ही खरीद िकता ह ै । यह एक बडा ू दगर्भ ह ै । ु ु 4. नीरसता: पिायपस्तक म ें विशषे ज्ञ लेखक िारा एक ही प्रकरर् पर अलग-अलग प्रकार ि वलखा जा ु ु िकता ह ै । यवद पिा की विषय-िस्त म ें पािकों के िाथ िंिाद करने की शलै ी होती ह ै अथाभत उनकी ु ां रूवच जगाने की क्षमता ,िरल शब्दािली, वचत्रात्मकता आवद नहीं होती तो पस्तक नीरि और बोझ ु प्रतीत होती ह ै । 5. आिंिादीनता: पिायिामग्री अध्येता के िाथ िंिाद स्थावपत करता ह ै । यह ध्यान रखना चावहए वक ु ां क्या यह िंिाद िाम्प्रदावयकता के िािािरर् को फै ला रहा ह ै या उपभोक्तािाद के पररिेश वजिमें ां बालक जी रहा ह,ै उि बढ़ािा द े रहा ह ै । वस्त्रयों,दवलतों,प्रकवत के प्रवत वहिा को प्रोत्िावहत कर रहा ृ ां हा।ै यवद पिायपस्तक म ें िभी िमों म ें वनवहत महान मल्यों का पट नहीं ह ै तो िह वनतात खोखली ह ै । ु ु ू ु ां 6. अव्यािहाररकता और राजनीहतक हर्चारधाराओ का प्रभार्: पस्तकें ज्ञान का िहन करती ह ै ु ं और अनेक मामलों म ें विद्यावथभयों के मवष्तष्क को अके ले आकार दते ी ह ै । अतः पिायपस्तक म ें एिे ु ु तत्ि हो जो भविष्य के राष्ट्र के अनरूप हो । कई बार राजनीवतक दलों िारा अपने एजेंडे के वलए ु पिायपस्तकों म ें एिी पािायिस्त डाल दी जाती ह ै जो राष्ट्रीय िमिाभ और दशे की िहत के वलए ु ु ु ु अच्छा नहीं होता । यह ध्यान रखना होगा वक वकिी पिायक्रम या पािायिस्त का वनमाभर् वकिी ु ु ु िकीर् भ विचारिारा के िाए म े ना हो । ां 7. अिद्ध: भाषागत अशवद्धयों के वनराकरर् के अभाि म ें उत्तम पस्तक भी अपनी अथभित्ता खो दते ी ह ै ु ु ु कई बार पािक वशक्षक के वनदशे न के वबना पस्तक का स्िाध्याय करते ह ै और पस्तक म ें वदए भाषा ु ु और तथ्यगत अशवद्धयों को ही ित्य मान लेते ह ैं । यह वस्थवत खतरनाक ह ै । ु 8. कसपादन: पस्तक का िपादक नौका का कप्ता

Plagiarism detected: **0.07%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **254**

न होता ह ै वजिकी वजम्मदे ारी बडी महत्िपर् भ होती ह ै । ु ु ू ं ां पस्तक के बाह्य और आतररक ग ृर्ों को जााँचने की अवतम वजम्मदे ारी िपादक की होती ह ै ,इि ु ु ां ां ां दावयत्ि के कशल वनिभहन के अभाि म ें पस्तक म ें अनेकानेक त

ृवटयों की िभािना रहती ह ै । ु ु ु ां 9. िैलीगत अरोचकता: कई बार लेखकों िारा अपने िविता के प्रकाशन या आनािवदक ु आिश्यकता के वलए कविन, दरूह शब्दािली, अप्रचवलत मिहािरों,अतकभ था के िारा स्पष्ट वकए जाने ु ां ु िाले िन्दभों आवद का िर्नभ करने ह ै । िपादन म ें इनकी ओर ध्यान न वदए जाने पर य े प्रिग पािकों ां ां के वलए िमस्या उत्पन्न करते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 117 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 10. अनाकिक साज-सज्जा: बहिा गिर्त्ता िाले विषयिस्त के बािजद एक पिाय-पस्तक अपनी ु ु ु ु ू ु अनाकषकभ िाज-िजा के कारर् अनपयोगी हो जाती ह ै । पस्तक का आिरर्-पष्ठ,वचत्राकन,पष्ठों की ृ ृ ु ु ां गिर्त्ता, आवद

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindwi.org/hindi-dictionary/meaning… id: **255**

पर ध्यान दने ा विषय-िस्त के िमान ही आिश्यक ह ै । खािकर प्राथवमक स्तर के ु ु बालकों के वलए इन तत्िों पर ध्यान

दने ा अत्याििश्यक ह ै। 11. पाठक-र्गि की आिश्यकता को ध्यान में न रखना- पाियपस्तक वलखते िमय अगर पािक िग भ ु ु का ध्यान नहीं रखा जाए तो िह पस्तक पिनीय नहीं हो िकती । अगर पािक कोई बालक/बावलका ु ह ै और उिकी िोच,मनोविज्ञान और मनोवस्थवत को ध्यान म ें रख े बगरै जो िामग्री वलखी गई ह ै तो िह िामग्री खराब ही होगी । िाथ ही िह पस्तक जो बच्चों को िब कछ बता द ें और कछ करने की ु ु ु चनौती ना द े तो िे भी अच्छी पस्तक नहीं कह िकते । ु ु अभ्यास प्रश्न 5. राष्ट्रीय पाियचयाभ प्रारूप-2005 पाियपस्तकों के िम्बन्ि म ें क्या कहती ह?ै ु ु ु 6. िपादक की उपमा नौका म ें वकि अविकारी ि दी गयी ह ै ? ां 2.8 िाराशं भाषा-वशक्षर् म ें पाठ्य-पस्तक एक िािन ह,ै िाध्य नहीं । पस्तकों के वबना भी भाषा की वशक्षा दी जा ु ु ु िकती ह ै। एक अच्छा भाषा-अध्यापक अपने

Plagiarism detected: **0.13%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **256**

छात्रों को पाठ्य-पस्तक अच्छी तरह पढ़ायेगा वकन्त िह ु ु ु उन्ह ें पस्तक का कै दी नहीं बना दगे ा । िह िदा ध्यान रखगे ा वक उिके छात्र पस्तक के माध्यम िे जीिन ु ु और जगत के बारे म ें पढ़ रह े ह ैं । िह छात्रों के ज्ञान को अन्य िािनों ि –विशषे कर अपने व्यैवक्तक ज्ञान ि बढ़ाने का परा-परा यत्न करेगा । उिके छात्र अनभि करेंग े वक भाषा-पढ़ते हए ि े विश्व की िबि े ु ू ू ु िजीि,रोचक और उपयोगी चीज पढ़ रह े ह ैं । वहदी पाठ्य-पस्तक पढ़ते हए उन्ह ें छात्रों क

ो अपनी प्रगवत ु ु ु ां का आभाि होते रहना चावहए । िाराशतः मातभाषा का वशक्षर् एक बहमखी और जवटल कायभ ह ै। इिकी पाठ्य-पस्तक अन्य विषयों के ु ृ ु ु ु ां पाठ्य-पस्तक के िमान िवनवश्चत उद्दश्े यों ि बद् नहीं रह िकती । क्योंवक मातभाषा की वशक्षा दते े हए हम ु ृ ु ु ु िास्ति म ें भाषा िारा विखाये जाने िाले लगभग िभी विषयों की वशक्षा एक िाथ द े रह े होते ह ैं । ितभमान भाषा-वशक्षर् पद्वत म ें पाठ्य-पस्तक

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **257**

का स्थान िािोपरर ह ै। इि व्यिस्था म ें बहत िी कवमयाँ ु ु ु ह,ैं लेवकन इि बात ि े इकार नहीं वकया जा िकता वक वकिी भी भाषा-वशक्षर् पद्वत म ें पाठ्य-पस्तक का ु ु ां स्थान

प्रमख रहगे ा । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 118 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.9 अभ्य िा प्रश्नों के उत्त र 1. ग्रथ का अथभ ह-ै 'गथना' , बिाना, क्रम ि रखना, वनयवमत ढग ि जोडना आवद । गरुकलों म ें ू ु ु ां ां ां ां आचायभ लोग भोजपत्र या ताडपत्र को अपने वशक्षकों के िमक्ष क्रम ि रखते थे । उनके बीच म ें छेद करके वकिी िाग े ि गथाँ भी दते े थे,अतः इन्ह ें ग्रन्थ नाम वदया गया । पस्तकों के वलए इन ू ु भोजपत्रों के कारर् यह शब्द पाियपस्तकों के वलए प्रचवलत हो गया । ु ु 2. जो विद्याथी वकिी शारीररक या बौवद्क िीमाओ के चलते कक्षा के अन्य विद्यावथभयों के िाथ ां वशक्षर् वबदओ का अविगम नहीं कर पाते, िह घर पर अवभभािकों िे पस्तक की िहायता ि ु ां ां ां ु उिका अभ्यिा कर िकत े ह ैं । 3. परक पस्तकों का स्िरुप पाियपस्तक ि कम औपचाररक होता ह ै और इिका वनमाभर् ु ू ु ु विद्यावथभयों में स्िाध्याय ,मौन-पाि और िािहत्यालोचन की प्रिवत का विकाि के वलए वकया ृ जाता ह ै। 4. िन्दभ-भ पस्तकों का उपयोग िररष्ठ कक्षाओ म ें पाठ्य तथा परक पस्तकों िारा प्रदत्त ज्ञान के ु ु ू ु ां

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.apnakhata.co/how-to-check-bhulek… + 2 resources! id: **258**

विस्तार के वलए वकया जाता ह ै तावक विद्याथी िह-म्बन्ि ि अन्य विषयों, िन्दभ,भ प्रिग के बारे ां म ें और जानकारी प्राप्त कर

िकें । 5. पाियपस्तक की िामग्री जीिनोपयोगी एिं कक्षा ि बाहर बालक के जीिन ि िम्बद् होनी ु ु ां चावहए । 6. िपादक नौका के कप्तान की तरह होता ह ै। ां 2.10 िंदभ भ ग्रांथ िची ू 1. गप्त, मनोरमा,भािा -हिक्षण हसद्धात और प्रहर्हध आगरा,के न्िीय वहदी, िस्थान (2010) ु े ां ां 2. चौहान,रीता,हिदी हिक्षणआगरा,अग्रिाल, पवब्लके शन 17-2016, े 3. श्रीिास्ति,डॉ.रविन्िनाथ, भाषा-वशक्षर्,िार्ी प्रकाशन,2005,नई वदल्ली 4. मगल एि.के ,शभ्रा, व्यािहाररक विषयों म ें अविन्िान विवियाँ,पी एच आई लवनिंग प्राइिटे ु ु ां वलवमटेड,नई वदल्ली,2014 5. पाण्डेय,श्रवतकात ,वहदी भाषा और इिकी वशक्षर् विवियाँ, पी एच आई लवनिंग प्राइिटे ु ां ां वलवमटेड,नई वदल्ली,2014 6. चतिदे ी,रामस्िरूप(2005), वहदी िावहत्य और िदंे ना का विकाि , लोकभारती प्रकाशन,नई ु ां ां वदल्ली उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 119 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2.11 धनबिात्म क प्रश्न ां 1. भाषा वशक्षर्-अविगम म ें पाियपस्तक की महत्ता बताए ँ । ु ु 2. पाियपस्तक के विवभन्न प्रकारों का विस्तारपिकभ िर्नभ करें । ु ु ू 3. एक उत्तम पाठ्य-पस्तक म ें कौन िी विशषे ताए ँ होनी चावहए ? ु ु 4. पाियपस्तक म ें कौन ि दोष हो िकते ह ैं ? वबन्दिार िर्नभ करें । ु ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 120 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 3- हिदी भाषा में उपलब्धि के मूलयांकन ित ु परीक्षण 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 उपलवब्ि परीक्षर् ि आशय 3.4 उपलवब्ि परीक्षर् की आिश्यकता 3.5 उपलवब्ि परीक्षर् का महत्ि 3.6 परीक्षर् का वनमाभर् 3.6.1 परीक्षर्-वनमाभर् के ध्यातव्य वबद ां ु 3.6.2 िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों का वनमाभर् एिं उपयोग ु ां 3.7 उपलवब्ि परीक्षर् वनमाभर् की प्रवक्रया एिं विशेषताएँ ां 3.7.1 अध्यापक वनवमभत एिं मानकीकत परीक्षर् का अतर ृ ां ां 3.7.2 उपलवब्ि परीक्षर् वनमाभर् के िोपान 3.7.3 िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों के मानक ु 3.8 िाराश ां 3.9 अभ्यिा प्रश्नों के उत्तर 3.10 िन्दभभ ग्रन्थ िची ू 3.11 वनबिात्मक प्रश्न ां 3.1 प्रस्तावना वशक्षर् और मल्याकन परस्पर िबि प्रवक्रयाए ह ैं । अध्यापक तथा छात्र, दोनों ही वशक्षर् और अविगम ू ां ां ां ां की प्रवक्रया के महत्िपर् भ अग ह ै। छात्र िीखने म ें वकि िीमा तक िमथभ हो िका ह ै और अध्यापक का ू ां वशक्षर् वकतना प्रभािशाली ह,ै इिका

िमय िमय पर मल्याकन करना आिश्यक ह ै । ू ां अध्ययनों िारा यह प्रमावर्त वकया गया ह ै वकिी के हए ज्ञान की जानकारी, उिका मल्याकन अविगम ु ू ां और वशक्षर् की प्रवक्रया म ें िहायक ह ै । इि द्दवष्ट ि मल्याकन अविगम- प्रवक्रया का अवभन्न अग ह ै । ू ां ां परीक्षर् मल्याकन का िािन ह।ै ' मल्याकन'

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **259**

शब्द का प्रयोग बालक के िमग्र विकाि के िदभ भ म ें वकया ू ू ां ां ां जाता ह।ै

Quotes detected: **0%** id: **260**

'परीक्षर्'

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **261**

शब्द का प्रयोग वनवदष्टभ वशक्षर् वबद, िीखे गए ज्ञान अथिा कशलता के िदभ भ म ें होता ु ां ां ु ह

।ै अतः मल्याकन के वलए परीक्षर् आिश्यक ह।ै परीक्षर् के िारा अविगम- प्रवक्रया की कायभकाररता, ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 121 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 वनवश्चत उद्दश्े यों के िदभ भ म ें उिका विकाि आवद का विरर् तथा लेखा जोखा प्राप्त करना िभि ह।ै इि ां ां प्रकार परीक्षर् परीक्षर् की प्रवक्रया िारा वनवश्चत उद्दश्े यों की प्रावप्त के िदभ भ म ें अपनाई गई कायभशलै ी तथा ां वक्रयात्मकता का विवित विचे न वकया जाता ह ै । परीक्षर् के विवभन्न स्िरूपों यथा- वनबात्मक, िस्तवनष्ठ तथा लघ उत्तर, कौशल परीक्षर्, प्रिीण्य ु ु ां परीक्षर्, उपलवब्ि परीक्षर् आवद की िहायता ि िमग्र शैवक्षक प्रवक्रया का मल्याकन िभि ह।ै ू ां ां 3.2 उद्दश्े य इि इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. उपलवब्ि परीक्षर् के िप्रत्यय का िर्नभ कर पायेंग े । ां 2. वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया म ें उपलवब्ि परीक्षर् की आिश्यकता एि महत्त्ि का बोि विकवित होगा । ां 3. वशक्षक वनवमतभ उपलवब्ि परीक्षर् एि मानकीकत उपलवब्ि परीक्षर् म ें अतर स्पष्ट कर पायेंग े । ृ ां ां 4. उपलवब्ि परीक्षर् के वनमाभर् में रख े जाने िाली आिश्यक िाििावनयों का िर्नभ कर पायेंग े । 5. उपलवब्ि परीक्षर् वनमाभर् के िोपानों का क्रमबद् िर्नभ कर पायेंग े । 6. उत्तम उपलवब्ि परीक्षर् के विशषे ताओ का िर्नभ कर िकने का कौशल विकवित होगा । ां 3.3 उपिब्ि परीक्षि ि आशय उपलवब्ि परीक्षा या उपलवब्ि परीक्षर् पर मानि जीिन के विवभन्न व्यिा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **262**

य क्षेत्रों की तलना म ें शवै क्षक ु क्षेत्र म ें जयादा लोकवप्रय ह ै । अपने शावब्दक अथभ म ें उपलवब्ि परीक्षा ि अवभप्राय वकिी अिवि विशषे में वकिी एक या अन्य अविगम क्षेत्र म

ें, अपने अविगम यह प्रवशक्षर् प्रयािों के िारा एक विद्याथी ने जो कछ भी उपलवब्िया अवजतभ वकया ह ै उिके मापन और मल्याकन के वलए प्रयक्त परीक्षर् ि ह ै । ु ू ु ां ां उपलवब्ि परीक्षा के िबि म ें विवभन्न विद्वानों के विचार द्दष्टव्य ह ै - ां ां □ िहखया और अन्य: हमारे विद्यालयो म ें प्रयक्त होने िाले विवभन्

Plagiarism detected: **0.03%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 4 resources! id: **263**

न प्रकार के परीक्षर्ों म ें िबि ु ु जयादा प्रचलन उपलवब्ि परीक्षर्ों का होता ह ै । उनका प्रयोजन यह मापन करना होता ह ै क

ी औपचाररक और अनौपचाररक अनदशे न के पररर्ाम स्िरुप विद्यावथभयों ने क्या और वकतना ु अविगम वकया ह ै । िह शवै क्षक अविगम म ें व्यवक्तयों या िमहों की वनष्पवत्त के ितभमान स्तर का ू मापन करते ह ैं । □ बेतट एर् किान : उपलवब्ि परीक्षर् यह मापन करने का प्रयाि करते ह ैं की एक व्यवक्त ने क्या ं अविगम वकया- उिके वनष्पवत्त का ितभमान स्तर क्या ह ै ? विद्यालयों म ें उपयोग वकए जाने िाल े परीक्षर्ों म ें उपलवब्ि परीक्षर्ों का ही िबि जयादा प्रयोग वकया जाता ह ै । यह परीक्षर् व्यवक्त या िमह के शक्षै वर्क अविगम स्तर का वनिाभरर् करने म ें विशेष रूप ि िहायक होते ह ैं । ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 122 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 विद्यावथभयों को अगली कक्षा म ें भेजने या वकिी विशेष कक्षा म ें रोकने के वलए इन्हीं उपलवब्ि परीक्षर्ों के प्राप्ताकों का प्रयोग वकया जाता ह ै । यह विद्यावथभयों की योग्यताओ एि कमजोरर्यों ां ां ां का वनदान करन े के वलए प्रयोग म ें लाए जाते ह ैं तथा इन्हीं के आिार पर विद्यावथभयों को परस्का

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **264**

र, ु छात्रिवत्त या उपाविया आवद प्रदान वकए जाते ह ैं । ृ ां इिका िबि छात्र की उपलवब्ियों के मल्याकन ि ह।ै इिके िारा एक प्रकार ि छात्र की भाषाई िप्रावप्त ू ां ां ां ां का, उपलवब्ियों का मापन िभि ह ै । छात्र

ने अध्येय भाषा पर वकतना अविकार प्राप्त कर वलया है, उिकी ां शवै क्षक उपलवब्ि क्या ह,ै इिका अनमान लगाया जा िकता ह।ै यह परीक्षर् वकिी पाियक्रम पर ् ु आिाररत नहीं होते । यह िामान्यतः बाह्य परीक्षकों िारा वनवमतभ होते ह।ैं परीक्षर् तैयार हो जाने पर उिका पि भ परीक्षर् वकया जाता ह ै और उनको मानकीकत वकया जाता ह।ै इिके िारा छात्र की अन्य भाषाई ृ ू उपलवब्ियों का अध्ययन वकया जाता ह ै और उनका औित वनिाभररत वकया जाता है। यह परीक्षर् वनवश्चत उद्दश्े यों की िीमा म ें ही िैि एि विश्विनीय माना जाता ह ै । िामान्यतः प्रगवत परीक्षर् को भी इिके ां अतगतभ िमाविष्ट मान वलया जाता ह।ै परत इन दोनों म ें अतर ह।ै प्रगवत परीक्षर् वनिाभररत पाियक्रम पर ् ु ां ां ां आिाररत होता ह ै और छात्र की वनरतर प्रगवत का द्योतन करता ह ै

जबकी उपलवब्ि परीक्षर् का उद्दश्े य ां िमग्र भाषा ही उपलवब्ि का मापन ह ै । भाषाई परीक्षर् िबिी विचारिराआे म ें िमयि-मिय पर पररितभन हआ ह।ै िस्ततः भाषा परीक्षर् की ु ु ां ां ां िकल्पना का िबि भाषा विषयक विचारिराआे ि ह ै । भाषाविषयक यह विचारिराए भाषा परीक्षर् ां ां ां ां ां के विद्ातों को प्रभावित करती ह।ैं परपरिादी विचारिरा म ें भाषा को एक िस्त माना गया तथा उच्चारर् ु ां ां को महत्ि नहीं वदया गया। वशक्षर् म ें व्याकरर्-अनिाद पद्वत का िमथभन वकया गया। परीक्षर् प्रवक्रया ु मख्यतः वनबित्मक रही । िरचनािादी विचारिरा भाषा को यावत्रक प्रवक्रया मानती ह,ै वजिम ें भाषा को ु ां ां उत्तजे ना के प्रवत की गई प्रवतवक्रया माना गया ह ै । भाषा-अविगम अनकलन पर आिाररत ह।ै वशक्षर् ु ू िस्ततः भाषाई िरचनाओ का वशक्षर् ह।ै परीक्षर् का िािन बहविकल्प िस्तवनष्ठ प्रश्न ह।ै भाषा का ु ु ु ां ां रूपातरर् परक दृवष्टकोर् भाषा को िजनभ ात्मक ए वनयम पर आिाररत मानता ह ै । भाषा वशक्षर् ए ां ां ां अविगम की दृवष्ट ि इिकी िभिानाए बहमखी ह।ैं परीक्षर् का उद्दश्े य िमस्या प्रस्तत करना ह ै वजिके ु ु ु ां ां िमािान म ें भाषा का िचेतन रूप ि प्रयोग होता ह।ै स्पष्ट ह ै वक भाषा- िज्ञै ावनक तथा मनोभाषा -िज्ञै ावनक विद्ात वशक्षर् ए परीक्षर् के विद्ातों तथा प्रवक्रया को प्रभावित करते ह ैं । िामान्य परीक्षर्ों की तलना ु ां ां ां म ें भाषा परीक्षर्ों की कछ विशषे ताए ह ैं । यह विशेषताए वनम्नवलवखत हो िकती ह-ैं ु ां ां i. भाषा परीक्षर् अन्य विषयों के परीक्षर् की तलना म ें एक जवटल प्रवक्रया ह।ै इिका प्रमख कारर् ु ु स्िय भाषाई प्रवक्रया की जवटलता ह।ै इिम ें एक िाथ भाषा िज्ञै ावनक, मनोिज्ञै ावनक तथा िमाज ां िज्ञै ावनक घटकों का िमािेश रहता ह।ै अतः भाषा अध्येता ए प्रयोग की विशषे ताओ के ां ां आकलन ए परीक्षर् के िमस्याओ की जवटलता इिका िहज परर्ाम ह ै । ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 123 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. अन्य विषयों के परीक्षर् के िदभ भ म ें भाषा-परीक्षर् की जवटलता का दिरा कारर् यह ह ै वक ां ू भाषा म ें ही मातभाषा-भा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 3 resources! id: **265**

षी प्रयोक्ता तथा मातभाषा ि इतर प्रयोक्ता की िकल्पनाए वक्रयाशील ृ ृ ां ां होती ह ैं । अन्य विकी विषय में अन्य प्रयोक्ता का प्रश्न ही नहीं उिता । iii. भाषा पर परीक्षर्ों की जवटलता का तीिरा प

्रमख कारर् ह ै परीक्षर् वबद की प्रकवत । भाषा ृ ु ां ु मख्यतः कौशल प्रिान विषय ह ै जबवक अन्य विषय ज्ञान और विषय-िस्त प्रिान ह।ै कौशल ु ु का परीक्षर् अपने आप म ें एक जवटल िमस्या ह ै । भाषा म ें प्रिाीण्य परीक्षर्ों के वनमाभर् की जवटलता इिका प्रत्यक्ष प्रमार् ह।ै तथ्य ए ज्ञान प्रिान विषयों म ें प्रिाीण्य परीक्षा का वनमाभर् ां अपेक्षाकत िरलता ि होता ह ै । परत भाषा-परीक्षक का अवतररक्त दावयत्ि परीक्षर् िामग्री का ृ ु ां वनमाभर् तथा अविगम स्तर का परीक्षर् करना ह,ै िाथी िामग्री की िैिता को प्रमावर्त करना भी आिश्यक ह।ै अन्य भाषा के िदभ भ में परीक्षर् वकया िमस्या और भी जवटल हो जाती ह।ै जो भी ां हो परीक्षर् का लक्ष्य वशक्षर् अविगम प्रवक्रया को िचारु रुप ि विकवित करने म ें िहायता दने ा ु ह।ै अभ्यास प्रश्न 1. िरचनािाद के अनिार भाषा कै िी प्रवक्रया ह ै ? ु ां 2. भाषा और अन्य विषयों की प्रकवत म ें मल अतर बतायें । ृ ू ां 3.4 उपिब्ब्ि परीक्षि की आवश्यकता वशक्षर् का उद्दश्े य

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **266**

छात्र के व्यिहार म ें िावछत पररितभन लाना ह।ै प्रवशक्षर् तथा अनभि के फलस्िरुप ु ां व्यिहार के पररितभन को अविगम कहा जाता ह

।ै वशक्षर् के क्रम म ें वनिाभररत लक्ष्यों की प्रावप्त म ें छात्र वकि िीमा तक िमथभ हो िकते ह,ैं विखाए जाने िाले ज्ञान और कौशल को िीखने म ें उिने वकतनी ां वनपर्ता अवजतभ की ह,ै इिके विवित ििचे न की प्रवक्रया को अविगम- मल्याकन के नाम ि अवभवहत ु ू ां वकया जाता ह।ै वशक्षर् की प्रवक्रया वनवश्चत उद्दश्े यों के आिार पर गवतशील होती ह ै । वशक्षर् म ें वनवदष्टभ उद्दश्े यों की पवत भ ू कहा तक हई ह,ै इिका मल्याकन करना अत्यत आिश्यक ह ै । इिी के अनरूप वशक्षर् प्रवक्रया म ें िावछत ु ू ु ां ां ां ां पररितभन िभि ह ै अतः मल्याकन की आिश्यकता स्ितः स्पष्ट ह ै । ू ां ां मल्याकन का महत्ि इि तथ्य ि भी प्रकट होता ह ै वक वशक्षर् म ें इिकी िािरात्मक भवमका होती ह।ै ू ू ु ू ां मल्याकन के िल मल्याकन के वलए ही नहीं वकया जाता, बवल्क अविगम और वशक्षर् प्रवक्रया में िािर ू ू ु ां ां की दृवष्ट ि वकया जाता ह ै । छात्र वनिाभररत लक्ष्यों की प्रावप्त में वकि कारर् ि िमथभ नहीं हआ ह ै ? क्या ु वशक्षर् प्रवक्रया दोषपर् भ ह?ै क्या अविगम प्रवक्रया म ें कोई व्याघात उत्पन्न हआ ह ै ? आवद बातों की ु ू जानकारी मल्याकन के िारा ही िभि ह।ै अतः अविगम म ें िावछत िहायता दने े ,वशक्षर् अविगम ू ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 124 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पररिशे म ें िमवचत पररितभन लाने तथा शवै क्षक प्रवक्रया को यथािभि अविक प्रभािशाली बनाने म ें ु ां मल्याकन का विशषे योगदान ह ै । ू ां मल्याकन का िबि

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **267**

छात्रों की अविगम प्रवक्रया ि ह।ै अविगम प्रवक्रया के िबवित िभी घटकों, ू ां ां ां ां ां योग्यताओ तथा इिम ें वस्थवतयों का स्ितह िमािशे हो जाता ह ै । छात्रों की योग्यता, उनकी विवि ां मानविक ए िंिगे ात्मक शवक्तया, विवि प्रकार क

ी कशलताओ आज की जानकारी मल्याकन िारा ु ू ां ां ां ां ां िभि ह ै । अतः इि ि न के िल उनकी उपलवब्ियों की िचना वमलती ह ै बवल्क यह िमवचत मागदभ शनभ में ू ु ां िहायक ह ै । मल्याकन वशक्षर् प्रवक्रया ि िबि ह ै । वनिाभररत पिाय विषय ि िबवित कशलताओ के विकाि म ें ृ ू ु ां ां ां ां ां ां प्रयक्त वशक्षर् विवि तथा यवक्तया वकि िीमा

तक उपादये ह,ै इि जानकारी के आिार पर वशक्षर् ु ु ां तकनीकों म ें पररितभन पररिभन िभि ह ै । अध्यापक वशक्षर् को प्रभािी बनाने, वनवश्चत उद्दश्े यों की पवतभ ू ां करने के वलए शक्षै वर्क वक्रयाओ के चयन म ें विशेष ितकभ ता ि काम कर िकता ह ै । अध्यापक की कायभ ां क्षमता, वशक्षर् के प्रवत उिका दृवष्टकोर् तथा वशक्षर् ि िबवित अन्य गवतविविया विशेष रुप ि े ां ां ां वनदवे शत एि वनयवत्रत होती ह ैं । ां ां वशक्षर् प्रवक्रया म ें पाियक्रम तथा वशक्षर् िामग्री का भी महत्िपर् भ स्थान ह ै । अविगम एि वशक्षर् की ृ ू ां दृवष्ट ि पाियक्रम तथा पािय िामग्री की उत्कृष्टता का वनिाभरर् आिश्यक हो जाता ह।ै मल्याकन इि ृ ृ ृ ू ां कायभ म ें भी अध्यापक की िहायता करता ह।ै शवै क्षक प्रवक्रया म ें वनिाभररत लक्ष्य प्रथम लक्ष्यों की प्राविप्त के स्तर की तलना करते हए अध्यापक वशक्षर् िामग्री म ें िािछत पररितभन एि पररिभन करता ह ै । इि प्रकार ु ु ां ां पािय िामग्री के चयन एि वनमाभर् म ें मल्याकन का महत्ि स्िीकत ह ै । ृ ृ ू ां ां 3.5 उपिब्िि परीक्षि का महत्व ऊपर वदए गए िर्नभ ि भाषा परीक्षर् का महत्ि स्ितह स्पष्ट ह ै । भाषा परीक्षर् के चयन अथिा वनमाभर् ि पि भ यह वनवश्चत कर लेना चावहए यह वकि उद्दश्े य की पवतभ के वलए वकि प्रयोजन ि भाषा परीक्षर्ों का ू ू वनमाभर् वकया जा रहा ह ै । इन भाषा परीक्षर्ों के माध्यम ि अनेकानेक उद्दश्े यों की प्राविप्त िभि ह ै । यह ां कायभ वनम्नवलवखत हो िकते ह ैं । i. अनसधान-भाषा- परीक्षर् का मख्य कायभ अिनिान ह ै । मात्री भाषा तथा अन्य भाषा के िदभ भ ु ु ु ं ां ां म ें विकवित परीक्षर् हो अथिा भाषा प्रयोगशाला के िवनयोवजत औपचाररक पररिशे और िहज ु स्िाभाविक िदभों म ें प्रयक्त भाषा परीक्षर् िस्ततः छात्र की प्रगवत के िचक ह ै । इिके आिार ु ु ू ां पर अिनिान की निीन वदशाए स्पष्ट होती ह ैं । भाषा परीक्षर् का मख्य कायभ भाषाई अिनिान ु ु ु ां ां ां को गवत दने ा ह ै । ii. प्रगहत का मापन- भाषा परीक्षर् का प्रायोजन वशक्षर् िामग्री तथा वशक्षर् प्रर्ाली की तलना ु करना ह ै वजििे उनम ें िािछत पररितभन लाया जा िके । प्रगवतपरक परीक्षर्ों का उद्दश्े य वनिाभररत ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 125 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 स्तर के िदभ भ म ें छात्रों की प्रगवत के आकडे प्रस्तत करता ह ै । इि दृवष्ट ि इन परीक्षर्ों का महत्ि ु ां ां एि प्रक्रम िस्पष्ट ह ै ।िमस्त परीक्षाए तथा ज्ञान के मापन की विवि प्रर्ावलयाँ प्रगवत परीक्षर् के ु ां ां ही विवि रूप ह ै । iii. हनहदिष्ट व्यिहार का द्योतन- भाषा- अविगम का लक्ष्य भाषा पर अविकार प्राप्त करना ह ै । भाषा पर यह अविकार भाई कशलता के रूप म ें दृवष्टगत होता ह ै । अतः भाषाई परीक्षर् कर दावयत्ि ु प्रारवभक तथा अवतम स्तर पर वनवदष्टभ भाषाई व्यिहार का द्योतन करना ह ै । ां ां भाषा के क्षेत्र म ें प्रयक्त विवि परीक्षर्ों की प्रकवतगत विवशष्टताओ का अध्ययन करने पर इनकी ृ ु ां उपयोवगता स्पष्ट होती ह ै । iv. पाठयिम मागिदिन- भाषा परीक्षर्ों का दावयत्ि वशक्षर् अविगम प्रवक्रया को प्रभावित करना व ह ै बवल्क पाियक्रम म ें िािछत पररितभन की ओर िके त भी करना ह ै । इतना ही नहीं, परीक्षर् के ् ां ां माध्यम ि छात्रों में उद्दश्े य की चेतना भी विकवित होती ह,ै वजििे ि े अविगम प्रवक्रया म ें वनिाभररत लक्ष्य और भाषाई कशलता के वनवदष्टभ स्तर ि पररवचत होते ह ैं । ु 3.6 परीक्षि का धनमाि परीक्षर् वनमाभर् के पि भ अध्यापक को कछ आिश्यक बातों पर ध्यान कें वित करना पडता ह ै । भाषा ू ु अध्यापक वनिाभररत िमय का अविक ि अविक िदपयोग करना चाहता ह,ै अतः भाषा अविगम की ु भावत मल्याकन के क्षेत्र म ें भी उिे छात्रों ि वमत्रतापर् भ िबि स्थावपत करना पडता ह ै । उनम ें इिके प्रवत ू ू ां ां ां ां पयाभप्त अवभरुवच एि जागरुकता उत्पन्न करनी पडती ह,ै वजििे िह िहज रूप म ें मल्याकन की प्रवक्रया म ें ू ां ां भाग ले िकें । वशक्षर् प्रवक्रया के िारा वनवश्चत

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **268**

लक्ष्य की प्राविप्त का प्रयत्न वकया जाता है। अतः वशक्षर् के विवि िािनों म ें लक्ष्य क

ी एकरूपता स्थावपत करना आिश्यक ह ै । यही कारर् ह ै वक कक्षा म ें पढ़ाई गई िामग्री तथा प्रयोगशाला म ें अभ्याि की जाने िाली िामग्री म ें िबि स्थावपत करना जरूरी िमझा जाता ां ां ह ै और इनके िारा वनवश्चत

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **269**

लक्ष्य की प्राविप्त का प्रयत्न वकया जाता ह ै । इि प्रकार परीक्षर् योजना का भी लक्ष्य कें वित होना आिश्यक ह ै । परीक्षर् के िारा यह वनिाभररत वकया जाता ह ै वक छात्र वनवश्चत भाषा इन लक्ष्यों क

ो प्राप्त करने म ें कहा तक िमथभ हो िकता ह ै । अतः अध्यापक के वलए यह आिश्यक हो जाता ह ै ां वक िह कक्षा परीक्षर् म ें िबवित कछ मख्य बातों पर विशेष ध्यान द-ें ु ु ां ां 3.6.1 परीक्षण हनमािण के ध्यातव्य हबद ं ु i. हनधािररत उद्देश्यों का तपष्टीकरण एर् तदनरूप परीक्षणों का हनमािण - परीक्षर् के पि भ ु ू ं िमय-िमय पर भाषा अध्यापन ि िबवित उन उद्दश्े य की व्याख्या एि स्पष्टीकरर् आिश्यक ह ै ां ां ां वजनको िम्मख रखकर अध्यापन वशक्षर् कायभ म ें िलग्न ह ै । यह दखे ा गया ह ै वक छात्र ु ां विशेषकर िमझदार छात्र परीक्षर् की प्रकवत को बहत जल्दी भाप लेते ह;ैं तदनिार भाषा ु ृ ु अविगम म ें उन्हीं तथ्यों पर विशषे बल दने े लगते ह ैं । उदाहरर् के वलए, यवद अन्य भाषा वशक्षर् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 126 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 म ें छात्रों की भाषर् कशलता के विकाि के उद्दश्े य को कक्षा म ें महत्ि वदया जा रहा है परत ु ु ां परीक्षर् म ें लेखन को प्रिानता दी गई है, तो छात्र वनिाभररत उद्दश्े य पर ध्यान नहीं दते े । अतः यह आिश्यक ह ै की परीक्षर् वनिाभररत उद्दश्े यों के अनरूप हो । उद्दश्े य एि व्यिहार की एकरूपता ु ां भाषा अविगम म ें विशषे रूप ि िहायक होती ह ै । इि एकरूपता के अभाि म ें परीक्षर् उद्दश्े य की पवतभ म ें अिफल रहता ह ै । उद्दश्े य के अनरूप ही परीक्षर् िामग्री का प्रयोग आिश्यक ह ै । ू ु ii. परीक्षण के उद्देश्य की जानकारी- अन्य भाषा के वशक्षर् म ें विवभन्न भाषाई तत्िों का परीक्षर् वकया जाता ह ै । परीक्षर् के पि भ अध्यापक तो यह वनवश्चत कर लेना चावहए वक िह छात्रों का ू परीक्षर् वकि उद्दश्े य ि कर रहा ह।ै

इिके अनिार ही परीक्षर् के स्िरूप का वनिाभरर् िभि ह ै ु ां और तदनिार परीक्षर् िामग्री का चयन वकया जा िकता ह।ै परीक्षर् का उद्दश्े य

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **270**

छात्र की प्रगवत ु को नापना ह ै अथिा उिकी भाषाई उपलवब्ि का मल्याकन करना ह ै अथिा छात्र क

ी िभावित ू ां ां योग्यता का अनमान लगाना ह ै अथिा उिके प्राविण्य का परीक्षर् करना ह?ै यह वनवश्चत करना ु आिश्यक ह ै । विवभन्न उद्दश्े यों के अनरूप परीक्षर् के प्रकार एि स्िरूप म ें वभन्नता पाई जाती ह ै ु ां । कक्षा म ें उपयक्त परीक्षर् का प्रयोग करन े के वलए यह आिश्यक ह ै की परीक्षर् के लक्ष्य का ु पि भ वनिाभरर् वकया जाए। तभी परीक्षर् की प्रवक्रया िफल हो िकती ह ै । ू iii. छात्र की प्रगहत को प्रोत्साहित करना-परीक्षर् को वशक्षर् प्रवक्रया के अविनायभ अग के रुप म ें ां स्िीकार करना आिश्यक ह ै । िस्ततः परीक्षर् का उद्दश्े य वशक्षर् प्रवक्रया म ें िहायता देना ह,ै ु अतः इि वशक्षर् का स्िाभाविक एि अविनायभ िोपान मानना उवचत होगा । इिके वलए यह ां जरूरी ह ै की परीक्षर् कायभ म ें लगाया गया िमय शवै क्षक अनभि की दृवष्ट ि उपादये

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **271**

हो । छात्रों ु को पयाभप्त का अििर वदया जाए वजििे िह अध्येय भाषा म ें विवशष्ट वशक्षर् वबदओ ि िबवित ां ां ां ां ु विवभन्न कशलताओ का विकाि कर िकें । परीक्षर् का उद्दश्े य छात्रों की त्रवटयों की ओर िके त ु ु ां ां करना नहीं ह ै बवल्क िही उत्तर की प्रेरर्ा दने ा ह।ै इिके वलए यह आिश्यक ह ै वक छात्रों को उत्तर दने े का पयाभप्त िमय वदया जाए वजििे ि े जो भी कछ जानते ह ैं उिको अवभव्यक्त कर िकें । ु छात्रों क

ो परीक्षर् के पररर्ाम

Plagiarism detected: **0.05%** https://prosarkariresult.com/wp-content/upload… + 2 resources! id: **272**

की जानकारी परीक्षर् के पश्चात वजतनी जल्दी दी जा िके , उतना ही लाभदायक ह ै । परीक्षर् पररर्ाम का तरत अवभज्ञान, अविगम की प्रवक्रया को प्रोत्िावहत ु ां करता ह ै । िही उत्तर की जानकारी ि िह

िीखने के वलए उत्प्रेररत होता ह ै । अन्य भाषा- वशक्षर् का उद्दश्े य छात्र म ें अन्य भाषा के व्यिहार की कशलता उत्पन्न करना ह ै । ु इिके वलए वशक्षर् के िाथ ही िाथ परीक्षर् म ें भी उन बातों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.viahindi.in/2024/07/k-kh-g-gh-in-eng… id: **273**

पर ध्यान दने ा जरूरी ह ै वजििे भाषाई कशलता के विकाि में िहायता वमले । कक्षा परीक्षर्ों म ें तथा वक्िजों म ें अन्य भाषा के ु प्रयोग

पर ही बल दने ा उवचत ह ै । परीक्षर् म ें अन्य भाषा का ही प्रयोग वकया जाए । िबवित ां ां िचनाए भी अध्येय भाषा म ें ही दी जाए । यवद छात्र अन्य भाषा म ें वदए गए वनदशे ों को िमझने म ें ू ां अिमथभ ह ै तब मातभाषा म ें वनदशे वदए जा िकते ह ैं । परीक्षर् म ें भाषा के िही रूप एि िही ृ ां िाँचों

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **274**

का प्रयोग विखाया जाए वजििे भाषा के िही रूप के प्रयोग का अभ्याि दृढ़ हो िके । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 127 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. हनधिाररत समय में एक िी हिक्षण हबद का परीक्षण हकया जाए-परीक्षर् के वलए एक ही ं ु वशक्षर् वबद का चयन करना उवचत ह ै । परीक्षर् के िारा छात्रों की प्रगवत का, उनकी योग्यता का ां ु िही-िही मल्याकन करने के वलए विवशष्ट वशक्षर् वबद का चयन आिश्यक ह ै । भाषाई कौशलों ू ां ां ु के परीक्षर् म ें विस्तार की अपेक्षा गहराई महत्िपर् भ ह ै । िीवमत िमय म ें अनेक तत्िों का एक ू िाथ परीक्षर् करने पर कोई िंतोषजनक पररर्ाम नहीं वनकलता, वजििे

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **275**

छात्र की प्रगवत म ें ां िहायता नहीं वमलती । इिके विपरीत विवशष्ट वशक्षर् वबद पर आिाररत परीक्षर् वनवश्चत रूप में ां ु वशक्षर् म ें िहायक होते ह ैं । उदाहरर् के वलए, छात्र क

ी भाषर् कशलता का परीक्षर् करते िमय ु मौवखक अवभव्यवक्त ि िबवित एक- एक कशलता का अलग-अलग परीक्षर् करना आिश्यक ु ां ां ह ै । अत म ें िभी कशलताओ का िमवन्ित रूप म ें परीक्षर् वकया जा िकता ह ै । इि िबि म ें इि ु ां ां ां ां बात पर भी ध्यान दने ा आिश्यक ह ै वक उन्हीं वशक्षर् वबदओ का परीक्षर् वकया जाए वजन्ह ें कक्षा ां ां ु वशक्षर् म ें महत्ि वदया गया ह ै । इि प्रकार परीक्षर् म ें महत्िपर् भ अशों पर ध्यान कें वित करना ू ां आिश्यक ह ै । v. परीक्षण-समय अनाश्यर्क रूप से लम्बा निीं िोना चाहिए – परीक्षर्ों के वलए वनिाभररत वकया गया िमय छात्रों के स्तर के अनकल होना चावहए । वजििे ि े परीक्षर् ि ना तो थके और ु ू ना उनम ें अनािश्यक रुप ि परीक्षर् के प्रवत विरवक्त पैदा हो । यह कहा जा चका ह ै वक परीक्षर् म ें ु एक ही वशक्षर् वबद का मल्याकन करना उवचत ह ै । इिि परीक्षर् परीक्षर् म ें वदए वनदशे िवक्षप्त ू ां ां ां ु एि स्पष्ट हो ां vi. परीक्षर् म ें वदए गए वनदशे स्पष्ट और िवक्षप्त होने चावहए । बहिा यह दखे ा गया ह ै के अध्यापक ु ां िारा वदए गए वनदशे इतने अस्पष्ट होते ह,ैं उनकी भाषा इतनी जवटल होती ह ै की छात्र उन्ह ें िमझने म ें अिमथभ होता ह ै ।

फलस्िरूप उत्तर की जानकारी होने पर भी िे िही उत्तर नहीं दे पाते। अतः वनदशे स्पष्ट भाषा मे वदया जाए । कक्षा मे प्रयक्त वनदशेों का ही परीक्षर् मे

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **276**

प्रयोग करना ुउवचत ह,ै तिइ छात्र उन्हे िमझने मे िमथभ होते हैं । वनदशे मे अपररवचत शब्दािली का प्रयोग करने ि छात्रों को कविनाई होती है और िह िही उत्तर देने मे अिमथभ होते हैं । कभी-कभी अविक लबे वनदशेों ि अनािश्यक रुप ि उलझन पैदा होती ह

ै । अतः यह आिश्यक है के ां वनदशे उवचत, तकभ िगत स्पष्ट और िविक्षप्त हो । ां ां vii. परीक्षण समय अनाशर्यक रूप से लबा निीं िोना चाहिए- परीक्षरों के वलए वनिाभररत ं वकया गया िमय छात्रों अनािश्यक रूप ि लबा नहीं होता और छात्रों मे थकान नहीं उत्पन्न ां होती । परीक्षर् के वलए कक्षा के एक अतर की अिवि पयाभप्त है । परीक्षर् इतना ही लबा रखा ां ां जाए की छात्र उिे अतर के दो-वतहाई िमय मे परा कर ले, एक-वतहाई िमय दोहराने के वलए ू ां वनिाभररत करना उवचत है । इि ि न के िल छात्र भल करने ि बच िकता है बवल्क पनरािलोकन ू ु के िारा अपनी त्रवटयों ि बहत कछ िीखता है । ु ु ु viii. भािाई परीक्षणों में पररहचत सदभों

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **277**

का िी प्रयोग हकया जाए- पररक्षर् मे ऐिे िदभों ं ां अथिा ऐिी िामग्री का उपयोग वकया जाए वजििे छात्र पररवचत हैं । अनािश्यक रूप ि जवटल उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 128 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िामग्री और अपररवचत प्रिगों ि छात्रों को कविनाई होती है । फलस्िरूप िही उत्तर जानने पर ां भी िे उनका उत्तर दने े मे अिमथभ होते हैं । इि प्रकार शब्दािली तथा िरचना का परीक्षर् उवचत ां िदभों मे करना चावहए । तिइ परीक्षर् के िाथ ही िाथ छात्र उनके प्रयोग ि भी पररवचत होते ह।ैं ां परीक्षर् मे ऐिे िाक्यों

Plagiarism detected: **0.03%** https://anp.wikipedia.org/wiki/वर्णमाला id: **278**

का प्रयोग करना चावहए जगह िामान्य रुप ि मौवखक अथिा वलवखत अवभव्यवक्त मे प्रयक्त वकया जाता है । िह

अन्य भाषा मे वदए गए वनदशेों को िहज ही आत्मिात ु कर लेता ह।ै परीवक्षत शब्दािली के आिार पर वनवमभत िस्तवनष्ठ परीक्षरों के पररराम अपेक्षाकत ृ ु अविक विश्विनीय होते हैं और परीक्षर् का लक्ष्य परा करते ह।ैं ू ix. कक्षा में हसखाए गए त्यों का िी मल्याकन हकया जाए - परीक्षर् मे उन्ही तथ्यों आपको ू ं िफलताओ का िमािशे करना उवचत है वजन का विवित वशक्षर् वकया गया ह।ै परीक्षरों को ां तैयार करते िमय अध्यापक के िामने कक्षा विशेष का वििरर् होना चावहए। अमक कक्षा को ु क्या विखाया गया ह?ै उिका भाषाई स्

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **279**

तर क्या ह?ै िह वकि कशलता का परीक्षर् करना चाहता ु ह?ै इिके वलए वकि प्रकार क

ा परीक्षर् उपयक्त ह?ै इन बातों की जानकारी आिश्यक ह।ै ु

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **280**

अध्यापक को अपने विषय ज्ञान के आिार पर अथिा अपनी िवुििा के अनरूप परीक्षरों का ु ु वनमाभर् नहीं करना चावहए। उिका उद्दश्े य छात्रों के ज्ञान का परीक्षर् करना है। इिवलए कक्षा के छात्रों का िास

्तविक वचत्र उिके िामने होना चावहए । परीक्षर् वनमाभर् करते िमय िह स्िय ां अपने ि कई प्रश्न पछ िकता ह,ै यथा- क्या परीक्षर् उन्ही वशक्षर् विवियों का मल्याकन करते हैं ू ू ां वजन्

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **281**

है छात्र भली-भावत िीख चका है ? क्या यह छात्रों मे िही प्रवतवक्रया जागत करने मे िमथभ है ृ ु ां ? िाििानी ि तैयार वकया गया परीक्षर् छात्रों क

ी भाषाई कशलता का मल्याकन करने मे ु ू ां िहायक होता है । x. भािाई परीक्षणों का सबध भािाई कौिलताओ से िोना चाहिए- भाषाई कशलता और ु ु ं ं ं भाषा विषयक जानकारी दो अलग अलग तथ्य है ।भाषा ही कशलता ि अवभप्राय ििी

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **282**

भाषा ु के विवभन्न कौशलों पर पयाभप्त अविकार प्राप्त करना है वजििे छात्र श्रिर्, िाचन और लेखन कौशलों मे िमवचत भाषाई दक्षता प्राप्त कर िकें । भाषा के िबि मे िामान्य जानकारी ि तात्पयभ ु ां ां भाषा िबिी कछ वििरर् की जानकारी प्राप्त करना ह

ै । के िल भाषाई वनयमों, विद्ातों को रट ु ां ां ां लेने ि भाषा व्यिहार की कशलता नहीं उत्पन्न होती । कक्षा मे विवभन्

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 6 resources! id: **283**

न कौशलों के प्रयोग का ु अभ्यिा कराया जाता ह ै और छात्रों ि यह अपेक्षा की जाती ह ै वक िह भाषा ही प्रयोग की आदत डालें । अतः छात्रों की भाष

ा ही कशलता को परखने के वलए परीक्षर्ों म ें ऐि व्यिहाररक ु तथ्यों का भी िमािेश करना आिश्यक ह ै । xi. परीक्षण में मनोिैज्ञाहनकता का समािेश होना चाहिए - रक्षा के वलए तैयार वकए गए परीक्षर्ों को मनोिैज्ञ ावनक विद्ातों पर आिाररत करना आिश्यक ह ै । यवद परीक्षर् िामग्री म ें ं मनोिैज्ञ ावनक विद्ातों का िमािेश ह ै तो छात्रों उत्तर दने े के वलए स्ियं ही उत्प्रेररत होता ह ै । यह ं ं दखे ा गया ह ै यवद परीक्षर् िामग्री म ें प्रारभ म ें ही जवटल प्रश्नों का िमािेश वकया जाता ह ै तो ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 129 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 छात्रों उत्तर दने े के वलए स्ितः तैयार नहीं होते, यवद होते भी ह ैं तो ि े इतने आतवकत होते ह ैं उनका ं उत्तर गलत हो जाता ह ै । इि प्रकार परीक्षर् वनिाभररत लक्ष्यों की प्रावप्त करने म ें अिफल होता ह ै । 3.6.2 र्तिहनष्ठ परीक्षणों का हनमाण एर् उपयोग ु ं अन्य भाषा वशक्षर् म ें िस्तवनष्ठ परीक्षर् की महत्ता उपयभक्त वििरर् ि स्पष्ट ह ै । इिकी िहायता ि भाषा ु ु अविगम के विवभन्न पक्षों का परीक्षर् िफलता ि वकया जा िकता ह ै । विवभन्न भाषाई कौशलों ि िबवित िक्ष्म कशलताओ का परीक्षर् इनके िारा िभि ह ै । उदाहरर् के वलए , श्रिर् कौशल म ें ध्िवनयों ू ु ं ं ं ं के िक्ष्मतम अतर की पहचान , भाषर् कौशल म ें ध्िवनयों के उच्चारर् तथा मौवखक अवभव्यवक्त की ू ं कशलता का विकाि, िाचन तथा लेखन िबिी दक्षताए, शब्द भडार तथा व्याकरवर्क िरचना की ु ं ं ं ं ं जानकारी आवद म ें िस्तवनष्ठ अभ्यािों की उपादये ता स्ितःस्पष्ट ह।ै ु i. परीक्षण हबदओ की र्तिहनष्ठता- छात्रों ि िस्तवनष्ठ उत्तरों की प्रावप्त के वलए ऐि प्रश्नों का ु ु ं ं ु गिन वकया जाता ह ै वजनके उत्तर वनवश्चत हो । िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों म ें ऐिी िामग्री का प्रयोग वकया ु जाता ह ै वजिि छात्र वनवदष्टभ उत्तर द े िके । इि ि छात्रों म ें प्राप्त उत्तर का मल्याकन भी िहज एि ू ं ं िरल होता ह ै । यद्यवप इन परखों के वनमाभर् में अविक िमय लगता ह ै परत उनका मल्याकन ु ू ं ं बहत कम िमय म ें

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **284**

होता ह ै । विवभन्न व्यवक्तयों िारा मल्याकन करने पर भी इनके पररर्ाम में ु ू ं एकरूपता पाई जाती ह ै । मल्याकन की िहजता यावत्रक िािनों के प्रयोग

ि अविक स्पष्ट हो ु ं ं जाती ह ै । िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों की विश्विनीयता तथा यावत्रक िािनों के प्रयोग की िुविवा के ु ु ं कारर् यह परीक्षर् अविक प्रचवलत ह ैं । ii. परीक्षण में प्रयक्त पाररभाहिक िब्दार्ली - िस्तवनष्ठ परीक्षर् म ें प्रयक्त पाररभावषक ु ु ु शब्दािली म ें भी िस्तवनष्ठता लाने के वलए एकरूपता स्थावपत की जाती ह ै । परीक्षर् वबद ु ं ु अवनिायभता प्रश्न िाचक िाक्य ही नहीं होते, िामान्य कथन के रूप म ें भी प्रस्तत वकए जाते ह ैं । ू ु बहविकल्पीय परीक्षर् वबदओ म ें प्रारवभक अश को

Quotes detected: **0%** id: **285**

' मख्य िाक्य'

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-feet-to-… + 2 resources! id: **286**

कहते ह।ैं उनके िाथ जो ु ु ं ं ं ं ु विकल्प प्रस्तत वकए जाते ह ैं उन्ह,ें

Quotes detected: **0%** id: **287**

' विकल्प'

या

Quotes detected: **0%** id: **288**

' उत्तर'

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 7 resources! id: **289**

कहा जाता ह ै कहा जाता ह ै इन ु ं विकल्पों म ें ि एक विकल्प िही होता है, उि

Quotes detected: **0%** id: **290**

' िही उत्तर'

कहा जाता ह ै । अन्य विकल्पों अथिा गलत उत्तरों को

Quotes detected: **0%** id: **291**

' िािन अतरक'

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 7 resources! id: **292**

कहते ह ैं । यह ििआन अतरक िामान्यता इतने ां ां वमलते जलते होते ह ैं वक छात्रों को िह

ी उत्तर का भ्रम होता ह ै । यवद यह अतर के स्पष्ट रूप ि ु ां गलत प्रतीत होते ह ैं तो िही उत्तर का पता लगाना िरल हो जाता ह ै । परत ऐि ििआन अतरक ु ां ां परीक्षर् की दृवष्ट ि बहत उपयोगी नहीं होते । ु िस्तवनष्ठ परीक्षर् वबदओ को दो श्रेवर्यों म ें विभावजत वकया जा िकता ह- अनच्छेद वबद तथा ु ु ां ां ां ु ु एकाकी वबद । अनच्छेद वबद म ें परे अनच्छेद को परीक्षर् वबद के रूप म ें स्िीकार वकया जाता ह।ै ु ू ु ां ां ां ु ु ु इिम ें एक अनच्छेद, एक िवक्षप्त कविता अथिा एक िाताभलाप के अितरर्

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **293**

का प्रयोग वकया जा ु ां िकता ह ै । इन अितरर्ों को परीक्षर् पवस्तका म ें वलवखत रुप ि अथिा टेप ररकॉडभ के िारा ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 130 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 प्रस्तत वकया जाता ह ै या भाषा प्रयोगशाला में छा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-feet-to-… id: **294**

त्रों के िम्मख मौवखक रुप ि प्रस्तत वकया ु ु ु जाता ह ै । इन अितरर्ों ि िम्बद् कछ प्रश्न छात्रों ि े पछे जाते ह ैं । िह

अश अथिा प्रश्न जो ु ू ां अितरर्ों के िाथ जडे हए हो , ऐि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **295**

होने चावहए, वजनि यह िही-िही अनमान लगाया जा िके ु ु ु वक छात्र वकतना िमझते ह ैं । अितरर् इि प्रकार का होना चावहए

वक छात्रों ि पढ़कर अथिा िनने के बाद िमझ कर ही उत्तर द े िके । भाषाई परीक्षर्ों म ें वलवखत अितरर् के बदले वकिी ु दृश्य िामग्री का भी उपयोग वकया जा िकता ह ै इिके िारा अथभग्रहर् की कशलता का परीक्षर् ु वकया जाता ह ै । एकाकी परीक्षर् वबदओ म ें प्रायः िाक्य स्ितित्र होता ह ै और इिकी िहायता ि वशक्षर् वबदओ ां ां ां ां ां ु ु का परीक्षर् िभि ह ै यह िामग्री परस्पर िबि नहीं होती प्रत्येक प्रश्न अथिा बाकी एक दिरे ि े ां ां ां ू वभन्न होता ह ै इिम ें आिश्यकतानिार पररितभन वकया जा िकता ह ै इन दोनों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **296**

प्रकार के परीक्षर्ों ु ि छात्रों की भाषाई कशलता के मापन का प्रयत्न वकया जाता ह ै । ु iii. परीक्षण-हबन्दओ का चयन एर् अनततरीकरण- परीक्षर् तैयार करने के पि भ अध्यापक क

ो ु ू ं ं ु यह जानना आिश्यक ह ै वक वि वकन वशक्षर् एि अविगम एि अविगम-वबदओ का मल्याकन ू ां ां ां ां ां ु करना ह ै । इिके वलए कक्षा में पढाई अथिा विखाई गई िामग्री के आिार पर परीक्षर्-वबन्दओ ां ु की िची तैयार करना आिश्यक ह ै । य े परीक्षर्-वबद-विस्तत,स्पष्ट एि पर् भ होने चावहए वजििे ृ ू ू ां ां ु पाियिस्त म ें प्रवतपावदत िभी वबन्दओ का परीक्षर् हो िके । परीक्षर्-वबन्दओ का चयन करने ृ ु ां ां ु ु के पश्चात िरलता ि जवटलता के क्रम म ें उनको अनस्तरीकरर् करने के पश्चात उनपर आिाररत ु प्रश्नों का वनमाभर् करना आिश्यक होता ह ै । िचीबद् परीक्षर्-वबन्दओ तथा उनि िबवित प्रश्नों ू ां ां ां ु म ें िावछत ििर लाने के वलए इनका प्रयोग लघ परीक्षर्ों (वक्िज) म ें करना उवचत ह ै । इन के ु ु ां आिार पर इन परीक्षर्ों की भाषा में, इनके गिन म ें एि परीक्षर्ों के उत्तर म ें िावछत ििर वकया ु ां ां जाता ह ै । परीक्षर्ों के पि भ

Quotes detected: **0%** id: **297**

“वक्िजों”

म ें इनका प्रयोग करने का एक उद्दश्े य यह भी ह ै वक छात्र ू इन प्रश्न के उत्तर दने े की कला ि पररवचत हो जाए तथा मनोिैज्ञावनक रूप ि िह विवभन्न परीक्षर्ों के वलए तैयार हो जाए । ां प्रश्नों के वनमाभर् म ें वशक्षक को यह ध्यान रखना चावहए की विखाई गई िमस्त िरचनाओ, ां ां शब्दािली तथा अन्य वशक्षर् वबदओ का िमािेश परीक्षर् म ें कर वलया जाए । परीक्षर् में ां ां ु अत्यत िरल अशो का िमािेश नहीं होना चावहए । इिी प्रकार अत्यत जवटल िामग्री का भी ां ां ां प्रयोग िवजतभ ह ै । iv. परीक्षण को अहतम रूप प्रदान करना- िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों को परीक्षर् वबदओ, वक्िजों तथा ु ं ां ां ु अन्य आिश्यक यवक्तयों की िहायता ि तैयार कर लेने पर अवतम रुप प्रदान करने की ु ां आिश्यकता होती ह ै । प्रश्नों म ें वदए गए वनदेशों, प्रश्नों की भाषा एि गिन म ें पयाभप्त ििर ु ां अपेवक्षत ह ै । छात्रों के स्तर एि उनकी भाषा ही योग्यता को ध्यान म ें रखते हए प्रश्नों के गिन एि ु ां ां उनके स्तर में अपेवक्षत पररितभन वकया जाता ह ै । यह वनिाभररत कर लेने पर वक प्रश्नों ि िावछत ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 131 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 उत्तर प्राप्त होता ह,ै उनम ें परस्पर िबद्ता ह,ै उनका क्रम िीक ह,ै अध्यापक उन प्रश्नों का िमािेश ां परीक्षर् म ें करता ह ै । परीक्षर् के वलए वनिाभररत प्रश्नों के िही उत्तरों को अध्यापक क्रम ि िचीबद् करता ह ै । इनकी िहायता ू ि िह परीक्षर् को अविक िस्तवनष्ठ बनाता ह ै । वलवखत परीक्षर्ों के वलए मल्याकन-तावलका पहले ि ु ू ां ही तैयार करनी चावहए । इिी प्रकार मौवखक परीक्षर्ों म ें भी मल्याकन की रूपरेखा पहले ि वनिाभररत ू ां करना आिश्यक ह ै । लघ उत्तर िाले प्रश्नों अथिा वनबिात्मक प्रश्नों के उत्तरों म ें वनवहत वबदओ की िची ु ू ां ां ां ु तैयार

करना तथा उनके वलए अक वनवश्चत करना भी जरूरी ह ै। इनकी िहायता ि छात्रों के उत्तरों का ां मल्याकन अविक िस्तवनष्ठता ि वकया जा िकता ह ै और मल्याकन म ें एकरूपता स्थावपत की जाती ह ै। ू ु ू ां ां मौवखक परीक्ष◌ृों के वलए परीक्षर्- तावलका तैयार करते िमय कछ मख्य बातों पर ध्यान दने ा आिश्यक ु ु होता ह ै। मौवखक परीक्षर् िारा अनेक परीक्षर् वबदओ का परीक्षर् वकया जाता ह,ै अतः इनिे िबिवित ां ां ां ां ु विवभन्न कशलताओ का परीक्षर् आिश्यक होता ह ै। परीक्षर्- तावलका म ें विवि परीक्षर्- वबदओ के ु ां ां ां ु वलए अक वनिाभररत करना उवचत ह ै। इिके िाथ

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **298**

ही छात्र की विवशष्ट योग्यता के वलए अवतररक्त अक ां ां अथिा श्रे◌ृी प्रदान करने की भी व्यिस्था होनी चावहए । इिके वलए ियैवक्तक रूप ि े छात्रों क

ा मल्याकन ू ां करना चावहए । छोटी कक्षाओ म ें िामवहक मल्याकन वकया जा िकता ह ै। परत विवशष्ट कशलताओ का ू ू ु ु ां ां ां ां परीक्षर् करने के वलए ियैवक्तक मल्याकन ही उपयोगी होता ह ै। िाराश यह ह ै की परीक्षर् के वलए ू ां ां परीक्षर् तावलका का वनमाभर् करना आिश्यक ह ै वजििे वनिाभररत वबन्दओ का िही- रही मल्याकन ू ां ां ु वकया जा िके । वनष्कष भ यह ह ै वक परीक्षर्

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **299**

का प्रयोग के पि भ अध्यापक को पहले ि तैयार रहना जरूरी ह ै वजििे उिकी ू परीक्षर् िामग्री तथा उिके प्रयोग म ें वकिी प्रकार की त्रवट ना हो । छात्रों को परीक्षर् को िमझने और ु उत्तर दने े म ें पयाभप्त िमय दखे नी चावहए । यह दखे ना भी जरूरी ह ै वक परीक्षर् िच्चे अथों म ें उपयोगी ह ै ु वजििे अध्यापक क

ो वनवश्चत परर◌ृाम का ज्ञान हो िके और िह वशक्षर्- अविगम- प्रवक्रया म ें िफलता ि उि ज्ञान का उपयोग कर िके । िस्तवनष्ठ प्रश्न कई तरह के होते ह ैं । इनम ें ि वनम्नवलवखत प्रकार मख्य माने जाते ह-ैं ु ु i. सत्य असत्य परीक्षण- इन परीक्ष◌ृों में वकिी तथ्य ि िम्बद् कथन की ित्यता और अित्यता पर ध्यान कें वित वकया जाता ह ै। छात्रों को यह बताना होता ह ै वक अमक कथन ित्य ह ै अथिा ु नहीं । ii. बिहर्कल्प प्रश्न- एक प्रश्न के िाथ कई विकल्प वदए जाते ह ैं । उनम ें ि के िल एक विकल्प ही ु िही होता ह ै। छात्रों ि यह अपेक्षा की जाती ह ै वक िह िही विकल्प का चयन करें । iii. ररक्त तथान पहति- इि परीक्षर् म ें िाक्य म ें ररक्त स्थान रहता ह ै। छात्रों ि अपेक्षा की जाती ह ै वक ू ि े िही शब्द के चयन िारा ररक्त स्थान की पवतभ करें । ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 132 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 iv. अनरूपण- भाषाई िामग्री को दो खडों म ें प्रस्तत वकया जाता ह ै। छात्रों ि अपेक्षा की जाती ह ै ु ु ु ां वक िह शब्द अथिा िाक्य के पहले अश ि दिरे अश का वमलान करें । ां ां ू 3.7 उपिब्ि्ि-परीक्षिों के धनमिा की प्रधक्रया एवां धवशेषताएँ अपने वनमाभर् ए स्िरुप की दृवष्ट ि परीक्षर् दो

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **300**

प्रकार के होते ह ै 1. मानकीकत ए 2. अध्यापक वनवमतभ । ृ ां ां िबिे पहले इन दोनों प्रकार क

े उपलवब्ि परीक्षर् का अतर एक तावलका के माध्यम ि दखे ते ह ैं : ां 3.7.1 अध्यापक हनहमित एर् मानकीकत परीक्षण का अतर ृ ं ं अध्यापक हनहमित परीक्षण मानकीकत परीक्षण ृ 1. एक अध्यापक िमय-िमय पर अपने छात्रों की 1.अध्यापक कत अनौपचाररक परीक्ष◌ृों की तरह ृ उपलवब्ियों का मापन करने के वलए इन इनका वनमाभर् करना इतना िरल नहीं ह ै। परीक्ष◌ृों का वनमाभर् करता ह ै। 2. ये परीक्षर् मौवखक ,प्रायोवगक ए वलवखत ां 2. ये परीक्षर् िामान्यतः िस्तवनष्ठ होते ह ैं । ु (वनबात्मक,लघ उत्तर और िस्तवनष्ठ) ु ु ां परीक्षर् होते ह ैं । 3. इन परीक्ष◌ृों के अनप्रयोग का दायरा िीवमत ु 3.इि प्रकार के परीक्षर् म ें विषयिस्त,प्रशािन,अकन,कायभ ु ां होता ह ै। और व्याख्या िब पिभ वनवश्चत या मानकीकत होते ह ै। ृ ू वजििे वक पर् भ शद्ता के िाथ एक ही परीक्षर्,अलग- ू ु अलग स्थानों पर अलग-अलग िमय म ें एक िमान आय ु िमह या ग्रेड स्तर के विद्यावथभयों के वलए प्रयोग में लाया जा ू िकें । 4. ये परीक्षर् विद्यालयों के अध्यापकों िारा 4.ये परीक्षर् अनिानकताभओ या अनभिी िियावियों ु ु ां ां अपनी-अपनी कक्षा के उपलवब्ि वशक्षर्- िारा तैयार वकए जाते ह ैं । अविगम पररवस्थवतयों तथा कक्षा-कक्ष के विवशष्ट उद्दश्े यों ि िम्बवित परर◌ृामों को ििी े ां ही मापन करने के वलए उनकी अपनी जरूरतों के अनिार तैयार वकए जाते ह ैं । ु 5. ये परीक्षर् प्रत्येक अध्यापक के अपने िििानों ां 5.कक्षा-कक्ष वशक्षर् अविगम व्यिस्था के वलहाज ि य े के अनरूप ही होते ह ैं तथा कक्षा-कक्ष वशक्षर् ु काफी खचीले होते ह ैं । अविगम व्यिस्था के अनिार वमतव्ययी भी ु होते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 133 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अध्यापक कत एर् मानकीकत उपलहब्ध परीक्षण के अनप्रयोग में अतर- ृ ृ ु ं ं अध्यापक कत उपलवब्ि परीक्ष◌ृों को वनम्न कायों के िम्बन्ि म ें प्राथवमकता दी जाती ह-ै ृ i. वदन प्रवतवदन के अनदशे नात्मक वनर्यभ लेने म ें । ु ii. विद्यावथभयों के अविगम परर◌ृामों का वनमाभ◌ृात्मक मल्याङ्कन करने के वलए । ◌् ू iii. वजतनी जल्दी हो िके उतनी जल्दी विद्यावथभयों को उनके अविगम परर◌ृामों ि पररवचत कराकर उन्ह ें अवभप्रेर◌ृा प्रदान करने के वलए । iv. वकिी विशेष अविगम क्षेत्र म ें विद्यावथभयों की कविनाइयों ए कमजोररयों का वनदान करने तथा ां उनम ें िमय पर ििार करने के वलए । ु v. विद्यावथभयों के ग्रेवडग करने के िम्बन्ि म ें वनर्यभ लेने के वलए । ां मानकीकत उपलवब्ि परीक्ष◌ृों को वनम्न कायों के वलए प्राथवमकता दी जाती ह-ै ृ i. विद्यावथभयों के बारे म ें उनका आग े की कक्षाओ या िियावियक पाियक्रमों म ें दाविला दने े ◌् ां िम्बन्िी वनर्यभ लेने के कायभ में इनिे विश्विनीय ,िि और िस्तवनष्ठ रूप म ें मदद वमलती ह ै। ु ii. क्योंवक इनमें अविगम परीक्ष◌ृों की शवक्त और कमजोररयों को अच्छी तरह पहचानने की िामथ्यभ पाई जाती ह ै इिवलए इन

परीक्षर्ों ि वनदशे न और परामश भ वनर्यभ लेने म ें पयाभप्त िहायता वमलती ह ै । iii. क्योंवक इनम ें एक प्रयोजय की दिरे प्रयोजयों ि भलीभावत तलना करने की क्षमता होती ु ां ू ह,ै इिवलए िमह म ें ि वकिका चयन वकया जाए ,यह वनर्यभ लेने म ें पयाभप्त िहायता वमलती ह ै । ू iv. इनिे वकिी विस्तत

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **301**

क्षेत्र या प्रदशे म ें लाग वकए जाने िाले पियक्रम या नीवतगत वनर्यभ ों को लेने ृ ृ ू म ें उवचत मदद वमलती ह ै । v. वकिी विशेष क्षेत्र,

राजय या दशे के विद्यालयों तथा इनम ें विद्यमान अध्यापकों तथा विद्यावथभयों की कायभक्षमता की तलना और मल्याकन हते इन्ह ें भलीभावत प्रयोग म ें लाया जाता ह ै । ु ू ु ां ां 3.7.2 एक अध्यापक कत एर् मानकीकत उपलहब्ध परीक्षण के सोपान ृ ृ ें एक अध्यापक कत उपलवब्ि परीक्षर् के िोपान अग्रवलवखत प्रकार ि होते ह ें ृ i. लक्ष्य वनिाभररत करना ii. पर् भ पियक्रम या इकाई विशेष का ध्यान रखना ृ ू iii. प्रश्नों के प्रकार का वनर्यभ iv. िमय का वनर्यभ v. ब्ल वप्रट तैयार करना ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 134 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 vi. परीक्षर् के प्रारूप का वनर्यभ vii. पद विश्लेषर् viii. परीक्षर् के अवतम प्रारूप को तैयार करना ां ix. अकन तावलका तैयार करना ां सोपान 1- लक्ष्य-हनधािररत करना कक्षा म ें अध्यापक विषय के वजि भाग या इकाई विशषे को पढ़ा रहा ह ै उिके वशक्षर्-अविगम उद्दश्े य क्या ह,ै िििप्रभ थम उनकी ओर ध्यान दने ा चावहए । अध्यापक उि विषय,प्रकरर् या इकाई विशषे के उद्दश्े यों का ज्ञान,अिबोि,अनप्रयोग,कौशल,रूवच,अवभिवत्त आवद प्राप्य उद्दश्े यों के रूप में स्पष्टतापिकभ उल्लेख ृ ु ू करना चावहए । सोपान 2- पणि पाठयिम या इकाई हिििरे का ध्यान रखना व ू अध्यापक को यह दखे ना चावहए वक उिने अपनी कक्षा म ें विषयिस्त के वकतने भाग का वशक्षर् वकया ह।ै ु इिको ध्यान म ें रखते हुए उि उपलवब्ि परीक्षर् का वनमाभर् करते िमय पढाई गई िम्पर् भ विषयिस्त पर ु ू ु प्रश्नों या पदों का वनमाभर् करना चावहए । यद्यवप वकिी बडी इकाई या पढाए गए प्रकरर् को नहीं छोडा जाना चावहए वकन्त इिका अथभ यह नहीं वक कक्षा म ें अध्यापक के िारा वजन बातों पर चचाभ की गई ह ै उन ु िभी को परीक्षर् म ें शावमल वकया जाए । इिवलए उद्दश्े य यह रखना चावहए वक जो अविगम अनभि ु विद्यावथभयों को वदए जाए ँ उनिे िम्बवित विवभन्न पक्षों को अच्छी तरह िोच िमझकर परीक्षर् में ां िवम्मवलत वकया जाए । सोपान 3 -

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **302**

प्रश्नों के प्रकार का हनणिय परीक्षर् प्रपत्र म ें वकि प्रकार के प्रश्नों को शावमल वकया जाए ,इि बारे म ें वनर्यभ लेना ,उपलवब्ि परीक्षर् वनमाभर् का एक आिश्यक पक्ष ह ै । एक िितवलत वलवखत उपलवब्ि परीक्षर् म ें तीनों प्रकार के प्रश्न ु ां वनबिात्मक,लघ-उत्तर एि िस्तवनष्ठ प्रश्न ह

ोन े चावहए । इनके िितवलत प्रवतवनवित्ि का भी ध्यान रखना ु ु ु ां ां ां चावहए । सोपान 4 - समय का हनणिय उपलवब्ि परीक्षर् को हल करने के वलए विद्यावथभयों को वकतना िमय वदया जाएगा ,यह वनर्यभ भी पहले कर लेना चावहए एि उपलवब्ि परीक्षर् म ें इिका स्पष्ट वलवखत िर्नभ होना चावहए । ां सोपान 5 - ब्ल हप्रट तैयार करना ू ं उपलवब्ि परीक्षर् के वनयोजन और वनमाभर् प्रवक्रया का यह चनौतीपर् भ िोपान ह ै ।ब्ल-वप्रट ि तात्पयभ एक ु ू ू ां प्रश्न-पत्र वनमाभर् हते वकए जाने िाले वनर्यभ ि ह ें वजिम ें विवशष्ट उद्दश्े यों ,प्रकरर्ों तथा प्रश्नों के प्रकार का ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 135 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ध्यान रखते हुए , वनवमतभ प्रश्नों के वलए अकों के वितरर् को प्रस्तत करन े का प्रयत्न वकया जाता ह ै । ु ु ां इिवलए वकिी ब्ल-वप्रट को तैयार करते िमय चार बातों पर ध्यान दने ा चावहए-परीक्षर् वकए जाने िाले ू ां उद्दश्े य,विषयिस्त वजनपर प्रश्न की रचना की जानी ह,ै पछे जाने िाले प्रश्नों का प्रकार और प्रश्न-पत्र हल ु ू करने के वलए वदया जाने िाला िमय । सोपान 6- परीक्षण के प्रारूप का हनणिय उपलवब्ि परीक्षर् को उवचत प्रारूप प्रदान करने के वलए उिम ें शावमल वकए जाने िाले प्रश्नों को िमवचत ु रूप ि गवित एि व्यिवस्थत करने की आिश्यकता होती ह ै । इि कायभ के वलए वनम्न बातों ि िहायता ां वमल िकती ह ै : i. वनबिात्मक और िस्तपरक प्रश्न अलग-अलग भागों म ें रखे

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/... id: **303**

जाने चावहए , लघ-उत्तर प्रश्नों को ु ु ां उनकी प्रकवत के आिार पर इन दोनों भागों म ें रखना जाना चावहए

लघ उत्तर प्रश्नों को उनकी ृ ु प्रकवत के आिार पर इन दोनों भागों म ें ि वकिी एक भाग म ें रखा जा िकता ह ै या उिके वलए ृ अलग एक भाग बनाया जा िकता

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/... + 4 resources! id: **304**

ह ै । प्रत्येक भाग के प्रश्नों का उत्तर दने े के वलए अलग-अलग िमय वनिाभररत होना चावहए और उि परीक्षर्-प्रपत्र म ें भी वलखा जाना चावहए । ii. प्रत्येक भाग के वलए अलग-अलग वनदशे होना चावहए

या दोनों भागों के वलए िामान्य वनदेश भी वदए जा िकते ह ै । iii. परीक्षर्-प्रपत्र म ें

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **305**

प्रश्नों को िरल ि कविन क्रम म ें व्यिवस्थत करना चावहए । iv. िस्तपरक प्रश्नों म ें िभी प्रकार के प्रश्नों का िमािशे ठीक नहीं होता क्योंवक अलग-अलग प्रकार ु के प्रश्नों के वलए अलग-अलग प्रकार के वनदशे पढने होते ह ै इिम ें विद्यावथभयों का बहत िा

िमय ु नष्ट हो जाता ह ै। यवद िभि हो तो के िल बहविकल्पी प्रश्नों को प्राथवमकता दने ी चावहए क्योंवक ु ां ये अन्य प्रश्नों क ी तलना म ें अपेक्षाकत अविक विश्विनीय,िि और िस्तपरक होते ह ैं । ृ ु ु v. अच्छा होगा यवद परीक्षर् म ें 20% िे 30% अवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.doubtnut.com/qna/229887240 id: **306**

क प्रश्न बनाये जाए ाँ वििजे वक प्रश्न-पत्र को अवतम रूप दते े िमय वनरथभक या कम महत्त्ि के प्रश्न

ों को हटाया जा िकें । ां सोपान 7 - परीक्षण लेना तथा पद- हर्शे िण करना जिै ा वक ऊपर िझिा वदया गया ह ै इि प्रकार िे वनवमतभ परीक्षर् को उिकी उपयक्त जाच ए पद ु ु ां ां विश्लेषर् करने हते विद्यावथभयों के उवचत प्रवतदशभ पर प्रशावित वकया जाना चावहए । पद विश्लेषर् के कायभ ु को यह मख्य रूप िे वनम्न बातों के िदभ भ म ें िपावदत करने का प्रयत्न वकया जाता ह:ै ु ां ां i. गलवतयों, अस्पष्टताओ या भ्रावतयों के वनिारर् हते

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.doubtnut.com/qna/127009639 + 3 resources! id: **307**

प्रत्येक पद या कविनाई मल्य वनिाभररत करने ु ू ां ां के वलए । ii. प्रत्येक

पद का विभदे ीकरर् मल्य वनिाभररत करने के वलए । ू iii. इि प्रकार िे हम अपने वनवमतभ परीक्षर् िे िभी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **308**

प्रकार के दोषपर् भ पदों िे मवक्त पान े म ें मदद वमल ू ु जाती ह ै। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 136 ु हिन्दी क ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 सोपान 8- परीक्षण के अहतम

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindireadduniya.com/barahkhadi-kakaha… id: **309**

प्रारूप को तैयार करना ं वनवमतभ वकए गए उपलवब्ि परीक्षर् के प्रारवभक प्रारूप

का परीक्षर् करने तथा पद विश्लेषर् करने के ां उपरात जो प्रश्न अनवचत प्रतीत होते ह,ैं उन्ह ें परीक्षर् म ें िे वनकाल दने ा चावहए और वजन प्रश्नों या भाषा म ें ु ां कछ िोिार की जरूरत ह ै उन्ह ें िीक कर लेना चावहए । यवद जरूरत हो तो परीक्षर् को और अविक ु ु कायभपरक बनाने के वलए कछ नए पद भी जोडे जा िकते ह ैं । वफर परीक्षर् के इि अवतम प्रारूप को ु ां छपिा लेना या फोटोकॉपी करा लेना या िाइक्लोस्टाइल, जिै ी भी जरूरत या िवु िा हो विद्यावथभयों की ु उपलवब्ि का आिश्यक मल्याकन करने के वलए, उिी रुप म ें तैयार करा लेना चावहए । ू ां सोपान 9- अक-ताहलका तैयार करना ं अकन कायभ म ें िस्तपरकता लाने के वलए अकन विवि को पहले िे वनवश्चत कर लेना चावहए । के िल िस्त ु ु ां ां परक

Plagiarism detected: **0.13%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-… id: **310**

प्रश्नों के वलए ही नहीं िरन वनबिात्मक प्रश्नों तथा लघ उत्तर प्रश्नों के वलए भी अवकत योजना पहले ु ां ां िे वनिाभररत की जानी चावहए । इिके वलए वनम्न बातों को ध्यान म ें रखना चावहए i. विभागों और उपविभागों के अनिार अकों का विभाजन ु ां ii. प्रश्न के उत्तर म ें िभी िोपानों या वबदओ के वलए अको का विभाजन ां ां ां ु iii. लघ उत्तर या अत्यत लघ उत्तर िाले प्रश्नों का उत्तर दने े के वलए पवक्तयों या वनिाभररत शब्दों की ु ु ां ां िख्या का वनिाभरर् । ां iv. वनबिात्मक प्रश्न क

े वलए अकों का वनिाभरर् ां ां v. विद्यावथभयों िारा वदए गए उत्तर म ें ततीय िोपान या वबद के वलए भार (Weightage) का ृ ां ु वनिाभरर्। एक मानकीकत उपलहब्ध परीक्षण के सोपान ृ एक मानकीकत उपलवब्ि परीक्षर् विकाि की चार अिस्थाओ िे गजरती ह ै। इन चारों अिस्थाओ और ृ ु ां ां उनकी उप-अिस्थाओ का िर्भन नीचे वकया जा रहा ह ै: ां प्रथम सोपान : परीक्षण का हनयोजन □ परीक्षर् के उद्दश्े य, प्रयोजनों एि क्षेत्र की पहचान करना । ां □ वजि क्षेत्र म ें परीक्षर्

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 4 resources! id: **311**

का प्रयोग वकया जाना ह ै उिके ितभमान पाियक्रम का अिलोकन या ् पनिीक्षर् ु □ प्रश्नों के प्रकार और प्रारूप, िमय, परीक्षर् के स्थान और अकन विवि के बारे म ें वनर्यभ लेना । ां □ विवशष्टताओ की एक तावलका या ब्लवप्रट तैयार करन

ा । ू ां ां हद्वतीय सोपान: परीक्षण का हनमाभण □ परीक्षर् के पदों या प्रश्नों को तयै ार करना और उनका लेखन । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 137 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ अनवक्रया प्रारूप का चनाि एि वनमाभर् । ु ु ां □ पदों या प्रश्नों की व्यिस्था और उिके मापन पर ध्यान दने ा □ परीक्षर् के वनदशे ों को तैयार करना ततीय सोपान : पदों का पनिीक्षण,परीक्षण करना और परीक्षण को उहचत रुप देना ृ ु □ अस्पष्ट,पक्षपातपर् भ पदों को हटाने के वलए उनका पनरािलोकन ू ु □ परीक्षर् िमवष्ट के छोटे प्रवतदश भ पर पदों का परीक्षर् करना □ पदों की गर्ात्मकता को िस्तवनष्ठ पवष्टकरर् प्रदान करने के वलए पद-विश्लेषर् करना ु ु ु □ परीक्षर् को उवचत रूप दने ा- पद विश्लेषर् के उपरात बचे हए पदों को उवचत रूप िे व्यिवस्थत ु ां करना चतथि सोपान: परीक्षण का मानकीकरण ु □ िमवष्ट के एक बडे प्रवतदश भ पर परीक्षर् का प्रशािन □ नोमि्भ का विकाि □ परीक्षर् की विश्विनीयता एि िििता स्थावपत करना ां 3.7.3 र्तहनष्ठ उपलहब्ध परीक्षणों के मानक ु परीक्षर्ों का वनमाभर् विवशष्ट कशलता िापेक्ष प्रवक्रया ह ै। िभी अध्यापक परीक्षर्ों का वनमाभर् िमान रुप ु िे और िहज कशलता िे नहीं कर पाते । इिके वलए विशेष प्रवशक्षर्, ितकभ ता एि अभ्याि की ु ां आिश्यकता होती ह ै। िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों में परीक्षर् वनमाभर् के वलए विशेष कशलता अपेवक्षत ह ै। तैयार ु ु वकए गए प्रश्नों म ें वनवश्चत विशषे ताओ का िमािेश अवनिायभ

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **312**

माना जाता ह ै । अतः िस्तवनष्ठ परीक्ष◌ ्रों के ु ां चयन एि वनमाभर् म ें वनम्नवलवखत तथ्यों पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै । ां i. ◌ ैधता- परीक्षर् का प्रयोग विवशष्ट भाषाई कशलता के मापन के वलए वकया जाता ह ै । वकिी भी ु परीक्षर् को तभी उपयक्त अथिा तकनीकी शब्दािली म ें

Quotes detected: **0%** id: **313**

" िि "

माना जाता ह ै जब िह वनवश्चत ु कशलता का िही मापन करता ह ै । वजि उद्दश्े य ि परीक्षर् वकया जा रहा ह,ै उि उद्दश्े य की पवतभ ु ू होने पर ही परीक्षर् की िि ता स्िीकार की जाती ह ै । दिरे शब्दों म ें वजि योग्यता के मापन के ू वलए विवशष्ट परीक्षर् तैयार वकया गया ह ै उिका मापन करने के पश्चात ही उि परीक्षर् को िि माना जा िकता ह ै । वकिी परीक्षर् की िि ता को वनरपेक्ष रूप ि िही िदभों म ें नहीं स्िीकार ां वकया जा िकता । कोई परीक्षर् एक उद्दश्े य को प्राप्त करने में िि ता के मापदड पर खरा उतरता ां ह,ै परत िही परीक्षर् अन्य उद्दश्े यों के िदभ भ म ें िि ता रवहत भी हो िकता ह ै । जो भी हो, िि ता ु ां ां िस्तवनष्ठ परीक्ष◌ ्रों की प्रमख किौटी ह ै । ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 138 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 ii. हर्श्वसनीयता- िस्तवनष्ठ परीक्ष◌ ्रों की दिरी विशषे ता उनकी विश्विनीयता ह ै । विश्विनीयता का ु ू िबि परीक्षर् -परर◌ ्ामों की िस्तवनष्ठता तथा स्थावयत्ि ि ह ै । परीक्ष◌ ्रों का मल्याकन वकतनी ु ू ां ां ां ही बार, वकतने ही वभन्न वभन्न व्यवक्तयों अथिा यावत्रक िािनों के िारा क्यों न वकया जाए, ां वनिाभररत परर◌ ्ामों म ें वनवश्चतता, स्थावयत्ि तथा एकरूपता का गर् ितभमान रहता ह ै । परीक्षर्- ु परर◌ ्ामों पर विश्िाि वकया जा िकता ह ै और यह माना जाता ह ै की विवभन्न िमय म ें िह परीक्षर् योग्यता- विशषे का मापन ित्यता ि करता ह ै । iii. र्तहनष्ठता- िस्तवनष्ठ परीक्ष◌ ्रों की प्रमख विशषे ता उिकी िस्तवनष्ठता ह ै । िस्तवनष्ठता ि े ु ु ु ु ु तात्पयभ यह ह ै की परीक्षर् ि प्राप्त परर◌ ्ाम परीक्षक की व्यवक्तगत विचार िाराओ, रुवचयों तथा ां मान्यताओ ि प्रभावित नहीं होते । परीक्षक के राग िषे का अथिा उिके िंिेग ◌ात्मक मनोभािों ां ां का परीक्षर् के परर◌ ्ामों पर कोई प्रभाि नहीं पडता । छात्रों के ज्ञान का परीक्षर् वनरपेक्ष दृवष्ट ि वकया जाता ह ै । इि प्रकार मल्याकन म ें व्यवक्तवनष्ठता नहीं आ पाती । एकाविक परीक्षकों िारा ू ां वदए गए अको म ें िमानता पाई जाती ह ै । कई परीक्षकों िारा वदए गए प्राप्ताकों म ें एि उनके ां ां ां वनर्यभ ों म ें एकरूपता होने पर ही परीक्षर् िस्तवनष्ठ माना जाता ह ै । इि प्रकार छात्र की योग्यता ु का िही िही मापन इि प्रकार के परीक्ष◌ ्रों िारा िभि ह ै । ां iv. िमग्रता- एक अच्छे परीक्षर् म ें िमग्रता का गर् अवनिायभतः ितभमान रहता ह ै । िमग्रता ि ु अवभप्राय ह ै वक उि परीक्षर् के िारा छात्र की विवशष्ट योग्यता का मापन िमग्र रुप ि े वकया जा िकता ह ै । उिकी योग्यता का खवडत अथिा आवशक मल्याकन परीक्षर् के उद्दश्े य को पर् भ करने ू ू ां ां ां म ें अिमथभ होता ह,ै इििे वनिाभररत लक्ष्य की पवतभ नहीं होती । इिके वलए यह आिश्यक ह ै वक ू परीक्षर् म ें इतने प्रश्नों का िमािशे वकया जाए वजििे

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **314**

छात्र की विवशष्ट योग्यता ि िबवित िभी ां ां पक्षों का परा पररचय प्राप्त हो िके । उदाहरर् के वलए, छात्र क

◌ी मौवखक अवभव्यवक्त की ू कशलता का मापन करते िमय परीक्षर् म ें इतने प्रश्नों का अवनिायभ रूप ि िमािेश होना चावहए ु की मौवखक अवभव्यवक्त ि िबवित िभी पक्षों का परीक्षर् वकया जा िके । ां ां v. हर्भेदकता- अच्छे परीक्षर् का मापदड यह ह ै वक ि

Plagiarism detected: **0.19%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **315**

ह छात्र की उपलवब्ियों का पर् भ वििरर् इि ू ां प्रकार प्रस्तत करें वक उन के आिार पर उनकी योग्यता का स्तर वनिाभररत वकया जा िके । कक्षा ु म ें उपलवब्ियों की दृवष्ट ि श्रेष्ठ छात्र कौन ि हैं, िामान्य छात्र कौन ि ह ैं और कमजोर छात्र वकतने ह,ैं इिकी जानकारी परीक्ष◌ ्रों के आिार पर प्राप्त होनी चावहए । इि प्रकार छात्रों की योग्यता तथा उनके स्तर की विभदे कता का वनिाभरर् करने के वलए विभदे कता का गर् ु आिश्यक ह।ै इििे अध्यापक को वशक्षर् में िगमता होती ह ै और िह विवभन्न स्तर के छात्रों के ु वलए उपयक्त िामग्री के चयन एि प्रस्ततीकरर् म ें िमथभ होता ह ै । इतना ही नहीं, परीक्षर् की ु ु ां विभदे कता के फल स्िरुप िह एक ही िगभ के विवभन्न योग्यता िाले छात्रों को विवभन्न वशक्षर् एि अविगम वक्रयाओ म ें िलग्न रखता ह,ै वजििे िभी छात्रों क

◌ो िीखने का अििर प्राप्त होता ां ां ां ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 139 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 vi. व्यि◌ ्ाररकता - परीक्षर् की उत्कृष्टता का प्रमार् उिकी व्यिहाररकता ह ै । परीक्षर् अपने ृ आपमें उत्कष्ट हो िकता ह ै परत व्यिहाररकता के अभाि म ें उिकी उत्कृष्टता वनरथभक वि

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **316**

द् ृ ृ ु ां होती ह ै । व्यिहाररकता ि तात्पयभ उिके प्रयोग एि मल्याकन म ें िरलता एि उपयक्तता ि ह ै । ू ु ां ां ां परत इिका यह तात्पयभ नहीं की परीक्षर् अवत िरल हो । यह आिश्यक ह ै वक परीक्षर् छात्रों के ु ां स्तर के अनकल हो ,उिकी भाषा िरल एि बोिगम्य हो तथा उिके प्रयोग म

ें कोई कविनाई न ु ू ां हो । इिके वलए परीक्षर् वनमाभर् करते िमय अथिा परीक्ष ्रों का चयन करते िमय अध्यापक को उिके व्यिहाररक पक्ष पर विशेष रुप ि ध्यान कें वित करना चावहए । वजन परीक्ष ्रों

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **317**

के प्रयोग िए मल्याकन म ें बहत िमय लगता ह ै तथा अविक कविनाई होती ह,ै िह परीक्षर् दोषपर् भ माने ु ू ू ां ां जाते ह ैं । अतः िभी दृवष्टयों ि परीक्ष ्रों म ें व्यिहाररकता का गर् आिश्यक माना गया ह ै । ु vii. भािाई कौिलों का परीक्षण - अन्य भाषा वशक्षर् म ें भाषाई कशलताओ के परीक्षर् का ु ां विशेष महत्ि ह ै । भाषाई कौशल की विशेषता के अनरूप विविि परीक्ष ्रों के वनमाभर् की ु आिश्यकता होती ह ै । इन परीक्ष ्रों के वनमाभर् म ें उपयभक्त िभी तथ्यों पर ध्यान दने ा तथा ु आिश्यक विशेषताओ का िमािेश करना जरूरी िमझा जाता ह ै । विवशष्ट योग्यता का मापन ां करने के वलए परीक्ष ्रों म ें विविि

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **318**

प्रकार की िामग्री का तथा विवभन्न तकनीकों का प्रयोग वकया जाता ह ै यद्यवप इन परीक्ष ्रों का उद्दश्े य छात्रों के भाष ाई योग्यता का मल्याकन करना ह ै ू ां viii. परत यह मल्याकन उनके भाषा ही विकाि म ें िहायक होना चावहए । ु ू ां ां □ भाषा- परीक्ष ्रों की चचाभ करते िमय कछ बातों पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै । यहा यह स्पष्ट कर ु ां दने ा उवचत होगा की परीक्षर् की परपरागत तकनीकें , जैि े- वनबि, िाक्षात्कार आवद िही अथों ां ां में भाषाई परीक्षर् नहीं कह े जा िकते ह ैं क्योंवक इन म ें भाषा के अवतररक्त अन्य तत्िों का भी िमािेश होता ह,ै जैि े- कल्पना, स्मवत आवद । वफर भी इनका प्रयोग आिश्यक िमझा जाता ृ ह।ै □ भाषाई कौशलों की परीक्षर् में परीक्षर्- वबद का चयन प्राथवमक आिश्यकता ह ै । यह वनवश्चत ां ु कर लेना चावहए की कौशल- विशेष के परीक्षर् ने वकि वबद का परीक्षर् करना ह ै ।भाषाई ां ु परीक्षर् म ें एक िमय म ें एक ही वबद का परीक्षर् करना उवचत ह,ै एकाविक वबदओ का नहीं । ां ां ां ु ु उदाहरर् के वलए, श्रिर्- कौशल म ें ध्िवन अवभज्ञान का परीक्षर् करते िमय बोिन का परीक्षर् उवचत नहीं । □ परीक्षर् वबद का वनश्चय हो जाने पर परीक्षर् के चयन का कायभ शषे रहता ह ै । परीक्षर्- चयन म ें ां ु

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **319**

छात्र की योग्यता- स्तर पर भी ध्यान दने ा आिश्यक ह ै । उदाहर ्राथभ, िाचन अनतान- परीक्षर् ु का एक माध्यम हो िकता ह ै । परत प्रारवभक स्तर पर वलवप- प्रतीकों ि अपररवचत छात्र क

े वलए ु ां ां इिका कोई उपयोग नहीं ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 140 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ परीक्षर्- चयन म ें लक्ष्य- िापक्षे ता तथा उपयक्तता के िाथ- िाथ िरलता पर भी ध्यान दने ा ु आिश्यक ह ै । यह िरलता विआयामीय ह ै - परीक्षर्- प्रवक्रया म ें िरलता तथा परीक्षक- लक्ष्यों की िस्पष्टता-जवनत िरलता । ु □ अत म ें परीक्षर्- परर ्रामों की िस्तवनष्ठता पर भी ध्यान दने ा आिश्यक ह ै । इि िदभ भ म ें परीक्षर् ु ां ां की दो आिारभत मान्यताओ पर ध्यान दने ा आिश्यक ह-ै विश्विनीयता िए िैि ता । िैिता ू ां ां उिकी ित्यता िए िाथभकता की द्योतक ह ै । िैि ता विश्विनीयता के िदभ भ म ें ही ग्राह्य ह ै । ां ां □ भाषाई कौशलों के परीक्षर्- वनमाभर् म ें उपयभक्त िभी मद्दों को ध्यान म ें रखना म ें रखना आिश्यक ु ु ह ै । तभी परीक्ष ्रों िारा वनिाभररत लक्ष्यों की प्रावप्त िंभि ह ै । ां अभ्यास प्रश्न 3. एक परीक्षर् म ें िैि ता ि क्या आशय ह ै ? 4. परीक्षर् म ें विश्विनीयता ि क्या तात्पयभ ह ै ? 5. नीवतगत वनर्यभ लेने,वनदशे न िए परामश भ म ें वकि प्रकार के परीक्ष ्रों का प्रयोग वकया जाता ह?ै ां 3.8 िारांश एक उपलवब्ि परीक्षर् वशक्षर् अविगम प्र ्राली का एक आिश्यक और महत्िपर् भ भाग ह ै । पि भ वनिाभररत ू ू वशक्षर् अविगम उद्दश्े यों को प्राप्त करने के वलए वशक्षकों और विद्यावथभयों के िारा जो िैये वक्तक और िामवहक प्रयाि वकए जाते ह ैं यह उनका मापन करने म ें वशक्षकों और विद्यावथभयों की िहायता करता ह ै । ू अपने प्रयोजन का अच्छी तरह वनिहभ न करने के वलए, एक अच्छे उपलवब्ि परीक्षर् को वशक्षा प्र ्राली के मापदड और किौवटयों पर खरा उतरना जरुरी होता ह ै । इि इकाई म ें हमने उपलवब्ि परीक्षर् के ां विवभन्न विशेषताओ, आिश्यकता, महत्ि, उपयोवगता, मानकीकत और अध्यापक वनवमतभ उपलवब्ि ृ ां परीक्ष ्रों म ें अतर ,उपयोग िए इन परीक्ष ्रों के वलए आिश्यक मानकों का अध्ययन वकया । ां ां 3.9 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 1. िरचनािादी विचारिारा भाषा को यावत्रक प्रवक्रया मानती ह,ै वजिम ें भाषा को उत्तजे ना के प्रवत ां ां की गई प्रवतवक्रया माना गया ह ै । 2. भाषा मख्यतः कौशल प्रिान विषय ह ै जबवक अन्य विषय ज्ञान और विषय-िस्त प्रिान ह।ै ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 141 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3. परीक्षर् का िह गर् जो यह वनवश्चत करता ह ै वक क्या परीक्षर् उिी योग्यता,कौशल का मापन ु करता ह ै जो इिका उद्दश्े य था । 4. यवद एक परीक्षर् का मल्याकन अनेकों बार, अनेक वभन्न-वभन्न व्यवक्तयों अथिा यावत्रक ू ां ां िािनों के िारा वकया जाए, और वनिाभररत परर ्रामों म ें वनवश्चतता, स्थावयत्ि तथा एकरूपता का गर् िदभमान रहता ह ै तो िह परीक्षर् विश्विनीय माना जाता ह ै । ु 5. मानकीकत परीक्षर् ृ 3.10 िन्दभ भ ग्रन्थ िची ू 1. गप्त, मनोरमा, भािा -हिक्षण हसद्धात और प्रहर्ध आगरा,के न्िीय वहदी, िस्थान)201(0 ु ं ां ां 2. चौहान,रीता,हिदी हिक्षणआगरा,अग्रिाल, पवब्लके शन ,2016-17 ं 3. श्रीिास्ति डॉ,रविन्िनाथ. भािा, ,हिक्षण-नई वदल्ली ,िा ्री प्रकाशन,2005 4. मगल िए.के ,शभ्रा, व्यिहाररक विषयों म ें अनिन्िान विवियाँ,पी एच आई लवनिंग प्राइिेट ु ु ां वलवमटेड,नई वदल्ली,2014 3.11 वनबिात्मक प्रश्न ां 1. भाषाई परीक्षर् अन्य विषयों के उपलवब्ि परीक्ष ्रों ि वकि प्रकार वभन्न होते ह ैं ? 2. वशक्षर्-अविगम प्रवक्रया म ें उपलवब्ि परीक्षर् की उपयोवगता बतायें । 3. एक उपलवब्ि परीक्षर् के वनमाभर् म ें वकन बातों की ओर ध्यान दने ा चावहए, वबन्दिार िर्भन करें । ु 4. अध्यापक वनवमतभ िए मानकीकत

परीक्षर् का अतर स्पष्ट करें । ृ ां ां 5. अध्यापक वनवमतभ एि मानकीकत उपलवब्ि परीक्षर् वनमाभर् के िोपानों का िर्नभ करें । ृ ां 6. िस्तवनष्ठ उपलवब्ि परीक्षर्ों के मानकों का िर्नभ करें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 142 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 4- परीक्षण, मापन एिां मूलयाांकन :हिदी भाषा के धशक्षण एिां अधिगम के धिशेष िांदभ में भ 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 मल्याकन की भवमका एि महत्ि ू ू ां ां 4.3.1 उत्तम मल्याकन की विशेषताएँ ू ां 4.3.2 मल्याकन के पक्ष ू ां 4.4 परीक्षर् की ितभमान िमस्याए एि पररदृश्य ां ां 4.5 ितत एि व्यापक मल्याकन ू ां ां 4.5.1 ितत एि व्यापक मल्याकन के उद्दश्े य ू ां ां 4.5.2 िी.िी.ई की विशेषताएँ 4.5.3 िीिीई के कायभ 4.6 मल्याकन की निीन िांिारर्ाए ू ां ां 4.7 िाराश ां 4.8 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 4.9 िन्दभभ ग्रथ िची ू ां 4.10 वनबात्मक प्रश्न ां 4.1 प्रस्तावना

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 4 resources! id: **320**

विद्यालय म ें बच्चे वशक्षा प्राप्त करने के वलए जाते ह ैं । िह विद्यालय म ें वशक्षा प्राप्त करने क

े दौरान जीिन में विशेष प्रकार के अनभि पाते ह ैं । यह अनभि ही उिके ज्ञान म ें विवभन्न प्रकार ि े िवृद्ध करते ह,ैं उनकी ृ ु ु विचार-शलै ी,कायभ-शलै ी में पररितभन लाते ह ैं । बालक का िम्पर्ू भ विकाि ,व्यिहार पररितभन के नाम ि े ू जाना जाता ह ै । मल्याकन प्रवक्रया ि े वशक्षर् की प्रवक्रया के उपरात बालक के िावछत व्यिहार पररितभन ू ां ां ां की िीमा का मल्याकन वकया जाता ह ै । इि व्यिहार पररितभन म ें बालक के ज्ञानात्मक,िकल्पनात्मक ू ां ां तथा भािात्मक पक्ष िवम्मवलत रहते ह ैं । इि प्रकार मल्याकन एक विस्तत प्रवक्रया ह,ै वजिम ें विद्यावथभयों ृ ू ां की िफलता का िही अनमान लगाने का प्रयत्न वकया जाता ह ै । इिम ें छात्र के शारीररक, मानविक ु िामावजक तथा नैवतक गर्ों की परीक्षा िवम्मवलत रूप ि े की जाती ह ै । मल्याकन म ें प्राप्त ज्ञान और ु ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 143 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 पररिवतभत व्यिहार दोनों की जाँच हो जाती ह ै । िक्षेप म,ें मल्याकन म ें ज्ञान प्राप्त करने की िस्तवनष्ठता और ू ु ां ां व्यिहाररकता पर अविक बल वदया जाता ह,ै परन्त आिवनक परीक्षा प्रर्ाली म ें विषयगत वनष्ठा ु ु (Subjectivity) पर ही अविकतम बल वदया जाता ह ै । 4.2 उद्दश्े य इि इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. वशक्षर् प्रवक्रया म ें मल्याकन का िप्रत्यय िमझ पायेंग े । ू ां ां 2. अच्छे परीक्षर् एि मल्याकन की विशषे ताओ की िमझ वनवमतभ होगी । ू ां ां ां 3. मल्याकन के ितभमान पररदृश्य और उिके िमस्याओ का बोि विकवित होगा । ू ां ां 4. पारपररक मल्याकन के प्रर्ाली एि दोषों ि े अिगत हो पायेंग े । ू ां ां ां 5.

Quotes detected: **0.01%** id: **321**

'ितत एि व्यापक मल्याकन'

की िांिारर्ा,प्रकवत,उद्दश्े य,प्रवक्रया ि े अिगत हो पायेंग े । ृ ू ां ां 6. शवै क्षक मल्याकन के क्षेत्र म ें आए निीन अभ्याोिों को िमझने का कौशल विकवित होगा । ू ां 4.3 मूलयाकां न की भूधमका एवां महत्त्व

Quotes detected: **0%** id: **322**

'मल्याकन'

शब्द दो शब्दों के योग ि े बना ह-ै

Quotes detected: **0%** id: **323**

'मल्य'

और

Quotes detected: **0%** id: **324**

'अकन'

। इि प्रकार मल्याकन का शावब्दक ू ू ू ां ां ां अथभ छात्र के गर्-दोषों की वििेचना कर उिके िम्बन्ि म ें िही वनर्यभ करना या उिके यथाथभ मल्य को ु ू वनिाभररत करना ह ै । अन्य शब्दों म ें मल्याकन िह प्रवक्रया ह ै वजिके माध्यम ि े वकिी कायभ-िस्त या व्यवक्त ू ु ां का मल्य वनिाभररत करने का कायभ वकया जाता ह ै । हम इि प्रवक्रया िारा प्रत्येक योग्यता का मल्याकन कर ू ू ां िकते ह ैं । इि िम्बन्ि म ें थोनभडाईक का मत ह ै वक

Quotes detected: **0.04%** id: **325**

"कोई भी िस्त वजिका अवस्तत्ि ह ै िह वकिी मात्रा में ु होती ह ै और जब िह वकिी मात्रा म ें ह ै तो उिे मापा जा िकता है"

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 9 resources! id: **326**

। थोनभडाइक के इि कथन का आशय ह ै वक हम वकिी प्रकार ि े प्रत्येक िस्त को माप िकते ह ै । परन्त उि िस्त का वकिी न वकिी मात्रा में ु ु ु उपवस्थत होना आिश्यक ह ै । इि प्रकार प्रत्येक प्रकार की योग्यता का मल्याकन करना भी िभि ह ै । जहाँ ू ां ां तक छात्रों की योग्यता के मल्याकन का प्रश्न ह ै – िह एकपक्षीय नहीं ह ै । मल्याकन म ें छात्र क

ी मात्र ू ू ां ां शवै क्षक प्रगवत की जाँच नहीं होती िरन उिके शारीररक,मानविक,नैवतक और िामावजक िभी गर्ों की ु जाँच िवम्मवलत ह ै । वशक्षा वस्थर न होकर एक ितत चलने िाली प्रवक्रया ह ै ,वजिके फलस्िरूप बालक की शवै क्षक

योग्यताओ,रुवचयों,आदतों,अवभिवतयों तथा व्यिहार म ें वनरतर पररितभन चलता रहता ह ै । मल्याकन ृ ू ां ां ां प्रवक्रया ि यह पता करने का प्रयाि वकया जाता ह ै वक वशक्षर् ि बालक के व्यिहार म ें वकि िीमा तक पररितभन हआ ह ै । इिके वलए बालक के व्यिहार ि जडे तथ्यों को एकवत्रत वकया जाता ह ै और उिकी ु ु वििेचे ना की जाती ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 144 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 भाषा वशक्षकों के वलए कक्षा में पािय िस्त का प्रभािी प्रस्ततीकरर् अत्यत महत्िपर्भ ह ै । इतना होने पर ृ ु ु ू ां भी िवनवश्चत नहीं कर िकत े वक िभी विद्यावथभयों िारा कक्षा के आरभ म ें वनिाभररत ज्ञानात्मक,बोिात्मक ु ां और कौशलात्मक लक्ष्य प्राप्त कर वलए गए ह ैं । यवद कक्षा के िमापन पर वशक्षक और विद्यावथभयों को पि भ ू वनिाभररत लक्ष्यों की प्राववप्त का ितोष नहीं वमलता तो कक्षा की िफलता िवनवश्चत नहीं की जा िकती । ु ां वकिी भाषा िदभभ के वशक्षर् की िफलता म ें वशक्षक,विद्याथी और पाियिस्त तीनों पक्षों का िमान ृ ु ां योगदान रहता ह ै । इिके अविगम के प्रवत िवनवश्चत होने के वलए मापन और मल्याकन का प्राििान वकया ु ू ां जाता ह ै । मापन- िविष्ट के िमस्त पदाथों और व्यवक्तयों में परस्पर वभन्नता का गर् पा

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **327**

या जाता ह ै । इि वभन्नता को ृ ु पररभावषत और अवभव्यक्त करने के अनेक उपाय ह ैं वजन्ह ें मापन िारा स्पष्ट वकया जाता ह ै । भाषा- वशक्षर् के िदभ भ में मापन

िारा भाषाई तत्िों के अविगम म ें विद्यावथभयों की व्यवक्तगत वभन्नता का आकलन और ां प्रस्ततीकरर् वकया जाता ह ै । मापन ि हम ें व्यवक्त के अतीत का आभाि होता ह ै वजिि ितभमान को ु िमझने का आिार प्राप्त होता ह ै और भविष्य की िमस्याओ के िमािान में मदद वमलती ह ै । ां मापन की प्रहिया के तीन चरण ि क) वकिी व्यवक्त के गर् की पहचान और पररभाषीकरर् ु ख) उि प्रवक्रया का वनिाभरर् वजिि उि गर् को प्रस्तत वकया जाता ह ै । ु ु ग) प्रस्तत गर् को प्राप्ताकों या पररमार् िचक इकाइयों में पररिवतभत करना ु ु ू ां मापन िारा वकिी व्यवक्त विद्याथी का मल्याकन नहीं होता अवपत प्रकरर् विशषे के अविगम म ें उिकी ू ु ां योग्यता और स्तर का मापन होता ह ै । मल्याकन- मल्याकन का अथभ परीक्षा पत्रों के अकन ि वलया जाता ह,ै वकत मौवलक रूप ि इिका ू ू ु ं ां ां ां उपयोग वशक्षा के उद्दश्े य, वशक्षर् -वववियों और पाियक्रम की िापेवक्षक उपयोवगता का पता लगाने और ् विद्यावथभयों की उपलवब्ियों के मापन इत्यावद म ें वकया जाता ह ै । वशक्षर् और मल्याकन परस्पर ू ां अन्योन्यावश्रत ह ै । वशक्षर् का मल्याकन व्यिहार में पररितभन को दृवष्टगत रखकर वकया जाता ह ै क्योंवक ू ां विद्यावथभयों म ें िकारात्मक और स्थाई पररितभन वशक्षा का प्राथवमक उद्दश्े य ह ै । वक्िलेन और हन्ना के मत में-

Quotes detected: **0.03%** id: **328**

“विद्यालय िारा बालक के व्यिहार पररितभन के विषय म ें िाक्ष्यों के िकलन और उनकी व्याख्या ां करने की प्रवक्रया ही मल्याकन ह”

ै । ू ां वशक्षर् हते प्रयक्त िमस्त उपायों, प्रवक्रयाओ और उपकरर्ों का क्या, वकतना और कै िा महत्ि ह,ै इिके ु ु ां उपयोग ि वशक्षर् प्रवक्रया वकि प्रकार प्रभावित हई और विद्यावथभयों के व्यिहार पररितभन का लक्ष्य ु वकतना और वकि स्तर तक उपलब्ि हआ यह जानने के वलए मल्याकन एक उपयोगी प्रवक्रया ह ै । ु ू ां मल्याकन के अभाि म ें वशक्षर् की वस्थवत और उपयोवगता को प्रमावर्त करना और उिके प्रवत आश्वस्त ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 145 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 हो िकना अिभि ह ै । मल्याकन वशक्षकों के िाथ ही विद्यावथभयों की आत्मितोष के वलए भी उपयोगी ू ां ां ां ह।ै मल्याकन का आशय ह ै वकिी वशक्षर् प्रवक्रया

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **329**

के माध्यम ि विद्यावथभयों के ज्ञान-कौशल और व्यिहार- ू ां पररितभन के स्तर की िटीक जाच करना । वशक्षर् प्रवक्रया म ें मल्याकन की िकल्पना का काफी महत्ि ह।ै ू ां ां ां मल्याकन के माध्यम

ि वशक्षर् प्रवक्रया के प्रभाि, उपयोवगता, िीमाओ और अपेवक्षत िािारों या ू ु ां ां पररितभन के विषय नए तथ्य जटा िकते ह ैं और उनके िारा वशक्षर् प्रवक्रया को जयादा प्रभािी और िफल ु बना िकते ह ैं । इि दृवष्ट ि छात्राध्यापकों को मल्याकन के िकल्पना उद्दश्े य प्रकार और वववियों ि े ू ां ां अिश्य पररवचत होना चावहए । अतीत ि आज तक वशक्षकों ने वशष्यों की उपलवब्ियों को एक या अन्य वववियों ि जाचा और ां परखा ह ै , कभी िस्थागत परीक्षा के रूप में तो कभी िािभजवनक प्रदशनभ के माध्यम ि । मल्याकन का ू ां ां इवतहाि िहा ि शरु होता ह ै जहा विद्यावथभयों िारा पवित अश या अविगम कौशल की यथारूप प्रस्तवत के ु ु ां ां ां वबना आगामी ित्र या कौशल की प्रस्तवत नहीं की जाती थी । तब ि आज तक मल्याकन ने अनेक चरर् ू ु ू ां पार वकए ह ैं और अनेक रूप बदले ह ैं । आज मल्याकन की िटीकता और पर्तभ ा के वलए अनेक उपायों का आश्रय वलया जा रहा ह ै । ू ू ां इनमें प्रमख ह ै -वलवखत परीक्षा म ें विद्यावथभयों िारा अवजतभ अक या श्रेर्ी । ये श्रेर्ी ही आज विद्यावथभयों के ु ां शवै क्षक विकाि की किौटी बन गई ह ैं । हालावक इि माध्यम ि वशक्षाथी के ज्ञानात्मक पक्ष का ही ां मल्याकन वकया जा िकता ह,ै प्रयोगात्मक या कौशलात्मक का नहीं । िाथ ही यह भी ित्य ह ै इि ू ां मल्याकन ि विद्यावथभयों में स्थायी व्यिहार पररितभन की कोई िचना नहीं वमलती । इन्हीं कारर्ों ि यह ू ू ां मल्याकन प्रर्ाली विद्यावथभयों के व्यवक्तत्ि की अन्य पहलओ के विकाि की कोई िचना नहीं दते ी । ू ु ू ां ां 4.3.1 उत्तम मल्याकन की हििेर्ताए ँ ू ं परीक्षर्ों का वनमाभर् विवशष्ट कशलता िापेक्ष प्रवक्रया ह ै । िभी अध्यापक मल्याकन एि परीक्षर्ों का ु ू ां ां वनमाभर् िमान रूप ि और

िहज कशलता ि नहीं कर पाते । इिके वलए विशषे प्रवशक्षर्, ितकभ ता ए ि ु ां अभ्याि की आिश्यकता होती ह ै । परीक्षर्ों म ें वनमाभर् के वलए विशेष कशलता अपेवक्षत ह ै । तैयार वकए ु गए प्रश्नों म ें वनवश्चत विशेष ताओ का िमािशे अवनिायभ माना जाता ह ै । अतः परीक्षर्ों के चयन ए ि ां ां वनमाभर् म ें वनम्नावकत तथ्यों पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै - ां i. िैधता- मल्याकन में िै ि ता का िामान्य अथभ ह ै ि िस्भ िीकायभता और वनयमानकलता । मल्याकन पि ू ु ू ू ां ां के विशेष ि ि िबवित विद्यावथभयों के स्तर के अनरूप और ि प्रावप्त परीक्षर् तक कें वित होनी चावहए । ु ां ां ां उिके प्रयोग ि विद्यावथभयों पर कोई प्रवतकल प्रभाि होने या अपने प्रयोजन म ें विद् ना होने पर ू मल्याकन की िै ि ता िमाप्त हो जाती ह ै । िै ि ता िाथ म ें मल्याकन का िह गर् होता ह ै वक एक ू ू ु ां ां परीक्षर् ि ीक उिी कौशल,क्षमता का मल्याकन करें जो उि परीक्षर् का उद्दश्े य ह ै । ू ां ii. हर्श्वसनीयता- विवभन्न परन्त िमतल्य पररवस्थवतयों म ें वकिी प्रश्न ,परीक्षर् या परीक्षा का उत्तर ु ु पर्तभ ः एक ही

Plagiarism detected: 0.03% https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: 330

प्रकार का होगा तो ऐिा मापन विश्विनीयता कहलाएगी । विश्विनीय िामग्री िही ह ैं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 146 ु हिन्दी क ा हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 वजिम ें एक ि स्तर के विद्याथी बार-बार परीक्षा म ें एक िा उत्तर दते े ह ैं । अतः परीक्षक की योग्यता कै िी भी हो,मल्याकन प्रायः एक िा रहता ह ै । व्यिहार म ें यह कविन लगता ह ै जहााँ एक ही प्रश्न या ू ां प्रश्नपत्र को अनेक लोग जााँचते ह ै ,िहााँ मल्याकन की विश्विनीयता बहत महत्त्िपर् भ ह।ै ु ू ू ां iii. र्तहनष्ठता- िस्तवनष्ठता का तात्पयभ यह ह ै वक परीक्षर् ि प्राप्त परररर्ाम परीक्षक की व्यवक्तगत ु ु विचारिारा ,रुवचयों तथा मान्यताओ ि प्रभावित नहीं होते । परीक्षक के रागद्वषे का अिर उिके ां िंिगे ात्मक मनोभािों का परीक्षर् के परररर्ामों पर कोई प्रभाि नहीं पडता । छात्रों के ज्ञान का परीक्षर् ां वनरपेक्ष दृवष्ट ि वकया जाता ह ै । iv. समग्रता- एक अच्छे परीक्षर् म ें िमग्रता का गर् अवनिायभतः विद्यमान होता ह ै । िमग्रता ि ु अवभप्राय यह ह ै वक उि परीक्षर् के िारा छात्र की विवशष्ट योग्यता का मापन िमग्र रूप ि वकया जा िकता ह ै । उिकी योग्यता का खवडत अथिा आवशक मल्याकन परीक्षर् के उद्दश्े यों को पर् भ करने म ें ू ू ां ां ां अिमथभ होता ह,ै इििे वनिाभररत लक्ष्य की पवतभ नहीं होती । इिके वलए यह आिश्यक ह ै वक परीक्षर् ू म ें इतने प्रश्न का िमािशे वकया जाए वजििे

Plagiarism detected: 0.1% https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: 331

छात्र की विवशष्ट योग्यता ि िम्बवित िभी पक्षों का परा ू ां पररचय प्राप्त हो िके । v. हर्भेदकता- अच्छा मल्याकन का मापदड यह ह ै वक िह छात्र की उपलवब्ियों का पर् भ वििरर् इि ू ू ां ां प्रकार प्रस्तत करे वक उनके आिार पर उनकी योग्यता का स्तर वनिाभररत वकया जा िके । कक्षा म ें ु उपलवब्ियों की दृवष्ट ि श्रेष्ठ छात्र कौन ि ह,ै िामान्य छात्र कौन ि ह ै और कमजोर छात्र क

ौन ि ह ै , इिकी जानकारी मल्याकन के आिार पर प्राप्त

Plagiarism detected: 0.04% https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: 332

होनी चावहए । ू ां vi. व्यािहाररकता – मल्याकन की प्रवक्रया,लागत,िमय और प्रयोग म ें आिानी की दृवष्ट ि े ू ां िास्तविक,व्यिहाररक और कशल होनी चावहए

। हो िकता ह ै वक मल्याकन का कोई तरीका ु ू ां आदश भ हो परन्त उिे व्यिहार म ें न लाया जा िके । यह िीक नहीं ह ै और इि प्रोत्िावहत नहीं करना ु चावहए । उदाहरर् के वलए विद्यावथभयों को प्रायोवगक परीक्षा के वलए एक

Plagiarism detected: 0.04% https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: 333

ही प्रयोग दने े के स्थान पर अलग-अलग प्रयोग कराना जयादा लाभकारी ह ै क्योंवक एक ही प्रयोग के वलए अनेकों िमान यत्र ां उपलब्ि कराना कई स्थानों पर

िभि नहीं हो िकता । ां vii. न्यायसगतता- मल्याकन िभी विद्यावथभयों के वलए िमान रूप ि न्यायिगत

Plagiarism detected: 0.04% https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: 334

होना चावहए । यह तभी ू े ां ां हो िकता ह ै जब वकिी पि के उद्दश्े यों के अनरूप विद्यावथभयों के अपेवक्षत व्यिहारों को दशाभए । ु विद्यावथभयों को पता होना चावहए

वक उनका मल्याकन कै ि होना ह ै । इिका अथभ यह ह ै वक ू ां विद्यावथभयों को मल्याकन के विषय म ें िचना वमलनी चावहए जैि े िह िामग्री वजिम ें उनका परीक्षर् ू ू ां होना ह ै उिकी प्रकवत (विषय,िन्दभ भ ए ि उद्दश्े य),परीक्षा की िरचना,विस्तार और परीक्षा का परररर्ाम ृ ां ां तथा अकों के आिार पर

Plagiarism detected: 0.03% https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: 335

प्रत्येक भाग का महत्त्ि । ां viii. उपयोहगता- मल्याकन विद्यावथभयों के वलए उपयोगी होना चावहए । इिके परररर्ामों ि विद्यावथभयों ू ां को अिगत होना चावहए

तावक िह अपनी कमजोररयों को और वजन बातों म ें (वबन्दओ) म ें उि ां ु महारत हो , उनको जान िके । इि प्रकार िह अविक िि ार लाने का िोच िकता ह ै । मल्याकन ि ु ू ां ही उिे पता चलता ह ै वक वकि वदशा में िि ार करना ह ै । यह िि ार पिन िामग्री,अध्यापन विवि ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 147 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अथिा अविगम शलै ी म ें

भी हो िकता ह ै । इि प्रकार मल्याकन विद्यावथभयों की कमजोररयों को ू ां जानने और उन्ह ें दर करने म ें बहत लाभकारी होता ह ै । ु ू 4.3.2 मल्याकन के पक्ष ू ं मल्याकन के तीन पक्ष होते ह ै – ू ां 1. ज्ञानात्मक पक्ष –के .पी.पाण्डेय के अनिार 'वशक्षर् म ें ज्ञान उद्दश्े य इि बात पर बल दते ा ह ै वक ु छात्र निीन िचनाओ तथ्यों एि ित्यों ि पररचय प्राप्त करें इिम ें स्मरर् की मनिोज्ञै ावनक प्रवक्रया ू ां ां कायभशील रहती ह ै ।

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 2 resources! id: **336**

प्रत्येक विषय की वशक्षा म ें ज्ञानात्मक पक्ष होता ह ै और विद्याथी के व्यवक्तत्ि का महत्िपर् भ अग माना जाता ह ै ।हमारी आिवनक वशक्षा का यह पक्ष बहत महत्िपर् भ बन गया ु ू ु ू ां ह।ै " □ विवशष्ट तथ्

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.apnakhata.co/how-to-check-bhulek... + 5 resources! id: **337**

यों की जानकारी । □ विवशष्ट तथ्यों को प्राप्त करने की विविओ की जानकारी । ां □ परम्पराओ एि मान्यताओ का ज्ञान । ां ां ां □ घटनाओ की गवतविवियों ि प्रवक्रयाओ की जानकारी । ां ां □ मापदडो अथिा किौटी की जानकारी । ां □ प्र◌ृिवलयों की जानकारी । □ वकिी विषय के िगीकरर् तथा श्रेवर्यों की जानकारी । □ विद्◌ातों तथा िामान्यीकरर् की जानकारी । ां 2. स◌ि्ेदनात्मक पक्ष –ज्ञान प्राप्त करने क

◌ी प्रवक्रया म ें बच्चों की रूवच तथा मनिोवत्त का विशेष ृ ं योग रहता ह ै "बालक के व्यिहार का भािात्मक पक्ष उिकी रुवचयों, ििेगों तथा मनिोवत्तयों ि ृ ां िम्बवन्ित होता ह ै ।बालक म ें जब वकिी नई रूवच का जन्म होता ह ै अथिा उिके िीखने की प्रिवत्त के िाथ वप्रय एि अवप्रय भाि वदखाई दने े लगते ह ै तो यह पररितभन उिके भािात्मक पक्ष ृ ां ि जडा हआ माना जायेगा । मनिोवत्त का पर् भ मनिोज्ञै ावनक आिार भािात्मक होता ह ै । ु ृ ु ू िम्ि्दे नात्मक पक्ष के तीन स्तर होते ह ै – i. मख्य रुवचयाँ ु ii. मान्यताए ाँ iii. अनमल्यन ु ू iv. व्यिस्थापन v. चाररत्रीकरर् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 148 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 3. हियात्मक पक्ष –मल्याकन का वक्रयात्मक पक्ष आवगक गवतविवियों की आिश्यकता ि े ू ां ां िम्बन्ि होता ह ै । शारीररक वशक्षा व्याििावयक एि तकनीकी वशक्षा म ें बालक के व्यिहार का ां वक्रयात्मक पक्ष होता ह ै । वक्रयात्मक पक्ष के वनम्न 5 स्तर होते ह ै – i. उत्तेजन – इिम े कायभ करने के प्रवत उत्तजे ना उत्पन्न की जाती ह ै । ii. कायिि्ाी –उत्तजे ना के आिार पर बालक गवतशील वक्रयाये करता ह ै । iii. हनयत्रण –वनयत्रर् ि बालक अपनी वक्रया िगवित करता ह ै । ं ां ां iv. समायोजन- िमायोजन म ें विवभन्न वक्रयाओ पर वनयत्रर् के आिार पर आपि म ें ां ां िमायोजन वकया जाता ह ै । v. तर्भा◌ीकरण – स्ि्भािीकरर् के अतगतभ कायभ की शलै ी तैयार हो जाती ह ै और िह ां कायभ विशषे गवत एि ढग ि पर् भ होता ह ै । ू ां ां अभ्यास प्रश्न 1. मल्याकन म ें विद्याथी की शवै क्षक प्रगवत की ही जाँच होती ह ै । (ित्य/अित्य) ू ां 2. मापन का पहला चरर् विद्याथी के प्रस्तत गर् की पहचान और पररभाषीकरर् ह ै । ु ु (ित्य/अित्य) 3. िमतल्य पररवस्थवतयों म ें एक प्रश्न का उत्तर,परर◌्ाम िमान आता ह ै । परीक्षर् का यह गर् ु ु 'ि्ि ता' कहलाएगा । (ित्य/अित्य) 4. वलवखत परीक्षा िारा विद्याथी के कौशलात्मक पक्ष का मल्याकन होता ह ै । (ित्य/अित्य) ू ां 5. यवद परीक्षर् के परर◌्ाम परीक्षक के विचारािारा,रूवच और मान्यता ि प्रभावित नहीं होते तो परीक्षर् का यह गर् 'िस्तवनष्ठता' कहलाता ह ै । (ित्य/अित्य) ु ु 4.4 परीक्षि की वतमभ ◌ान िमस्याए ां एवं पधरदश◌् ृ य जब ि वशक्षा प्रदान करने का प्रचलन हआ ह ै तब ि परीक्षर् प्र◌्ाली वकिी न वकिी रूप म ें चली आ ु रही ह ै । िवै दक काल म ें परीक्षर् जहाँ अवजभत ज्ञान का पता लगाने के वलए वकया जाता था िही इि बात को जानने के वलए भी वकया जाता था वक कोई बालक आगामी विवशष्ट ज्ञानाजनभ के योग्य ह ै अथिा नहीं। यथाथभ म ें इि प्रकार के परीक्षर् िारा बालक के पि भ ज्ञान, अवभरुवच, क्षमता, योग्यता आवद का ज्ञान ू कर वलया जाता था । अनेक उदाहरर् ह ै वजनिे परीक्षर् व्यिस्था की व्यिहाररकता तथा व्यापकता

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/... + 2 resources! id: **338**

का ज्ञान प्राप्त होता ह ै । नालदा और तक्षवशला विश्वविद्यालयों में प्रिशे पाने िाले छात्रों के ज्ञान

का परीक्षर् पवडतों और वििानों ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 149 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 के िारा वकया जाता था । परत यह ध्यान रखना चावहए वक प्राचीन काल म ें परीक्षर् की पद्वत मौवखक ही ु ां थी आज के िमान वलवखत नहीं । भारत के िमान विश्व के अन्य दशे ों म ें भी मौवखक परीक्षा का ही प्रचलन था ।

Quotes detected: **0%** id: **339**

'ओल्ड टेस्टामटें '

में जॉडभन म ें मौवखक परीक्षाओ का उल्लेख वमलता ह ै । यनान का प्रविद् दाशवभ नक िकरात अपने वशष्यों के ज्ञान ू ु ां का परीक्षर् करने के वलए

Quotes detected: **0%** id: **340**

'प्रश्नोत्तर विवि'

का प्रयोग करता था, वजिे कालातर म ें

Quotes detected: **0%** id: **341**

'िकराती विवि'

की ु ां िज्ञा दी गई । ां कालातर म ें मौवखक शवै क्षक मल्याकन की परानी प्र ्राली ने विद्यालयी परीक्षा का रूप ले वलया था । ू ु ां ां वलवखत परीक्षाओ का प्रचलन मौवखक परीक्षाओ के बहत िमय बाद प्रारभ हआ । चीन म ें 2200 िषभ ु ु ां ां ां पि भ राज पदों पर योग्य व्यवक्तयों की वनयवक्त करने के वलए वलवखत परीक्षा ली जाती थी । इग्लैंड में ू ु ां वलवखत परीक्षा का प्रचलन िन 1700 के आिपाि प्रारभ हआ था । इन्ह ें वनबन्धात्मक परीक्षा का नाम ु ां ां वदया गया था । विश्वा वकया जाता था वक बवद् और व्यवक्तत्ि के अन्य ग ्रों को वनबि वलखने के िारा ु ु ां अवभव्यक्त वकया जा िकता ह ै । एक खिा विषय म ें विद्यार्थी ने वकतना िीखा ह ै यह भी उिके वलखे वनबि को जाँचन े के माध्यम ि िवनवश्चत वकया जाता था । इि प्रकार इन वनबि आिाररत परीक्षाओ के ु ां ां आिार पर विद्यार्थी के शवै क्षक प्रगवत को तो जाचा ही जाता था िाथ ही इिके आिार पर ही उिके ां आगामी प्रगवत की भविष्या ्री की जाती थी । वनबि परीक्षाए ाँ ही विद्यार्थी की प्रगवत को मापने का ां एकलौता िािन था । वकन्त वशक्षाशास्त्र,िमाजशास्त्र,मनोविज्ञान ए अन्य मानविकी विज्ञानों के शोिों के उपरात विद्वानों िारा ु ां ां मल्याकन की इि वनबि आिाररत परम्परागत पद्वत म ें अनेक दोषों को पाया गया । पाया गया वक ू ां ां विद्यार्थी की क्षमता को मापने के वलए के वल िावषकभ वनबि परीक्षाए ाँ पयाभप्त नहीं ह ै । इन्ह ें हम वनम्न प्रकार ां ि िचीबद् कर िकते ह ैं । ू 1. अहर्श्वसनीयता- यह पाया गया वक वनबन्धात्मक परीक्षा का एक ही उत्तर-पत्रक अलग-अलग ां परीक्षकों िारा अलग प्रकार ि जाँचा जाता ह,ै और अलग प्रकार के परर ्राम वदया जाता ह ै । अतः ये परीक्षाए ाँ अविश्विनीय ह ैं । 2. हर्याहथियों का समग्र मल्याकन के र्ल सत्रात हलहखत परीक्षा द्वारा – िित्रात परीक्षाओ का ू ं ं ां ां पियक्रम लम्बा होने के कारर् विद्यावथभयों के वलए विस्तत पियक्रम को िवमत िमयािवि में ृ ृ ृ पनरािवत करना कविन होता ह ै । ू ु 3. सपणि पाठयिम का प्रहतहनहधत्र् नर्ीं- कछ परीक्षक परीक्षर् म ें अपने पिद के पािों को ही व ू ु ं ां अविक महत्ि दते े ह ैं । िमय की कमी के कारर् भी परीक्षर् म ें परे पियक्रम का प्रवतवनवित्ि नहीं ृ ू होता । 4. मनोदिा का प्रभार्- इिम ें आपगत तत्ि की प्रिानता रहती ह ै । उत्तरों के मल्याकन पर परीक्षक के ू ां विचारों और उिकी मनोदशा का प्रभाि पडता ह ै । 5. समय का अपव्यय- वनबन्धात्मक परीक्षा म ें िमय बहत अविक लगता ह ै अतः छात्र वकिी प्रश्न ु ां का उत्तर वनवश्चत िमय म ें नहीं द े पाता । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 150 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 6. अतपष्टता और जहटलता- वनबन्धात्मक परीक्षा म ें पछे गए प्रश्न अस्पष्ट,जवटल और अितवलत होते ू ु ां ां ह ैं । 7. भहर्ष्य ्राणी सभर् नर्ीं- वनबन्धात्मक परीक्षा का िबिे बडा दोष यह ह ै इिके परर ्राम के आिार ं ां पर हम छात्र के विषय म ें कोई भविष्या ्री नहीं कर िकते क्योंवक परर ्रामों में एकरूपता नहीं होती । 8. परीक्षा के हर्भन्न माप- वनबन्धात्मक परीक्षा पद्वत का िबिे बडा दोस्त यह ह ै वक इि म ें छात्रों ां की उत्तर पवस्तका जाचने का वनवश्चत मापदड नहीं होता ह ै । प्रत्येक परीक्षक अपने दृवष्टकोर् के ु ां ां आिार पर कॉवपयों की जाच करते ह ैं । यवद एक वशक्षक बच्चे के लेख ि प्रभावित होकर तो दिरा ां ू भाषा ि और तीिरा विरर् ि प्रभावित होकर अक दते ा ह ै । इि प्रकार परीक्षकों म ें मतभदे होने के ां कारर् परीक्षाफल एक िा नहीं होता । 9. धीमा सचालन-बड़ा तनार्- शवै क्षक ित्र के प्रारम्भ म ें वशक्षक और विद्यार्थी दोनों िस्त

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 2 resources! id: **342**

हो जाते ह,ै ु ं पियक्रम का िचालन िीमी गवत ि होता ह ै क्योंवक परीक्षा दर होती ह,ै ल

ेवकन परीक्षा पाि आने पर ृ ां ू वशक्षक और विद्यार्थी दोनों पियक्रम का दबाि अनभि करते ह ैं । ृ ु 10. हर्याथी के के र्ल सज्ञानात्मक हर्कास का िी मल्याकन ू ं ं 11. भा ्रात्मक एर् हियात्मक या मनोगिीय िहक्षक उद्देश्यों का मल्याकन पणितया उपेहक्षत- ू ू ं ं इि प्रकार की परीक्षा प्र ्राली म ें व्यवक्तत्ि के िमग्र पक्ष के मल्याकन के स्थान पर के िल ज्ञानात्मक ू ां पक्ष का ही मल्याकन होता ह ै और विद्यार्थी

Quotes detected: **0%** id: **343**

'रट्ट तोता'

बनने को वििश था । ू ां 12. अध्येता के तमरणिहक्त का मल्याकन- परीक्षा की प्रकवत वनबन्धात्मक होने के कारर् अध्येता का ृ ू ं ां िारा ध्यान रटन पर ही रहता ह ै । 13. मल्याकन के हलए अक पद्धहत का उपयोग- मल्याकन के उपरात अक पद्वत ि परर ्राम वदए ू ू ं ं ां ां ां जाते थे वजिि मद अविगम विद्यावथभयों म ें हीन भािना का उदय होता था । ां 14. िित नहीं 15. व्यापक नहीं अभ्यास प्रश्न 6. िकरात िारा अपने वशष्यों के ज्ञान का परीक्षर् के वलए कौन िी पद्वत प्रयोग म ें लायी जाती ु थी? 7. वकि प्रकार के परीक्षर् को

Quotes detected: **0%** id: **344**

'अविश्विनीय'

कहा जाएगा? 4.5 िित एवं व्यापक मूलयाकां न सतत तथा व्यापक मल्याकन भारत के स्कलों म ें मल्याकन के वलये लाग की गयी एक नीवत ह ै वजिे ू ू ू ू ं ां 2009 म ें आरम्भ वकया गया था। इिकी आिश्यकता वशक्षा के अविकार 2009 के परररप्रेक्ष्य म ें आिश्यक हो गया था। यह मल्याकन प्रवक्रया राजय िरकारों के परीक्षा-बोडों तथा के न्िीय माध्यवमक ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 151 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 वशक्षा बोडभ िारा शरू की गयी ह।ै इि पद्वत िारा छिी कक्षा ि लेकर 1िीं कक्षा के विद्यावथभयों का ु मल्याकन वकया जाथा ह।ै कछ

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **345**

विद्यालयों म ें 1दिीं कक्षा के वलये भी यह प्रवक्रया लाग ह।ै ू ु ू ां भारत के मानि िोिान विकाि मत्रालय और कें िीय माध्यवमक वशक्षा बोडभ ने विद्यालय

वशक्षा क्षेत्र में ां ां िोिार लाने के वदनाक 20 वितबर, 2009 को घोवषत वकया वक ितत और व्यापक मल्याकन (िोिीई) ु ू ां ां ां को िुदृढ़ बनाया जाएगा और अक्टबर 2009 ि कक्षा 9 के वलए िभी िबद्ध विद्यालयों में उपयोग वकया ु ू ां जाएगा। पररपत्र म ें आग े बताया गया था वक ितभमान शवै क्षक ित्र 2009 -10 ि कक्षा 9 और 10 के वलए नई ग्रेवडग प्रराली लाग की जाएगी। वदनाक 29 वितबर, 2009 के पररपत्र िख्या 40/29-09- 2009 म ें ू ां ां ां ां उवल्लवखत कक्षाओ के वलए लाग की जाने िाली ग्रेवडग प्रराली के िभी वििरर प्रदान वकए गए थे। ू ां ां िीबीएिई ने 6 अक्टबर, 2009 ि प्रवशक्षक-प्रवशक्षर फॉमटे म ें कायभशालाओ के माध्यम ि दषे भर में ू ां ितत तथा व्यापक मल्याकन प्रवशक्षर दने ा आरभ वकया था। िी.िी.ई का अथभ

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **346**

छात्रों की विद्यालय ू ां ां आिाररत मल्याकन की प्रराली ि ह ै वजिमें छात्रों क

े विकाि के िभी पक्ष ू ां (मानविक,शारीररक,आवत्मक) शावमल ह ै । यह एक बच्चे की विकाि प्रवक्रया ह,ै वजिमें दोहरे उद्दश्े यों पर बल वदया

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **347**

जाता ह ै । यह उद्दश्े य एक ओर मल्याकन म ें वनरतरता और व्यापक रूप ि िीखने के मल्याकन ू ू ां ां ां पर तथा दिरी और व्यिहार के पररराामों पर आिाररत ह ै । ू "ितत एि व्यापक

मल्याकन" के वशक्षक िदवशकभ ा म ें िी.बी.एि.ई के तत्कालीन अध्यक्ष विनीत जोशी ू ां ां ां ने इिकी आिश्यकता पर प्रकाश डालते हए वलखा – ु "विद्यालय वशक्षा रूपातरर के दौर ि गजर रही ह ै । उिके कें ि म ें ह ै मल्याकन तथा अध्यापन अविगम की ु ू ां ां प्रवक्रया ि अिंतिंबि के प्रवत एक नया दृवष्टकोर । आज िभी इि तथ्य को मानते ह ैं वक जो कछ भी ु ां ां

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.cheggindia.com/hi/barahkhadi/ + 2 resources! id: **348**

पढ़ाया जाता ह ै और जैि े पढ़ाया जाता ह ै ,अविगम की प्रवक्रया मल्याकन की प्रवक्रया ि प्रभावित होते ह

ैं । ू ां शोिकताभ वशक्षाविदों तथा वशक्षा जगत ि जडे व्यवक्तयों म ें यह एक िामान्य िारराा ह ै वक मल्याकन कई ु ू ां बार िीखने के प्रवतफल को बढ़ाने की बजाए बढ़ने ि रोक दते ा है। अध्यापन-अविगम की प्रवक्रया म ें यवद हम वशक्षर के विकल्पों एि अविगम की गवतविवियों को अभ्याि को के िल परीक्षा की पिभ तैयारी मानते ू ां ह ैं तो हम वनवश्चत रुप ि अपने वशक्षावथभयों के प्रवत अिफल होने का जोवखम उिा रह े होते हैं। मल्याकन के ू ां वलए काम करते िमय एक बडा दोष यह पाया जाता ह ै वक वशक्षाथी का प्रयाि होता ह ै िह पाि होने के वलए न्यनतम अवनिायभ कायों पर ही अपना ध्यान कें वित करें । ू आज हमारे िमक्ष पारपररक वशक्षा प्रराली परीक्षर प्रराली और मल्याकन को बदलने की चनौती उभर ू ु ां ां आई ह।ै माध्यवमक स्तर पर ितत एि व्यापक मल्याकन पद्धवत को अपने िभी विद्यालयों म ें लाग करते ू ू ां ां हए िी.बी.एि.इ ने यह स्पष्ट िदशे वदया ह ै वक मल्याकन करते िमय विद्यावथभयों के िोिांगीर विकाि को ु ू ां ां ध्यान म ें रखा जाना चावहए। अविगम एक ितत प्रवक्रया ह ै इिका मल्याकन भी इिीवलए ितत होना ू ां चावहए । मल्याकन अध्यापन एि अविगम की प्रवक्रया का एक अवभन्न अग ह।ै इिवलए िीिीई म ें मल ू ू ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 152 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 रूप ि विद्याथी के ज्ञान की परीक्षा के आिार पर उिके अविगम की प्रवक्रया को मल्याकन के वलए चना ू ु ां गया ह ै ।" यहााँ

Quotes detected: **0%** id: **349**

"वनरतरता"

का अथभ इि पर बल दने ा ह ै वक छात्रों की

Quotes detected: **0%** id: **350**

"िवद्ध और विकाि"

के अवभज्ञात पक्षों का ृ ां मल्याकन एक बार के कायभक्रम के बजाए एक वनरतर प्रवक्रया ह,ै वजि म ें िपर्भ अध्यापन अविगम प्रवक्रया ू ू ां ां ां में वनवमतभ वकया गया ह ै और यह शवै क्षक ित्र की परी अिवि में फै ली हई ह ै । इिका अथभ ह ै मल्याकन म ें ु ू ू ां वनयवमतता, अविगम अतरालों का वनदान, िोिारात्मक उपायों का उपयोग, स्िय मल्याकन के वलए ु ू ां ां ां अध्यापकों और छात्रों के िाक्ष्य का फीडबैक । दिरा पद

Quotes detected: **0%** id: **351**

"व्यापक"

का अथभ ह ै शवै क्षक और िह- शवै क्षक पक्षों को शावमल करते हए छात्रों के िवद्ध और ु ृ ू विकाि को परखने की योजना । चाँवक क्षमताए मनोिवत्तया और िोच अपने आप को वलवखत शब्दों के ृ ू ां ां अलािा अन्य रूप में प्रकट करती ह,ै इिवलए यह पद अनेक िािन और तकनीकों के अनप्रयोग को ु िदवभतभ करता ह ै (परीक्षर कारी और गरै परीक्षर्कारी दोनों) और यह िीखने के

क्षेत्रों में छात्र के विकिा ां के मल्याकन पर लवक्षत ह ै जिै े : ू ां ज्ञान िमझ/व्याख्या अनप्रयोग ु विश्लेषर् मल्याकन ू ां िजनात्मकता ृ 4.5.1 सतत एर् व्यापक मल्याकन के उद्देश्य ू ं ं बिोत्मक, मनोप्रेरक और भिानात्मक कौशलों के विकिा में िहायता । िीखने की प्रवक्रया पर बल दने ा और याद रखन े पर बल नहीं दने ा । मल्याकन को अध्यापन -अविगम प्रवक्रया का अविभाजय वहस्िा मानना । ू ां वनयवमत वनदान के आिार पर उपचारात्मक अनदशे ों के बाद छात्रों की उपलवब्ि और ु अध्यापन- अविगम कायभ नीवतयों म ें िंिार के वलए मल्याकन का उपयोग करना । ु ू ां मल्याकन को वनष्पादन के िांवछत स्तर पर बनाए रखने के वलए गिर्त्ता वनयत्रर् यवक्त के रुप म ें ू ु ु ां ां ां इस्तेमाल करना । िामावजक उपयोवगता ,िांछनीयता या एक कायभक्रम की प्रभािशीलता का वनिाभरर् करना और ां छात्र िीखने की प्रवक्रया और िीखने के पररिशे

Plagiarism detected: **0.02%** https://grammarsikho.in/k-se-gya-tak/ id: **352**

के बारे म ें उपयक्त वनर्यभ लेना । ु अध्यापन और अविगम प्रवक्रया को छात्र

कें वित कायभकलाप बनाना । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 153 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 4.5.2 सी.सी.ई की हिििेर्ताए ँ िीिीई के

Quotes detected: **0%** id: **353**

“वनरतर”

पक्ष में मल्याकन के

Quotes detected: **0%** id: **354**

“वनरतरता”

और

Quotes detected: **0%** id: **355**

“आिविकता”

पक्षों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **356**

का ध्यान रखा ू ां ां ां जाता ह ै । वनरतरता का अथभ मल्याकन की अनेक तकनीकों का अनौपचाररक रूप ि े उपयोग करते हए ु ू ां ां छात्रों क

ा मल्याकन अनदशे ों के आिार पर (वनयोजन मल्याकन) और अनदशे ात्मक प्रवक्रया के ू ु ू ु ां ां दौरान मल्याकन (वनमाभर्कारी मल्याकन) करना ह ै । ू ू ां ां आिविकता का अथभ इकाई/ कायाभिवि (िाराश) के अत में बार-बार वनष्पादन का मल्याकन ू ां ां ां करना ह ै । िीिीई के

Quotes detected: **0%** id: **357**

‘व्यापक’

घटक म ें बच्चे के व्यवक्तत्ि के िमग्र विकिा का मल्याकन रखन े का करने ू ां का ध्यान रखा जाता ह ै । इि में छात्रों के िंवद् के शवै क्षक और िह-शवै क्षक पक्षों का मल्याकन ृ ू ां शावमल ह ै । शवै क्षक पक्षों में पाियक्रम

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 8 resources! id: **358**

के क्षेत्र या विषय विवशष्ट क्षेत्र शावमल ह ै जबवक िह-शवै क्षक पक्षों में ् जीिन कौशल िह पाियक्रम इतर कायभकलाप मनोिवत और मान्यताए शावमल ह।ै ृ ् ां शवै क्षक- क्षेत्रों का मल्याकन वनरतर और आिविक रूप म

ें मल्याकन के अनेक तकनीकों का ू ू ां ां ां अनौपचाररक और औपचाररक उपयोग करते हए वकया जाता ह ै । नैदावनक मल्याकन ु ू ां इकाई/कायाभिवि परीक्षा के अत में वदया जाता ह ै । कछ इकाईयों में खराब वनष्पादन के कारर्ों ु ां का वनदान करने के वलए नैदावनक परीक्षर् का उपयोग वकया जाता ह ै । इिका अनितभन उपयक्त ु ु हस्तक्षेपों पर इिके बाद पनः परीक्षा िारा वकया जाता ह ै । ु िह शवै क्षक क्षेत्रों का मल्याकन अवभज्ञात मानदडों के आिार पर अनेक तकनीकों का उपयोग ू ां ां करते हए वकया जाता ह ै जबवक जीिन कौशलों म ें मल्याकन का कायभ मल्याकन के िंके त को ु ू ू ां ां ां और जाँचिवचयों के आिार पर वकया जाता ह ै । ू 4.5.3 सी.सी. ई के कायि यह

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **359**

अध्यापक को प्रभािी अध्यापन कायभ नीवतया बनाने में िहायता दते े ह ैं । ां वनरतर मल्याकन ि े छात्र क

ी प्रगवत (विवशष्ट शवै क्षक और िह-शवै क्षक क्षेत्रों के िंदभ भ िंवहत ू ां ां ां क्षमता और उपलवब्ि) िीमा और स्तर के वनयवमत मल्याकन म ें िहायता वमलती ह ै । ू ां वनरतर मल्याकन ि े कवमयों का वनदान वकया जाता ह ै और अध्यापक

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **360**

छात्र की क्षमताओ और ू ां ां ां कवमयों और जरूरतों को ििइ िवनवश्चत कर िकते ह।ैं ििइ अध्यापकों को तत्काल फीडबैक ु वमलता ह,ै जो यह वनर्णय ले िकते ह ैं वक एक विशषे इकाई या िकल्पना परी कक्षा को दोबारा ू ां पढ़ाने की आिश्यकता ह ै या कछ ही छात्रों क

ो उपचारात्मक अनदशे की आिश्यकता ह।ै ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 154 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 □ वनरतर मल्याकन िारा बच्चे अपनी क्षमता और कवमयों को जान िकत े ह।ैं इ ि बच्चों को ू ां ां स्ि्रिय अपन े अध्ययन का िास्तविक मल्याकन करने में िहायता वमलती ह।ै ििइ बच्चों म ें पढ़ाई ू ां ां की अच्छी आदतें विकवित होती ह।ै गलती को िािरन े अपनी कायभकलापों म ें िविछत लक्ष्यों ु ां की प्रावप्त योग और वनदवे शत करने की प्रेर्रा वमलती ह।ै यह अनदशे

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **361**

के क्षेत्रों का वनिाभरर् करने ु में छात्र की िहायता करता ह ै वजि पर और अविक बल दने े की आिश्यकता ह।ै □ वनरतर और व्यापक मल्याकन मनोवित और रूवच के क्षेत्रों क

ो अवभज्ञात कराता ह।ै यह ृ ू ां ां मनोवित्तयों और मल्य प्र्रावलयों के बदलाि को अवभज्ञात करने म ें िहायता दते ा ह।ै ृ ू □ यह भविष्य म ें विषयों पाियक्रमों और कै ररयर के विषय म ें वनर्णय लेने म ें िहायता दते ा ह।ै ृ □ ििइ शवै क्षक और िह शवै क्षक क्षेत्रों म ें छात्रों की प्रगवत पर िचना ररपोटभ वमलती ह ै और इ ू प्रकार छात्रों की भिाी िफलताओ का अनमान लगान े में मदद वमलती ह।ै ु ां िितत ए व्यापक मल्याकन के मख्य वबन्दओ को एक विभदे क चाटभ िारा इ प्रकार िमझा जा िकता ह-ै ू ु ां ां ां ु सतत एर् व्यापक मल्याकन पद्धहत ू ं ं िम यि क्या ि? यि क्या निीं ि? 1. िितत ए व्यापक मल्याकन बच्च े के बच्चों में आिछनीय पररितभन पाए जान े की वस्थवत ू ां ां ां आकलन की वनरन्तर चलन े िाली विकािात्मक प्रवक्रया में उन्ह ें डरा-मिकाकर अध्ययन के वलए प्रेरे रत या ह.ै बाध्य करना। 2. िितत ए व्यापक मल्याकन बच्च े के विकाि के िभी के िल पस्तकीय ज्ञान के आिार पर बच्चे को ू ु ां ां पहलओ को बताता ह।ै मल्यावकत करना। ु ू ां ां 3. 4. बच्चे की िीखने की विथवत को दखे ते हए वकतना बच्चे की िीखने की वस्थवत को नजरअदाज कर ु ां िीखा ह,ै को जानकर अपनी वशक्षर् पद्वत म ें के िल एक ही वशक्षर् पद्वत िारा ज्ञान प्राप्त करन े आिश्यकतानिार बदलाि वदया जाता ह।ै हते बाध्य वकया जाता ह।ै ु ु 5. िितत ए व्यापक मल्याकन का उददश्े य िीखने को उन बच्चों की पहचान करना वजन्ह ें अवतररक्त ू ां ां और बेहतर बनाना और कमजोररयों का पता लगाना ए वशक्षर् की आिश्यकता ह।ै ां उनका वनदान करना ह।ै 6. िितत ए व्यापक मल्याकन म ें बच्चे की िािवद् और परीक्षा में प्राप्त अकों के आिार पर बच्च े को ृ ू ां ां ां ां विकाि के शैवक्षक और िह- शैवक्षक उददश्े यों की मल्यावकत करना। ू ां प्रावपत होती ह।ै 7. िितत

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… id: **362**

ए व्यापक मल्याकन म ें िीखन े की गवत ए िीखने म ें आने िाली कविनाइयों और िमस्या क्षेत्र

ों ू ां ां ां वदशा के िाथ-िाथ बच्चे की की पहचान कर बच्चे को डरा-मिका के विखान े आिश्यकता, अवभरूवच, कौशल, योग्यता को भी जाना का प्रयाि करना। जाता ह।ै 8. िितत ए व्यापक मल्याकन में बच्चे की तलना उिकी इिमें बच्च े की प्रगवत की तलना दिरे बच्चों की ू ु ु ां ां ू अपनी वपछली वस्थवत ि की जाती ह।ै प्रगवत ि की जाती ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 155 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 9. िितत ए व्यापक मल्याकन म ें बच्चे ने क्या िीखा और के िल बच्चे की उपलवब्ि-स्तर को जाना जाता ह।ै ू ां ां आगे िीखन- विखाने की प्रवक्रया कै िी होनी चावहए तय वकया जाता ह।ै 10. बच्चों की प्रगवत को दखे कर उनका श्रे्रीकरर् नहीं बच्चों की प्रगवत को दखे कर उनका श्रे्रीकरर् जिै े वकया जाता ह।ै होवशयार, मढ़, िामी गवत ि िीखने िाला आवद ू शब्दों म ें वकया जाता ह।ै अभ्यास प्रश्न 8.

Quotes detected: **0.01%** id: **363**

'वशक्षा का अविकार अविवनयम'

वकि िष भ लाग हआ ? ु ू 9.

Quotes detected: **0.01%** id: **364**

'िितत ए व्यापक मल्याकन'

के अतगतभ विद्यावथभयों के वकन पक्षों का मल्याकन वकया जाता ह?ै ू ू ां ां ां ां 4.6 मूलयाकां न की नवीन अविारिाए ां राइटस्टोन के अनिार परम्परागत परीक्षर् मख्यतया विषय-िस्त का ही परीक्षर् करता ह ै जबवक इिका ु ु ु उद्दश्े य विद्यालय के पाियक्रम के उद्दश्े यों के व्यापक क्षेत्र का परीक्षर् करना होता ह ै । परपरागत ृ ां (वनबािात्मक) मल्याकन की प्रवक्रया के इ प्रकार के अनेक दोषों को ध्यान ि दखे ने वशक्षाविदों, ू ां ां मनोिैज्ञ ावनकों, िमाजशावस्त्रयों के अध्ययन और अनेक अतर-अनशािनात्मक शोिों के उपरात मल्याकन ु ू ां ां ां प्र्राली म ें अनेकानेक पररितभन वकये गये विजि मल्याकन की प्रवक्रया को अविक अथभित्तापर् भ बनायी ू ू ां जा िके । इनम ें ि कछ नीन मल्याकन अभ्यिा वनम्नित ह-ै ु ू ां क) नई मल्याकन प्रणाली- परम्परागत मल्याकन प्र्राली के इन दोषों को दखे ते हए नई वशक्षा नीवत ु ू ू ं ां (1986) ने मल्याकन प्र्राली म ें आिारभत

पररितभन हते वनम्न िझिा वदए ृ ृ ु ु ां 1. मल्याकन प्र◌्राली को िितत पि व्यापक प्रवक्रया बनाए जाने की आश्यकता ह ै । ृ ां ां 2. एक ही िमिय पर रचनात्मक पि िकिलनात्मक मल्याकन पर बल दने ◌ा चावहए । ृ ां ां ां 3. विवभन्न विवियों िारा विकिा के िभी पक्षों का मल्याकन होना चावहए। ृ ां 4. मल्याकन को रचनात्मक मल्याकन के िभी प्रकायभ परे करने चावहए वजिम ें त्िररत ृ ृ ृ ां ां प्रवतपवष्ट,परर◌्राम की जानकारी,उपचारात्मक पि वनदानात्मक वशक्षर् िविम्मवलत ह ै । ु ां 5. िकिलनात्मक मल्याकन के माध्यम िि ग्रेवडग पि प्लेविग के कायभ

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **365**

परे होने चावहए । ृ ु ां ां ां ां ां 6. मल्याकन प्र◌्राली म ें िमिस्◌े टर पि ग्रेवडग प्र◌्राली का प्रारभ होना चावहए

। ृ ां ां ां ां 7. बालकों के िििंगीर् विकिा वजिम ें शवै क्षक क्षेत्र,िह-शवै क्षक क्षेत्र पि उनके व्यवक्तगत पि ां ां िमिवजक ग◌्रों का मापन,मल्याकन िविनवश्चत वकया जाना चावहए । ु ृ ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 156 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 8. आग े िष भ 2009 म ें 6 िि 14 िषभ के िभी बच्चों की गिर्त्तापर् भ वशक्षा को िविनवश्चत करने के ु ृ ु वलए वशक्षा का अविकार अविवनयम 2009 पाररत हआ । अविवनयम के िारा 29 म ें स्पष्ट ु कहा गया ह ै वक कक्षा 1 िि े 8 तक की कक्षाओ के वलए पियक्रम बनाते िमिय यह ध्यान रखा ृ ां जाए वक पियक्रम बच्चों के िििंगीर् विकिा करने िाला हो। स्कल और कक्षाओ म ें पढ़ने- ृ ृ ां पढ़ाने के तरीके बच्चों की अंतवनभवहत क्षमताओ को उभारे और उनम ें अपना ज्ञान वनमाभर् सि्रय ां ां ां करने की क्षमता विकवित हो। बच्चों ने जो िीखा ह ै उिका मल्याकन उनके पढ़ने के दौरान ृ ां लगातार होता रह े और उन्ह ें परीक्षा का भय नहीं लग।े परीक्षाए बच्चों का मल्याकन भी बतान े ृ ां ां िाली हो िाथ ही ििै वशक्षक को अपनी वशक्षर् योजना म ें बदलिा करने का आिार पि ां मौका भी वमले।इि प्रकार िितत पि व्यापक मल्याकन की प्रवक्रया िास्ति म ें व्यापक ृ ृ ां ां गिर्ििािार प्रवक्रया ही ह।ै इि िीखने-विखाने की िवि पि विद्याथी के स्कल-आिाररत ु ु ृ ां मल्याकन व्यिस्था

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **366**

के रूप म ें ही िमिझा जाये वजिम ें विद्याथी के िीखने के िभी पक्षों पर ध्यान ृ ां वदया जाता ह।ै िितत पि व्यापक मल्याकन म ें िितता जहा एक ओर कक्षा प्रवक्रया के रूप म े ृ ां ां ां होगी िहीं ििािविक मल्याकन के रूप म

ें भी होगी। व्यापकता उन मद्दों को प्रमख रूप िि ृ ु ु ां रेखावकत करेगी जो बच्चों के विवभन्न कौशल, भिािात्मक और वक्रयात्मक पक्ष को उजागर ां करेगी। वशक्षा के अविकार अविवनयम -2009 के पररपेक्ष्य म ें ही

Quotes detected: **0.01%** id: **367**

'िितत पि व्यापक मल्याकन ृ ां ां पद्धत'

की शरुआत हई वििजि विद्यालयी मल्याकन प्र◌्राली म ें आमलचल बदलिा आये । ु ु ृ ृ ृ ां वजिकी विशद चचाभ आप अलग िि इि इकाई के िितत पि व्यापक मल्याकन खड म ें पढ़ चके ृ ु ां ां ां ह ें । ख) िेमेिटर पद्धहत- लम्बे पियक्रम, िीमी गवत िि पियक्रम परा करने,रटन पद्धत आवद की ृ ृ ृ िमिस्याओ को दर करने के वलए अनेक विकवित दशे ों म ें िमिस्◌े टर प्र◌्राली विकवित की गई, इि ां ृ प्र◌्राली म ें पियक्रम को दो या अविक िािभक,ििियोवजत आतररक रूप िि िमिाग भागों म ें विभावजत ृ ु ां ां ां वकया जाता ह ै । िमिस्◌े टर प्र◌्राली म ें वशक्षर् को आिपी िहियोग और नई अनदशे ◌ात्मक रर्नीवतयों के ु माध्यम िि िपन्न वकया जाता ह ै । प्र◌्राली म ें वशक्षर् और परीक्षा के दौरान अनिाश्यक तनिा और ां दबिा को दर वकया जाता ह ै और वशक्षर् एक िोद्दश्◌े य,आनदपर् भ वक्रया बन

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **368**

जाती ह ै । ृ ां ृ ग) परख (tests) और क्र◌ीज- छात्रों की भाषाई उपलवब्ि का मल्याकन के वलए अब िमिय-िमिय पर ृ ां भाषाई परखों पि भाषाई-क्िीजों का प्रयोग

भी प्रचलन म ें ह ै । िस्ततः परख और िमिवयक परीक्षर् ु ां भाषाई कशलता पि उपलवब्ियों के मल्याकन के प्रमख आिार ह ै । प्रश्न उत्पन्न होता ह ै वक इन दोनों ु ृ ु ां ां म ें मख्य अतर क्या ह ै ? भाषाई उपलवब्ियों के मल्याकन ने इनम ें कहा तक िमिानता पा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindireadduniya.com/barahkhadi-kakaha… id: **369**

ई जाती ह ै ? ु ृ ां ां ां परख और िमिवयक परीक्ष◌्रों के उद्दश्◌े य की दवष्ट िि भी वभन्नता पाई जाती ह

ै । इनम ें एक प्रमख अतर ु ां

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… + 4 resources! id: **370**

विस्तार- क्षेत्र का भी ह ै । परीक्षर् की घोष◌्रा वनिाभररत वतवथ िि काफी िमिय पि भ की जाती ह ै । वनवश्चत ृ कालािवि म ें जो कछ पढ़ाया अथिा विखाया जाता ह,ै उिका मल्याकन वििवि परखों की िहायता ु ृ ां िि वकया जाता ह ै । इि प्रकार परख का क्षेत्र अपेक्षाकत विस्तत होता ह ै । इिम ें पछे गए प्रश्नों की ृ ृ ृ िख्या भी अविक होती ह

ै तथा इनके उत्तर म ें अविक िमिय लगता ह ै । िमिान्यतः इन परखों का ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 157 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 उत्तर दने े म ें कक्षा के एक अतर का िमिय लगता ह ै । इन परखों का वनमाभर् िमिान्यता इि दवष्ट

ि े ां वकया जाता ह ै वक भाषा- अविगम ि िबवित विवभन्न कशलताओ का मल्याकन वकया जा िके । ु ू ां ां ां ां इन परखों का प्रयोग महीने म ें एक बार, दो बार अथिा प्रवत िप्ताह वकया जाता ह ै । उपलवब्ियों के मल्याकन के िाथ-िाथ छात्रों को मल्याकन के पररर्ामों ि अिगत कराना भी आिश्यक ह ै । ू ू ां ां प्रभािशाली अविगम इनका विशषे महत्ि ह ै । घ) क्िीज की घोषर्ा पहले ि नहीं की जाती । िप्ताह म ें कभी भी पढ़ाई के पिों का मल्याकन करने के ू ां वलए इि

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **371**

का प्रयोग वकया जाता ह ै । विलक्षर्ता के कारर् इि वशक्षर् अविगम का प्रभािशाली िािन मान वलया गया ह ै । कक्षा म ें वनरतर प्रयोग करन

े ि छात्र भाषा अविगम म ें वनयवमत रुप ि ां िमय लगाते ह ैं और पयाभप्त अभ्याि करते ह ैं । इन म ें पछे गए अथिा जाचे गए तथ्यों की िख्या परख ू ां ां की अपेक्षा कम होती ह ै परत एक प्रकार ि यह परख के वलए छात्रों को तैयार करते ह ैं । इनकी ु ां िहायता ि छात्र परख म ें पछे गए वशक्षर् वबदओ का उत्तर दने े के वलए मानविक रूप ि तयै ार रहते ह ैं ू ां ां ु । इन परखों का वनयवमत रूप ि कक्षा म ें प्रयोग वकया जा िकता ह ै । भाषा-वशक्षर् के प्रत्येक अतराल ां म ें पढ़ाए गए वशक्षर् वबद के दृढीकरर् के वलए इनका प्रयोग िफलता ि वकया जा िकता ह ै । इि ां ु प्रकार यह अन्य भाषा अविगम म ें विशषे िहायक ह ै । इतना ही नहीं विवभन्

Plagiarism detected: **0.14%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 7 resources! id: **372**

न प्रकार के परीक्षर्ों के वलए छात्रों को िहज रुप ि तैयार करते ह ैं वकिं आग े चलकर उन्ह ें वकिी भी प्रकार की कविनाई नहीं होती । ङ) िस्तवनष्ठ परीक्षर्- ितभमान िमय म ें वनबिात्मक परीक्षाओ के स्थान पर िस्तवनष्ठ परीक्षर् का प्रयोग ु ु ां ां अविक वकया जाता ह ै । इि प्रकार की परीक्षा म ें प्रश्नों की िख्या वनवश्चत होती ह ै । वनबिात्मक ां ां परीक्षा के अविश्विनीयता के कारर् िस्तवनष्ठ परीक्षाओ का चलन हआ । इि प्रकार की परीक्षाओ ु ु ां ां का उपयोग बच्चों के विषय ज्ञान की वनष्पवत्त,बवद् आवद का मापन करने के वलए वकया जाता ह ै । ु िस

ृतवनष्ठ परीक्षर् म ें प्रश्नों की प्रमखता रहती ह ै । दिरे, िस्तवनष्ठ परीक्षा म ें अनेक परीक्षक ु ु ु ू स्ितन्त्रतापिकभ मल्याकन करने के पश्चात भी अकों के िम्बन्ि म ें िमान वनष्कष भ पर पहचँ ते ह ैं । ु ू ू ां ां िित्यात्य परीक्षर्,बहविकल्प परीक्षर्,िमरूप परीक्षर्,पवतभ परीक्षर् और प्रत्यास्मरर् िस्तवनष्ठ ु ू ु परीक्षर्ों के प्रकार ह ैं । अपने वनम्नावकत गर्ों के कारर् िस्तवनष्ठ परीक्षर् इतने लोकवप्रय हए । ु ु ु ां i. िस्तवनष्ठ परीक्षा म ें वशक्षक के व्यवक्तत्ि, बच्चों की भाषा, लेखन-शलै ी और िलेख आवद का ु ु कोई प्रभाि नहीं पडता । ii. िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों म ें पिाय विषय के अविक ि अविक अशों का परीक्षर् करना िभि होता ह ै । ृ ु ां ां iii. िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों का प्रयोग िरलता ि वकया जा िकता ह ै । ु iv. इनम ें परीक्षर् पर वदए गए अको म ें वस्थरता और अचलता रहती ह ै । ां v. इन परीक्षर्ों म ें िै ता का गर् होता ह ै । ु vi. ये परीक्षर् िमय की दृवष्ट ि वमतव्ययी होते ह ैं । इिके अवतररक्त िहयोगी परीक्षर्,ऑन-लाइन परीक्षर्,ओपन-टेक्स्टबक परीक्षर् जिै े अनेक निाचार ु वदनानवदन परीक्षर्,मल्याकन की प्रवक्रया को अविक रोचक और िाथभक बना रह े ह ैं । ु ू ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 158 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अभ्यास प्रश्न 10. घोषर्ा की दृवष्ट ि परख और क्िीज म ें क्या अतर ह ै ? ां 11. िस्तवनष्ठ परीक्षर्ों के वभन्न प्रकारों के नाम बतायें । ु 4.7 िारांश वशक्षा का उद्दश्े य विद्यावथभयों के व्यिहार म ें िकारात्मक पररितभन लाना ह ै तावक िह अपनी अतवनभवहत ां शवक्तयों का आविकाररक विकाि कर िकें । वशक्षर् इि उद्दश्े य की िािना की प्रवक्रया ह ै । वशक्षर् प्रवक्रया अपने लक्ष्य और उद्दश्े य में वकतनी िक्षम और उपयोगी ह,ै यह जानने की प्रवक्रया ही मल्याकन ह।ै ू ां वशक्षर् में पि भ वनिाभररत लक्ष्य को पाने का प्रयाि वकया जाता ह ै । इिके अतगतभ विषयिस्त, वशक्षर्- ू ु ां कौशल, व्याख्या, उदाहरर् और प्रश्नोत्तर जिै ी वक्रयाओ के माध्यम ि ज्ञान, कौशल, रुवच इत्यावद के ां पररितभन ि विकाि का प्रयाि वकया जाता ह ै । यह िमस्त प्रवक्रयाए और उनका िवछत व्यिहाररक ां ां पररितभन परी तरह ि उद्दश्े य कें वित होते ह ैं । वशक्षर् प्रवक्रया िारा पिभ वनिाभररत उद्दश्े यों के अविगम का ू ू परीक्षर् ही मल्याकन का लक्ष्य ह ै ।वशक्षर् की िफलता और विद्यावथभयों के यथेष्ट विकाि की िीमाओ ू ां ां को पता लगाने के वलए आिश्यक ह ै वक विद्यावथभयों की िप्रावप्त का मल्याकन उन िभी क्षेत्रों म ें वकया ू ां ां जाए वजन म ें उनका विकाि िवछत हो । शवै क्षक मल्याकन की प्रवक्रया म ें अनेक पररितभन आये ू ां ां ह,ैं पारपररक मौवखक एि दीघभ वनबिात्मक परीक्षा के स्थान पर िस्तवनष्ठ परीक्षा, ऑन-लाइन परीक्षा, ु ां ां ां आतररक मल्याकन,िहयोगी मल्याकन,िमस्े टर प्रर्ाली अपने गर्ों के कारर् ितभमान म ें जयादा प्रचवलत ू ू ु ां ां ां ह ैं । 4.8 अभ्याि प्रश्नों के उत्तर 1. अित्य 2. ित्य 3. अित्य 4. अित्य 5. ित्य 6. प्रश्नोत्तर पद्दवत 7. यवद एक परीक्षर् के पररर्ाम अलग िमय, अलग परीक्षकों िारा वभन्न-वभन्न आता ह,ै तो िह परीक्षर् अविश्विनीय कहलाएगा । 8. िष भ 2009 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 159 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 9. शवै क्षक,िह-शवै क्षक एि व्यवक्तगत एि िामावजक गर् ु ां ां 10. परख की िचना विद्यावथभयों को काफी पहले द े डी जाती ह,ै जबवक क्िीज की पि भ घोषर्ा नहीं ू ू की जाती । 11. िित्यात्य परीक्षर्,बहविकल्प परीक्षर्,िमरूप परीक्षर्,पवतभ परीक्षर् और प्रत्यास्मरर् ु ू 4.9 िन्दभ भ ग्रन्थ िची ू 1. रचनात्मक मल्याकन ित हिक्षक सदहिका – नई वदल्ली,के .मा.वश.बोडभ, (2010) ू ु ं ं 2. गप्त, मनोरमा ,भिा- हिक्षण हसद्धात और प्रहहध ,आगरा,के न्िीय वहदी िस्थान (2010) ु ं ां ां 3. चौहान,रीता,हिदी हिक्षण ,आगरा,अग्रिाल पवब्लके शन ,2016-17 ं 4. श्रीिास्ति डॉ.रविन्िनाथ, भिाा-हिक्षण, ,नई वदल्ली, िार्ी प्रकाशन,2005 5. कलावनलयम,ितीश-ररसेन्ट ट्रेंडस इन इर्वैल्यिन, व ू http://sathitech.blogspot.in/2009/03/recent-trends-in-evaluation.html# 4.10 धनबिात्मक प्रश्न ां 1. शवै क्षक प्रवक्रया म ें

मल्याकन को मापन ि अलग करते हए उिकी उपयोवगता बतायें । ृ ृ ां 2. एक अच्छे परीक्षर् म ें कौन ि गर् अवनियभ ह ै । उन ग◌ों पर वटपण्र◌ी करें । ृ ृ 3. पारपररक मल्याकन प्र◌ाली म ें कौन ि दोष ह?ैं शवै क्षक मल्याकन के नीन अभ्याो पर वटपण्र◌ी ृ ृ ां ां ां करें । 4. मल्याकन के वकतने पक्ष होते ह?ैं िविस्तार िर्नभ करें । ृ ां 5. ितत एि व्यापक मल्याकन की िआिर◌ा को िमझाते हए उिके उद्दश्े य और विशेषताओ पर ृ ृ ां ां ां प्रकाश डालें । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 160 ृ हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 इकाई 5- धिन्दी धशक्षण एिं धक्रयात्मक अनिु ांिान 5.1 प्रस्तािना 5.2 उद्दश्े य 5.3 वक्रयात्मक अनिान ि आशय ृ ां 5.4 वक्रयात्मक अनिान की विशेषताएँ ृ ां 5.5 वक्रयात्मक अनिान की िीमाएँ ृ ां 5.6 अनिान के अन्य रुप ृ ां 5.6.1 मौवलक अनिान (फडामेंटल ररिचभ) ृ ां ां 5.6.2 मौवलक अनिान की विशेषताएँ ृ ां 5.6.3 मौवलक अनिान की िीमाएँ ृ ां 5.7 मौवलक अनिान, अनप्रयक्त अनिान एि वक्रयात्मक अनिान का ृ ृ ृ ृ ृ ां ां ां ां तलनात्मक अध्ययन ृ 5.8 वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता ृ ां 5.9 वक्रयात्मक अनिान के िोपान ृ ां 5.10 वक्रयात्मक अनिान के प्रारुप या योजना एक उदाहरर् ृ ां 5.11 िाराश ां 5.12 अभ्याि

Plagiarism detected: **0.03%** https://classnotes.guru/ncert-class-6-hindi-part-… id: **373**

प्रश्नों के उत्तर 5.13 िदभभ ग्रथ िूची एि िहयोगी ग्रथ ृ ां ां ां ां 5.14 वनबिात्मक प्रश्न

ां 5.1 प्रस्तावना वक्रयात्मक अनिान अपेक्षाकत एक नई घटना ह।ै इिका मख्य उद्दश्े य िमस्या का तत्क्षर् वनदान ृ ृ ृ ां प्रस्तत करना होता ह।ै ििे विद्यालय की कायभ पद्वत म ें व्यापक िीर आता ह ै तथा वशक्षर्-अविगम ृ ृ की प्रवक्रया प्रभािपर् भ ढग ि िपन्न होती ह।ै भाषा वशक्षर्- अविगम प्रवक्रया का एक महत्िपर् भ क्षेत्र ह।ै ृ ृ ां ां यह अविक महत्िपर्भ इिवलए हो जाता ह ै वक अन्य विषयों का वशक्षर् एि अविगम वशक्षक एि ृ ां ां विद्याथी के भाषा ज्ञान पर बहत अविक वनभरभ करता ह।ै चाँवक यह वशक्षर् में आने िाली िमस्याओ का ृ ृ ां तत्क्षर् वनदान प्रस्तत करने में िक्षम ह,ै अतः, भाषा वशक्षर् के क्षेत्र म ें वक्रयात्मक अनिान बहत ृ ृ ृ ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 161 ृ हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 उपयोगी ह।ै भारत एक बहभाषी दशे ह ै और यहाँ वहदी भाषा का वशक्षर् अनेक स्तरों पर वकया जाता ह।ै ृ ां यथा- मातभाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **374**

के रुप म,ें वितीय भाषा के रुप म ें तथा अन्य दशे के नागररकों के वलए विदशे ी भाषा के ृ रुप म।ें वहदी भाषा के बहस्तरीय वशक्षर् के कारर् इि क्षेत्र म

ें िमस्याएँ भी अने

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **375**

क प्रकार की उत्पन्न होती ृ ां ह।ै वहदी भाषा वशक्षर् म ें वक्रयात्मक अनिान के प्रयोग के माध्यम

ि इन तमाम िमस्याओ का तत्क्षर् ृ ां ां ां िमािान प्रस्तत कर वहदी भाषा वशक्षर्-अविगम को प्रभािशाली बनाया जा िकता ह।ै वहदी भाषा ृ ां ां वशक्षर् म ें वक्रयात्मक अनिान का यह महत्िपर् भ लाभ ह।ै इि लाभ को दृवष्ट म ें रखते हए प्रस्तत अध्याय ृ ृ ृ ृ ां में वक्रयात्मक अनिान एि उनके विवि पहलओ की चचा भ की गई ह ै तावक वहदी भाषा वशक्षर् के काय भ ृ ृ ां ां ां में लगे हए वशक्षक, विद्याथी एि अन्य व्यवक्त अपने कायभक्षेत्र में इिका प्रयोग कर लाभावन्ित हो िके । ृ ां 5.2 उद्दश्े य इि इकाई के अध्ययन के उपरात आप इि योग्य हो जाएगँ े वक - ां 1. वक्रयात्मक अनिान को पररभावषत कर िकें ग।े ृ ां 2. अनिान के अन्य रुपों, यथा- मौवलक अनिान एि अनप्रयक्त अनिान तथा वक्रयात्मक ृ ृ ृ ृ ृ ां ां ां ां अनिान के मध्य अतर स्थावपत कर िकें ग।े ृ ां ां 3. वहदी वशक्षर् के विशषे िदभभ में वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता का िर्नभ कर िकें ग।े ृ ां ां ां 4. वक्रयात्मक अनिान के विवभन्न िोपानों की व्याख्या कर िकें गे ृ ां 5. वहदी वशक्षर् के क्षेत्र में वक्रयात्मक अनिान हते कवतपय िमस्याओ का उल्लेख कर िकें ग े ृ ृ ां ां ां 6. वक्रयात्मक अनिान के प्रारुप या योजना का उदाहरर् प्रस्तत कर िकें ग े ृ ृ ां 5.3 धक्रयात्मक अनिुां ान ि आशय वक्रयात्मक अनिान ज्ञान की एक अपेक्षाकत नीन शाखा ह ै जो व्यिहाररक पक्ष ि िबि रखता ह।ै ृ ृ ां ां ां कायभ के व्यिहाररक पक्ष, कायभ की उपादये ता, गिर्त्ता एि कायभ वनष्पादन की अिवि म ें आने िाली ृ ां िमस्याएँ, आवद इिका विषय क्षेत्र ह।ै उदाहर◌ाथभ, एक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **376**

विद्यालय वशक्षक के वलए उिकी वशक्षर् प्रवक्रया, विद्याथी एि विद्याथी के मध्य िबि, विद्याथी तथा वशक्षक के मध्य िबि, वशक्षक-वशक्षक के मध्य ां ां ां ां ां िबि, विद्यालय

प्रबिन आवद वक्रयात्मक अनिान के क्षेत्र हो िकत े ह।ैं स्टीफे न एम० कोरी न े ृ ां ां ां ां वक्रयात्मक अनिान को पररभावषत करते हए कहा वक यह "िह प्रवक्रया ह ै वजिके जररए अभ्यािकताभ ृ ृ ां अपने वनर्यभ एि कायों को स्ििनदवे शत करने, िीिरने एि मल्य अवकत करने के उद्दश्े य ि अपनी ृ ृ ां ां ां िमस्याओ का िज्ञै ◌ावनक ढग ि अध्ययन करने का प्रयाि करते ह।ैं इि ही कई लोगों ने वक्रयात्मक ां ां अनिान का नाम वदया ह।ै " ृ ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 162 ृ हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 स्टीफे न एम० कोरी की पररभाषा ि यह स्पष्ट होता ह ै वक वक्रयात्मक अनिान अभ्यािकताभ ि ही ृ ां िबवित होता ह ै अथाभत इि प्रकर के अनिान म ें वजिकी िमस्या होती ह ै िही िही िमािान ढाँढता ह ै ृ ृ ां ां ां और इिवलए यह जयादा प्रभािी ह ै । िारा ब्लैकिले के अनिार, "

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **377**

विद्यालय की कायभ प्रर्ावलयों में िािर लाने की दृवष्ट ि विद्यालय के ु ु अवभकवमयभ ों के िारा विद्यालय

के िमस्याओ ि िबवित शिो- इि ही वक्रयात्मक अनिान कहा जाता ु ां ां ां ां ह।ै यह िारर्ा उतनी ही अमरीकन ह ै वजतना स्वतंत्रता की घोषर्ा का मख्य प्रकरर्। वक्रयात्मक ु ां अनिान को शवै क्षक व्यिहारों एि शवै क्षक विद्ातों के मध्य घवनष्ठ तालमेल कायम करने के प्रयोजन ि ु ां ां ां अपनाया गया ह।ै क्योंवक दखे ना ही विश्वाि करने के बराबर ह ै तथा व्यवक्त िारा वकए गए अपने प्रयोगों के परर्ाम ही दरगामी प्रभाि डाल पाते ह ैं।" ू िारा ब्लैकिले की पररभाषा वक्रयात्मक अनिान

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **378**

के क्षेत्र को िीवमत करती ह।ै इि पररभाषा के अनिार ु ु ां विफभ विद्यालय ही वकयात्मक अनिान का क्षेत्र

ह।ै ु ां उपरोक्त पररभाषाएँ वक्रयात्मक अनिान के अथभ को को पर्तभ ः स्पष्ट करती ह।ै इन पररभाषओ के आिार ु ू ां ां पर िामान्य शब्दों म ें वक्रयात्मक अनिान को इि प्रकार पररभावषत वकया जा िकता ह-ै ु ां "वक्रयात्मक अनिान शिो

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 6 resources! id: **379**

के क्षेत्र म ें अपेक्षाकत एक निीन घटना वजिमें की अभ्यािकताभ स्वयं अपन े ृ ु ां ां कायों को िािरन े एि उि और प्रभािी बनाने के वलए िज्ञै ावनक ढग ि प्रयाि करता ह ै तावक अपने कायभ ु ां ां क्षेत्र म ें आने िाली िमस्याओ का बेहतर िमािान कर बेहतर परर्ाम प्राप्त कर िकें । इिका क्षेत्र विफभ ां विद्यालय ही नहीं ह ै बवल्क व्यवक्त वजि क्षेत्र म ें भी कायभ कर रहा हो उि क्षेत्र म

ें िह वक्रयात्मक अनिान ु ां को अपना िकता ह"ै 5.4 धक्रयात्मक अनिुं ान की धवशेषताएँ स्टीफे न एम० कोरी(1953), जॉन डब्ल्य. बेस्ट(1980) तथा कोहने और मैवनयन(1980) के अनिार ु ु वक्रयात्मक अनिान की वनम्नवलवखत विशेषताए ँ ह:ैं ु ां 1. वक्रयात्मक अनिान विकी िमस्या का तत्क्षर् िमािान ढाँढने के वलए वकया जाता ह।ै ु ू ां 2. यह स्वयं उिी व्यवक्त के िारा िचावलत वकया

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.apnakhata.co/how-to-check-bhulek… + 3 resources! id: **380**

जाता ह ै जो िमस्या का िामना कर रहा ह।ै ां ां 3. इिका लक्ष्य विकी भी पररवस्थवत में विकी िमस्या विशेष का िमािान प्राप्त कर

पररवस्थवत को बेहतर एि उपयोगी बना

Plagiarism detected: **0.05%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… id: **381**

ना होता ह।ै ां 4. चाँवक यह एक पररवस्थवत विशेष ि िबवित होता ह ै इिवलए इिको पररवस्थवतगत शिो भी कहते ू ां ां ह।ैं 5. वक्रयात्मक अनिान की िमस्या अत्यत ही मतभ होती ह।ै ु ू ां ां 6.

वक्रयात्मक अनिान के वलए वनवमतभ शिो उपकल्पना को वक्रयात्मक उपकल्पना कहा जाता ह।ै ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 163 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 7. वक्रयात्मक अनिान का उद्दश्े य िामान्यीकरर् करना नहीं होता ह ै बवल्क इिका उद्दश्े य िमस्या ु ां का तत्क्षर् िमािान प्रस्तत करना होता ह।ै ु 8. वक्रयात्मक उपकल्पना के दो पक्ष होते ह ैं – वनदानात्मक पक्ष एि उपचारात्मक पक्ष। ां 9. वक्रयात्मक अनिान के परर्ामों का विज्ञापन या प्रिारर् वनरौपचाररक ढग ि यहाँ तक वक ु ां ां मौवखक िप्रेषर्

Plagiarism detected: **0.03%** https://hi.wikipedia.org/wiki/भारतीय_कम्युनिस्ट_पार्टी id: **382**

के रुप में भी वकया जाता ह।ै ां 10. यह एक ऐिा शिो ह ै वजिमें शिोकमी िारा शिो के दौरान

हो रह े पररितभन एि प्रभाि का ां वनरतर मल्याकन वकया जाता ह ै तावक अपेवक्षत िािर प्राप्त वकया जा िके । ू ु ां ां 5.5 धक्रयात्मक अनिुं ान की िीमाए ँ के .० पी० पान्डेय जी ने इिकी िीमाओ का उल्लेख करते हए कहा वक- ु ां 1. इिमें तथा िामान्य बवद् िारा िमस्या का िामान्य िमािान ढाँढन े की पद्वत म ें कोई अतर नहीं ु ू ां ह।ै 2. वक्रयात्मक अनिान म ें िज्ञै ावनक विवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **383**

का प्रयोग नहीं हो पाता ह ै क्योंवक इनके िदभ भ एि ु ां ां ां विषयक्षेत्र स्पष्ट नहीं होते ह

।ैं 3. वक्रयात्मक अनिान म ें िामान्यीकरर् का वनमाभर् को शिो का उद्दश्े य नहीं माना जाना भी ु ां इिकी एक िीमा ह ै क्योंवक िज्ञै ावनक ज्ञान के विकाि हते िामान्यीकरर् शिो का एक उद्दश्े य ु होना चावहए। 4. इि प्रकार के शिो म ें िस्तवनष्ठता कम होती ह।ै ु अभ्यास प्रश्न 1. स्टीफे न एम० कोरी के अनिार, वक्रयात्मक अनिान को पररभावषत करें। ु ु ां 2. िारा ब्लैकिले िारा दी गई वक्रयात्मक अनिान की पररभाषा का उल्लेख करें। ु ां 5.6 अनिुं ान के अन्य रुप इि अध्याय की प्रस्तािना एि खड 5.3 में वक्रयात्मक अनिान को अपेक्षाकत एक निीन घटना बताई ृ ु ां ां ां गई ह।ै इिका आशय यह ह ै वक इिि पि भ अनिान के अन्य रुप भी ह ैं अनिान के विवि रुप कौन- ू ु ु ां ां कौन ि ह ैं और वक्रयात्मक अनिान ि उनका क्या िबि ह ै इिको

िमझना आिश्यक ह।ै िामान्यतः ु ां ां ां वकयात्मक अनिुंिान के इतर अनिुंिान के दो अन्य रुप हैं- मौवलक अनिुंिान (फंडामेंटल ररिचभ) तथा ु ु ु ां ां ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 164 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 व्यिहृत या अनप्रयक्त अनिुंिान (एप्लाइड ररिचभ) की बात की जाती ह।ै आइए अब अनिुंिान के इन दो ु ु ु ु ां ां अन्य रुपों की चचाभ करें। 5.6.1 मौहलक अनसधान (फडामेंटल ररसचि) ु ं ं मौवलक अनिुंिान को शद् अनिुंिान की भी िंज्ञा दी जाती ह।ै इि प्रकार के शोि िारा शोि की ु ु ु ां ां ां पररर्ामों का िामान्यीकरर्, अनविद्ातों, वनयमों एि उपवनयमों का वनरुपर् वकया जाता ह।ै इि तरह के ु ां ां अनिुंिान िामारर्तया प्रयोगशाला म ें िपन्न वकए जाते ह।ैं मौवलक शोि का विस्तार के िल इवियों िारा ु ां ां ां अनभत करने योग्य विज्ञान वजि वक हम इवम्पररकल िाइंिज कहते ह ैं तक ही िीवमत ह।ै हााँलावक ु ू ां स्िाभाविक मानीय पररवस्थवतयों म ें भी मौवलक शोि िपन्न वकए जा रह े ह ैं लेवकन इनमें

Plagiarism detected: **0.02%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **384**

प्रयोगशाला जिै ी ां वनयवत्रत पररवस्थवत का वनमाभर् िंभि नहीं होता ह।ै ां ां वशक्षा के क्षेत्र

म ें मौवलक शोि का उद्दश्े य ह ै शवै क्षक घटनाओ के िंिं ि एि विश्विनीय िंर्नभ तथा व्याख्या ां ां हते शवै क्षक अनविद्ातों, तथ्यों एि िामान्यीकरर् का प्रवतपादन करना ह।ै वशक्षा के क्षेत्र म ें मौवलक शोि ु ु ां ां के कछ उदाहरर् वनम्नवलवखत ह ैं : ु बी० एफ० स्कीनर िारा वशक्षर् यत्रों ि िंबवित प्रयोग; ां ां ां जीन वपयाजे िारा बालक के िास्तविक िंिार के िंबि में वकया गया शोि; ां ां ां फ़्लैंडिभ का कक्षाकक्ष में वशक्षर् व्यिहार िंबंिी मापन के वलए वकए गया अध्ययन; ां ां रविंि नाथ टैगोर का शावतवनके तन; तथा ां ां अरविद का अरविदो आश्रम; आवद ां ां 5.6.2 मौहलक अनसधान की हिंिेर्ताए ँ ु ं इिकी वनम्नवलवखत विशषे ताए ाँ ह:ैं 1. यह आमतौर ि वनयवत्रत पररवस्थवतयों में िंपन्न होता ह।ै ां ां 2. इिमें िामान्यतः वकिी िमिग्र(पॉपलेशन) ि चन े हए नमने (िंम्पल) नमने के अध्ययन िारा ु ु ु ू ू िमग्र के वलए िामान्यीकरर् वकया जाता ह।ै 3. विद्ात का वनमाभर् या प्रवतपादन, ज्ञान के क्षेत्र-विस्तार, अनविद्ातों का विकाि, आवद इिके ु ां ां मख्य विषय ह।ैं ु 4. िामान्यतः एिे शोि म,ें शोि िमस्या दो या अविक चरों, िंप्रत्ययों या िावक्षयों के मध्य िंबंि ां ां ां का अध्ययन वकया जाता ह ै वजिके आिार पर थ्योरी का विकाि वकया जाता ह।ै 5. एिे शोि में िामान्यतः उपकल्पना (हाइपोवथवि) का वनमाभर् वकया जाता ह।ै 6. मौवलक शोि के वलए वनवमतभ शोि-अवभकल्प (ररिच भ वडजाइन) कठोर होता ह ै अथाभत वजि शोि-अवभकल्प का वनमाभर् वकया जाता ह ै उिका हबह वक्रयान्ियन वकया जाता ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 165 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 5.6.3 मौहलक अनसधान की सीमाए ँ ु ं इिकी वनम्नवलवखत िीमाए ाँ ह:ैं 1.

Plagiarism detected: **0.03%** https://cpcb.nic.in/openpdffile.php?id=UmVwb3… id: **385**

ज्ञान के कछ एिे क्षेत्र ह,ै वजनमें, मौवलक अनिुंिान की िंभािना अवत अल्प होती ह,ै यथा- ु ु ां ां िमाज विज्ञान एि व्यिहारिादी विज्ञान

। ां 2. शोि-अवभकल्प एि वनयवत्रत पररवस्थवत इिकी दिरी िीमा ह ै क्योंवक व्यिहारिक रुप ि शोि- ां ां ू अवभकल्प को हबह लाग करना िंभि नहीं ह।ै ु ू ां 5.6.4 व्यहृत या अनप्रयक्त अनसधान ु ु ु ं अनप्रयक्त अनिुंिान का अथभ ह,ै विद्ान्त, अनविद्ान्त आवद का पररवस्थवत विशषे

Plagiarism detected: **0.05%** https://hi.wikipedia.org/wiki/क id: **386**

म ें प्रयोग। वशक्षा के ु ु ु ु ां क्षेत्र में अनप्रयक्त अनिुंिान का अथभ 'वशक्षर्-अविगम पररवस्थवत या मल्याकन की प्रवक्रया म ें विद्ातों ु ु ु ू ां ां ां या वनयमों या अनविद्ातों का शवै क्षक पररवस्थवत म ें प्रयोग

। मौवलक अनिुंिान प्रयोगशाला या जीिन की ु ु ां ां िास्तविक पररवस्थवतयों में िंपन्न वकए जा िकते ह।ैं जॉन डब्ल० बेस्ट ने इि िंदभ भ म ें कहा ह ै वक ह ै वक ू ां ां वशक्षा के क्षेत्र म ें होने िाले अविकाश अनिुंिान या अविकाश शवै क्षक अनिुंिान में वशक्षर्-अविगम की ु ु ां ां ां ां प्रवक्रया, मल्याकन की प्रवक्रया या अनदशे नात्मक िामग्री आवद के बारे में िामान्यीकरर् का विकाि ू ु ां करने का प्रयाि वकया जाता ह ै अतः, ये स्िरुप ि अनप्रयक्त होते ह।ैं ु ु अनप्रयक्त अनिुंिान का उद्दश्े य नए विद्ातों, वनयमों एि िामान्यीकरर्ों को जीिन की विवभन्न ु ु ु ां ां ां व्यिहारिक पररवस्थवतयों म ें लाग होने की िंभािना का पता लगाना ह ै तावक प्रवक्रया एि पररर्ाम दोनों ू ां ां की गिर्त्ता में िंिार िंभि हो िके । वशक्षा के क्षेत्र में शवै क्षक तकनीकी, कक्षाकक्ष का िातािरर्, ु ु ां विद्यालय का िातािरर्, मापन एि मल्याकन, शवै क्षक प्रवशक्षर् एि प्रबंिन, आवद ि िंबवित अध्ययन ू ां ां ां ां ां ां अनप्रयक्त अनिुंिान के उदाहरर् ह।ैं ु ु ु ां 5.6.5 अनप्रयक्त अनसधान की हिंिेर्ताए ँ ु ु ु ं इिकी वनम्नवलवखत विशषे ताए ाँ ह-ैं 1. पि भ अनिंिे षत ज्ञान का जीिन की व्यिहारिक पररवस्थवतयों म ें अनप्रयोग वकया जाता ह ै तावक ू ु व्यिहारिक पररवस्थवत में होने िाले िंख्यात्मक एि मात्रात्मक दो

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **387**

नों प्रकार के पररितभनों का ां ां अनमान लगाया जा िके । ु 2. इि प्रकार क

े शोि यह बतात े ह ैं वक पि भ वनरुवपत वनयमों, प्रवतपावदत विद्ातों, तथा शोि- ू ां पररर्ामों के िामान्यीकरर् का वकन-वकन दशाओ म ें िंभावित उपयोग हो िकता ह।ै ां ां 3. इि प्रकार के अनिुंिान म ें पररकल्पना अपेवक्षत होती ह।ै ु ां 4. इि प्रकार के शोि म ें भी प्रवतदश भ के अध्ययन ि प्राप्त पररर्ाम को िमग्र पर लाग कर ू िामान्यीकरर् वकया जाता ह ै उत्तराखण्ड

मक्त विश्वविद्यालय 166 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 5. इि प्रकार के शिो में शिोकताभ अनिान िारा प्राप्त पररर्ामों या वनष्कषों के आिार पर शैवक्षक ु ां पररवस्थवतयों म ें िार लान े हते िझ्ाि दने े का प्रयाि करता ह।ै ु ु ु 5.6.6 अनप्रयक्त अनसधान की सीमाए ँ ु ु ु े इि प्रकार के शिो की मख्य िीमा ह ै वक य े िमय िा िन की दवष्ट ि अविक खचीले होते ह ैं तथा ऐि ु ां शिो के पररर्ाम का अन्य पररवस्थवतयों में िामान्यीकरर् हो िकता ह ै वक नहीं यह भी िदहे ास्पद होता ह।ै ां अभ्यास प्रश्न 3. मौवलक अनिान को पररभावषत करें । ु ां 4. अनप्रयक्त अनिान को पररभावषत करें। ु ु ु ां 5. इि इकाई म ें वदए गए मौवलक अनिान के उदाहरर् को िचीबद् करें। ु ू ां 5.7 मौधिक अनिां ान, अनुप्रयुि अनिां ान एवां धक्रयात्मक अनिां ान का एक तुिनात्मक अध्ययन मौवलक अनिान, अनप्रयक्त अनिान िा वक्रयात्मक अनिान का तलानत्मक अध्ययन करने हते ु ु ु ु ु ु ु ां ां ां ां वनम्नवलवखत तावलका का विकाि वकया गया है। इि तावलका का विकाि के ० पी० पाडेय जी की िारा ां उनकी पस्तक 'वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिान' म ें मौवलक िा वक्रयात्मक अनिान के मध्य अतर ु ु ु ां ां ां ां स्थावपत करने के वलए प्रयक्त तावलका के आिार पर वकया गया ह।ै ु ताहलका स० 1: मौहलक अनसधान, अनप्रयक्त अनसधान एर् हियात्मक अनसधान का ु ु ु ु ु ं ं ं ं ं तलनात्मक अध्ययन ु तलना का मौहलक अनप्रयक्त हियात्मक ु ु ु आधार अनसधान अनसधान अनसधान ु ु ु ं ं ं उद्दश्े य नीन ित्यों, वनयमों िा विद्ातों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **388**

विद्यालयों की काय-भ प्रर्ाली को ां ां ां विद्ातों का प्रवतपादन के िारा का जीन के िास्तविक उन्नत करना। ां ज्ञान म ें िवद् करना। पररवस्थवतयों म ें प्रयक्त होने की विद्यालय

के अविकाररयों िा ृ ु ां िभिाना का पता लगाना तथा कमभचाररयों, यथा- प्रिानाचाय,भ ां इनका प्रयोग कर प्रवक्रया िा अध्यापकगर्, वनरीक्षक, प्रबिक ां ां उत्पाद दोनों की गर्ित्ता में िार आवद में िदनशीलता को उत्पन्न ु ु ां लाना ह।ै करना िा म ें ज्ञावनक वचतन का ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 167 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 भिा विकवित करना। अनिान िामान्य रुप ि प्रत्यक्षीकत नीन ित्यों, वनयमों िा विद्ातों अनिान की िमस्या विद्यालय ृ ु ु ां ां ां ां की िमस्या पररवस्थवतयों ि े अनिान की के िास्तविक पररवस्थवतयों म ें विशेष ि िबवित होती ह।ै ु ां ां ां िा उिका िमस्या का जन्म। अनप्रयोग िबी वचतन ि िमस्या

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 7 resources! id: **389**

का क्षेत्र िकवचत होता ह।ै ु ु ां ां ां ां ां महत्ि िमस्या का क्षेत्र व्यापक होता अनिान की िमस्या का जन्म । विद्यालय म ें िार अथिा पररवतभन ु ु ां ह।ै िमस्या का क्षेत्र व्यापक। लान े की दवष्ट ि िमस्या महत्िपर् भ ू वशक्षा विषयक नए ित्यों िा मौवलक अनिान के िमान ह

ी ह।ै ु ां ां तथ्यों को प्रकावशत करन े की महत्िपर् भ । ू दवष्ट ि महत्िपर्।भ ू मल्याकन हते नीन ित्य, ज्ञान, विद्ात आवद शिो िारा प्राप्त िक्ष्यों के विद्यालय की काय भ पद्वत में िार ू ु ु ां ां प्रयक्त होन े की प्रावप्त। अनप्रयोग िबी िभिाओ का िा पररवतभन की िीमा तथा ु ु ां ां ां ां ां िले मापदड शिोकताभ की िफलता उिकी वकि िीमा तक पता लागा पाता ह ै अनिानकताभ की कायभप्रर्ाली िा ु ां ां ां उपावि के रुप में आती ह।ै , यह इि प्रकार के अनिान की वचतन में पररवतभन घवटत होना शिो ु ां ां िफलता का िबि बडा प्रमार् ह।ै की िफलता का मापदड होता ह।ै ां अनिान के िजीख्या ि ितकभ तापिभक िजीख्या ि ितकभ तापिकभ प्रवतदशभ के चयन के कोई ु ू ू ां ां ां वलए िास्तविक प्रवतवनवि न्यादश भ का िास्तविक प्रवतवनवि न्यादशभ का आिश्यकता नहीं। आिारभत चयन । चयन। िजीख्या पर ही अध्ययन का ू ां प्रवतदश भ िजीख्या िा न्यादशभ दोनों का िजीख्या िा न्यादशभ दोनों का िचालन ां ां ां ां ां आकार अपेक्षाकत विस्तत । आकार अपेक्षाकत विस्तत। िजीख्या का आकार अपेक्षाकत ृ ृ ृ ृ ृ ां छोटा । िामान्यी-करर् िामान्यीकरर् मौवलक िामान्यीकरर् की दवष्ट ि े यह िामान्यीकरर् शिो का उद्दश्े य नहीं अनिान का िबि े महत्िपर् भ मौवलक अनिा

Plagiarism detected: **0.05%** https://vedpuran.net/wp-content/uploads/2015/0… + 3 resources! id: **390**

न के िमान ह।ै । ु ू ु ां ां पक्ष। यवद िामान्यीकरर् की िभिाना ां िामान्यीकरर् मानि जीन के होती ह ै तो उदग्र िामान्यीकरर् ितभमान पररवस्थवतयों ि िभि होता ह।ै ां िबवित। ां इि प्रकार क

े िामान्यीकरर् को पावश्वभक िामान्यीकरर् की िज्ञा ां दी जाती ह।ै अनिान की शिो-अवभकल्प या अनिान मौवलक शिो के िमान ही किोर िमायोजनशील शिो-अवभकल्प ु ु ां ां रुपरेखा का की रुपरेखा अपन े स्िरुप म ें शिो-अवभकल्प िा हबह िा अनगमन में लोचशीलता ु ु ां ां अनिरर् किोर होती ह ै तथा उिका हबह अनपालन । अनिान की रुपरेखा प्रस्तत करने ु ु ु ु ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 168 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 अनगमन वकया जाता ह ै । म ें वकिी तकनी

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **391**

की ज्ञान की ु अनिान की रुपरेखा प्रस्तत आिश्यकता नहीं होती ह।ै ु ु ां करन े म ें विशेष तकनीकी ज्ञान अपेवक्षत होता ह ै कायभकताभ अनिानकताभ वशक्षा विषय के मौवलक अनिान के िमान ह

ी । अनिानकताभ

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ + 4 resources! id: **392**

विद्यालय के ु ु ु ां ां ां स्नातक, प्रवशक्षर् प्रिनाचाय,भ अध्यापक, प्रबिक एि ां ां महाविद्यालयों के प्राध्यापक वनरीक्षक स्िय होत े ह।ैं ां अथिा अनिान अविकारी ु ां होते ह

।ैं स्रोत: उपरोक्त ताहलका का हर्कास के पी पाडे की पततक हिक्षा में 'हियात्मक अनसधान' में ु ु ं ं दी गई एक ताहलका

Plagiarism detected: **0.03%** https://setmygadget.com/k-se-gya-tak/ id: **393**

के आधार पर हकया गया ि।ै 5.8 धकयात्मक अनिुां ान के िोपान अनिान वकिी भी प्रकार का हो उिक

े िपादन की एक प्रवक्रया होती ह।ै अब अगर प्रवक्रया ह ै तो उिके ु ां ां कछ वनवश्चत िोपान भी होंग।े चाह े मौवलक अनिान हो या अनप्रयक्त अनिान या वफर वक्रयात्मक ु ु ु ु ु ां ां अनिान िबको एक वनवश्चत प्रवक्रया ि होकर गजरना पडता ह ै और हर प्रवकया के कछ वनवश्चत िोपा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hi.wikipedia.org/wiki/पोटैशियम id: **394**

न ु ु ु ां होते ह।ैं इन िोपानों का अक्षरशः पालन ही अनिान कायभ को िफल बनाता ह।ै प

्ख्यात वशक्षाविद के ० ु ां पी० पान्डेय जी ने अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **395**

'वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिान'

म ें इिके वनम्नवलवखत िोपान बताए ह:ैं ु ु ां 1. िमस्या की पहचान करना; 2. िमस्या को पररभावषत करना एि उिकी िीमाएँ तय करना; ां 3. िमस्या के कारर्ों को विश्लेवषत करना; 4. वक्रयात्मक अनिान हते उपकल्पना हाइपोवथवि का वनमाभर् करना; ु ु ां 5. वक्रयात्मक अनिान हते वनवमतभ उपकल्पना के परीक्षर् हते रुपरेखा तैयार करना; तथा ु ु ु ां 6. वक्रयात्मक उपकल्पना के िबि में अवतम वनर्यभ लेना एि उि वनर्यभ न के पक्ष म ें तकभ प्रस्तत ु ां ां ां ां करना के ० पी० पान्डेय जी ने अपनी पस्तक में वक्रयात्मक अनिान के इन िोपानों को एक रेखावचत्र के ु ु ां माध्यम ि प्रस्तत वकया ह।ै िह रेखावचत्र वनम्नवलवखत ह:ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 169 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 6. हियात्मक पररकल्पना के सबध में अहतम हनणिय ं ं ं तथा उसका आधार हनरुहपत करना 5. हियात्मक पररकल्पना की परीक्षा िेत उपयक्त ु ु रुपरेखा तैयार करना 4. हियात्मक पररकल्पना का हनमाण 3. समतया के सगत कारणों का हर्श्ले िण ं 2. समतया का पररभािीकरण एर् सीमाकन ं ं 1. समतया को पिचानना हचत्र 1: हियात्मक अनसधान के सोपान ु ं (स्रोत: के ० पी० पाडेय जी द्वारा रहचत पततक

Quotes detected: **0.01%** id: **396**

'हिक्षा में हियात्मक अनसधान'

) ु ु ं ं आइए अब इन िोपानों पर बारी-बारी ि चचाभ करें। i. समतया की पिचान करना- अनिान कायभ का आिार एक िमस्या होती ह।ै अतः, वकिी

Plagiarism detected: **0.13%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 14 resources! id: **397**

भी ु ां प्रकार के अनिान के वलए िमस्या का होना आश्यक ह।ै फलस्िरुप िमस्या की पहचान ु ां करना वकिी भी प्रकार के अनिान का प्रथम िोपान होता ह।ै वकयात्मक अनिान की प्रवक्रया ु ु ां ां का पहला िोपान भी यही ह।ै इि िोपान पर अनिानकता भ पहले उि क्षेत्र की पहचान करता ह ै ु ां वजिि िमस्या िबवित होती ह।ै क्षेत्र की पहचान करने के बाद िह िमस्या की पहचान करता ां ां ह।ै िमस्या की पहचान एक दष्कर कायभ ह।ै इिके वलए अनिानकता भ को स्िय को िंिदे नशील ु ां ां ां ु बनाना होता ह

ै तथा िस्तवनष्ठ दृवष्टकोर् उत्पन्न करना होता ह।ै ु ii. समतया को पररभाहित करना एर् उसकी सीमाए ँ तय करना- विफभ िमस्या की पहचान कर ं लेना ही पयाभप्त नहीं ह।ै अनिान कायभ के िफल िचालन के वलए िमस्या को पररभावषत करना ु ां ां होता ह।ै यह वक्रयात्मक अनिान की प्रवक्रया का दिरा िोपान ह।ै िमस्या के पररभाषीकरर् ि े ु ां ू आशय िमस्या के कथन म ें प्रयक्त शब्दों के अथभ को िस्पष्ट करने ि ह।ै इि िोपान पर यह ध्यान ु ु रखा जाता ह ै वक कहीं ऐि शब्दों का प्रयोग ना हो जाए वजिके कई अथभ वनकलते हों। िमस्या का विश्लेषर् कर उिका विवशष्ट स्िरुप वनवश्चत करना िमस्या का िीमाकन कहलाता ह।ै िमस्या ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 170 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 का स्िरुप वजतना विवशष्ट होता ह ै अनिान कायभ के िफल होने की िभािना उतनी ही प्रबल ु ां ां होती ह।ै iii. समतया के कारणों का हर्श्ले िण- िमस्या के पररभाषीकरर् एि िीमाकन के बाद अथाभत जब ां ां िमस्या का स्िरुप विवशष्ट हो जाता ह ै उिके बाद अनिानकताभ वक्रयात्मक अनिान के तीिरे ु ु ां ां िोपान िमस्या के कारर्ों के विश्लेषर् पर आता ह।ै यहाँ अनिानकताभ इि बात का विचार ु ां करता ह ै वक िमस्या का िास्तविक िबि वकन-वकन कारर्ों ि हो िकता ह।ै िह कारर्ों का ां ां पता लगाने के वलए अनेक िाक्ष्यों को एकत्र करता ह।ै वफर िह िमस्या के िभावित कारर् एि ां ां उनके िाक्ष्यों की एक िची बनाता ह।ै ू iv. हियात्मक अनसधान के हलए उपकल्पना का हनमाण- उपकल्पना का वकिी भी अनिान ु ु ं ं ां में महत्िपर् भ स्थान होता ह।ै इिके िारा अनिानकताभ को एक स्पष्ट वदशा वमलती ह ै वजि वदशा ू ु ां में िह अनिान के िफल िचालन का प्रयाि करता ह।ै वक्रयात्मक उपकल्पना का वनमाभर् ु ां ां करते िमय यह ध्यान रखना चावहए वक उपकल्पना में अनिान के उद्दश्े य एि अपनाई

ु ां ां जानिोली कायभ-प्र्ाली का स्पष्ट उल्लेख वकया गया हो। वक्रयात्मक उपकल्पना के दो पक्ष होते ह ैं - लक्ष्य पक्ष ए वक्रया पक्ष। लक्ष्य पक्ष म ें वनिाभररत लक्ष का उल्लेख होता ह ै ए वक्रया पक्ष म ें ां ां उि प्राप्त करने के वलए की जानिोली वक्रया का। v. हियात्मक उपकल्पना के परीक्षण ित उपकल्पना हनमिाण- यह वक्रयात्मक अनिान का ु ु ां पााँचिा िोपान होता ह।ै यहााँ अनिानकताभ वक्रयात्मक उपकल्पना के परीक्ष् के वलए उपयक्त ु ु ां रुपरेखा या अवभकल्प का वनमाभ् करता ह।ै रुपरेखा का वनमाभ् करते िमय यह बात ध्यान म ें रखना चावहए वक इि विद्यालय के अन्य कायभक्रमों म ें वकिी प्रकार का कोई व्यिान न हो। इि परीक्ष् के आिार पर अनिानकताभ यह वनर्यभ लेता ह ै वक उि अपने कायभपद्धतयों में क्या ु ां पररितभन लाना ह ै ए कौन िी नई वक्रयाओ को प्रारभ करना ह?ै यह रुपरेखा किोर नहीं होती ह ै ां ां ां अथाभत आश्यकता पडने पर इिमें थोडा बहत पररितभन वकया जा िकता ह।ै ु vi. हियात्मक पररकल्पना के सबध में अहतम हनणिय तथा उसका आधार- यह वक्रयात्मक ं ं ं अनिान की प्रवक्रया का अवतम िोपान ह।ै यहााँ अनिानकताभ वक्रयात्मक उपकल्पना के ु ु ां ां ां िबि म ें वनर्यभ लेता ह।ै इि वनर्यभ में उिके पाि दो विकल्प होते ह-ैं ित्य और अित्य। यवद ां ां उपकल्पना ित्य प्रतीत होती ह ै तो अनिानकताभ पररवस्थवतयों में अनिान के अनकल ु ु ु ू ां ां पररितभन लाता ह।ै लेवकन वक्रयात्मक अनिान यहीं िमाप्त नहीं हो जाता ह।ै यह अनिरत ु ां चलता रहता ह।ै एक के बाद दिरी, दिरी के बाद तीिरी और इि प्रकार इिका चक्र चलता ू ू रहता ह।ै वक्रयात्मक उपकल्पना के िबि म ें अवतम वनर्यभ लेन े ि तात्पयभ यह ह ै वक ां ां ां अनिानकताभ यह वनश्चय करता ह ै वक वजि उद्दश्े य को ध्यान म ें रखकर वक्रयात्मक उपकल्पना ु ां का वनमाभ् वकया गया था उि उद्दश्े य की प्रावप्त हई या नहीं। वक्रयात्मक उपकल्पना के दो पक्ष- ु लक्ष्य पक्ष और वक्रया पक्ष को यहााँ ध्यान म ें रखा जाता ह।ै वक्रया पक्ष में वजि वक्रया के िारा वजि लक्ष्य की प्रावप्त का िके त वकया जाता ह ै अगर िह प्राप्त हो जाता ह ै तो वक्रयात्मक अनिान को ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 171 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 िफल घोवषत वकया जाता ह ै और यवद लक्ष्य की प्रावप्त

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.gksection.com/hindi-alphabets/ id: **398**

नहीं होती ह ै तो वक्रयात्मक अनिान को ु ां अनपयोगी या अप्रमावर्क कहा जाता ह

।ै ु ऊपर वक्रयात्मक अनिान की प्रवक्रया के िोपानों को प्रस्तत वकया गया ह।ै एक वक्रयात्मक अनिान ु ु ु ां ां की िफलता इि बात पर वनभरभ करती ह ै वक अनिानकताभ इन िोपानों को वकि प्रकार अपनाता ह।ै ु ां चाँवक अनिान की एक वनवश्चत प्रवक्रया होती ह ै और प्रवक्रया का यह आशय होता ह ै वक इिमें वनवहत ू ु ां विवभन्न िोपानों को एक वनवश्चत क्रम म ें वक्रयावन्ित वकया जाए। अतः, वक्रयात्मक अनिान म ें ु ां अनिानकताभ ि यह उम्मीद की जाती ह ै वक िह इन िोपानों को उि क्रम म ें वक्रयावन्ित करेगा वजि क्रम ु ां में ये बताए गए ह।ैं 5.9 धक्रयात्मक अनिुां ान की आवश्यकता वक्रयात्मक अनिान की आश्यकता को स्पष्ट करते हए कोरी ने कहा वक "हमारे

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **399**

विद्यालय तब तक ु ु ां ऐिी गवतविवियों को िरवक्षत नहीं रख िकते ह ैं वजन्ह ें िररत रखन े ए िािरने की उनिे अपेक्षा की ु ु ां जाती ह,ै जब तक वशक्षकग्, विद्याथीग्, पिक्षे कग्, प्रशिाकग् तथा विद्यालय

ों के िरक्षकग् ां िित इि बात का परीक्ष् नहीं करते वक ि े क्या कर रह े ह,ैं अके ले तथा िमह म ें उन्ह ें अपनी कल्पना का ू अजनभ शील ए रचनात्मक ढग ि प्रयोग करना आना चावहए, इि उद्दश्े य ि की ऐिी गवतविवियों को ां ां पहचानना जा िके वजन्ह ें आवनक जीिन की आश्यकता ए अपेक्षाओ को ितष्ट करने के वलए ु ु ां ां ां बदलने की जरुरत ह,ै ऐिी गवतविवियों को िाहिपिकभ लाना जो बेहतर आशाएाँ विकवित करती ह ैं तथा ू वजन की उपयोवगता के बारे म ें विविित ए व्यिवस्थत रुप म ें िाक्ष्यों को एकत्र करने की जरुरत ह।ै " ां स्टीफे न कोरी का यह कथन बहत ही व्यापक ह ै इि कथन म ें िमावहत मख्य तथ्य वनम्नवलवखत ह:ैं ु ु एक

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **400**

विद्यालय ि प्रत्यक्ष रुप ि जडे िमस्त व्यवक्तयों तथा वशक्षक, विद्याथी, पयभिक्षे क, ु प्रशिाक, आवद को अपने कवतयों का बारीकी ि परीक्ष् करना चावहए। ृ विद्यालय

के कछ ऐिे कायभ-कलाप होते ह ैं वजन्ह ें िरवक्षत रखने या वजन म ें िािर करने की ु ु ु आश्यकता होती ह।ै इन गवतविवियों में िािर िभि ह ै लेवकन ु ां ऐिी गवतविवियों को पहचान हो िके वजनको, आवनक जीिन की आश्यकता ए ु ां अपेक्षाओ को ितष्ट करने के वलए, पररवितभत करना आश्यक ह।ै ु ां ां वक्रयात्मक अनिान इन िारे कायों को करने में िहायता करता ह।ै वक्रयात्मक अनिान की ु ु ां ां आश्यकता को वनम्नवलवखत माध्यम ि स्पष्ट वकया जा िकता ह:ै 1. विद्यालय की कायभ-प्र्ाली म ें पररितभन करने के वलए वक्रयात्मक अनिान की आश्यकता ह;ै ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 172 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 2. तकनीकी के विकाि के पर्ामस्िरुप

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **401**

विद्यालय ि िमाज की बढ़ती हई अपेक्षाओ को ितष्ट ु ु ां ां करन े के वलए इिकी आश्यकता ह;ै 3. विद्यालय

ि प्रत्यक्ष रुप ि िबवित िमस्त व्यवक्तयों यथा वशक्षक, विद्याथी, वनरीक्षक, प्रबिक ां ां ां आवद को अपनी कायभ पद्धत का िज्ञै ावनक ढग ि मल्याकन करने तथा इिके िाथ ही यवद ू ां ां आश्यक हो तो उनमें पररितभन लान े में िक्षम बनाना; 4. छात्रों के

ििांगीर् विकिा हते

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **402**

विद्यालय म ें पिायिहगामी वक्रयाओ को प्रभिी ढग ि ृ ु ां ां आयोवजत करने के वलए वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता पडती ह;ै ु ां 5. विद्यालय

के विवभन्न िमस्याओ को िरलता ि प्रभिी िमिा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.bajajfinserv.in/hindi/square-meter-to… + 5 resources! id: **403**

न प्राप्त करने के वलए; ां 6. वहदी वशक्षर्-िए अविगम के क्षेत्र म ें आने िाली विवभन्न िमस्याओ यथा- त्रवटपर् भ ितभनी िए ु ू ां ां ां ां उच्चारर् की िमस्या, अरुवच की िमस्या आवद का िमािान प्राप्त करने क

े वलए; 7. िमावजक पररितभन के अनकल

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.jagran.com/jharkhand/bokaro-mone… id: **404**

विद्यालय पियक्रम िए अन्य वक्रया-कलापों को िमायोवजत ृ ु ू ां करन े के वलए; तथा 8. विद्यालय म ें िमह कायभ को बढ़ािा दने े के वलए वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता ह ै । ू ु ां उपरोक्त वििेच न ि वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता स्पष्ट हो जाती ह।ै यवद विद्यालय

अपने लक्ष्यों ु ां को प्राप्त करना चाहता ह ै तो उिे वक्रयात्मक अनिान को अपनाना होगा। ु ां अभ्यास प्रश्न 6. वक्रयात्मक अनिान के िोपानों को िचीबद् करें। ु ू ां 7. वक्रयात्मक अनिान की आिश्यकता के िबि म ें स्टीफे न एम० कोरी के वजि कथन का ु ां ां ां उल्लेख इि इकाई म ें वकया गया ह ै का उल्लेख करें । 5.10 धक्रयात्मक अनिुं ान की योजना का उदाहरि समतया- लेखन कायभ नहीं करने ि ितभनी िबिी उपलवब्ि पर बरा प्रभिा प्रभिा पडता ह।ै ु ां ां समतया क्षेत्र- छात्रों िारा लेखन कायभ नहीं वकया जाना। समतया का सीमाहकत रुप- कक्षा 8 के छात्रों म ें वहदी भाषा में लेखन िबिी आदतों में ििार ु ं ां ां ां लाना। पररभीिीकरण- लेखन कायभ िबिी आदत ि यहााँ आशय श्रतलेखन ि ह।ै ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 173 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 समतया के कारणों का हर्श्ले िण- तावलका ि० 2, वजिके प्रारुप का वनमाभर् के ० पी० पाडेय ां ां जी िारा अपनी पस्तक "वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिान" म ें इि आशय के वलए वनवमतभ प्रारुप के ु ु ां आिार पर वकया गया ह,ै म ें िमस्या के कारर्ों का विश्लेषर् वकया गया ह।ै ताहलका स० 2: समतया के कारणों का हर्श्ले िण ं समतया का पररभाहित एर् समतया के सभाहर्त कारण साक्ष्य ं ं सीमाहकत रुप ं कक्षा 8 के छात्रों के वहदी भाषा म ें लेखन 1. घर में श्रतलेखन पर जोर ना दने ा। छात्रों ि पछकर तथा उनके ु ू ां िबिी आदतों म ें ििार लाना। अवभभािकों ि बातचीत कर यह पता ु ां ां लगाया। 2. घर के अन्य िदस्यों िारा वहदी भाषा घर के विवभन्न िदस्यों के िाथ कई ां

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **405**

का प्रयोग नहीं करना। बार िप्रेषर् करके वनवश्चत वकया गया। ां वहदी भाषा के प

ृवत अवभिवत्त मापने के ृ ां वलए एक प्रश्नािली का वनमाभर् कर अवभभािकों पर प्रशावित वकया गया तथा उिि प्राप्त पररर्ाम के आिार पर यह वनश्चय वकया गया । 3. विद्यालय में वशक्षकों िारा वहदी भाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **406**

अध्यापकों ि िाक्षात्कार वकया गया ां म ें श्रतलेखन के वलए छात्रों को और उनि पछा गया वक क्या ि वहदी ु ू ां अवभप्रेररत नहीं करना। भाषा म ें श्रतलेखन के वलए छात्रों क

ो ु अवभप्रेररत करत े ह ें या नहीं। हकयात्मक उपकल्पना का हनमाण – वनम्नवलखत दो योजनाओ का वनमाभर् वकया गया ह:ै ां 1. यवद विद्यालय िमय िारर्ी में वहदी भाषा म ें श्रतलेखन को स्थान वदया जाए तो छात्रों के लेखन ु ां िबिी आदतों में ििार होगा। ु ां ां 2. यवद अध्यापक वहदी भाषा में एक पष्ठ श्रतलेखन को प्रवतवदन विद्यावथभयों को गह कायभ के रुप म ें ृ ृ ु ां दते ा ह,ै उनकी वनयवमत जााँच भी करता ह ै तथा नहीं वलखनेिाले छात्रों को यथोवचत दड दते ा ह,ै ां तो विद्यवथभयों लेखन िबिी आदतों में ििार होगा। ु ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 174 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 हियात्मक उपकल्पना के पररक्षण ित उपयक्त रुपरेखा का हनमाण- के ० पी० पाडेय जी िारा ु ु ां अपनी पस्तक "वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिान" म ें इि आशय के वलए वनवमभत प्रारुप के आिार पर ू ु ां विकवित तावलका ि० 3 म ें वक्रयात्मक उपकल्पना के परीक्षर् हते उपयक्त रुपरेखा का वनमाभर् वकया गया ु ु ां ह।ै ताहलका स० 3: हियात्मक उपकल्पना के परीक्षण के हलए उपयक्त रुपरेखा ु ं प्रारभ हकए जा सकने र्ाले हियात्रयन की हर्धध आर्श्यक साधन समय ं कायिम विद्यालय िमयि-िारर्ी का अध्यापक विद्यालय में अन्य विद्यालय की िमय िारर्ी 3 वदन एक स्पष्ट रुप तैयार करना। वशक्षकों िए गैरशैवक्षक ां कवमभयों के िाथ वमलकर यह कायभ करेगा। िमय िारर्ी में ररक्त चक्रों अध्यापक िमय- िारर्ी के िमय िारर्ी का स्पष्ट रुप 2 वदन की िची बनाएगा। स्पष्ट रुप को दखे कर यह काय भ ू सिय करेगा। ां िमयि-िारर्ी के िए चक्र जो वशक्षक िमय िारर्ी का िमय िारर्ी का स्पष्ट रुप 2 वदन ररक्त तो नहीं ह ै लेवकन ररक्त स्पष्ट रुप दखे कर यह काय भ वकए जा िकते ह ें की िची सिय करेगा। ू ां बनाना। वहदी भाषा म ें श्रतलेखन को वशक्षक प्रिानाध्यापक के िमयि-िारर्ी का स्पष्ट रुप 1 िप्ताह ु ां िमय िारर्ी

में शावमल करन े िाथ व्यवक्तगत रुप ि ए बनाई गई िवचयाँ ू ां के वलए विद्यालय के वमलकर इि विषय पर प्रिानाध्यापक ि बातचीत बातचीत कर िकता ह।ै करना। वहदी भाषा में श्रतलेखन दने े वशक्षक वहदी भाषा के वहदी भाषा के पस्तक ए 3 वदन ु ु ां ां ां ां के वलए प्रयक्त की जा िकन े पािय पस्तक ए िमाचार विद्यालय के पस्तकालय म ें ु ु ु ु ां िाली रचनाओ की िची पत्रों का विश्लेषर् कर आन े िाले िमाचार पत्र ू ां बनाना। वनवश्चत करेगा। कक्षा के आकार के आिार वशक्षक उपवस्थवत पजी के श्रतलेखन के स्िरुप (यत्रों 1 िप्ताह ु ां ां पर वहदी भाषा म ें श्रतलेखन आिार पर कक्षा म ें पजीकत की िहायता ि प्रिाररत/ ृ ु ां ां कायभ का स्िरुप छात्रों की िख्या ए कक्षा म ें मौवखक रुप ि उच्चररत) के ां ां (यावत्रक/मौवखक) वनवश्चत वनयवमत रुप ि उपवस्थत रहन े आिार पर टेप ररकॉडभर, ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 175 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 करना। िाले छात्रों की िख्या के कै िट स्पीकि,भ पाियपस्तक, ् ु ां आिार पर कक्षा के आकार िमाचार-पत्र, पवत्रकाए ाँ का अनमान लगा िकता ह।ै आवद। ु वलवखत कायो को प्रवत िप्ताह वशक्षक विद्यालय के अन्य कोई िािन विशेष की एक शैक्षवर्क ित्र वनवश्चत िमय पर जाँचना तथा वशक्षकों के िाथ वमलकर आिश्यकता नहीं ह।ै उन्

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **407**

ह ें छात्रों को लौटा दने ा। और यवद आिश्यकता पडे तो कछ िररष्ठ ए प्रबद् ु ु ां छात्रों की िह

ायता ले कर इि काय भ को कर िकता ह ै । वलवखत कायों की जाँच करत े वशक्षक विद्यालय के अन्य लाल कलम एक शैक्षवर्क ित्र िमय अशवद् अकन ए वशक्षकों के िाथ वमलकर ु ां ां अशवद् वनिारर् हते िझाि और यवद आिश्यकता पडे ु ु ु को स्थान दने ा। तो कछ िररष्ठ ए प्रबद् ु ु ां छात्रों की िहायता ले कर इि काय भ को कर िकता ह।ै हकयात्मक पररकल्पना के सबध में अहतम हनणियन तथा उस हनणियन के पक्ष में प्रततततीकरण - ु ं ं ं के ० पी० पाडेय जी िारा अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **408**

"वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिुिान"

म ें इि आशय के वलए वनवमतभ ु ु ां ां प्रारुप के आिार पर विकवित तावलका ि० 4 म ें वक्रयात्मक उपकल्पना के िबि म ें अवतम वनर्यभ न तथा ां ां ां ां उि वनर्यभ न के पक्ष म ें तकभ प्रस्ततीकरर् हते उपयक्त रुपरेखा का वनमाभर् वकया गया ह।ै ु ु ु ताहलका स० 4: हकयात्मक पररकल्पना के सबध में अहतम हनणियन तथा उस हनणियन के पक्ष में ं ं ं ं प्रततततीकरण ु समतया का उपकल्पना हियात्मक हियात्मक उपकल्पना के परीक्षण से पररभाहित एर् उपकल्पना के सबहधत ं ं ं सीमाहकत रुप परीक्षण हहध ं साक्ष्य अहतम हनणिय ं कक्षा 8 के छात्रों के यवद विद्यालय िमय िमय िरर्ी म ें वनवश्चत छात्रों की अभ्यिा- यवद छात्र स्ितः वहदी भाषा म ें लेखन िरर्ी म ें वहदी भाषा वकए गए चक्र म ें पवस्तका के िारा । लेखन प्रारभ करत े ह ैं ु ां ां ां िबिी आदतों में में श्रतलेखन को स्थान विद्यावथभयों

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **409**

को छात्रों की अभ्यिा- तो वक्रयात्मक ु ां ां िािर लाना। वदया जाए तो छात्रों क

े श्रतलेखन दगे ा तथा पवस्तका के िारा। उपकल्पना को ु ु ु लेखन िबिी आदतों वनवश्चत वतवथ पर प्रामावर्क माना ां ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 176 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 म ेंिािर होगा। उनकी जाँच कर जाएगा। ु यवद अध्यापक वहदी करेगा। यवद छात्र गह काय भ ृ ां भाषा म ें एक पष्ठ वशक्षक छात्रों के अभ्यिा पवस्तका म ें ृ ु श्रतलेखन को प्रवतवदन गहकाय भ की अभ्यिा- श्रतलेखन काय भ ृ ु ु विद्यावथभयों को गह पवस्तका म ें वलख े गए वनयवमत रुप ि करत े ृ ु कायभ के रुप म ें दते ा ह,ै श्रत लेखन की जाँच ह ैं तो उपकल्पना को ु उनकी वनयवमत जाँच करेगा। प्रामावर्क माना करता ह ै तथा नहीं जाएगा। वलखन े िाले छात्रों को यथोवचत दड दते ा ह ै ां तो लेखन िबिी ां ां आदतों में िािर होगा। ु 5.11 िारांश प्रस्तत इकाई म ें वक्रयात्मक अनिुिान का िर्नभ वकया गया ह।ै इकाई की शरुआत वक्रयात्मक अनिुिान ु ु ु ु ां ां की पररभाषा की गई ह।ै पररभाषीकरर् के बाद अनिुिान के विवभन्न रुपों यथा, मौवलक अनिुिान ए ु ु ां ां ां अनप्रयक्त अनिुिान के िाथा वक्रयात्मक अनिुिान के तलनात्मक अध्ययन को अत्यत ही िदर ढग ि ु ु ु ु ु ु ां ां ां ां ां तावलकाबद् वकया गया ह।ै इकाई म ें वक्रयात्मक अनिुिान की आिश्यकता को भी स्थान वदया गया ह।ै ु ां वक्रयात्मक अनिुिान के विवभन्न िोपानों का िमवचत िर्नभ भी इि इकाई म ें वमलता ह।ै वक्रयात्मक ु ु ां अनिुिान की योजना को एक उदाहरर् के माध्यम ि स्पष्ट कर वशक्षर्-अविगम के क्षेत्र म ें कायभरत ु ां व्यवक्तयों के वलए इि और उपयोगी बना वदया गया ह।ै इि प्रकार यह इकाई अत्यत ही वशक्षर्-अविगम ां के क्षेत्र म ें शावमल व्यवक्तयों के वलए अत्यत ही उपयोगी ह।ै ां 5.12 अभ्यिा प्रश्नों के उत्तर 1. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.3 दखे ।ें ां 2. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.3 दखे ।ें ां 3. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.6.1 दखे ें। ां 4. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.6.4 दखे ें। ां 5. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.6.1 दखे ें। ां 6. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खड 5.8 दखे ।ें ां 7. इि प्रश्न के उत्तर के वलए इि इकाई का खद 5.9 दखे ें। ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 177 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग II) CPS 12 5.13 िदां भ भ एवां िहयोगी ग्रांथ 1. कोरी, स्टीफे न एम.(1953). एक्शन ररिचभ ट इमप्रि स्कल प्रैक्टिी, ब्यरो ऑफ पवब्लके शि, ू ू ू ू ां कोलवम्बया यवनिविभटी, न्ययॉकभ . ू ू 2. कोहने , लॉरें ि तथा मवै नयन, लॉरेंि(1980). ररिचभ मथे डि इन एजके शन, क्रम हल्े म: लदन, नई ् ू ु ू ां वदल्ली. 3. पाडेय, के . पी. तथा पाडेय अवमता (2005)). वशक्षा म ें वक्रयात्मक अनिुिान, विनोद पस्तक ु ु ां ां ां मवदर, आगरा. ां 4. बेल, जवडथ(1996). हाउ ट कम्प्लीट योर ररिचभ प्रोजक्े ट स्क्िैफली, य. बी. ए. पवब्लवशभ, ु ू ु ू वदल्ली

। 5.14 धनबित्मक प्रश्न ां 1. वक्रयात्मक अभिनान को पररभावषत करें। ु ां 2. वक्रयत्मक अभिनान की विशेषताओ एि िीमाओ का िर्नभ करें। ु ां ां ां 3. मौवलक अभिनान, अनप्रयक्त अभिनान एि वक्रयात्मक अभिनान का तलनात्मक अध्ययन ु ु ु ु ु ु ां ां ां ां कर उनम ें िमानता एि अतर स्थावपत करें। ां ां 4. वक्रयात्मक अभिनान की प्रवक्रया का िोदाहरर् िर्नभ करें। ु ां 5. वहदी वशक्षर् करते िमय आपने वजन िमस्याओ का अनभि वकया ह ै उनम ें ि वकिी एक के ु ां ां िमाान के वलए एक वक्रयात्मक अभिनान योजना का वनमाभर् करें। ु ां उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 178 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC